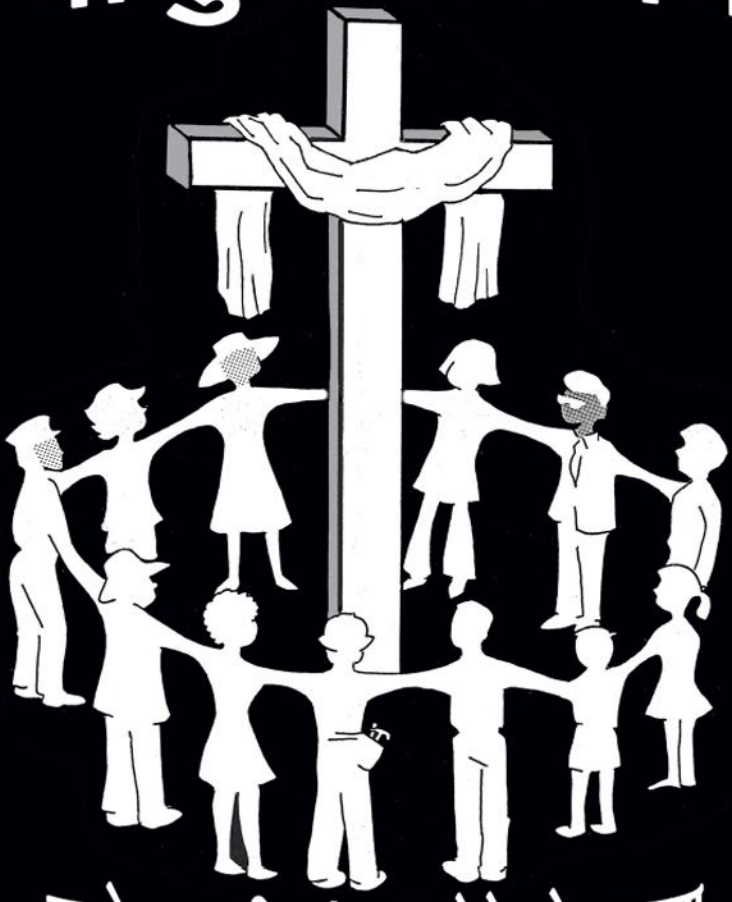
Victory in Jesus

यीशु में विजय



परमेश्वर की संतान होने के कारण

Being a Child of God

Fourth ed./ चौथा संस्करण

by Dr. James B. Joseph
"Brother James"
डॉ. जेम्स बी. जोसेफ द्वारा
"ब्रदर जेम्स"

Translator: Dr. Abha Benjamin
अनुवादक: डॉ. आभा बैंजामिन

Victory in Jesus

यीशु में विजय

Victory In Jesus: Being a Child of God, **4th ed., helps people understand more fully God and His Creation including their God-given purpose for existence. Each person of every society, culture, and religious background must decide if the One who created them is worthy to follow. God continually works in everyone's heart and mind to teach everyone to learn to return His love and willingly submit to His leadership thereby becoming part of His eternal loving family and follow Jesus.**

यीशु में विजय: परमेश्वर की संतान होने के कारण, 4था सं., लोगों को परमेश्वर और उसकी अद्‌भुत सृष्टि को और गहराई से समझने में सहायता करता है, साथ ही उनके जीवन के उस दिव्य उद्देश्य को प्रकट करता है जो उन्हें परमेश्वर की ओर से मिला है। हर समाज, संस्कृति और धार्मिक पृष्ठभूमि का प्रत्येक व्यक्ति इस निर्णय के सामने खड़ा होता है कि जिसने उसे रचा है, क्या वह उसके अनुसरण के योग्य है? परमेश्वर निरंतर प्रत्येक हृदय और मन में कार्य करता है, ताकि मनुष्य उसके प्रेम को पहचानकर उसी प्रेम को लौटाना सीखे, स्वेच्छा से उसके नेतृत्व के अधीन हो जाए, और इस प्रकार उसके अनंत प्रेममय परिवार का अंग बनकर यीशु का अनुसरण करे।

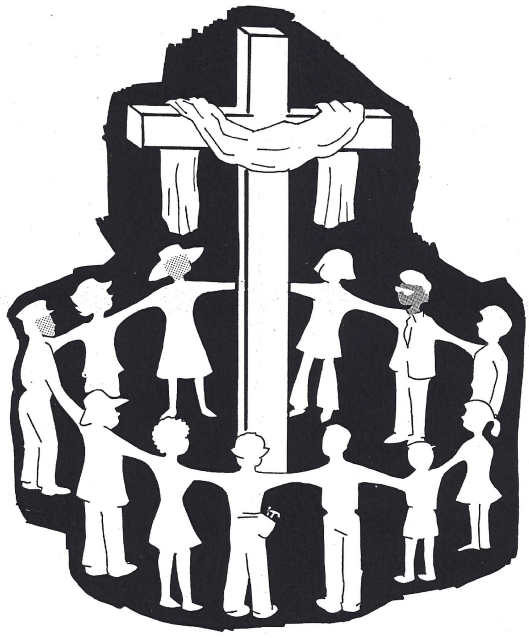
डॉ. जोसेफ एक लेखक, अर्ध–सेवानिवृत्त पास्टर, सेवानिवृत्त सेमिनरी प्राध्यापक और परमेश्वर के वचन के सतत शिक्षक हैं। उन्होंने बाइबिल अध्ययन में दो स्नातकोत्तर उपाधियाँ तथा पीएच.डी. प्राप्त की है और चालीस से अधिक वर्षों तक सामान्य जनसमूह की सेवा करते हुए यह भली–भाँति समझा है कि परमेश्वर के साथ गहरा और जीवंत संबंध बनाने के लिए मनुष्य को किन सच्चाइयों की आवश्यकता है। इस पुस्तक में जीवन के अनेक महत्वपूर्ण आत्मिक प्रश्नों के स्पष्ट और आशापूर्ण उत्तर दिए गए हैं, जो पाठक को विश्वास, प्रेम और आज्ञाकारिता के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

In addition to *Victory in Jesus*, some of Dr. Joseph's other published books include *Experiencing Jesus' Joy, No More Walls!, The Ulitmate Victory*, and *Unity and Obedient Discipleship in the Gospel of John.*

Dr. Joseph is a writer, semi-retired pastor, retired seminary professor, and ongoing teacher of God's Word. He has completed two master degrees and a PhD in biblical studies along with ministering to the general public for over forty years and understands what is important for everyone in order to build a good relationship with God. Within this book , many critical spiritual questions have been answered.

ISBN 978-1-971496-09-2

9 781971 496092



God invites all people from all walks of life throughout all time to join His eternal loving holy family through Jesus' sacrificial death on a wooden cross. (John 3:16; Heb 10:12)

परमेश्वर हर समय, हर युग में, जीवन के हर वर्ग के सभी लोगों को यीशु मसीह की बलिदानी मृत्यु के द्वारा—जो उन्होंने लकड़ी के क्रूस पर दी—अपने अनंत, प्रेमपूर्ण और पवित्र परिवार में सम्मिलित होने का निमंत्रण देते हैं।

(यूहन्ना 3:16; इब्रानियों 10:12)

VICTORY IN JESUS

Being a Child of God

English-Hindi Fourth Edition

यीशु में विजय

परमेश्वर की संतान होने के कारण

चौथा संस्करण

by Dr. James B. Joseph
"Brother James"
डॉ. जेम्स बी. जोसेफ द्वारा
"ब्रदर जेम्स"
Translator Dr. Abha Benjamin
अनुवादक डॉ. आभा बैंजामिन

ISP

In Jesus' Service Publishing
Pfafftown, NC
इन जीजस सर्विस पब्लिशिंग
फॉफटाउन, नार्थ कैरोलाईना

English-Hindi Fourth Edition 2026
English- Hindi Paperback ISBN: 978-1-971496-09-2
Library of Congress Control Number: 2026901746
चौथा संस्करण 2026
इंग्लिश–किंडल आईएसबीएनः 978–1–971496–09–2
लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कंट्रोल नंबरः 2026901746

Copyright 2026 by Dr. James B. Joseph
All rights reserved. No part of this book may be used or reproduced in any manner without written permission except for brief quotations with proper citations, which may be embodied in articles and books that are not harmful toward Christianity nor the author.

कॉपीराइट 2026 डॉ. जेम्स बी. जोसेफ
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक के किसी भी भाग का उपयोग या पुनरुत्पादन बिना लिखित अनुमति के नहीं किया जा सकता है, उचित उद्धरणों के साथ संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त, जो उन लेखों और पुस्तकों में सन्निहित हो सकते हैं जो मसीही धर्म और लेखक के लिए हानिकारक नहीं हैं।

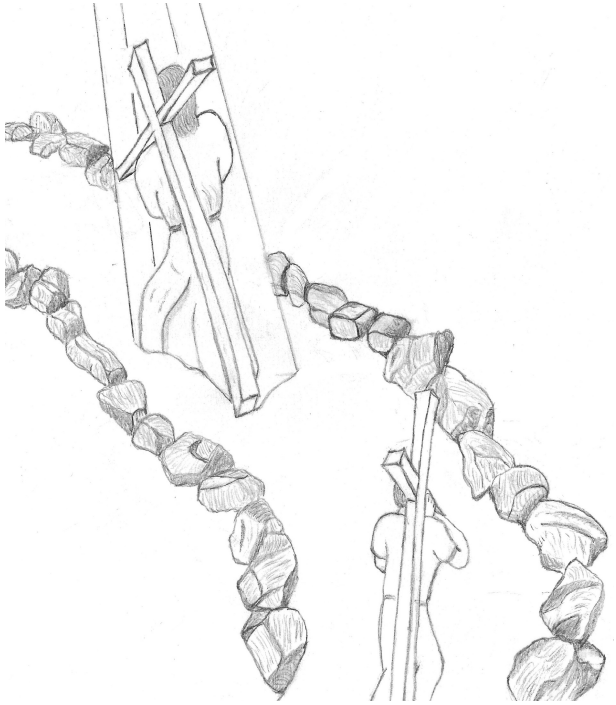
www.injesusservice.com

**“Your Word is a lamp to my feet,
indeed, a light to my pathway!”
Psalm 119:105**

**Through the guidance
of the Father
and help of the Holy Spirit,
let’s follow Jesus faithfully!**

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक,
और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।
भजन 119:105

पिता और पवित्र आत्मा की सहायता से
आइए, ईमानदारी से यीशु का अनुसरण करें



Dedication
समर्पण

***VICTORY IN JESUS. . . Being a Child of God* is dedicated to God's Kingdom Work on Earth. It is dedicated to the Father, the Son, the Spirit of Truth, and to all who are striving to walk in our Father's will. Let us strongly resist being conformed to the ways of this world, and let us allow God to transform us into His loving righteous children proving His good and acceptable way of life. As we journey through this side of eternity, let us lead many to God showing His goodness through our actions and words as we overcome Satan's many deceptions through God's enlightenment and power.**

यीशु में विजय. . . परमेश्वर की संतान होना पुस्तक पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के कार्य के लिए समर्पित है। यह पिता, पुत्र, सत्य का आत्मा और उन सभी को समर्पित है जो हमारे पिता की इच्छा पर चलने का प्रयास कर रहे हैं। आइए, हम इस संसार के तौर–तरीकों के अनुरूप होने का दृढ़ता से विरोध करें, और आइए हम परमेश्वर को उनके भले और स्वीकार्य जीवन के तरीके को सिद्ध करते हुए अपनी प्रिय धर्मी संतान में बदलने की अनुमति दें। जैसे ही हम अनंत काल के इस ओर यात्रा करते हैं, आइए हम अपने कार्यों और शब्दों के माध्यम से अपनी अच्छाई प्रगट करते हुए कई लोगों को परमेश्वर की ओर ले जाएं, जिस प्रकार हम ईश्वर की प्रबुद्धता और शक्ति के माध्यम से शैतान के अनेक धोखों पर विजय पाते हैं।

Statements by Various Denominational Church Leaders
Who Read the 1st ed. of VICTORY IN JESUS: Being a Child of God
विभिन्न डिनोमीनेशंस के अगुओं के द्वारा वक्तव्य
जिन्होंने यीशु में विजय का पहला संस्करण पढ़ा

"One may well take a giant step in spiritual understanding and growth by reading/studying *Victory In Jesus*. The insights set forth in James Joseph's book are worthy of one's time and mental energy,"

Dr. Cecil R. Cave, Jr. – Pastor,
Mineral Springs Baptist Church

"कोई भी यीशु में विजय पुस्तक को पढ़कर/अध्ययन करके आध्यात्मिक समझ और उन्नति में एक बड़ा कदम उठा सकता है। जेम्स जोसेफ की पुस्तक में निहित अंतर्दृष्टि किसी के समय और मानसिक ऊर्जा का अच्छा निवेश है।"

डॉ. सेसिल आर. केव, जूनि. –पास्टर,
मिनरल स्प्रिंग्स बैपटिस्ट चर्च

"I have every confidence that people who will read and follow *Victory In Jesus* will turn a corner in their life. That turning will lead them on a successful journey toward living a victorious life in Christ,"

Dr. James C. Hash – Senior Pastor,
St. Peter's World Outreach Center

"मुझे पूरा विश्वास है कि जो लोग यीशु में विजय पुस्तक को पढ़ेंगे और उसका अनुसरण करेंगे उनके जीवन में एक नया मोड़ आएगा। वह मोड़ उन्हें मसीह में विजयी जीवन जीने की एक सफल यात्रा पर ले जाएगा।"

डॉ. जेम्स सी. हैश – वरिष्ठ पास्टर
सेंट पीटर्स वर्ल्ड आउटरीच सेंटर

"Through his careful study of the Scriptures, James Joseph has produced a book that can be helpful for people who are seeking to know God's will for living in unity with God and neighbor,"

Rev. Robert S. Roller – Pastor,
Fraternity Church of the Brethren

"जेम्स जोसेफ ने, धर्मग्रंथों के अपने सावधानीपूर्वक अध्ययन के माध्यम से एक ऐसी पुस्तक तैयार की है जो उन लोगों के लिए सहायक हो सकती है जो परमेश्वर और पड़ोसी के साथ एकता में रहने के लिए परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं।"

रेव्ह. रॉबर्ट एस. रोलर – पास्टर
ब्रदरनिटी चर्च ऑफ़ द ब्रेथ्रेन

"You will be stimulated and blessed by the reading of this book. It is a fresh call for practical unity in the Body. Here is a work that proclaims great biblical truths on unity and provides practical helps for churches and individuals on working together for the cause of Christ,"

Dr. Mark Corts – Senior Pastor,
Calvary Baptist Church

"इस पुस्तक को पढ़कर आप उत्साहित और धन्य होंगे। यह मसीह की देह में व्यावहारिक एकता के लिए एक निर्मल आह्वान है। यहां एक ऐसा कार्य है जो एकता पर महान बाइबल की सच्चाइयों की घोषणा करता है और कलीसियाओं एवं व्यक्तियों को मसीह के लिए एक साथ काम करने में व्यावहारिक सहायता प्रदान करता है।"

डॉ. मार्क कॉर्ट्स – वरिष्ठ पास्टर
कैलवरी बैप्टिस्ट चच

"In this book, James gives a dynamic challenge to every Christian to sojourn and carry out the Great Commission. . . . In addition, this book lays out in practical terms the needed insight and motivation for every Christian leader in the twenty-first century,"

Rev. Larry A. Boyd – Pastor,
New Covenant Non-denominational Church

"इस पुस्तक में जेम्स प्रत्येक मसीही जन को थोड़े समय के प्रवास के लिए जाने और महान आज्ञा को पूरा करने के लिए एक गतिशील चुनौती देता है। इसके अलावा यह पुस्तक इक्कीसवीं सदी में प्रत्येक मसीही अगुए के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि और प्रेरणा को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करती है।"

रेव्ह. लैरी ए. बॉयड – पास्टर
न्यू कॉवीनेंट नॉन डिनोमीनेशनल चर्च

"*Victory In Jesus: Being a Child of God* offers great insight into the nature of the Church. You will find this work very useful as a Bible study guide especially for community groups seeking guidance as they plan interdenominational ministries,"

Rev. G. Thomas Shelton – Pastor,
Friedburg Moravian Church

"यीशु में विजयः परमेश्वर की संतान होने के कारण पुस्तक में कलीसिया की प्रकृति की महान अंतर्दृष्टि मिलती है। आप इस पुस्तक को बाइबिल अध्ययन मार्गदर्शिका के रूप में बहुत उपयोगी पाएंगे विशेष रूप से उन सामुदायिक समूहों के लिए जो इंटरडिनोमिनेशनल सेवकाईयों की योजना बनाते समय मार्गदर्शन चाहते हैं।"

रेव्ह. जी. थॉमस शेल्टन – पास्टर
फ्राइडबर्ग मोरावियन चर्च।

"Here is a book that challenges us, from a biblical and theological perspective, to be the united Body of Christ showing our communities the reality of the risen Christ,"

Dr. Bob Neff – Pastor,
Cornerstone Community Church

"यहां एक पुस्तक है जो हमें बाइबल और धार्मिक दृष्टिकोण से मसीह की एकजुट देह बनने के लिए चुनौती देती है जो हमारे समुदायों को पुनर्जीवित मसीह की वास्तविकता दिखाती है।"

डॉ. बॉब नेफ़ – पास्टर,
कार्नरस्टोन कॅम्यूनिटी चर्च

"I am touched by the sincerity and convictions with which James Joseph expressed his faith in his book *Victory In Jesus*. His work helps us understand how the Gospel is, at once, simple and yet utterly profound. My prayer is that it will be a blessing to those who read it,"

Dr. George P. Robinson – Senior Minister,
Centenary United Methodist Church

"मैं उस ईमानदारी और दृढ़ विश्वास से प्रभावित हूं जिसके साथ जेम्स जोसेफ ने अपनी पुस्तक यीशु में विजय में अपना विश्वास प्रगट किया है। उनका काम हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे सुसमाचार एकाएक सरल और फिर भी पूर्णतः गहरा है। मेरी प्रार्थना है कि पुस्तक पढ़ने वालों के लिए यह एक आशीष होगी।"

डॉ. जॉर्ज पी. रॉबिन्सन – वरिष्ठ पास्टर
सेंटेनरी यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च

Foreword
प्रस्तावना

VICTORY IN JESUS and my other books have been written to help those who want to understand more fully their God-given purpose in life and wish to experience more godly joy as they follow Jesus. Christ prayed that His followers would experience His joy, which was made full at the Cross because He was providing eternal perfection within the Family of God for those who learned to listen to Him.

यीशु में विजय और मेरी अन्य पुस्तकें उन लोगों की सहायता करने के लिए लिखी गई हैं जो जीवन में अपने ईश्वर प्रदत्त उद्देश्य को पूर्ण रीति से समझना चाहते हैं और यीशु का अनुसरण करते हुए अधिक ईश्वरीय आनंद का अनुभव करना चाहते हैं। मसीह ने प्रार्थना की कि उनके अनुयायी उनके आनंद का अनुभव करें जो क्रूस पर पूर्ण हुआ क्योंकि वह उन लोगों के लिए परमेश्वर के परिवार के भीतर शाश्वत पूर्णता प्रदान कर रहे थे जिन्होंने उनकी बात सुनना सीखा।

The Bible is clear that God invites every person of every generation to join Him in becoming a member of His eternal close-knit holy family. Upon receiving God into one's life, every member is asked to help others who are still living separate from God to know Him and join His eternal family and kingdom. Through the Holy Spirit, God develops love *for all* in the hearts of His family members and commissions each of them to be His representatives on earth. Like Christ, His followers experience great joy over every individual who is rescued from the deceptions of self-centeredness, selfishness, and Satan.

बाइबल स्पष्ट कहती है कि परमेश्वर प्रत्येक पीढ़ी के प्रत्येक व्यक्ति को अपने शाश्वत घनिष्ठ पवित्र परिवार का सदस्य बनने के लिए आमंत्रित करता है। परमेश्वर को अपने जीवन में प्राप्त करने के पश्चात प्रत्येक सदस्य को उन अन्य लोगों की मदद करने के लिए कहा जाता है जो अभी भी ईश्वर से अलग रह रहे हैं ताकि वे उसे जान सकें और उसके शाश्वत परिवार और राज्य में शामिल हो सकें। पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर अपने परिवार के सभी सदस्यों के दिलों में प्रेम विकसित करता है और उनमें से प्रत्येक को पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधि बनने का आदेश देता है। मसीह की तरह उनके अनुयायियों को हर उस व्यक्ति के लिए बहुत आनंद का अनुभव होता है जो आत्म–केंद्रितता, स्वार्थ और शैतान के धोखे से बचाया जाता है।

As you realize more fully what God is asking of you and what Satan is doing to quench the leading of the Holy Spirit, you will be liberated to follow Christ more fully into spiritual battle resulting in more coming to know God and desiring to be part of His eternal family. Through God's children becoming more interactive within His Creation, God will become more fully known and trusted worldwide.

जैसे आपको पूर्ण रूप से एहसास होता है कि परमेश्वर आपसे क्या चाह रहा है और शैतान पवित्र आत्मा के नेतृत्व को दबाने के लिए क्या कर रहा है, आप आध्यात्मिक लड़ाई में पूरी तरह से मसीह का अनुसरण करने के लिए स्वतंत्र हो जाएंगे जिसके फलस्वरूप परमेश्वर को और अधिक जानने और उनके शाश्वत परिवार का हिस्सा बनने की इच्छा होगी। परमेश्वर की संतानों के उनकी सृष्टि के भीतर अधिक संवादात्मक बनने के माध्यम से वह संसार में अधिक पूर्ण रूप से ज्ञात और विश्वसनीय हो जाएगा।

VICTORY IN JESUS: Being a Child of God addresses real and serious issues such as the fact that God wants everyone to join His family and the fact that every follower of Jesus belongs first to the Universal Church and then their local congregations. This book also helps followers of Jesus understand their place in God's Family more fully so that they may truly experience more of Jesus' joy as they help one another and bring others into His family and kingdom.

यीशु में विजय : परमेश्वर की संतान होना पुस्तक वास्तविक और गंभीर मुद्दों को संबोधित करती है जैसे कि परमेश्वर चाहता है कि हरेक जन उसके परिवार में शामिल हो और यह तथ्य कि यीशु का प्रत्येक अनुयायी पहले वैश्विक कलीसिया फिर उनकी स्थानीय मंडलियों से संबंधित है। यह पुस्तक यीशु के अनुयायियों को परमेश्वर के परिवार में उनके स्थान को पूरी तरह से समझने में भी मदद करती है ताकि वे वास्तव में यीशु के आनंद का अधिक अनुभव कर सकें क्योंकि वे एक दूसरे की मदद करते हैं और दूसरों को उनके परिवार और राज्य में लाते हैं।

This brief book encourages all of Christ's followers to pursue a proper interactive relationship with God under Jesus' lordship. The readers come to realize more fully that God's love and superiority overcome current trials and tribulations and helps to reveal the deceptions of Satan. It helps shed light on many areas of our lives that flourish with God's leadership and addresses critical spiritual issues shedding light on our ongoing spiritual battles between good and evil.

यह संक्षिप्त पुस्तक यीशु मसीह के सभी अनुयायियों को यीशु के प्रभुत्व के तहत परमेश्वर के साथ उचित संवादात्मक संबंध बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। पाठकों को पूरी तरह से ऐसा एहसास होता है कि परमेश्वर का प्रेम और श्रेष्ठता वर्तमान परीक्षाओं और कष्टों पर नियंत्रण रखता है और शैतान के धोखे को उजागर करने में मदद करता है। यह पुस्तक हमारे जीवन के कई क्षेत्रों पर प्रकाश डालने में मदद करती है जो परमेश्वर के नेतृत्व में फलते फूलते हैं और अच्छे और बुरे के बीच चल रही हमारी आध्यात्मिक लड़ाई पर प्रकाश डालते हुए महत्वपूर्ण आध्यात्मिक मुद्दों को संबोधित करती है।

Over the years, I have seen many Christians who are not very excited about their walk with God. I have come to realize that *Satan has deceived many into thinking that they have been saved through some type of a pass to heaven instead of a genuine relationship with God.* This book will help its readers understand more fully God's desire for everyone to join His eternal close holy family and what that looks like as we live out our lives following Jesus. Following Jesus should produce great joy and inner peace even as His followers go through ongoing spiritual battles.

इन वर्षों में मैंने कई मसीहियों को देखा है जो ईश्वर के साथ चलने को लेकर बहुत उत्साहित नहीं हैं। मुझे ऐसा लगता है कि शैतान ने कई लोगों को यह सोचकर धोखा दिया है कि उन्हें परमेश्वर के संग वास्तविक रिश्ते के बजाय स्वर्ग में किसी अन्य तरीके से बचाया गया है। यह पुस्तक अपने पाठकों को ईश्वर की इच्छा को पूरी तरह से समझने में मदद करेगी कि हर कोई उसके शाश्वत करीबी पवित्र परिवार में शामिल हो और यीशु के हमारे जीवन में आ जाने के बाद हम किस प्रकार जीते हैं। यीशु का अनुसरण करने से बहुत खुशी और आंतरिक शांति पैदा होनी चाहिए भले ही उनके अनुयायी आध्यात्मिक लडाइयों के दौर से गुजर रहे हों।

An exciting eternally rewarding life starts with a genuine commitment to follow Jesus. *God does not accept lukewarm followers.* While under great duress, just prior to going to the Cross for all people of all time, Jesus prayed that those who followed Him would experience the same joy that He was experiencing as He looked at the great salvation made possible for all who learned to love, trust, and obey God (John 17:13). Jesus said that His followers would do greater works than He had done up to the point of His sacrificial death (John 14:12) referring to their future labors when they would join Him in bringing many into God's Kingdom and family through the empowerment of the Holy Spirit. God, the Father, wants Jesus' follower to overcome the deceptions of Satan and lead many into His glorious eternal presence.

एक रोमांचक, शाश्वत रूप से पुरस्कृत जीवन यीशु का अनुसरण करने की वास्तविक प्रतिबद्धता से शुरू होता है। परमेश्वर गुनगुने अनुयायियों को स्वीकार नहीं करता। भारी दबाव में रहते हुए, सभी काल खंड के लोगों के लिए क्रूस पर बलिदान देने जाने से ठीक पहले यीशु ने प्रार्थना की कि जो लोग उसका अनुसरण करेंगे उन्हें उसी आनंद का अनुभव होगा जो वह अनुभव कर रहा था क्योंकि उसने उन सभी के लिए संभव महान उद्धार को देखा था जिन्होंने परमेश्वर से प्यार करना, भरोसा करना और आज्ञापालन करना सीखा था (यूहन्ना 17:13)। यीशु ने अपने भविष्य के परिश्रम का जिक्र करते हुए कहा कि उनके अनुयायी उनके बलिदान से मृत्यु तक किए गए कार्य से भी बड़े कार्य करेंगे यूहन्ना (14: 12) जब वे पवित्र आत्मा के सशक्तिकरण के माध्यम से कई लोगों को परमेश्वर के राज्य और परिवार में लाने में उनके साथ शामिल होंगे। परमेश्वर, पिता चाहता है कि यीशु का अनुयायी शैतान के धोखे पर विजय प्राप्त करे और कई लोगों को उसकी गौरवशाली शाश्वत उपस्थिति में ले जाए।

It is my prayer that the biblical truths within this book will encourage and energize you to study and apply abundantly God's Word, the Bible, to your life. As your understanding of your place in God's family grows, you will find yourself more available to do those things that are pleasing to Him. Enjoy obtaining something more precious than gold as you study the scriptural truths that lie within this little book.

यह मेरी प्रार्थना है कि इस पुस्तक में दी गई बाइबिल की सच्चाइयाँ आपको परमेश्वर के वचन, बाइबिल का, पर्याप्त मात्रा में अध्ययन करने और उसे अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित और ऊर्जावान बनाएंगी। जैसे जैसे परमेश्वर के परिवार में अपने स्थान के बारे में आपकी समझ बढ़ती है आप खुद को उन चीजों को करने के लिए अधिक उपलब्ध पाएंगे जो उन्हें प्रसन्न करती हैं। जब आप इस छोटी सी पुस्तक में निहित बाइबिल के सत्यों का अध्ययन करते हैं तो सोने से भी अधिक कीमती चीज़ प्राप्त करने का आनंद लें।

Table of Contents

Introduction: Transformation Brings Inner Peace 1
- **Godly Fellowship** 5
- **Joining God in His Work** 10

Chapter 1: Understanding Eternal Life 15
- **The Creation Is Moving Toward Its Final Form** 17
- **God Wants To Be Your Friend** 21
- **Getting Off the Wide Road That Leads to Destruction** 22
- **Born To Die Once & Then the Judgment** 26
- **The Ultimate Victory Is Obtained through Following Jesus** 36
- **Making the Best Choices for Eternity** 40

Chapter 2: Jesus Is Lord! 45
- **Jesus' Farewell Discourse and Prayer** 46
- **Jesus Christ Is the Son of the Living God** 49
- **God's Word Guarantees Inner Peace & Joy** 54
- **Repentance: Turning from Self to God** 58
- **Commitment & Discipleship** 61

Chapter 3: Experiencing Good & Evil Demands a Decision 67
- **Evil versus Good** 68
- **Spiritual Warfare in General** 72
- **Spiritual Warfare & Satan's Deceptions** 81
- **Journeying with Others toward Destruction** 83
- **Following Jesus and Intensifying Battles** 86
- **Heaven or Hell?** 91
- **Resist Satan** 100
- **Putting on the Whole Armor of God** 103

Chapter 4: Waking Up Spiritually 107
- **Born into Sin** 110
- **Sin Removal Is Necessary** 114
- **Becoming Sinless (Justification)** 116
- **Choices Have Consequences** 120
- **God Is Always at Work** 128
- **Coming to Our Senses: Spiritual Awakening** 132
- **Is the Cost of Following Jesus Too High?** 135
- **A Personal Testimony** 138
- **Doing the Will of God** 142
- **There Are No Passes to Heaven** 143

Table of Contents (cont.)

Chapter 5: Being a Child of God 147
- **Being Created in the Image and Likeness of God** 151
- **Brothers and Sisters** 152
- **The Completed Family of God** 154
- **Adoption: Our Legal Status as Sons of God** 155
- **Oneness: Extreme Intimacy with God & One Another** 157
- **Jesus Shares His Glory** 160
- **Looking Closely at the Meaning of "One"** 164
- **All Are Equal: the Father Has No Favorites** 168
- **Early Church Understanding** 171
- **God's Grace & Creation Are Hard To Believe** 175

Chapter 6: God's Great Commission 179
- **The Great Commission Is a Call To Bear Much Fruit** 182
- **The Great Commission Is a Work of Love** 186
- **Walking with Others in the Church** 188
- **Knowing and Employing Your Talents** 190
- **Empowerment As Needed** 193
- **Being the Light of the World** 194
- **Intentional Witnessing** 196
- **Witnessing through Actions as Well as Words** 200
- **Conversational Witnessing** 203
- **Important Words and Concepts** 207
- **Stepping Out in Faith in Our Local Communities** 213
- **Being Committed** 214
- **Let's All Follow Jesus** 216

Chapter 7: Sojourning & the Universal Church 219
- **The Universal Church** 221
- **Our Local Churches** 224
- **Being Social** 226
- **Developing & Multiplying Disciples** 227
- **God's Leadership and Our Local Communities** 229

Closing Thoughts 241

Appendix: Reading God's Word Accurately 247

References 251

विषय–सूची

परिचयः परिवर्तन आंतरिक शांति लाता है..... 1
ईश्वरीय संगति..... 5
परमेश्वर के संग उनके कार्य में सहभागी होना..... 10

अध्याय 1: अनन्त जीवन को समझना..... 15
सृष्टि अपने अंतिम स्वरूप की ओर अग्रसर है..... 17
परमेश्वर आपका मित्र बनना चाहता है..... 21
विनाश की ओर ले जाने वाली चौड़ी सड़क से हटना..... 22
एक ही बार मरने के लिए उत्पन्न और फिर न्याय..... 26
यीशु का अनुसरण करने से अंतिम विजय प्राप्त होती है..... 36
अनंत काल के लिए सर्वोत्तम विकल्प बनाना..... 40

अध्याय 2: यीशु ही प्रभु है!..... 45
यीशु का विदाई संवाद और प्रार्थना..... 46
यीशु मसीह जीवित परमेश्वर का पुत्र है..... 49
परमेश्वर का वचन आंतरिक शांति आनंद का दायित्व लेता है..... 54
पश्चातापः स्व से परमेवश्वर की ओर मुड़ना..... 58
प्रतिबद्धता एवं शिष्यत्व..... 61

अध्याय 3: अच्छाई और बुराई का अनुभव निर्णय की माँग करता है..... 67
बुराई बनाम अच्छाई..... 68
सामान्यतः आध्यात्मिक युद्ध..... 72
आध्यात्मिक युद्ध और शैतान के धोखे..... 81
विनाश की ओर ले जाने वाली चौड़ी सड़क..... 83
यीशु का अनुसरण करना और युद्धों को सशक्त करना..... 86
स्वर्ग या नरक..... 91
शैतान का विरोध करें..... 100
परमेश्वर के संपूर्ण कवच को धारण करना..... 103

अध्याय 4: आध्यात्मिक रूप से जागना..... 107
पाप में जन्मे..... 110
पाप निवारण आवश्यक है..... 114
पापरहित बनना (उचित सिद्ध होना)..... 116
विकल्पों के परिणाम होते ह..... 120
परमेश्वर सदैव कार्यरत है..... 128
बोध हो जानाः आध्यात्मिक जागृति..... 132
क्या यीशु का अनुसरण करने की कीमत बहुत अधिक है?..... 135
एक व्यक्तिगत गवाही..... 138
परमेश्वर की इच्छा पूरी करना..... 142
स्वर्ग जाने का कोई अनुमति–पत्र नहीं है..... 143

विषय–सूची (जारी)

अध्याय 5: परमेश्वर की संतान होना..... 147
परमेश्वर के प्रतिरूप और समानता में रचे गए..... 151
भाइयों और बहना..... 152
परमेश्वर का संपूर्ण परिवार..... 154
दत्तक ग्रहणः परमेश्वर के पुत्र के रूप में हमारी वैधता 155
संयुक्तताः परमेश्वर और परस्पर अत्यधिक घनिष्ठता..... 157
यीशु अपनी महिमा साझा करते ह..... 160
"एक होने" के अर्थ को ध्यान से देख 164
सभी समान हैंः पिता पक्षपात नहीं करते ह 168
प्रारंभिक कलीसिया की समझ..... 171
परमेश्वर की कृपा और रचना पर विश्वास करना कठिन है..... 175

अध्याय 6: परमेश्वर की महान आज्ञा 179
महान आज्ञा बहुत अधिक फल उत्पन्न करने का आह्वान ह..... 182
महान आज्ञा प्रेम का कार्य ह..... 186
कलीसिया में दूसरों के साथ चलना 188
अपनी प्रतिभा को जानना और उसका उपयोग करना 190
आवश्यकतानुसार सशक्तिकरण 193
संसार की ज्योति बनना 194
अभिप्राय से गवाही देना 196
कार्य के संग संग शब्दों से भी गवाही देना..... 200
संवादात्मक गवाही 203
महत्वपूर्ण शब्द एवं अवधारणाएँ..... 207
हमारे स्थानीय समुदायों में विश्वास के साथ आगे बढ़ना..... 213
प्रतिबद्ध होना 214
आइए, हम सब यीशु का अनुसरण करें..... 216

अध्याय 7: प्रवास और सार्वभौमिक कलीसिया..... 219
सार्वभौमिक कलीसिया..... 221
हमारी स्थानीय कलीसिया..... 224
सामाजिक होना 226
शिष्यों को विकसित करना और बढ़ाना..... 227
परमेश्वर का नेतृत्व और हमारे स्थानीय समुदाय 229

समापन विचार..... 241

परिशिष्टः परमेश्वर के वचन को सटीकता से पढ़ना 247

संदर्भ..... 251

Introduction: Transformation Brings Inner Peace
परिचयः परिवर्तन आंतरिक शांति लाता है

Be not conformed to this Age, but be transformed by the renewal of your mind proving what is the good, acceptable, and complete will of God.
Romans 12:2[1]

इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओः यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। रोमियों 12:2[1]

All of us have felt God touch and stir our innermost thoughts at various times as He encouraged us to slow down and think about our very existence and His will for our lives. He has awakened some of us in the middle of the night, arrested our thoughts on the way to work, or heightened our senses as we quietly read His Word. During these precious spiritual awakening moments, He has encouraged us to look beyond ourselves and the immediate future to consider all existence, eternity, and how we individually are to fit into the total scheme of things.

हम सभी ने महसूस किया है कि परमेश्वर ने विभिन्न समयों पर हमारे अंतरतम विचारों को स्पर्श और विचलित किया उन्होंने हमें हमारी चाल को मंद करने और हमारे अस्तित्व और हमारे जीवन के लिए उनकी इच्छा के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने हममें से कुछेक को आधी रात में जगाया है, काम पर जाते समय हमारे विचारों को रोका है, या जब हम चुपचाप उसके वचन पढ़ते हैं तो हमारी इंद्रियों को तेज कर दिया। इन अनमोल आध्यात्मिक जागृति के क्षणों के दौरान उन्होंने हमें स्वयं और निकट भविष्य से परे देखने के लिए प्रोत्साहित किया है कि समस्त अस्तित्व, अनंत काल पर विचार किया जा सके और हमें कैसे वैयक्तिक रूप से चीजों की पूर्ण योजना में उपयुक्त होना है।

---

[1] For all New Testament Scripture quotations within this work, I have translated Greek text from the United Bible Societies' 3rd ed. (Nestle 26) into English. इस कार्य में सभी नए नियम के पवित्रशास्त्र उद्धरणों के लिए, मैंने यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज के तीसरे संस्करण (नेस्ले 26) से यूनानी पाठ का अंग्रेजी में अनुवाद किया है।

Most of us feel uncomfortable during these special times because God encourages us to face the reality of His desire for our lives. He tells us on an ongoing basis that He loves us and desires to mold us into caring individuals who will join Him as He ministers to all. During these special times of stirring, He forces us to look beyond the immediate and consider the long range consequences of our actions encouraging us to learn to trust and follow Him so that He can transform us into His loving and morally righteous children.

इन विशेष समयों के दौरान हममें से अधिकांश लोग असहज महसूस करते हैं क्योंकि परमेश्वर उन समयों में हमें हमारे जीवन के लिए उनकी इच्छा की वास्तविकता का सामना करने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह हमें लगातार बताता है कि वह हमसे प्यार करता है और हमें सेवाभावी व्यक्तियों में ढालना चाहता है कि जब वह सब की देखभाल करता है तो हम उसके साथ इस कार्य के लिए जुड़ेंगे। इन विशेष समयों के दौरान विचलित करके वह हमें निकट भविष्य से परे देखने और हमारे कार्यों के दीर्घकालिक परिणामों पर विचार करने के लिए मजबूर करता है जिससे हमें उस पर भरोसा करना और उसका अनुसरण करना सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वह हमें अपने प्रिय व नैतिक रूप से धर्मी संतान में बदल सके।

Where we are today in our relationship with God is not as important as where we will be tomorrow. Wherever we are, He continually shapes us desiring that we ultimately will be able to live with Him in perfect godly unity based on godly love.

परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में हम आज कहाँ हैं यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि हम कल कहाँ होंगे। हम जहां भी हों, वह लगातार हमें इस इच्छा से ढालता है कि हम अंततः ईश्वरीय प्रेम पर आधारित पूर्ण ईश्वरीय एकता में उसके साथ रह पाएंगे।

When you allow God to speak to your heart, He draws you close and encourages you to join Him in His creative work of love as He ministers to all drawing as many as will listen into His eternal close-knit holy family. But, if you allow your own selfishness, exaggerated self-worth (pride), or someone else other than God to guide your life, an emptiness may overshadow you that cannot be filled through any type of general busyness, good works, or entertainment. Although staying busy may temporarily drown out God's voice and block His message of love, it is no substitute for a meaningful relationship with Him, which brings true inner peace coupled with a growing trust in Him.

जब आप परमेश्वर को अपने हृदय से बात करने की अनुमति देते हैं तो वह आपको अपने करीब लाता है और आपको उसके प्रेम के रचनात्मक कार्य में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता है क्योंकि वह उन सभी लोगों की सेवा करता है जो उसके शाश्वत घनिष्ठ पवित्र परिवार की बात सुनेंगे। परन्तु यदि

आप परमेश्वर के अलावा अपने स्वार्थ, अतिरंजित आत्माधिमान (अहंकार) या और किसी को अपने जीवन का मार्गदर्शन करने की अनुमति देते हैं तो एक खालीपन आप पर हावी हो सकता है जिसे किसी भी प्रकार की सामान्य व्यस्तताए अच्छे कार्यों या मनोरंजन से नहीं भरा जा सकता है। हालाँकि व्यस्त रहने से अस्थायी रूप से परमेश्वर की आवाज़ दब सकती है और उनके प्रेम के संदेश में रुकावट आ सकती है लेकिन यह उनके साथ एक सार्थक रिश्ते का विकल्प नहीं है, जो उनके प्रति बढ़ते विश्वास के संग – संग सच्ची आंतरिक शांति लाता है।

As we carry out the will of God, He places inner peace in our hearts through Jesus Christ. Jesus, the Savior of the World, came into our world at His appointed time to provide all humanity forgiveness, purification, and reconciliation through His death on a cross, and Jesus' followers are those who hear and accept this message of love and purification.

जैसे ही हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं वह यीशु मसीह के माध्यम से हमारे दिलों में आंतरिक शांति स्थापित करता है। यीशु संसार के उद्धारकर्ता क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा पूरी मानवता को क्षमा, शुद्धि और मेल–मिलाप प्रदान करने के लिए अपने नियत समय पर इस दुनिया में आए और यीशु के अनुयायी वे हैं जो प्रेम और शुद्धि के इस संदेश को सुनते हैं और स्वीकार करते हैं।

When we turn from our own ways to our Heavenly Father and His ways receiving Him into our lives as our leader, He immediately starts transforming us into the likeness of His Son, Jesus, replacing our emptiness, shame, and fear with love, joy, and inner peace. This peace comes only through making peace with the One who created us for a caring fellowship full of good woks. Through submission to God's will, God's love and resulting hierarchy of order enables us to live in peace and harmony with Him and all others who have submitted to His lordship.

जब हम अपने मार्गों से हटकर अपने स्वर्गीय पिता और अपने जीवन में उसे अपने अगुए के रूप में स्वीकार करने के उसके मार्गों की ओर मुड़ते हैं तो वह तुरंत हमें अपने पुत्र यीशु की समानता में बदलना शुरू कर देता है और हमारे खालीपन, शर्म और भय को प्रेम, आनंद और आंतरिक शांति से बदल देता है। यह शांति केवल उस व्यक्ति के साथ शांति बनाए रखने से आती है जिसने हमें अच्छे कामों से परिपूर्ण संगति के लिए बनाया है। परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण के माध्यम से ईश्वर का प्रेम और उसके फलस्वरूप पदानुक्रम हमें उसके और अन्य सभी लोगों के साथ शांति और सद्भाव से रहने में सक्षम बनाता है जिन्होंने उसके आधिपत्य के प्रति समर्पण किया है।

Submitting to the Creator's authority is difficult at first because we have to learn to put our own interests on an equal footing with all others and allow God to direct us. With God's help, we can be

developed beyond our initial child-like selfish nature. Although we are born into this world with a child-like nature that many times wants immediate satisfaction and disregards the cost of our actions to others, God has a perfect plan of development for each of us.

पहले सृष्टिकर्ता के अधिकार के प्रति समर्पित होना कठिन है क्योंकि हमंक अपने हितों को अन्य सभी के साथ समान स्तर पर रखना सीखना होगा और परमेश्वर को हमें निर्देशित करने की अनुमति देनी होगी। परमेश्वर की सहायता से हम अपने आरंभिक बच्चों जैसे स्वार्थी स्वभाव से दूर जाकर विकसित हो सकते हैं। यद्यपि हम इस संसार में एक बच्चे जैसी प्रकृति के साथ पैदा हुए हैं जो कई बार तुरंत संतुष्टि चाहता है और दूसरों के लिए हमारे कार्यों की कीमत की उपेक्षा करता है तौभी परमेश्वर के पास हम में से प्रत्येक के लिए विकास की एक आदर्श योजना है।

If we allow God to develop us to be more like Jesus, we will not live out our physical lives as if there were no future and end up separated from God for eternity. We will learn to listen to our Heavenly Father through Jesus' leadership through the Holy Spirit and trust and obey God because of His great ongoing unbiased love for all. If we truly want everlasting peace and harmony, we will learn to accept God's will above our own knowing that His ways will bring good to us and all who listen. When we make a conscious effort to submit to our Heavenly Father and turn from our way of life to His, which is called "repentance," we immediately obtain ***victory*** over this world and death. Upon genuine repentance, submission, and commitment, God has promised that He will conform our nature into the image of His Son Jesus, the Prophesied Messiah (Christ), free from sin.

यदि हम परमेश्वर को हमें यीशु की तरह विकसित करने की अनुमति देते हैं तो हम अपने भौतिक जीवन को ऐसे नहीं जीएंगे जैसे कि कोई हमारा भविष्य नहीं है या हम अनंत काल के लिए परमेश्वर से अलग हो जाएंगे। हम पवित्र आत्मा के माध्यम से, यीशु के नेतृत्व के माध्यम से अपने स्वर्गीय पिता की बात सुनना सीखेंगे और सभी के लिए उनके महान निष्पक्ष प्रेम के कारण परमेश्वर पर विश्वास करना और उसका पालन करना सीखेंगे। यदि हम वास्तव में स्थायी शांति और सद्भाव चाहते हैं तो हम परमेश्वर की इच्छा को अपनी इच्छा से ऊपर स्वीकार करना सीखेंगे यह जानते हुए कि उनके मार्ग हमारे और सुनने वाले समस्त लोगों के लिए अच्छे होंगे। जब हम अपने स्वर्गीय पिता के प्रति समर्पण करने का सचेत प्रयास करते हैं और अपने जीवन के तरीके को छोड़कर उनकी ओर मुड़ते हैं जिसे "पश्चाताप" कहा जाता है तो हम तुरंत इस संसार और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। वास्तविक पश्चाताप समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए परमेश्वर ने वादा किया है कि वह हमारे स्वभाव को अपने पुत्र यीशु, भविष्यवाणी किए गए (मसीहा), मसीह के प्रतिरूप में पाप से मुक्त कर देंगे।

Godly Fellowship
ईश्वरीय सहभागिता

When speaking of solitary individuals, "one" is a lonely number that in reality applies to God as well as humanity. In spite of the many forms of life created at the beginning of the Creation, God said that it was not good for Adam to be without a suitable help mate, and therefore, He created Eve whom Adam could relate to as a partner and share his life.

अकेले व्यक्तियों की बात करते समय "एक" वह अकेली संख्या है जो वास्तव में परमेश्वर के साथ–साथ मानवता पर भी लागू होती है। सृष्टि की शुरुआत में बनाए गए जीवन के कई रूपों के बावजूद परमेश्वर ने कहा कि आदम के लिए एक उपयुक्त सहायक के बिना रहना अच्छा नहीं था और इसलिए उसने हवा को बनाया जिसके साथ आदम एक साथी के रूप में जुड़ सकता था और अपना जीवन साझा कर सकता था।

Similarly, we see our Heavenly Father working with His beloved Son, Jesus, creating a people who could provide suitable companionship for Him. A people whom the Father, Son, and Holy Spirit could relate to and share their lives; a people who could join Them in their good works. They are asking all people to join them in a mature eternal free-will interactive relationship that provides great joy and peace; this relationship is based on godly unity, a "one/oneness," that brings great joy and inner peace.

इसी प्रकार हम अपने स्वर्गीय पिता को अपने प्रिय पुत्र यीशु के साथ कार्य करते हुए ऐसे लोगों का निर्माण करते हुए देखते हैं जो उसके लिए उपयुक्त सहयोग प्रदान कर सकें। ऐसे लोग जिनसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा संबंधित हो सकते थे और अपना जीवन साझा कर सकते थे ऐसे लोग जो उनके अच्छे कार्यों में उनके साथ शामिल हो सकें। वे सभी लोगों से एक परिपक्व, शाश्वत, स्वतंत्र–इच्छा से प्रेरित होकर संवादात्मक संबंध मंथ शामिल होने के लिए कह रहे हैं जो बहुत खुशी और शांति प्रदान करता है। यह संबंध ईश्वरीय एकता "संयुक्त होने/ एकता" पर आधारित जो अत्यंत खुशी और आंतरिक शांति लाता है।

During our time on Earth, God normally interacts with all people mostly unseen and yet closely as a loving parent. He watches over His children carefully. Yet, He cannot fully share His life with us on a mature level until we are perfected, which includes removal of all of our bad actions (sin). Similarly as adults, we cannot live on the same level of intimacy with our young children as we can with some of our adult children and mature close friends.

पृथ्वी पर हमारे समय की अवधि में परमेश्वर आम तौर पर एक प्यारे माता–पिता के रूप में सभी लोगों के साथ ज्यादातर अदृश्य तौभी निकटता से बातचीत करता है। वह अपने बच्चों पर ध्यानपूर्वक नज़र रखता है। फिर भी जब तक हम सिद्ध नहीं हो जाते जिसमें हमारे सभी बुरे कार्यों (पाप) को दूर करना शामिल है तब तक वह अपने जीवन को परिपक्व स्तर पर हमारे साथ पूरी तरह से साझा नहीं कर सकता है। इसी प्रकार वयस्कों के रूप में हम अपने छोटे बच्चों के साथ उसी स्तर की अंतरंगता के साथ नहीं रह सकते हैं जिस स्तर पर हम अपने कुछ वयस्क बच्चों और परिपक्व नजदीकी मित्रों के साथ रह सकते हैं।

To make a close, mature, and eternal relationship possible, our Heavenly Father is at work in a special way developing those who listen. He develops us daily encouraging us to join Him in His good works, and He waits for the time that He will bring us Home to be in Heaven with Him for eternity. In a similar manner, we work with our children as they are developing waiting for the day that we may obtain a closer mature relationship with them as adults.

एक नजदीकी, परिपक्व और शाश्वत संबंध को संभव बनाने के लिए हमारे स्वर्गीय पिता एक विशेष तरीके से उनकी सुनने वालों को विकसित करने के लिए कार्य कर रहे हैं। वह हमें प्रतिदिन अपने अच्छे कार्यों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हुए विकसित करता है और वह उस समय की प्रतीक्षा करता है जब वह हमें अनंत काल तक स्वर्ग में रहने के लिए घर लाएगा। इसी रीति से हम अपने बच्चों के साथ काम करते हैं क्योंकि वे उस दिन की प्रतीक्षा में बड़े हो रहे हैं जब हम वयस्कों के रूप में उनके साथ घनिष्ठ परिपक्व संबंध प्राप्त कर सकें।

There is one major difference between God's development for us and our development for our children. God promises all who accept His love through submission of their will to His that He will ***totally transform*** their nature to be like Jesus' yet keeping each's individualism intact.

देखने में आता है कि परमेश्वर का विकास और हमारे बच्चों के लिए हमारे विकास के बीच एक बड़ा अंतर है। परमेश्वर उन सभी से वादा करता है जो अपनी इच्छा को उसके प्रति समर्पित कर देते हैं और उसके प्रेम को स्वीकार करते हैं कि वह उनके स्वभाव को पूरी तरह से यीशु के समान बदल देगा साथ ही प्रत्येक व्यक्ति के वैयक्तिकपन को भी बनाए रखेगा।

Abundant free will plays a strong role in God's desire for fellowship with us. Although God strongly encourages all people to learn to live with Him and each other in godly fellowship, He does not force anyone to do so. God gives all people the ability to accept or reject His love and authority.

पर्याप्त स्वतंत्र इच्छा परमेश्वर की हमारे साथ संगति करने में एक मजबूत भूमिका निभाती है। हालाँकि परमेश्वर सभी लोगों को दृढ़तापूर्वक प्रोत्साहित करता है कि वे उसके साथ और एक दूसरे के साथ ईश्वरीय संगति में रहना सीखें किंतु वह किसी को भी ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं करता है। परमेश्वर सभी लोगों को उसके प्रेम और अधिकार को स्वीकार या अस्वीकार करने की क्षमता देता है।

But, beware, abundant free will does not give us a license to do whatever we want without eventually paying tremendous consequences for our actions against God and man. If we do not allow God to develop us into good social beings, He separates us from Himself and His obedient children for eternity. If we do not listen to God, which includes joining Him in His Great Work of Love, ***which is the Realization of His Creation through the Cross with its New Heaven and Earth and perfected family,*** we will not have eternal fellowship with Him within His eternal holy family.

किंतु सावधान रहें प्रचुर स्वतंत्र इच्छा हमें वह करने की छूट नहीं देती जो हम चाहते हैं अंततः परमेश्वर और मनुष्य के खिलाफ होकर, हमारे कार्यों के लिए भयंकर परिणाम चुकाना पड़ता है। यदि हम परमेश्वर को हमें अच्छे सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करने की अनुमति नहीं देते हैं तो वह हमें स्वयं और अपने अन्य आज्ञाकारी बच्चों से अनंत काल के लिए अलग कर देता है। यदि हम परमेश्वर की बात नहीं सुनते हैं जिसमें उनके प्रेम के महान कार्य में शामिल होना शामिल है, जो कि उनके नए स्वर्ग और नयी पृथ्वी के सिद्ध परिवार के साथ क्रूस के माध्यम से उनकी रचना का एहसास है तो हमें उनके शाश्वत पवित्र परिवार के भीतर उनके साथ शाश्वत संगति नहीं मिलेगी।

Abundant free will is essential in God's plan for an equal, mature, and multi-person relationship with all who listen. Give-and-take relationships based upon ***equality of being*** require free will. Until we learn to truly love God and each other as Jesus loves us, our self-centeredness and pride will continue to hurt others producing heart-felt pain for all. We should strive to love one another with the same love and compassion that the Father, Jesus, and the Holy Spirit have for us. Their incredible love for us compelled Jesus to follow our Heavenly Father's will and die on a cross making a way for all to live with them in sinless peace and harmony forever.

परमेश्वर की योजना में उनकी सुनने वाले सभी लोगों के साथ समान परिपक्व और बहुव्यक्ति संबंध के लिए पर्याप्त स्वतंत्र इच्छा का होना आवश्यक है। समानता पर आधारित लेन–देन के संबंधों के लिए स्वतंत्र इच्छा की आवश्यकता होती है। जब तक हम परमेश्वर और आपस में सच्चा प्यार करना नहीं सीखते जैसे यीशु हमसे प्यार करते हैं तब तक हमारी आत्म–केंद्रितता और अहंकार दूसरों को चोट पहुँचाता रहेगा जिससे सभी को दिल से कष्ट होगा।

हमें एक–दूसरे से उसी प्रेम और करुणा के साथ प्रेम करने का प्रयास करना चाहिए जो पिता, यीशु और पवित्र आत्मा ने हमारे लिए रखा है। हमारे प्रति उनके अविश्वसनीय प्रेम ने, यीशु को हमारे स्वर्गीय पिता की इच्छा का पालन करने और क्रूस पर मरने के लिए मजबूर किया जिससे सभी के लिए पाप रहित शांति और सद्भाव में हमेशा के लिए रहने का रास्ता बन गया।

Jesus has demonstrated His love for us and commands us to love our neighbors as He loves us. Now, we must allow God to teach us to love as He loves; our love for one another should be based on God's love for us not on how we feel.

यीशु ने हमारे प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया है और हमें आदेश दिया है कि हम अपने पड़ोसियों से वैसे ही प्रेम करें जैसे वह हमसे करते हैं। अब, हमें परमेश्वर को अनुमति देनी चाहिए कि वह हमें उसी प्रकार प्रेम करना सिखाए जैसा वह प्रेम करता है; हमारा प्यार एक–दूसरे के प्रति इस पर आधारित होना चाहिए कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करते हैं न कि इस बात पर कि हम कैसा महसूस करते हैं।

Although there is much pain associated with our earthly stages of development, there is a much greater joy associated with our godly transformation as our nature becomes more and more like Jesus'. As part of the Creation, God has given all of us some of His own personal qualities that can be developed if we listen to Him. As we submit to His will, He develops our nature to include more and more grace and truthfulness.

यद्यपि, हमारे सांसारिक विकास के चरणों के साथ बहुत अधिक दर्द जुड़ा हुआ है, लेकिन हमारे ईश्वरीय परिवर्तन के साथ बहुत अधिक खुशी जुड़ी हुई है क्योंकि इस परिवर्तन के कारण अधिकाधिक हमारा स्वभाव अधिक यीशु के जैसा होता जा रहा है। सृष्टि का भाग होने के कारण परमेश्वर ने हम सभी को अपने कुछ व्यक्तिगत गुण दिए हैं जिन्हें अगर हम उनकी बात सुनें तो विकसित किया जा सकता है। जैसे – जैसे हम उसकी इच्छा के प्रति समर्पण करते हैं, वह अधिक से अधिक अनुग्रह और सच्चाई को शामिल करने के लिए हमारे स्वभाव को विकसित करता है।

None of us walk perfectly with God, yet we have peace knowing that God is not looking so much at the present, but instead He is looking down the road into eternity. As God put the Creation into motion, He looked into the future and said that His Creation with its abundant free will, which resulted in a fair amount of sin and resulting tribulation, would in the long run end up with an ultimate victory for all who learned to live with Him according to His holy ways. And considering the final outcome, He said that His Creation was "good-exceedingly."

हममें से कोई भी परमेश्वर के साथ सिद्ध होकर नहीं चलता है फिर भी हमें यह जानकर शांति मिलती है कि परमेश्वर वर्तमान में इतना नहीं देख रहा

है, बल्कि वह अनंत काल की ओर देख रहा है। जैसे ही परमेश्वर ने सृष्टि को गति दी उन्होंने भविष्य की ओर देखा और कहा कि उनकी रचना अपनी प्रचुर स्वतंत्र इच्छा के साथ, हांलांकि जिसके परिणामस्वरूप काफी मात्रा में पाप हुआ और जिसके परिणामस्वरूप क्लेश भी हुआ, लंबे समय में जाकर अंतिम जीत हासिल करेगी, जिन्होंने उनके पवित्र मार्गों के अनुसार उनके साथ रहना सीखा। और अंतिम परिणाम पर विचार करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी रचना "बेहद अच्छी" थी।

Knowing that all of us would go through some stages of rebellion, our Heavenly Father has provided ***all*** people a path, a journey through life, that leads to maturity, perfection, and peace if we listen to Him. This one and only path leading to eternal joy and inner peace starts by obediently following His son, Jesus. Keep in mind that Jesus is the one who created physically, the entire Universe.

यह जानते हुए कि हम सभी विद्रोह के कुछ चरणों से गुजरेंगे हमारे स्वर्गीय पिता ने सभी लोगों को एक मार्ग प्रदान किया है, जीवन की एक यात्रा प्रदान की है, जो परिपक्वता पूर्णता और शांति की ओर ले जाती है यदि हम उसकी बात सुनते हैं। शाश्वत आनंद और आंतरिक शांति की ओर ले जाने वाला यह एकमात्र मार्ग आज्ञाकारी रूप से उनके पुत्र यीशु का अनुसरण करने से शुरू होता है। स्मरण रखिए कि यीशु ही वह व्यक्ति है, जिसने संपूर्ण ब्रह्मांड को भौतिक रूप से बनाया है।

God knew before He physically created our world that all would initially go through times of disobedience as we developed. Therefore, prior to implementing the physical Creation, the Father made plans to send Jesus to the Cross to atone for our disobedience and to cleanse/remove our bad actions if we would learn to return His love and desire His way of life.

परमेश्वर ने भौतिक रूप से हमारी दुनिया बनाने से पहले ही जान लिया था कि जैसे–जैसे हम विकसित होंगे प्रारंभ में सभी को अनाज्ञाकारिता के दौर से गुजरना होगा। इसलिए भौतिक रूप से संसार रचने से पूर्व पिता ने हमारे आज्ञा उल्लंघन का प्रायश्चित करने और हमारे बुरे कार्यों को शुद्ध करने/ मिटाने के लिए यीशु को क्रूस पर भेजने की योजना बनाई। अगर हम उनके प्रेम को लौटाना चाहते हैं तो उनके तरीके से जीवन जीने की इच्छा करना चाहिए।

He gave Jesus the responsibility of saving us and guiding us home to be with Them forever. As we follow Jesus, our Heavenly Father continually offers us a fresh start through repentance, which includes turning from our way of life to His and asking for forgiveness of our wrongdoings. Therefore, we must stop being a slave to our past sins. God encourages us to pray for forgiveness of our sins and make atonement for them and forget them as we strive to walk in His ways proclaiming His goodness to those who will listen.

उसने यीशु को हमें बचाने और हमेशा उनके साथ रहने के लिए घर ले जाने की जिम्मेदारी दी। जैसे ही हम यीशु का अनुसरण करते हैं हमारा स्वर्गीय पिता हमें लगातार पश्चाताप के माध्यम से एक नई शुरुआत प्रदान करता है जिसमें हमारे जीवन जीने के तरीके से उसकी ओर मुड़ना और हमारे गलत कामों के लिए क्षमा मांगना शामिल है। इसलिए हमें अपने अतीत के पापों का दास बनना बंद कर देना चाहिए। परमेश्वर हमें अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करने और उनके लिए प्रायश्चित करने और उन्हें भूलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं क्योंकि हम उनके रास्ते पर चलने का प्रयास करते हैं और उन लोगों के लिए उनकी अच्छाई की घोषणा करते हैं जो सुनना चाहेंगे।

We cannot learn to have this full-time relationship with our Heavenly Father exclusively through head knowledge, our parents, friends, or positions within our local churches. Although many of us attend a local church regularly and contribute something to God's work through the giving of our time and resources, God is asking everyone to join Him in something much more fulfilling than being a spectator or lukewarm part-time follower of Jesus. God is asking all of us to join Him in a ***full-time*** interactive personal relationship that is so powerful that it will transform the very nature of our lives and those around us for eternity. But take note, we must ***each*** decide to accept or reject His full-time eternal interactive plan for our lives.

हम अपने स्वर्गीय पिता के साथ इस पूर्णकालिक संबंध को विशेष रूप से अपने ज्ञान अपने माता–पिता, मित्रों, या अपने स्थानीय चर्चों में पदों के माध्यम से नहीं सीख सकते हैं। हालाँकि हम में से कई लोग नियमित रूप से स्थानीय चर्च में जाते हैं और अपना समय और संसाधन देकर परमेश्वर के कार्य में कुछ योगदान देते हैं। परमेश्वर सबको यीशु के मात्र एक दर्शक या गुनगुने अंशकालिक अनुयायी होने की तुलना में कहीं अधिक संतुष्टिदायक कार्य में शामिल होने के लिए कह रहा है। परमेश्वर हम सभी से एक पूर्णकालिक संवादात्मक व्यक्तिगत रिश्ते में शामिल होने के लिए कह रहा है जो इतना शक्तिशाली है कि यह अनंत काल के लिए हमारे जीवन और हमारे आसपास के लोगों की प्रकृति को बदल देगा। लेकिन ध्यान रखिए हममें से प्रत्येक को अपने जीवन के लिए उसकी पूर्णकालिक शाश्वत योजना को स्वीकार या अस्वीकार करने का निर्णय लेना चाहिए।

Joining God in His Work
परमेश्वर के कार्य में शामिल होना

Beware, Satan is at work in our busy world trying to destroy as many lives as possible. There are many people who are being distracted by him, and therefore, they are not listening to God. Many of the distractions are temporarily pleasing to us. Individuals who are being

distracted by Satan can keep us so preoccupied through work or entertainment that we do not take any real time to listen to the Creator. In addition, when we decide to listen for a few moments and then discuss God with fellow followers of Jesus, we may come away discouraged because some, who claim to follow Jesus, do not know God personally; they only know ***about*** Him. If we ask and follow their advice as we seek to follow God's will, we will hear many mixed messages.

सावधान रहिए, शैतान हमारी व्यस्त दुनिया में यथासंभव अधिक से अधिक जीवनों को नष्ट करने का प्रयास कर रहा है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो उससे विचलित हो रहे हैं और इसलिए वे परमेश्वर की बात नहीं सुन रहे हैं। कई भटकाव अस्थायी रूप से हमें प्रसन्न करते हैं। जो व्यक्ति शैतान द्वारा विचलित हो रहे हैं वे हमें कार्य या मनोरंजन में इतना व्यस्त रख सकते हैं कि सृष्टिकर्ता की बात सुनने के लिए हम कोई समय ही नहीं रखते हैं। इसके अलावा जब हम कुछ क्षण सुनने और फिर यीशु के अनुयायी मित्रों के संग परमेश्वर पर चर्चा करने का निर्णय लेते हैं तो हम निराश हो सकते हैं क्योंकि कुछ लोग जो यीशु का अनुसरण करने का दावा करते हैं वे अपने जीवन में व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर को नहीं जानते हैं। वे केवल परमेश्वर के बारे में सतही तौर पर जानते हैं। यदि हम परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हुए उनकी सलाह मांगते हैं और उसका पालन करते हैं तो हमें कई मिले जुले संदेश सुनने को मिलेंगे।

When our Father speaks to you, do not let Satan come and steal away the gold that God gives you. Read His written Word, the Bible, on a regular basis and let Him speak to your heart confirming in you that He is real, awesome, loves you, and wants to guide your life. Jesus continually listens to the Father and guides all who listen with Him on a path to eternal joy and peace, and He strongly warns all of us about going off and doing ministry under our own power instead of being directed and empowered by Him.

जब हमारे पिता तुम से बातें करें तो शैतान को आकर उस स्वर्ण को जो परमेश्वर तुम्हें देता है, चुराने मत दीजिए। उसके लिखित वचन अर्थात बाइबल को नियमित रूप से पढ़ें और उसे अपने दिल से बात करने दें जिससे आपको यह पुष्टि हो सके कि वह वास्तविक है, अद्‌भुत है, आपसे प्यार करता है और आपके जीवन का मार्गदर्शन करना चाहता है। यीशु लगातार पिता की बात सुनते हैं और जो भी उनके साथ सुनते हैं, उन्हें शाश्वत आनंद और शांति के मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं और वह हम सभी को हमारी अपनी शक्ति के तहत सेवकाई करने के बजाय उनके द्वारा निर्देशित और सशक्त होने के बारे में दृढ़ता से चेतावनी देते हैं।

This book will supply you with the conceptual tools needed to understand God, His Creation, and your place within His Creation more fully as you study key scriptures within the Bible.

You are very precious to God and He has good things stored up for you to do. As we listen to God, He teaches us to work together in godly unity with Him in our communities and around the world proclaiming His grace through our actions as well as our words.

जब आप बाइबल के प्रमुख ग्रंथों का अध्ययन करेंगे तो यह पुस्तक आपको परमेश्वर उनकी रचना और उनकी रचना में आपके स्थान को पूरी तरह से समझने के लिए आवश्यक वैचारिक साधन प्रदान करेगी। आप परमेश्वर के लिए बहुत अनमोल हैं और उसके पास आपके करने के लिए अच्छी चीजें संग्रहित हैं। जैसे ही हम परमेश्वर की बात सुनते हैं वह हमें हमारे समुदायों और दुनिया भर में उसके साथ ईश्वरीय एकता में काम करना सिखाता है और हमारे कार्यों के साथ–साथ हमारे शब्दों के माध्यम से उसकी कृपा की घोषणा करता है।

Note: Before proceeding, let's look at the basic relationship between several individuals and how they will be declared throughout this book: God, Creator, Father, and Heavenly Father; Son, Jesus, Jesus Christ, Messiah, the Anointed One, and Eldest Brother; and Holy Spirit, the Spirit of Truth. Scripturally, the term "God" refers normally to all three, the "Father," "Son," and "Holy Spirit," working together in perfect "oneness" (Tri-unity/Trinity) ***or*** solely to the Father because of His supreme authority and power over all including Jesus, the Messiah, and the Holy Spirit. Although the Father, Son, and Holy Spirit work together in perfect unity under the eternal leadership of the Father, there are many circumstances in which one of them has a predominate role in some action. Their predominate roles are normally emphasized by specifically referring to the appropriate individual for that particular circumstance remembering that they are always working ***together*** in perfect godly unity. In no circumstance, can you leave one of them out of the picture and see it clearly.

ध्यान दीजिए, आगे बढ़ने से पहले आइए कई व्यक्तियों के बीच बुनियादी संबंधों को देखें और उन्हें इस पुस्तक में कैसे संबोधित किया जाएगा जैसेः परमेश्वर, निर्माता, पिता और स्वर्गीय पिता, पुत्र, यीशु, यीशु मसीह, मसीहा, अभिषिक्त व्यक्ति और सबसे बड़ा भाई और पवित्र आत्मा सत्य की आत्मा। बाइबल के अनुसार "परमेश्वर" शब्द आम तौर पर तीनों "पिता" "पुत्र" और "पवित्र आत्मा" को संदर्भित करता है जो पूर्ण एकता (त्रिएकता/त्रिएकत्व) में एक साथ कार्य करते हैं या केवल पिता को यीशु मसीहा और पवित्र आत्मा सहित सभी पर उनके सर्वोच्च अधिकार और शक्ति के कारण संदर्भित करते हैं। हालाँकि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा पिता के शाश्वत नेतृत्व के तहत पूर्ण एकता में एक साथ काम करते हैं। ऐसी कई परिस्थितियाँ हैं जिनमें उनमें से किसी एक की किसी कार्य में प्रमुख भूमिका होती है। उनकी प्रमुख भूमिकाओं पर आम तौर पर विशेष रूप से उस विशेष परिस्थिति के लिए उपयुक्त व्यक्ति का

जिक्र करके जोर दिया जाता है यह याद रखते हुए कि वे हमेशा पूर्ण ईश्वरीय एकता में एक साथ काम कर रहे हैं। किसी भी परिस्थिति में आप उनमें से किसी एक को तस्वीर से बाहर नहीं रख सकते और उसे स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते।

Chapter 1: Understanding Eternal Life
अध्याय 1, शाश्वत जीवन को समझना

If you remain in my word, you are truly my disciples, and you shall know the truth (reality), and the truth shall set you free. John 8:31-32

तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। यूहन्ना 8:31–32

If we continue to take time to study and act on God's Word, Jesus will teach us to know and act on truth/reality so that we may be freed from our individual desires to sin. Our desire to sin is caused primarily by our selfishness, lack of godly knowledge, and direct disobedience and rebellion against God.[2] Our Heavenly Father has appointed Jesus Christ to free all who listen so that we may eventually live together in perfect fellowship with no more sorrows.[3] As we read on a regular basis and obediently act on God's Word, we learn God's ways more fully and are more open to His leading as He guides us during our life on Earth. Our Heavenly Father promises all who listen that He will work with us and complete our perfection including complete sin removal.[4] Our nature will eventually be totally transformed to be like Jesus'.[5]

अगर हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और उस पर कार्य करने के लिए समय निकालते रहेंगे तो यीशु हमें सत्य/ वास्तविकता को जानना और

---

[2] John 18:37; 2 Tim 4:3-4; 1 Peter 1:13-14; 2 Peter 1:4; Jude 14-18. यूहन्ना 18:37; 2 ति 4:3–4; 1 पत 1:13–14; 2 पत 1:4; यहूदा 14–18.

[3] Rev 21:3-4. प्रका 21:3–4.

[4] Gal 3:13-14; Col 2:13-14; 2 Cor 5:21; 1 Peter 2:24; cf. Isa 53:5. गला 3:13–14; कुलु. 2:13–14; 2 कुरू 5:21; 1 पतरस 2:24; यशा 53:5.

[5] Phil 1:6; Rom 8:28-30; 1 John 3:1-3. फिल 1:6; रोमियों 8:28–30; 1 यूहन्ना 3:1–3.

उस पर कार्य करना सिखाएंगे ताकि हम पाप करने की अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं से मुक्त हो सकें। पाप करने की हमारी इच्छा प्रमुख रूप से हमारे स्वार्थ, ईश्वरीय ज्ञान की कमी और ईश्वर के प्रति सीधे आज्ञा उल्लंघन और विद्रोह के कारण होती है।[2] हमारे स्वर्गीय पिता ने यीशु मसीह को उन सभी को मुक्त करने के लिए नियुक्त किया है जो सुनते हैं ताकि हम अंततः बिना किसी दुख के पूर्ण संगति में एक साथ रह सकें।[3] जैसे–जैसे हम नियमित आधार पर पढ़ते हैं और आज्ञाकारी रूप से परमेश्वर के वचन पर कार्य करते हैं हम परमेश्वर के तरीकों को और अधिक पूरी तरह से सीखते हैं और उनके नेतृत्व के लिए अधिक तैयार होते हैं क्योंकि वह पृथ्वी पर हमारे जीवन के दौरान हमारा मार्गदर्शन करते हैं। हमारे स्वर्गीय पिता उन सभी से वादा करते हैं जो सुनते हैं कि वह हमारे साथ काम करेंगे और पूरी तरह से पाप से मुक्ति सहित हमारी पूर्णता को पूरा करेंगे।[4] अंततः हमारा स्वभाव पूरी तरह से यीशु की तरह बदल जाएगा।[5]

After God created the universe and our immediate world according to types, They created us ***in Their own image*** according to ***Their own likeness*** for eternal fellowship.[6] God wants a mature intimate relationship with us, and although They have created everyone for eternal fellowship and good works with Them, They do not force anyone to join Them. Over time, They teach and perfect all who learn to trust and obey Them because of Their great love for all.

परमेश्वर ने ब्रह्मांड और हमारे वर्तमान संसार को विभिन्न प्रकार के अनुसार बनाने के पश्चात हमें शाश्वत संगति के लिए अपनी समानता के अनुसार अपनी छवि में बनाया।[6] परमेश्वर हमारे साथ एक परिपक्व अंतरंग संबंध चाहते हैं और यद्यपि उन्होंने सभी को उनके साथ शाश्वत संगति और अच्छे कार्यों के लिए बनाया है वे किसी को भी अपने साथ शामिल होने के लिए मजबूर नहीं करते हैं। समय के साथ वे उन सभी को सिखाते और परिपूर्ण करते हैं जो सबके लिए उनके महान प्रेम के कारण उन पर विश्वास करना और उनका पालन करना सीखते हैं।

Because of our initial immaturity, our Heavenly Father deliberately starts our eternal life with a physically and spiritually limited capacity to slow us down and give us a chance to consider and choose between an eternal life of ***good***, which is based on learning to love through submission to His will, or ***evil***, which is based on maintaining a self-centered selfish life through ongoing disobedience to Him and His way of life. God's love is based on impartial love for ***all***.

हमारी आरंभिक अपरिपक्वता के कारण हमारे स्वर्गीय पिता जानबूझकर हमारी शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से सीमित क्षमता के बावजूद हमारे साथ शाश्वत जीवन की शुरुआत करते हैं और हमें भला शाश्वत जीवन, जो उनकी

---

[6] Gen 1:26-27. उत्प 1:26–27.

इच्छा के प्रति समर्पण के माध्यम से प्यार करना सीखने पर आधारित है, या बुराई वाला जीवन, जो उनके और उनके जीवन के तरीके के प्रति निरंतर अवज्ञा के द्वारा एक आत्मकेंद्रित स्वार्थी जीवन बनाए रखने पर आधारित है, के बीच में चुनाव करने का मौका देते हैं। परमेश्वर का प्रेम सभी के प्रति निष्पक्ष प्रेम पर आधारित है।

Our limited physical capacity stops us from destroying ourselves and everyone around us immediately although there is plenty of destruction and hurt in the creation process. You wouldn't give a three year old a five-thousand pound automobile to drive, would you? If we allow God to mature us, we are given much greater ability and corresponding power after our physical death,[7] and through God's righteous assigned good works for each of us, we will help many people along our individual life journeys.

हमारी सीमित शारीरिक क्षमता हमें स्वयं को और अपने आसपास के सभी लोगों को एकाएक नष्ट करने से रोकती है यधपि निर्माण प्रक्रिया में बहुत अधिक विनाश और चोट जुड़ी होती है। आप तीन साल के बच्चे को पाँच हज़ार पाउंड की कार चलाने के लिए नहीं देंगे है ना? यदि हम परमेश्वर को हमें परिपक्व करने की अनुमति देते हैं तो हमारी शारीरिक मृत्यु के बाद हमें बहुत अधिक क्षमता और तदनुरूपी शक्ति दी जाती है,[7] और हममें से प्रत्येक के लिए परमेश्वर द्वारा सौंपे गए अच्छे कार्यों के माध्यम से हम अपनी व्यक्तिगत जीवन यात्रा में कई लोगों की मदद करेंगे।

The Creation Is Moving toward Its Final Form
सृष्टि अपने अंतिम स्वरूप की ओर बढ़ रही है

Keep in mind that this is God's creation! He knows what He is doing, and He is totally capable of completing it perfectly! After the start of His Creation, God considered what He had done and where it was headed according to His plans, and He said that it was "good exceedingly [Gen 1:31]." Prior to physically starting the Creation, God knew how each person throughout the entire Creation would respond to His love and lordship (foreknowledge).[8]

---

[7] Rom 8:16-18; 1 John 3:1-3; Rev 3:20-21. रोमि 8:16–18; 1 यूहन्ना 3:1–3; प्रका 3:20–21.

[8] Eph 1:3-8; 1 Peter 1:1-2; Rom 8:28-30. इफि 1:3–8; 1 पतरस 1:1–2; रोमि 8:28–30.

यह बात ध्यान में रखें कि यह परमेश्वर की रचना है! वह भली–भांति जानता है कि वह क्या कर रहा है, और वह इसे पूर्ण रूप से सिद्ध करने में पूरी तरह सक्षम है! अपनी सृष्टि की शुरुआत के बाद, परमेश्वर ने जो कुछ उसने किया था और जो उसकी योजनाओं के अनुसार आगे होने वाला था, उस पर विचार किया और कहा कि यह "अत्यन्त उत्तम" है (उत्पत्ति 1:31)। सृष्टि को भौतिक रूप से आरम्भ करने से पहले ही परमेश्वर जानता था कि सम्पूर्ण सृष्टि के इतिहास में प्रत्येक व्यक्ति उसके प्रेम और प्रभुत्व के प्रति कैसे प्रतिक्रिया देगा (पूर्वज्ञान)।[8]

When we consider God's end goal, His perfected family living in the sinless New Heaven and New Earth, we realize that His creation is not over until He fills up His Family. At that time, He will eternally separate His completed holy eternal volunteer family from all who did not learn to love, trust, and obey Him throughout the entire Creation.

जब हम परमेश्वर के अंतिम लक्ष्य अर्थात पाप रहित नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में रहने वाले उनके सिद्ध परिवार पर विचार करते हैं, तो हमें एहसास होता है कि उनकी रचना तब तक खत्म नहीं होती जब तक वह उसमें अपने परिवार को नहीं भर देते। उस समय वह अपने पूर्ण पवित्र शाश्वत स्वयंसेवी परिवार को उन सभी से सदैव के लिए अलग कर देगा जिन्होंने संपूर्ण सृष्टि में उससे प्रेम रखना, विश्वास करना और उसका पालन करना नहीं सीखा।

So, how active is God during the creation process? With so much evil going on due to abundant free will, some question God's day-to-day involvement in His own Creation. Let's consider the fact that even though God asks all humanity to take care of one another and life in general, it is God– not us –who has been doing the heavy lifting throughout the entire creative process. Although God is sovereign, He is also a serving sustainer (Matt 20:28; Mark 10:45) asking everyone to learn to serve one another. Keep in mind that the Sent Son of God, Jesus, was born in a manger but could have been born in a palace if the Father so desired, and that He grew up doing manual labor as a carpenter's son instead of growing up as an earthly prince or king.

तो, सृष्टि रचने की प्रक्रिया के दौरान परमेश्वर कितना सक्रिय है? प्रचुर स्वतंत्र इच्छा के कारण इतनी सारी बुराईयाँ हो रही हैं कि कुछ लोग इस पर सवाल उठाते हैं कि परमेश्वर अपनी सृष्टि में दिन–प्रतिदिन कितना उपस्थित हैं। आइए, इस तथ्य पर विचार करें कि भले ही परमेश्वर संपूर्ण मानवता से एक–दूसरे और सामान्य रूप से जीवन का ख्याल रखने के लिए कहते हैं लेकिन यह परमेश्वर हैं – हम नहीं – जो पूरी रचनात्मक प्रक्रिया के दौरान भारी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। यद्यपि परमेश्वर संप्रभु है वह सेवा करने वाला प्रदायकर्ता भी है (मत्ती 20: 28; मरकुस 10:45) वह हर किसी से एक दूसरे की सेवा करना सीखने के लिए कहता है। याद रखिए कि परमेश्वर का भेजा हुआ पुत्र

यीशु एक चरनी में पैदा हुआ था अगर पिता चाहता तो वह एक महल में पैदा हो सकता था और वह एक सांसारिक राजकुमार या राजा के रूप में बड़े होने के बजाय एक बढ़ई के बेटे के रूप में शारीरिक श्रम करते हुए बड़ा हुआ।

Not being limited by time, God knew in advance what it would take to create a mature free-will intimate loving righteous (holy) family. He also knew ahead of time who throughout the Creation would want to become part of His eternal loving family receiving Him as lord as well as savior. These are the "called" and "chosen" of God.[9] The Father also knew in advance that it was "necessary"[10] to send His Son, Jesus, to die for all humanity in order to bring those who would learn to love Him into a final eternal sinless resurrected state.

समय से बंधे नहीं होने के कारण परमेश्वर पहले से ही जानता था कि एक परिपक्व स्वतंत्र इच्छा वाले अंतरंग प्रेमपूर्ण धर्मी (पवित्र) परिवार को बनाने के लिए क्या करना होगा। वह समय से पहले यह भी जानता था कि सृष्टि में कौन उसके शाश्वत प्रेमपूर्ण परिवार का हिस्सा बनना चाहेगा जो उसे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेगा। ये परमेश्वर के "बुलाए" गए[9] और चुने गए हैं। पिता पहले से ही यह भी जानता था कि अपने पुत्र यीशु को संपूर्ण मानवता के लिए मरने के लिए भेजना "आवश्यक"[10] था ताकि उन लोगों को परमेश्वर के परिवार में लाया जा सके ताकि वे एक अंतिम शाश्वत पाप रहित पुनरुत्थित अवस्था में उसे प्यार करना सीखेंगे।

So, prior to starting the physical Creation, the Father, Son, and Holy Spirit planned out a death within the Trinity. They would suffer tremendously as the Son died a physical death and was also separated from the Father (spiritual death) personally taking on the bad actions of all people over the entire Creation[11] who learned to trust Them. For those who would learn to trust and obey Them out of a developing love for all, Jesus would remove their sin taking each's bad actions onto Himself in order to eliminate it forever after spending His three days in Sheol/Hades.[12]

---

[9] Matt 25:34; Rom 8:28; Eph 1:3-5; 1 Peter 1:1-5. मत्ती 25:34; रोमि 8:28; इफि 1:3–5; 1 पतरस 1:1–5.

[10] Greek *dei*; see John 3:14-15. यूनानी देई; यूहन्ना 3:14–15.

[11] Heb 10:10-14. इब्रा 10:10.14.

[12] Acts 2:22-33; Heb 1:2-3; cf. Gal 3:13-14; 1 Peter 2:24; 2 Cor 5:21; Col 2:13-14; Rev 21:3-4. प्रेरितों 2:22–33; इब्रा 1:2–3; गला 3:13–14; 1 पत 2:24; 2 कुरू 5:21; कुलु 2:13–14; प्रका 21:3–4.

अतः भौतिक सृष्टि की रचना शुरू करने से पहले पिता पुत्र और पवित्र आत्मा ने त्रिएकत्व के भीतर मृत्यु की योजना बनाई। उन्हें बहुत कष्ट होगा क्योंकि पुत्र की शारीरिक मृत्यु हुई और वह पिता से अलग भी हो गया (आध्यात्मिक मृत्यु के रूप में) और पूरी सृष्टि[11] में उन सभी लोगों के बुरे कर्मों को, जिन्होंने उन पर विश्वास करना सीखा उसने व्यक्तिगत रूप से अपने ऊपर ले लिया। जो लोग सभी के लिए विकसित प्रेम के माध्यम से उन पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा का पालन करना सीखेंगे उनके लिए यीशु उनके पापों को दूर कर देंगे और प्रत्येक के बुरे कर्मों को अपने ऊपर ले लेंगे, जो यीशु के द्वारा तीन दिन अधोलोक में बिताने के कारण वे पाप हमेशा के लिए समाप्त हो जाएँ।[12]

Although we cannot remove bad actions (sin) from one another, if we could, it might be comparable to someone being able to remove all cancerous cells from someone else by personally absorbing these bad cells into himself and replacing them with his own healthy cells and in the end dying due to the cancer now ravaging his own body.

यद्यपि हम एक दूसरे से बुरे कार्यों (पाप) को दूर नहीं कर सकते किंतु यदि हम ऐसा कर सकें तो यह किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति की सभी कैंसरग्रस्त कोशिकाओं को हटाने में सक्षम होने के समान होगा जिसके लिए वह इन खराब कोशिकाओं को अपने अंदर अवशोषित कर लेता है और उनकी जगह अपनी स्वस्थ कोशिकाएं रख देता है तथा अंत में अपने ही शरीर को तबाह कर रहे कैंसर के कारण मर जाता है।

God makes sure that no matter what circumstance one is born into, everyone will understand that He desires ***all*** to be part of His family and live holy lives. Although everyone is born into sin under the many deceptions of Satan, all have a chance to overcome evil as God teaches ***everyone*** the reality of His Creation and His requirements for eternal life, which eventually brings some to the point of wanting to do His will and follow His holy ways.

परमेश्वर यह सुनिश्चित करता है कि चाहे कोई किसी भी परिस्थिति में पैदा हुआ हो, प्रत्येक जन यह समझेगा कि परमेश्वर की इच्छा है कि सभी उसके परिवार का हिस्सा बनें और पवित्र जीवन जिएँ। यद्यपि, हरेक जन शैतान के किसी न किसी धोखे के तहत पाप में पैदा होता है लेकिन सभी के पास बुराई पर विजय पाने का मौका है क्योंकि परमेश्वर सभी को अपनी सृष्टि की सच्चाई और अनंत जीवन के लिए अपनी आवश्यकताओं को सिखाता है, जो अंततः कुछ लोगों को उसकी इच्छा पूरी करने और उसके पवित्र मार्गों का अनुसरण करने की इच्छा के बिंदु पर लाता है।

God Wants To Be Your Friend
परमेश्वर आपका मित्र बनना चाहता है

In the perfected eternal world that God is creating, there has to be pure righteous leadership in order to keep the family cohesively living together without sin. Therefore, during our physical life, ***individuals must decide if God is worthy of their love, respect, and obedience***. In this process, God takes the lead and helps everyone know Him and His righteous way of life asking everyone to learn to love, trust, and obey Him.[13] Jesus is the perfect example of the loving, trusting, and obedient Son doing those things that please His Heavenly Father at all times.[14] In addition, Jesus told His present and future obedient disciples that not only were they family members, but that they were also His friends and that there is no greater love than someone being willing to die for his friends (John 15:13-14).Within God's family, all members are friends with one another. When Peter was challenged by Jesus to help guide the Church, He asked Peter three times if he really loved Him. Peter responded each time by telling Jesus that he loved Him as a good friend, which is the closest kind of relational love.[15]

परमेश्वर द्वारा बनाए जा रहे सिद्ध शाश्वत संसार में परिवार को पाप रहित रूप से एक साथ रहने के लिए शुद्ध धार्मिक अगुवाई चाहिए। अतः हमारे भौतिक जीवन के दौरान व्यक्तियों को यह तय करना चाहिए कि क्या परमेश्वर उनके प्रेम, सम्मान और आज्ञाकारिता के योग्य है। इस प्रक्रिया में परमेश्वर नेतृत्व करता है और हरेक को उसे और उसके धार्मिक जीवन के तरीके को जानने में मदद करता है और सभी से उससे प्रेम करने तथा उस पर भरोसा करने और उसकी आज्ञा मानना सीखने के लिए कहता है।[13] यीशु प्रेम करने वाले विश्वास करने वाले और आज्ञाकारी पुत्र का आदर्श उदाहरण है जो हमेशा अपने स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करने वाले काम करता है।[14] इसके अतिरिक्त यीशु ने अपने वर्तमान और भविष्य के आज्ञाकारी शिष्यों से कहा कि वे न केवल परिवार के सदस्य हैं बल्कि वे उसके मित्र भी हैं और इससे बड़ा कोई प्रेम नहीं है कि कोई अपने मित्रों के लिए मरने को तैयार हो (यूहन्ना 15:13–14)।

---

[13] John 14:15, 21, 23; 15:10; cf. Rom 1:18-2:16. यूहन्ना 14:15, 21, 23; 15:10; रोमि 1:18–2:16.

[14] John 4:34; 8:28-29; and others. यूहन्ना 4:34; 8:28–29; और अन्य.

[15] John 21:15-17; *phileō* versus *agapaō*. यूहन्ना 21:15–17; फिलियो वर्सेस अगाप.

परमेश्वर के परिवार में सभी सदस्य एक दूसरे के मित्र हैं। जब यीशु ने पतरस को कलीसिया का मार्गदर्शन करने में मदद करने के लिए चुनौती दी तो उसने पतरस से तीन बार पूछा कि क्या वह वास्तव में उससे प्यार करता है। पतरस ने हर बार यीशु से कहा कि वह उसे एक अच्छे दोस्त के रूप में प्यार करता है जो कि सबसे नजदीक का संबंधपरक प्रेम है।[15]

Getting Off the Wide-Road That Leads to Destruction
विनाश की ओर ले जाने वाले चौड़े रास्ते से हटना

Knowing that God wants everyone to learn to return His love, why do so many stay on the wide-road (life-path) that leads to a lower quality life now and an eventual permanent separation from God instead of receiving God into their lives? With God doing so much to help everyone have a better life, it would seem that most people would get off the wide-road leading to destruction and follow God's path for their lives. But in reality, an elevated sense of self-worth (pride) along with Satan's regular encouragement to rebel against God keeps many content to follow their own desires instead of God's.

यह जानते हुए कि परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक उसके बदले में प्रेम करना सीखे तौभी इतने सारे लोग क्यों उस चौड़े रास्ते जीवनपथ पर बने रहते हैं जो अब कम गुणवत्ता वाले जीवन की ओर ले जाता है और अंततः परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग हो जाता है बजाय इसके कि वे परमेश्वर को अपने जीवन में स्वीकार करें जब परमेश्वर सभी को बेहतर जीवन जीने में मदद करने के लिए इतना कुछ कर रहा है तो ऐसा लगता है कि ज़्यादातर लोग विनाश की ओर ले जाने वाले चौड़े रास्ते से हट जाएँगे और अपने जीवन के लिए परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करेंगे। लेकिन वास्तव में आत्म–मूल्य (गर्व) की ऊँची भावना और शैतान द्वारा परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए नियमित प्रोत्साहन के कारण बहुत से लोग परमेश्वर की इच्छाओं के बजाय अपनी इच्छाओं का पालन करने में संतुष्ट रहते हैं।

With the many distractions of present life, if we ignore God speaking to our hearts (God's self-revelation/spiritual awakening), we will fail to know and love Him for who He is. He is a loving caring creator and father. Our primary obligation is to learn to return His love while He constantly works with us; He is worthy of our love, trust, and obedience.[16]

---

[16] Deut 30:19-20; Matt 22:36-37; 1 John 4:16. व्यवस्था 30:19–20; मत्ती 22:36–37; 1 यूहन्ना 4:16.

वर्तमान जीवन की अनेक रूकावटों के चलते यदि हम परमेश्वर की हमारे ह्रदय से बात करने की उपेक्षा करते हैं जिसे (परमेश्वर का स्व–प्रकाशन/आध्यात्मिक जागृति) कहते हैं तो हम उसे जानने कि वह कौन है और उससे प्रेम करने में असफल हो जाएँगे। वह एक प्रेमपूर्ण देखभाल करने वाला सृष्टिकर्ता और पिता है। हमारा प्राथमिक दायित्व यह है कि जब वह लगातार हमारे साथ काम करता है तो हम उसका प्रेम लौटाना सीखें वह हमारे प्रेम के योग्य परमेश्वर है।[16]

In addition, if we want to be with God, we must allow Him to break through our personal activities and Satan's deceptions and teach us to care about others in addition to loving ourselves and our families.[17] This includes going well past the norm of our societies and even learning to care about our enemies (Matt 5:43-48).

इसके अतिरिक्त अगर हम परमेश्वर के साथ रहना चाहते हैं तो हमें उसे अपनी व्यक्तिगत गतिविधियों और शैतान के धोखे में हस्तक्षेप करने देना और हमें खुद से और अपने परिवार से प्रेम करने के अलावा दूसरों की परवाह करना सिखाने देना चाहिए।[17] इसमें हमारे समाज के मानदंडों से कहीं आगे जाना और यहाँ तक कि अपने दुश्मनों की परवाह करना सीखना भी शामिल है (मत्ती 5:43–48)।

It was not long after the start of the Creation that Satan called God a liar regarding death (separation from God) through disobedience and tempted Eve and Adam to sin against God resulting in their immediate separation from Him (spiritual death: Gen 3:1-6, 24). This was the start of our present fallen world.

सृष्टि की शुरुआत के कुछ समय बाद ही शैतान ने आज्ञा उल्लंघन के द्वारा मृत्यु (परमेश्वर से अलगाव) के बारे में परमेश्वर को झूठा कहा और हव्वा और आदम को परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने के लिए प्रेरित किया जिसके परिणाम स्वरूप वे तुरंत परमेश्वर से अलग हो गए (आध्यात्मिक मृत्यु हो गयी, उत्पत्ति 3:1–6, 24)। ये हमारे वर्तमान पतित संसार का आरंभ था।

Everyone starts with a corrupted nature due to Adam and Eve's initial sin and the additional sins committed over hundreds and hundreds of years by those who have gone before us. Then, we add the consequences of our personal sins to the mix. This corruption is shared by all on some level, and, therefore, sin affects all.

आदम और हव्वा के आरंभिक पाप और हमसे पहले के लोगों द्वारा सैकड़ों हजारों वर्षों में किए गए अतिरिक्त पापों के कारण हर किसी का जीवन भ्रष्ट स्वभाव से शुरू होता है। फिर उसमें हम अपने व्यक्तिगत पापों के परिणामों

---

[17] Matt 22:39; 25:34-40; John 13:34. मत्ती 22:39; मत्ती 25:34–40; यूहन्ना 13:34.

को मिश्रण में जोड़ते हैं। यह भ्रष्टाचार किसी न किसी स्तर पर सभी द्वारा साझा किया जाता है और इसलिए पाप सभी को प्रभावित करता है।

But, as we look at the world and our fallen nature and compare it to the purity of our loving Creator, some of us have come to a point in our lives that we want a change for the better. We want a pure godly life and, therefore, we have called out for a savior.

किंतु जब हम संसार और अपने पतित स्वभाव को देखते हैं और इसकी तुलना अपने प्रिय सृष्टिकर्ता की पवित्रता से करते हैं तो हममें से कुछ लोग अपने जीवन में एक ऐसे बिंदु पर पहुँच जाते हैं जहाँ हम बेहतरी के लिए बदलाव चाहते हैं। हम एक शुद्ध ईश्वरीय जीवन चाहते हैं, और इसलिए, हमने एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता को महसूस किया है।

What complicates matters further is not only the fact that all are born into sin, but, in reality, we are all born into an ongoing war initiated by Satan against God.[18] God could have locked Satan up at any time even prior to or during the Creation, and eventually, He will do just that (Rev 20:10). But, it is clear from God's Word that God allows Satan to remain present to tempt us to rebel against Him in order to force us to think about our own fallen nature, His goodness, and the future sinless New Heaven and New Earth.

जो बात मामले को और भी जटिल बनाती है वह सिर्फ़ यह नहीं है कि सभी लोग पाप में जन्म लेते हैं बल्कि वास्तव में हम सभी शैतान द्वारा परमेश्वर के विरुद्ध शुरू किए गए एक निरंतर युद्ध में जन्म लेते हैं।[18] परमेश्वर सृष्टि से पहले या उसके दौरान भी शैतान को किसी भी समय कैद कर सकता था और अंततः वह ऐसा ही करेगा (प्रकाशितवाक्य 20:10)। परंतु, परमेश्वर के वचन से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर शैतान को हमें अपने विरुद्ध विद्रोह करने के लिए लुभाने के लिए मौजूद रहने की अनुमति देता है ताकि हम अपने स्वयं के पतित स्वभाव, उसकी भलाई, और भविष्य के पाप रहित नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के बारे में सोचने के लिए मजबूर हो सकें।

We should also keep in mind that God's Anointed Messiah, Jesus, did not come to bring peace to the whole world but instead to divide it between those who are willing to follow God and His righteous ways and those who are not.[19] Although we do not presently have world peace, let's thank God that Jesus came to bring eternal peace to all who learn to listen to Them (Eph 2:14-16).

---

[18] Matt 11:12; 1 Peter 5:8-11; Rev 12:7-11. मत्ती 11:12; 1 पत. 5:8–11; प्रका. 12:7–11.

[19] Matt 10:34-39; Luke 12:49-53. मत्ती 10:34–39; लूका 12:49–53.

हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि परमेश्वर के अभिषिक्त मसीहा यीशु पूरी दुनिया में शांति लाने के लिए नहीं आए थे बल्कि इसे उन लोगों के बीच विभाजित करने के लिए आए थे जो परमेश्वर और उनके धार्मिक मार्गों का अनुसरण करने के लिए तैयार हैं,[19] और जो नहीं हैं। हालाँकि हमारे पास वर्तमान में विश्व शांति नहीं है, आइए, हम परमेश्वर का धन्यवाद करें कि यीशु उन सभी के लिए शाश्वत शांति लाने के लिए आए जो उनकी बात सुनना सीखते हैं (इफिसियों 2: 14–16)।

God has a continuous open door policy for all who voluntarily submit to His lordship forgiving and removing our sin and reconciling us into His eternal holy family through a second birth, a spiritual birth. So, as we continue to reflect on God and His goodness, we come to realize that He expects us to listen to Him because He is our creator and father, who loves us beyond our comprehension and constantly works on our behalf. Everything that He wants to teach us is for our personal and collective good. God teaches us that true joy and inner peace come from dying to our self-centered selfish aspirations and joining Him in serving one another.

परमेश्वर के पास उन सभी के लिए निरंतर खुला द्वार रखने की व्यवस्था है जो स्वेच्छा से उसके प्रभुत्व के अधीन हो जाते हैं, हमारे पापों को क्षमा करते हैं और दूर करते हैं, तथा हमें दूसरा जन्म अर्थात आध्यात्मिक जन्म के माध्यम से अपने शाश्वत पवित्र परिवार में मिलाते हैं। इसलिए जब हम परमेश्वर और उसकी अच्छाई पर चिंतन करना जारी रखते हैं तो हमें एहसास होता है कि वह हमसे अपेक्षा करता है कि हम उसकी बात सुनें क्योंकि वह हमारा निर्माता और पिता है जो हमारी समझ से परे हमसे प्यार करता है और लगातार हमारी ओर से काम करता है। वह जो कुछ भी हमें सिखाना चाहता है वह हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक भलाई के लिए है। परमेश्वर हमें सिखाता है कि सच्ची खुशी और आंतरिक शांति हमारी आत्मकेंद्रित स्वार्थी आकांक्षाओं को मरने देने और एक दूसरे की सेवा करने में उसके साथ जुड़ने से आती है।

Being part of God's eternal intimate loving righteous family brings about joy and inner peace that cannot be duplicated by any perversion of God's way of life. Jesus wants our joy to be full, which can only be accomplished by following Him. As we follow God's leadership and allow Him to transform us, the Holy Spirit helps us to become more and more like Jesus, which helps us grow in love, joy, peace, patience, kindness, goodness, faithfulness, gentleness, and self-control (Gal 5:22-23; cf. 1 Cor 13).

परमेश्वर के शाश्वत, अंतरंग, प्रेमपूर्ण, धार्मिक परिवार का हिस्सा होने से आनंद और आंतरिक शांति मिलती है जिसे परमेश्वर के जीवन के विपरीत जाकर किसी भी तरीके से बदला नहीं जा सकता। यीशु चाहते हैं कि हमारा आनंद पूर्ण हो जो केवल उनका अनुसरण करके ही प्राप्त किया जा सकता है। जब हम

परमेश्वर के नेतृत्व का अनुसरण करते हैं और उन्हें हमें बदलने देते हैं तो पवित्र आत्मा हमें यीशु की तरह बनने में मदद करता है जो हमें प्रेम, आनंद, शांति, धैर्य, दयालुता, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और आत्मसंयम में बढ़ने में मदद करता है (गलतियों 5: 22–23; 1 कुरिं 13)।

Born To Die Once & Then the Judgement
एक बार मरने के लिए जन्म और फिर न्याय

Just as it is determined (appointed) for men to die once, but after this judgment . . . . Hebrews 9:27

और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है . . . । इब्रानियों 9:27

All people live out the physical portion of their eternal life ***only one time***, and all of us will be judged for our actions during this time period of our life, if we don't start following Jesus. There is no reincarnation allowing us a second chance to accept God's love and righteousness. With our God-given abundant free will, let's make good eternal choices and meet the needs of others as God leads.

सभी लोग अपने अनंत जीवन का भौतिक हिस्सा केवल एक बार जीते हैं और हम सभी का अपने जीवन की इस अवधि के दौरान हमारे कार्यों के लिए न्याय किया जाएगा अगर हम यीशु का अनुसरण करना प्रारंभ नहीं करते हैं। कोई पुनर्जन्म नहीं है जो हमें परमेश्वर के प्रेम और धार्मिकता को स्वीकार करने का दूसरा अवसर देता है। आइए, परमेश्वर प्रदत्त प्रचुर स्वतंत्र इच्छा के साथ हम अच्छे अनंत जीवन का चुनाव करें और परमेश्वर के मार्गदर्शन में दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करें।

From the moment that we are physically conceived, we have eternal existence. Then, God begins developing those of us who listen throughout this physical stage of our eternal life until He says that ***it is finished!*** Through Scriptures, we know that a time is coming when God will manifest to all Creation those individuals who have learned to truly love Him with His caring righteous ways.[20] In Scripture, God's revelation of those who learn to love Him is called by several names including His call, choice, and/or election.

जिस क्षण से हम शारीरिक रूप से गर्भ में आते हैं तब से हमारा अस्तित्व अनंत समझा जाता है। फिर परमेश्वर हममें से उन लोगों को विकसित

---

[20] Rom 8:18-19, 28-30; 1 Cor 2:9; James 1:12; 2:5; 1 Peter 1:2-5.
रोमि 8:18–19, 28–30; 1कुरू 2:9; याकूब 1:12; 2:5; 1पतरस 1:2–5.

करना आरंभ करता है जो अनंत जीवन के इस सांसारिक चरण में उसकी सुनते हैं जब तक कि वह हमसे यह न कहे कि अब यह पूर्ण हुआ! बाइबल के माध्यम से, हम जानते हैं कि एक समय आ रहा है जब परमेश्वर उन सभी व्यक्तियों को प्रकट करेगा जिन्होंने उसकी देखभाल करने वाले धार्मिक तरीकों के कारण, वास्तव में उससे प्रेम करना सीख लिया है।[20] बाइबल में परमेश्वर के द्वारा उन लोगों के बारे में रहस्योद्घाटन को, जो उससे प्रेम करना सीखते हैं, को उनके आह्वान, चुनाव या चयन सहित कई नामों से पुकारा जाता है।

If one never commits to follow Jesus, he cannot bring character witnesses before God for the Great White Throne Judgement.[21] God has perfect knowledge of everyone's inner motives and exposes the truth of each person's love and righteousness or lack of it to all Creation. God is solely responsible to expose the true character of all who do not receive Him into their lives.

यदि कोई व्यक्ति यीशु का अनुसरण करने के लिए कभी प्रतिबद्ध नहीं होता है तो वह महान श्वेत सिंहासन के न्याय के लिए परमेश्वर के सामने अपनी चारित्रिक गवाही नहीं ला सकता है।[21] परमेश्वर को हर किसी के आंतरिक उद्देश्यों का पूर्ण ज्ञान है और वह प्रत्येक व्यक्ति के प्रेम और धार्मिकता या इसकी कमी की सच्चाई को पूरी सृष्टि के सामने उजागर करता है। परमेश्वर उन सभी के सच्चे चरित्र को उजागर करने के लिए पूरी तरह से उत्तरदायी है जो उसे अपने जीवन में स्वीकार नहीं करते हैं।

May times, our selfish desires cause us to favor ourselves over others during our initial development. In addition, our self rationalization due to selfishness and its corresponding disobedience to God distorts reality. Our disobedience against God's will has even distorted our collective sense of right and wrong throughout the various levels of our twentieth-first century Western Civilization, and many have turned their back on God's social order and desire for our lives.

कई बार हमारे आरंभिक विकास के दौरान हमारी स्वार्थी इच्छाएँ हमें दूसरों के बजाय स्वयं को प्रमुखता देने का कारण बनती हैं। इसके अलावा स्वार्थ के कारण हमारा आत्म तर्कसंगत होना और इसके अनुरूप परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना वास्तविकता को विकृत कर देता है। परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हमारी अनाज्ञाकारिता ने हमारी बीसवीं सदी की पश्चिमी सभ्यता के विभिन्न स्तरों पर सही और गलत की हमारी सामूहिक समझ को भी विकृत कर दिया है और कई लोगों ने परमेश्वर की सामाजिक व्यवस्था और इच्छा से मुंह मोड़ लिया है।

Collectively within our societies, many have come to an extreme position against God to include condoning the killing of our unborn

---

[21] Rev 20:11-15; 21:7-8. प्रका 20:11–15; 21:7–8.

children (abortion) and casting aside God's family values. In addition, many are ignoring or taking part in human trafficking, causing social division for political gain, and are looking the other way or encouraging other biological perversion to include sanctioning same-sex marriages, sex changes and other sexual perversion such as men playing in woman's sports.

हमारे समाज में सामूहिक रूप से बहुत से लोग परमेश्वर के विरुद्ध चरम स्थिति में आ गए हैं जिसमें हमारे अजन्मे बच्चों की हत्या (गर्भपात) को बढ़ावा देना और परमेश्वर के पारिवारिक मूल्यों को अलग रखना शामिल है। इसके अतिरिक्त बहुत से लोग मानव तस्करी को अनदेखा कर रहे हैं या उसमें शामिल हैं, राजनीतिक लाभ के लिए सामाजिक विभाजन पैदा कर रहे हैं, और दूसरी ओर देख रहे हैं या अन्य जैविक विकृतियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं, जिसमें समलैंगिक विवाह, लिंग परिवर्तन और अन्य यौन विकृतियाँ जैसे कि महिलाओं के खेलों में पुरुषों का खेलना इत्यादि शामिल है।

Jesus makes us vividly aware that the ability to know good and to do good comes only from our Heavenly Father.[22] He is good and all good comes from Him. Therefore, we need the Creator to help us evaluate our motives for everything that we do. Anytime that we consciously or subconsciously place ourselves, our families, or other organizations above others, we no longer see the world as God intended. His actions and words tell us that He created all of us equal in being– not ability –and wants everyone to spend eternity with Him.

यीशु हमें इस बात से स्पष्ट रूप से परिचित करवाते हैं कि अच्छा जानने और अच्छा करने की क्षमता केवल हमारे स्वर्गीय पिता से ही आती है।[22] वह अच्छा है इसलिए सभी अच्छाईयाँ उससे आती हैं। इसलिए हमें अपने हर कार्य के लिए अपने उद्देश्यों का मूल्यांकन करने में सहायता के लिए सृष्टिकर्ता की आवश्यकता है। जब भी हम जानबूझकर या अवचेतन रूप से स्वयं को अपने परिवार को या अन्य संगठनों को दूसरों से ऊपर रखते हैं तो हम जगत को उस तरह से नहीं देखते हैं जैसा परमेश्वर हमसे चाहता था। उसके कार्य और शब्द हमें बताते हैं कि उसने हम सभी को अस्तित्व में समान बनाया है – क्षमता में नहीं – और वह चाहता है कि हर कोई उसके साथ अनंत काल बिताए।

We should be mourning for those who are hurting just as an individual laments for a lost loved one.[23] This pain should compel us to

---

[22] Matt 19:17; Luke 18:19; John 20:17. मत्ती 19:17; लूका 18:19; यूहन्ना 20:17.

[23] Matt 5:4. God is longsuffering: Exod 34:6; Num 14:18; Rom 2:4; 1 Tim 1:16; 2 Peter 3:9, 15. मत्ती 5:4. परमेश्वर धीरजवन्त है: निर्ग 34:6; गि. 14:18 रोम. 2:4;1ति. 1:16; 2पत 3:9, 15.

act. We cannot be complete nor at peace without the help of Jesus Christ. We must learn to love God and others and turn to Him for proper development and guidance.[24]

हमें उन लोगों के लिए शोक मनाना चाहिए जो दुखी हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति अपने किसी प्रियजन के खोने पर विलाप करता है।[23] यह दर्द हमें कार्य करने के लिए बाध्य करना चाहिए। यीशु मसीह की सहायता के बिना हम पूरी तरीके से शांत नहीं हो सकते। हमें ईश्वर और दूसरों से प्रेम करना सीखना चाहिए और उचित विकास और मार्गदर्शन के लिए उनकी तरफ मुड़ना चाहिए।[24]

Jesus was sent by the Father for one main purpose: to save us from ourselves and the Evil One.[25] God exposes our self-centeredness, selfishness, and corresponding disobedience so that we might know ourselves and turn to Him for proper development. If we will allow it, He will help us become whole so that we can live in peace with Him and each other. As we allow God to develop us, it becomes ***easier . . . and easier . . . and easier*** to ask Him for forgiveness of our wrongdoing. It becomes easier each time that we come to Him in our imperfection confessing our wrongdoing and seeking help to do better the next time.[26]

यीशु को पिता ने एक मुख्य उद्देश्य के लिए भेजा था हमें स्वयं से और दुष्ट से बचाना।[25] परमेश्वर हमारी आत्म–केंद्रितता, स्वार्थ और इसी तरह के आज्ञा उल्लंघन को उजागर करता है ताकि हम स्वयं को जान सकें और उचित विकास के लिए उसकी ओर मुड़ सकें। हम इसकी अनुमति देंगे तो वह हमें पूर्ण बनने में सहायता करेगा ताकि हम उसके और एक दूसरे के साथ शांति से रह सकें। जैसे–जैसे हम स्वयं परमेश्वर को हमें विकसित करने देते हैं यह सरल हो जाता है .....और सरल..... और सरल कि हम अपने गलत कार्यो के लिए उससे क्षमा मांग सकें। हर बार जब हम अपनी अपूर्णता में उसके पास आते हैं तो यह आसान हो जाता है कि हम अपने गलत कार्यो को स्वीकार करें और अगली बार बेहतर करने के लिए मदद मांगें।[26]

From the time that Adam and Eve initially disobeyed God, disobedience has separated all of us from a ***perfect-fellowship*** with God

---

[24] Isaiah 29:13; Psalm 51. यशा 29:13; भजन 51.

[25] James 1:14-15; John 3:16-17, 10:10; Matt 1:21 (John 1:10-11); 18:11; Luke 9:56. याकूब 1:14–15; यूहन्ना 3:16–17, 10:10; मत्ती 1:21 (यूहन्ना 1:10–11); 18:11; लूका 9:56.

[26] 1 John 3:9 and others. 1 यूहन्ना 3:9 और अन्य।

and each other.[27] When Adam and Eve disobeyed God and then hid from Him, God sent them from His presence. Their sin produced shame and fear causing both of them to hide themselves from Him. Disobedience to God had changed their ability to live in perfect unity with a loving righteous Father, and therefore, they died spiritually being separated from God's immediate presence.

जब से आदम और हव्वा ने शुरू में परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया तब से आज्ञा उल्लंघन ने हम सभी को परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ एक सिद्ध–संगति से अलग कर दिया है।[27] जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर की अवज्ञा की और फिर उससे छिप गए तो परमेश्वर ने उन्हें अपनी उपस्थिति से अलग कर दिया। उनके पाप ने शर्म और भय पैदा किया जिसके कारण वे दोनों उससे छिप गए। परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता ने एक प्रेमपूर्ण धर्मी पिता के साथ परिपूर्ण एकता में रहने की उनकी क्षमता को बदल दिया था और इसलिए वे परमेश्वर की तत्काल उपस्थिति से अलग होकर आध्यात्मिक रूप से मर गए।

Although this initial disobedience and loss of perfect fellowship causes all of us much pain, our Heavenly Father knew what He was doing from the very beginning before He initiated His perfect plan of Creation through its physical implementation. His willingness to pay the supreme cost of giving His creation an abundant free will demonstrates His desire to create an equalitarian righteous family full of love and grace. This fact should encourage all people to receive Him into their lives in order to live forever in peace and harmony within His holy family.

यद्यपि यह आरंभिक अनाज्ञाकारिता और पूर्ण संगति की हानि हम सभी को बहुत पीड़ा पहुँचाती है लेकिन हमारे स्वर्गीय पिता को पता था कि वह सृष्टि की अपनी पूर्ण योजना को उनके भौतिक क्रियान्वयन के माध्यम से आरंभ करने से पहले ही क्या कर रहे थे। अपनी सृष्टि को एक प्रचुर स्वतंत्र इच्छा देने की सर्वोच्च कीमत चुकाने की उनकी इच्छा प्रेम और अनुग्रह से भरे एक समतावादी धर्मी परिवार को बनाने की उनकी इच्छा को प्रदर्शित करती है। इस तथ्य के कारण सभी लोगों को अपने जीवन में उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित होना चाहिए ताकि वे उनके पवित्र परिवार के भीतर शांति और सद्भाव से हमेशा के लिए रह सकें।

---

[27] Rom 3:23. रोमियों 3:23.

Through the Cross, Jesus ultimately brings all who listen into a perfected caring relationship with God.[28] If we are willing to learn to trust and obey God because of His great fairness and love, He promises to help us become mature and immediately starts to live in a closer interactive relationship with us.[29]

क्रूस के माध्यम से यीशु अंततः उन सभी को लाता है जो परमेश्वर के साथ एक सिद्ध देखभाल के बारे में सुनते हैं।[28] यदि हम परमेश्वर की महान निष्पक्षता और प्रेम के कारण उस पर भरोसा करना और उसकी आज्ञा मानना सीखने के लिए तैयार हैं तो वह हमें परिपक्व बनने में मदद करने का वादा करता है और तुरंत हमारे साथ एक नजदीकी संवादात्मक संबंध में रहना शुरू कर देता है।[29]

Once we commit to following Jesus, we become immediately reconciled to God, and He begins our moral transformation process promising us that there is coming a day when His perfected creation will be realized. When that happens, God's obedient children will be with Him and their moral character will be fully transformed to be like Jesus'.[30]

एक बार जब हम यीशु का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध हो जाते हैं तो हम तुरंत परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लेते हैं और वह हमारे नैतिक परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू करता है हमसे प्रतिज्ञा करता है कि एक दिन आएगा जब उसकी सिद्ध रचना साकार होगी। जिस दिन ऐसा होगा तब परमेश्वर के आज्ञाकारी बच्चे उसके साथ होंगे और उनका नैतिक चरित्र यीशु की तरह पूरी तरह से बदल जाएगा।[30]

At that time, God's righteous children will no longer be ashamed nor afraid due to their past wrongdoings because Jesus' atoning work on a cross will have removed all of their bad actions (sins); Jesus made our

---

[28] God's Foreknowledge and Plan: Matt 25:34; Eph 1:4; Col 1:12-20; 2 Tim 1:9; 1 Peter 1:18-20; Rev 13:8. God's Salvation: John 3:16-17; Heb 2:9-17; 9:12-15; 2 Cor 5:17-21; Col 2:13-14. परमेश्वर का पूर्व ज्ञान और योजनाः मत्ती 25:34; इफि 1:4; कुलु 1:12–20; 2तिमो 1:9; 1पत 1:18–20; प्रका 13:8. परमेश्वर का उद्धारः यूहन्ना 3:16.17; इब्रा 2:9–17; 9:12–15; 2 कुरू 5:17–21; कुलु 2:13–14.

[29] Eph 1:13-14; John 14; cf. John 5:24; Rom 8:1; 1 John 3:2. इफि 1:13–14; यूहन्ना14; यूहन्ना 5:24; रोमियों 8:1; 1 यूहन्ना 3:2.

[30] Phil 1:6; Rom 8:28-29; 1 John 3:1-3. फिलि 1:6; रोमि 8:28–29; 1 यूहन्ना 3:1–3.

sins His own on the Cross of Calvary.[31] Therefore, those of us who are following Jesus can approach His throne with great joy without worrying about past sin (Rom 5:1-5; Phil 1:20; 1 John 2:28).

उस समय, परमेश्वर के धर्मी बच्चे अपने पिछले गलत कार्यो के कारण न तो शर्मिंदा होंगे और न ही डरेंगे क्योंकि क्रूस पर यीशु के प्रायश्चित कार्य ने उनके सभी बुरे कार्यो (पापों) को दूर कर दिया होगा; यीशु ने उन्हें कलवरी के क्रूस पर अपना बना लिया।[31] इसलिए हममें से जो लोग यीशु का अनुसरण कर रहे हैं वे पिछले पापों की चिंता किए बिना बड़ी खुशी के साथ उसके सिंहासन के पास जा सकते हैं (रोमियों 5:1–5; फिलि 1:20; 1 यूहन्ना 2:28)।

At the moment that an individual truly decides to follow Jesus Christ from the heart,[32] they are born from above and fully reconciled into our Heavenly Father's family.[33] With immediate reconciliation comes ***less . . . and less . . . and less . . .*** disobedience over time. With our reconciliation, we start our individual accelerated process of maturing under Jesus' leadership. God increases our love for Him and all people, and our growing love for God and others calls us into ***action***.

जिस क्षण कोई व्यक्ति वास्तव में यीशु मसीह का हृदय से अनुसरण करने का निर्णय लेता है[31] वह ऊपर से जन्म लेता है और हमारे स्वर्गीय पिता के परिवार में पूर्ण रूप से मेलमिलाप कर लेता है।[33] तत्काल मेलमिलाप के साथ समय के साथ–साथ कम.....और कम.....और कम.... अनाज्ञाकारिता आती जाती है। हमारे मेलमिलाप के साथ हम यीशु के नेतृत्व में परिपक्व होने की अपनी व्यक्तिगत त्वरित प्रक्रिया शुरू करते हैं। परमेश्वर अपने और सभी लोगों के प्रति हमारे प्रेम को बढ़ाता है और परमेश्वर और दूसरों के लिए हमारा बढ़ता हुआ प्रेम हमें कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

Scripture tells us that those who accept God's love and righteousness do not sin continually.[34] The Greek language that our New Testament Scripture was written in is easier to understand regarding the continual action of sin. It conveys the thought that we are ***not*** to be

---

[31] Heb 1:2-3; Gal 3:13-14; Col 2:13-14: 2 Cor 5:21; 1 Peter 2:24. इब्रा1:2–3; गल 3:13–14; कुलु 2:13–14:2 कुरू 5:21; 1पत 2:24.

[32] Rom 10:9-10. रोमि 10:9–10.

[33] Born From Above: John 3:3-5; Eph 1:13-14; 1 Peter 1:22-23. Being God's Children: John 17:20-23; Eph 1:4-5, 13-14; Rom 8:14-17. स्वर्ग से उत्पन्नः यूहन्ना 3:3–5; इफि 1:13–14; 1पत 1:22–33. परमेश्वर की संतानहोनाः यूहन्ना 17:20–23; इफि1:4–5, 13–14; रोमि 8:14–17.

[34] 1 John 3:9. 1 यूहन्ना 3:9.

continually . . . continually . . . continually sinning. Continual sinning makes us want to hide ourselves and our actions from our Heavenly Father and one another. How do we stop our continual sinning? We must truly learn to trust God and allow Him to teach us to love Him and one another as we continually read His Word and seek His help in responding properly to what we learn.

पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि जो लोग परमेश्वर के प्रेम और धार्मिकता को स्वीकार करते हैं वे निरंतर पाप नहीं करते।[34] हमारे नए नियम के पवित्रशास्त्र को जिस यूनानी भाषा में लिखा गया था वह पाप की निरंतर क्रिया के बारे में समझने में आसान है। यह इस विचार को व्यक्त करता है कि हमें निरंतर – निरंतर – निरंतर पाप नहीं करना चाहिए। लगातार पाप करने से हम अपने आप को और अपने कार्यों को अपने स्वर्गीय पिता और एक दूसरे से छिपाना चाहते हैं। हम अपने निरंतर पाप को कैसे रोक सकते हैं हमें सच में परमेश्वर पर विश्वास करना सीखना चाहिए और उसे हमें उससे और एक दूसरे से प्रेम करना सिखाने देना चाहिए क्योंकि हम लगातार उसका वचन पढ़ते हैं और जो हम सीखते हैं उसके प्रति उचित प्रतिक्रिया देने में उसकी सहायता मांगते हैं।

Through God's ongoing perfecting of our love, we will sin less and less over time. Remember, God created us for a mature, perfect interactive relationship with Him and one another. Jesus taught that all of the Law and the Prophets can be summed through two commandments: love God to the best of our ability, and love each other as He loves us.[35]

परमेश्वर द्वारा हमारे प्रेम को निरंतर परिपूर्ण करने के माध्यम से हम समय बीतने के संग कम और कम पाप करेंगे। स्मरण रखिए परमेश्वर ने हमें उसके और एक दूसरे के साथ एक परिपक्व व सिद्ध संवादात्मक संबंध के लिए बनाया है। यीशु ने सिखाया कि सभी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को दो आज्ञाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा सकता है परमेश्वर से अपनी पूरी क्षमता से प्रेम करो और एक दूसरे से वैसा ही प्रेम करो जैसा वह हमसे करता है।[35]

God tells us through His Word in many places including through the Law and the Prophets that His desire is fulfilled when we truly learn to care about each other. In addition, He tells us that if we do not love those around us, we do not really love Him.[36] Let us all strive to follow Jesus' one new commandment, which is to love one another as He loves

---

[35] Matt 22:37-40. मत्ती 22:37–40.

[36] 1 John 4:20; cf. Gal 5:13-14. 1 यूहन्ना 4:20; गल 5:13–14.

us.[37] Thinking about the good that God has done for us should bring forth a desire in us to learn to return His love and learn to love one another as He loves us.

परमेश्वर हमें अपने वचन के द्वारा से कई स्थलों पर बताता है, जिसमें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से भी शामिल है कि जब हम वास्तव में एक दूसरे की परवाह करना सीखते हैं तो उसकी इच्छा पूरी होती है। इसके अतिरिक्त वह हमें बताता है कि अगर हम अपने आसपास के लोगों से प्यार नहीं करते हैं तो हम वास्तव में उससे प्यार नहीं करते हैं।[36] आइए, हम सभी यीशु की एक नई आज्ञा का पालन करने का प्रयास करें जो एक दूसरे से वैसा ही प्यार करना है जैसा वह हमसे प्यार करता है।[37] परमेश्वर ने हमारे लिए जो अच्छा किया है उसके बारे में सोचने से हमारे अंदर यह इच्छा पैदा होनी चाहिए कि हम उसका प्यार लौटाना सीखें और एक दूसरे से वैसा ही प्यार करना सीखें जैसा वह हमसे प्यार करता है।

But beware, our development will not come easily. In addition to the existence of a righteous-loving Creator and a multitude of loving individuals, part of us wants things our way and is encouraged by Satan, who is in direct defiance of God and is literally at war with Him trying to take over His Kingdom.

किंतु सावधान रहें हमारी उन्नति आसानी से नहीं होगी। एक धार्मिक प्रेमी सृष्टिकर्ता और प्रेम करने वाले व्यक्तियों की भीड़ के अस्तित्व के अलावा हममें से एक भाग चीजों को अपने तरीके से चाहता है और शैतान द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है जो सीधे तौर पर परमेश्वर की अवज्ञा करता है और उसके राज्य पर कब्ज़ा करने की कोशिश में उसके साथ युद्ध कर रहा है।

Satan exalted himself above God and all others before the Creation and has been trying continually to take over God's position of authority ever since. He is self-centered and uses every kind of deception possible in his war against our Heavenly Father and us.[38] In his war to overpower God, this self-appointed dictator has been using deception and our own selfishness to tempt us to turn from our Heavenly Father and His good way of life.[39]

शैतान ने सृष्टि से पहले खुद को परमेश्वर और अन्य सभी से ऊपर माना और तब से लगातार परमेश्वर के अधिकार के पद को हथियाने की कोशिश

---

[37] John 13:34; 15:12-13. यूहन्ना 13:34; 15:12–13.

[38] 1 John 3:8; Eph 6:10-12; Rev 12:7-17. 1 यूहन्ना 3:8; इफि 6:10–12; प्रका 12:7–17.

[39] John 8:44; 2 Cor 11:13-15; James 1:13-15. यूहन्ना 8:44; 2 कुरू 11:13–15; याकूब 1:13–15.

कर रहा है। वह स्वार्थी है और हमारे स्वर्गीय पिता और हमारे खिलाफ़ अपने युद्ध में हर तरह के धोखे का इस्तेमाल करता है।[38] परमेश्वर पर हावी होने के अपने युद्ध में यह स्वयंभू तानाशाह, धोखे और हमारे स्वार्थ का इस्तेमाल करके हमें अपने स्वर्गीय पिता और उनके जीवन के अच्छे मार्ग से दूर करने के लिए लुभाता रहा है।[39]

Satan uses our own selfishness and pride to deceive, distract, and disable us from doing the good work that our Father wants us to do. In addition, Satan uses our self-centeredness to divide us into the smallest possible groups. Keep in mind that Jesus warned us that a kingdom divided against itself will fall (Matt 12:25; Mark 3:24-25; Luke 11:17).

शैतान हमारे स्वार्थ और घमंड का इस्तेमाल हमें धोखा देने, विचलित करने और हमारे पिता द्वारा हमसे करवाए जाने वाले अच्छे कामों को करने से रोकने के लिए करता है। इसके अलावा शैतान हमारी स्वार्थी प्रवृत्ति का इस्तेमाल करके हमें सबसे छोटे समूहों में बाँट देता है। ध्यान रखें कि यीशु ने हमें चेतावनी दी थी कि जो राज्य अपने आप में विभाजित है वह गिर जाएगा (मत्ती 12:25; मरकुस 3:24–25; लूका 11:17)।

If Satan could make us think that we are islands unto ourselves, he would do so. This is exactly opposite God's desire for us to learn to work together and love everyone equally. God's written Word reminds us that if we are followers of Jesus, we are united through Jesus and each of us make up part of the whole.[40]

अगर शैतान हमें यह सोचने पर मजबूर कर सकता है कि हम खुद में ही एक द्वीप हैं तो वह ऐसा करेगा। यह परमेश्वर की इच्छा के बिलकुल विपरीत है जो कहती है कि हम साथ मिलकर काम करना सीखें और सभी से समान रूप से प्रेम करें। परमेश्वर का लिखित वचन हमें याद दिलाता है कि अगर हम यीशु के अनुयायी हैं तो हम यीशु के माध्यम से एक हैं और हममें से हर कोई संपूर्ण का हिस्सा बनता है।[40]

Jesus has also warned us that Satan comes only to steal, kill, and destroy and lets us know that an abundant fulfilling life comes only from our Heavenly Father.[41] During this short portion of our eternal life, God does everything possible except taking away our free will to awaken us to His desired eternal life. As soon as we start listening to Him, He begins developing us into mature caring social beings. If we do not listen

---

[40] Rom 12:5; 1 Cor 1:10-13; 12; Eph 4:4-7, 13-16. रोमि 12:5; 1 कुरू 1:10–13; 12; इफि 4:4–7, 13–16.

[41] John 10:10; 1 Peter 5:6-9. यूहन्ना 10:10; 1पतरस 5:6–9.

to our loving Heavenly Father, we face the painful consequences of a less fulfilling life now and in the future eternal judgment, separation from God, pain, and shame.[42]

यीशु ने हमें यह भी चेतावनी दी है कि शैतान केवल चोरी करने, मारने और नष्ट करने के लिए आता है और यीशु हमें बताता है कि एक भरपूर जीवन केवल हमारे स्वर्गीय पिता से ही मिलता है।[41] हमारे अनंत जीवन के इस छोटे से हिस्से के दौरान परमेश्वर हमें अपने इच्छित अनंत जीवन के लिए जागरूक करने के लिए, हमारी स्वतंत्र इच्छा को छीनने के अलावा हर संभव प्रयास करता है। जैसे ही हम उसकी बात सुनना शुरू करते हैं वह हमें परिपक्व देखभाल करने वाले सामाजिक प्राणियों के रूप में विकसित करना शुरू कर देता है। यदि हम अपने प्रिय स्वर्गीय पिता की बात नहीं सुनते हैं तो हम अभी और भविष्य में अनंत न्याय पूर्ण परमेश्वर से अलगाव, दर्द और शर्म से भरे कम संतोषजनक जीवन के दर्दनाक परिणामों का सामना करते हैं।[42]

The Ultimate Victory Is Obtained through Following Jesus
यीशु का अनुसरण करने से ही अंतिम विजय प्राप्त होती ह

As we consider our individual eternal outcomes, let's keep in mind that God's finalized Creation has only two final outcomes and all people end up with one or the other: (1) living eternally sinless caring lives within the New Heaven and New Earth with God and other loving righteous beings; or (2) living with our bad actions (sin) eternally separated from God with eternal judgment and shame within a prison commonly called Hell or the Lake of Fire.[43] Knowing this should help us consider carefully what we really want now and for eternity.

जब हम अपने व्यक्तिगत जीवन में शाश्वत परिणामों पर विचार करते हैं तो हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि परमेश्वर की अंतिम सृष्टि के केवल दो अंतिम परिणाम हैं और सभी लोग इस एक या दूसरे परिणाम के साथ समाप्त होते हैंः (1) नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के भीतर परमेश्वर और अन्य प्रेमपूर्ण धार्मिक प्राणियों के साथ अनंत काल तक पाप रहित देखभाल वाला जीवन जीना; या (2) अपने बुरे कार्यों (पाप) के साथ अनंत काल तक परमेश्वर से अलग रहना और नरक या आग की झील कहलायी जाने वाली जेल में अनंत न्याय और शर्मिंदगी के साथ रहना।[43] यह जानने से हमें ध्यान से विचार करने में सहायता मिलेगी कि हम वास्तव में अभी और अनंत काल के लिए क्या चाहते हैं।

---

[42] Dan 12:2; Matt 25:41-46; Rev 20:11-15; 21:8. दानि 12:2; मत्ती 25:41–46; प्रका 20:11–15; 21:8.

[43] Rev 20:11-21:8. प्रका 20:11–21:8.

At the beginning of the Creation, after Eve and Adam sinned against God partaking of the Tree of the Knowledge of Good and Evil, all people have been born within God's Creation with a marred personality that has some degree of self-centeredness, selfishness, and pride.[44] Adam and Eve had abundant free will and had to make important decisions (choices) throughout their physical lives, and so do we!

सृष्टि की शुरुआत में जब हव्वा और आदम ने अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का सेवन करके परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया तब से परमेश्वर की सृष्टि में सभी लोग एक विकृत व्यक्तित्व के साथ पैदा हुए हैं जिसमें कुछ हद तक आत्मकेंद्रितता, स्वार्थ और अभिमान है।[44] आदम और हव्वा के पास भरपूर स्वतंत्र इच्छा थी और उन्हें अपने पूरे भौतिक जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय (चुनाव) लेने थे, और हम भी ऐसा ही करते हैं!

Within God's overall Creation, abundant free will is a critically important gift given to everyone because God wants a free interaction with everyone. ***He is not creating robots!*** Good choices produce good eternal outcomes; bad choices lead to pain and suffering. If God and His ways do not become acceptable sometime during our physical lives, one's bad choices lead to an eternal prison sentence within Hell.

ईश्वर की संपूर्ण सृष्टि में प्रचुर मात्रा में स्वतंत्र इच्छा सभी को प्रदान की गयी जो एक महत्वपूर्ण उपहार है क्योंकि ईश्वर सभी के साथ स्वतंत्र बातचीत करना चाहता है। वह रोबोट नहीं बना रहा है! अच्छे विकल्प अच्छे शाश्वत परिणाम उत्पन्न करते हैं बुरे विकल्प दर्द और पीड़ा की ओर ले जाते हैं। यदि परमेश्वर और उनके तरीके हमारे भौतिक जीवन के दौरान कभी भी स्वीकार्य नहीं होते हैं तो किसी के द्वारा चुने गए बुरे विकल्प नरक के भीतर एक अनन्त जेल की सजा की ओर ले जाते हैं।

If we keep in mind that God wants everyone to become a member of His voluntary eternal righteous family, that fact should help everyone consider more carefully God's fantastic invitation to be part of His eternal family. But, with our less than perfect personalities and Satan's ongoing encouragement and deception aimed at moving everyone away from God, we should all listen carefully when God presents us with times of spiritually awakening aimed at helping us know reality so that we will make good decisions (choices).

अगर हम इस बात को ध्यान में रखें कि परमेश्वर चाहता है कि हर कोई उसके स्वैच्छिक शाश्वत धर्मी परिवार का सदस्य बने तो इस तथ्य से हर किसी को परमेश्वर के इस शानदार निमंत्रण पर अधिक ध्यान से विचार करने में

---

[44] Gen 3; Rom 5:12-19; cf. Rom 3:21-24. उत्पत्ति 3; रोम 5:12–19; रोम 3:21–24.

सहायता मिलनी चाहिए कि वह उसके शाश्वत परिवार का हिस्सा बने। लेकिन हमारे अपूर्ण व्यक्तित्व और शैतान के निरंतर प्रोत्साहन और धोखे के प्रभाव में जिसका उद्देश्य हर किसी को परमेश्वर से दूर ले जाना है हमें सभी को ध्यान से सुनना चाहिए जब परमेश्वर हमें आध्यात्मिक रूप से जागृति के समय प्रस्तुत करता है जिसका उद्देश्य हमें वास्तविकता को जानने में सहायता करना है ताकि हम अच्छे निर्णय (चुनाव) ले सकें।

Most people are engaged in some form of busyness, therefore it is very important to listen when God provides special moments of enlightenment.[45] If one ignores God in order to live life the way that they want, they will be forfeiting the very best life now and for eternity.

ज़्यादातर लोग किसी न किसी तरह की व्यस्तता में लगे रहते हैं, इसलिए जब परमेश्वर ज्ञान के विशेष क्षण प्रदान करता है तो उसे सुनना बहुत ज़रूरी है।[45] अगर कोई अपनी पसंद के हिसाब से जीवन जीने के लिए परमेश्वर की उपेक्षा करता है तो वह अभी और हमेशा के लिए सबसे बेहतरीन जीवन खो देगा।

So, what is the highest form of success that anyone can achieve during his or her physical life? The ultimate success or victory that anyone can achieve is accepting God's invitation to join His family and receiving Him as both lord and savior due to a growing love for Him and fellow man.[46]

तो सफलता का वह सर्वोच्च रूप क्या है जिसे कोई भी व्यक्ति अपने भौतिक जीवन में प्राप्त कर सकता है? अंतिम सफलता या जीत जो कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकता है वह यह है कि परमेश्वर के परिवार लिए और साथी मनुष्यों के लिए बढ़ते प्रेम के कारण उसे प्रभु और उद्धारकर्ता दोनों के रूप में स्वीकार करना।[46]

Normally, many have an inner battle over whether or not they will give up personal lordship over God's leadership. Even when someone realizes that God is really good and only wants the best for everyone, it is still hard to let go of personal desires and embrace the world from God's perspective learning to care about everyone. When someone comes to that place and turns from their own ways to follow God and His way of life, spiritual birth into His family occurs and

---

[45] Rom 1:16-2:16. रोमि 1:16–2:16.

[46] Rev 3:18-21; 21:7; 22:1-5; cf. John 14:23-24. प्रका 3:18–21; 21:7; 22:1–5; यूहन्ना 14:23–24.

nothing can every remove them from His eternal family from that moment on.[47]

आम तौर पर कई लोगों के मन में इस बात को लेकर आंतरिक संघर्ष होता है कि वे परमेश्वर के नेतृत्व पर अपना व्यक्तिगत प्रभुत्व छोड़ेंगे या नहीं। यहाँ तक कि जब कोई यह महसूस करता है कि परमेश्वर वास्तव में अच्छा है और सभी के लिए केवल भला चाहता है, तब भी व्यक्तिगत इच्छाओं को छोड़ना और परमेश्वर के दृष्टिकोण से दुनिया को अपनाना तथा सभी की परवाह करना सीखना कठिन होता है। जब कोई उस अवस्था पर पहुंचता है और अपने स्वयं के तरीकों से फिरकर परमेश्वर और उसके जीवन के तरीके का अनुसरण करने के लिए मुड़ता है तब परमेश्वर के परिवार में उसका आध्यात्मिक जन्म होता है और उस क्षण से कोई भी उसे उसके शाश्वत परिवार से दूर नहीं कर सकता।[47]

Most people know that God loves them beyond their comprehension but still struggle internally to allow Him to be lord over all aspects of their lives. Even knowing that God only wants the best for all people, it is still hard for most to allow Him to have the final say. So for many, they have to struggle with personal desires and weigh those desires against God's desire for their lives. If they weigh this carefully, some will figure out that God is worthy to follow and will then want God to help them develop properly. Once one starts following Jesus, they enter into a special ongoing process called "sanctification."[48] Over time, God trains His children in righteous living and leads them into their assigned good works.[49]

ज़्यादातर लोग जानते हैं कि ईश्वर उनसे उनकी समझ से परे प्यार करता है उसके उपरांत भी वे अपने जीवन के सभी पहलुओं पर उसे प्रभुता करने देने के लिए आंतरिक रूप से संघर्ष करते हैं। यह जानते हुए भी कि परमेश्वर सभी लोगों के लिए केवल सर्वश्रेष्ठ चाहता है फिर भी अधिकांश लोगों के लिए उसे अंतिम निर्णय लेने देना कठिन है। इसलिए कई लोगों को व्यक्तिगत

---

[47] John 3:3, 5, 14-17; Rom 8:28-39; 10:9; Eph 1:13-14; etc. यूहन्ना 3:3, 5, 14–17; रोमि 8:28–39; इफि 1:13–14.

[48] Sanctification is an ongoing process whereby God develops His children day by day into a holier and holier life style; Rom 6:22; trust & obey=born again: John 3:3-5, 14-17; Rom 10:9. पवित्रीकरण एक सतत प्रक्रिया है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने बच्चों को दिन–प्रतिदिन एक पवित्रतम और अधिक पवित्र जीवन शैली मे विकसित करता है; रोमि 6:22; विश्वास–आज्ञापालन =नया जन्मः यूह 3:3–5, 14–17; रोमि 10:9.

[49] Eph 2:10; cf. Matt 25:34-40; 28:18-20. इफि 2:10; मत्ती 25:34–40; 28:18–20.

इच्छाओं से जूझना पड़ता है और उन इच्छाओं को अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध तौलना पड़ता है। अगर वे इसे ध्यान से तौलें तो कुछ लोग समझ जाएँगे कि परमेश्वर अनुसरण करने के योग्य है और फिर वे चाहेंगे कि परमेश्वर उन्हें सही तरीके से विकसित होने में मदद करे। एक बार जब कोई यीशु का अनुसरण करना शुरू कर देता है तो वे एक विशेष चल रही प्रक्रिया में प्रवेश करते हैं जिसे "पवित्रीकरण"[48] कहा जाता है। समय के साथ परमेश्वर अपने बच्चों को धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित करता है और उन्हें उनके निर्धारित अच्छे कार्यों में ले जाता है।[49]

Making the Best Choice for Eternity
अनंत काल के लिए सर्वोत्तम चुनाव करना

Enter through the narrow gate, because the gate is wide and the way that is leading into destruction is broad, and those who are leading themselves through it (the wide gate) are many– because the gate is narrow and the way that leads into the Life has been made narrow (difficult); indeed those who are discovering it (the narrow gate) are few. Matt. 7:13-14

सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो (चौड़ें मार्ग) उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा (कठिन) है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। मत्ती 7:13–14

Our Heavenly Father gives everyone abundant free will and asks everyone ***to seek*** Him for cleansing from the past and development for the future.[50] In demonstrating His incredible love for all through the planned death of His Son on a cross, He has given everyone proof of His sincere desire for full, sinless, mature fellowship with as many as will listen to Him.

हमारा स्वर्गीय पिता सभी को भरपूर स्वतंत्र इच्छा देता है और सभी से पूर्व में किए गये पापों से शुद्धिकरण और भविष्य के विकास के लिए उसकी खोज करने के लिए कहता है।[50] क्रूस पर अपने बेटे की योजनाबद्ध मृत्यु के माध्यम से सभी के लिए जो उसकी बात सुनेंगे, अपने अविश्वसनीय प्रेम का

[50] Seek & Find: Matt 6:33; 7:7-8, 14; Luke 11:9-10. खोजें–पाएँः मत्ती 6:33; 7:7–8, 14; लूका 11: 9–10.

प्रदर्शन करके उसने सभी को अपनी ईमानदारी से भरपूर, पाप रहित, परिपक्व संगति रखने की इच्छा का सबूत दिया है।

Because of His righteous nature and great love for us, we should subordinate our will to His and allow Him to develop us.[51] He warns everyone that there are only two paths in reality. If we follow the broad path, which is the sum of all paths other than following Jesus, we will ultimately lose the eternal godly love, joy, and peace that God has in store for us. This path to destruction is wide and easy to follow especially if we have friends traveling it. Doing wrong with friends does not seem as bad to us as doing wrong alone. Therefore, be careful about whom you pick as friends and what you do with them.

उनके धार्मिक स्वभाव और हमारे प्रति महान प्रेम के कारण हमें अपनी इच्छा को उनके अधीन कर देना चाहिए और उन्हें हमारी उन्नति करने देना चाहिए।[51] वह सभी को चेतावनी देते हैं कि वास्तव में केवल दो ही रास्ते हैं। यदि हम चौड़े रास्ते पर चलते हैं, जो यीशु का अनुसरण करने के अलावा सभी रास्तों का योग है तो हम अंततः उस शाश्वत ईश्वरीय प्रेम, आनंद और शांति को खो देंगे जो परमेश्वर ने हमारे लिए सुरक्षित रखी है। विनाश का यह मार्ग चौड़ा है और उस पर चलना आसान है, खासकर अगर हमारे साथ हमारे मित्र हों। मित्रों की संगति में गलत करना हमें उतना बुरा नहीं लगता जितना अकेले गलत करना। इसलिए, इस बात को लेकर सतर्क रहें कि आप किसे अपना मित्र बनाते हैं और उनके साथ क्या करते हैं।

This wide path leading to destruction is laden with self-centered, selfish, prideful individuals. Although the wide path leading to destruction may have its moments of pleasure, a person pays a terrible price if he or she stays on it by losing one's opportunities to join God in His good work and losing one's place in God's eternal holy family.

विनाश की ओर ले जाने वाला यह चौड़ा रास्ता आत्मकेंद्रित, स्वार्थी, अभिमानी व्यक्तियों से भरा हुआ है। हालाँकि विनाश की ओर ले जाने वाले चौड़े रास्ते में आनंद के क्षण हो सकते हैं लेकिन अगर कोई व्यक्ति इस पर चलता रहता है तो उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है क्योंकि वह परमेश्वर के अच्छे कामों में शामिल होने के अवसरों को खो देता है और परमेश्वर के शाश्वत पवित्र परिवार में अपना स्थान खो देता है।

Jesus Christ teaches us that all goodness, which is derived from God's love, comes from God alone; God is the source of love and love's

---

[51] Some of God's prophets used the metaphorical imagery of the potter and clay to illuminate this idea (Isa 64:8; Jer 18:1-6). परमेश्वर के कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने इस विचार को स्पष्ट करने के लिए कुम्हार और मिट्टी की प्रतीकात्मककल्पना का उपयोगकिया (यशा 64:8; यिर्म 18:1–6)।

corresponding goodness for all including Jesus' goodness.[52] Those who truly seek God and His will for their lives will find their individual narrow path to eternal life through Jesus.[53] Following Jesus is the path to eternal life with God; He is the ***only*** Way to the Father,[54] and all other so-called "paths to God" are part of the Broad Path/Road of Destruction that many follow.

यीशु मसीह हमें सिखाते हैं कि सभी अच्छाई जो परमेश्वर के प्रेम से प्राप्त होती है केवल परमेश्वर से आती है परमेश्वर प्रेम का स्रोत है और यीशु की अच्छाई सहित सभी के लिए प्रेम की संगत अच्छाई है।[52] जो लोग वास्तव में अपने जीवन के लिए परमेश्वर और उसकी इच्छा की तलाश करते हैं वे यीशु के माध्यम से अनन्त जीवन के लिए अपना व्यक्तिगत संकीर्ण मार्ग पा लेंगे।[53] यीशु का अनुसरण करना परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन का मार्ग है वह पिता के लिए एकमात्र मार्ग है,[54] और अन्य सभी तथाकथित "परमेश्वर के मार्ग" विनाश के/ व्यापक मार्ग का हिस्सा हैं जिसका कई लोग अनुसरण करते हैं।

We will never have inner peace if we blatantly violate the very reason that God created us, which was to have a pure-caring relationship with Him and one another. If we continue to ignore God's love and authority living mainly for ourselves, our own families, or any other group(s) other than the Family of God, our hearts will eventually become so hardened that we will never want to join God for eternity.

अगर हम परमेश्वर द्वारा बनाए गए उस उद्देश्य का स्पष्ट रूप से उल्लंघन करते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बनाया है तो हमें कभी भी आंतरिक शांति नहीं मिलेगी जो कि परमेश्वर और आपस में एक दूसरे के साथ एक शुद्ध देखभाल वाला संबंध रखना कहलाता है। अगर हम परमेश्वर के प्रेम और अधिकार को अनदेखा करना जारी रखते हैं जो मुख्य रूप से अपने लिए अपने परिवार के लिए या परमेश्वर के परिवार के अलावा किसी अन्य समूह के लिए जीते हैं तो हमारे दिल अंततः इतने कठोर हो जाएंगे कि हम कभी भी अनंत काल तक परमेश्वर से जुड़ना नहीं चाहेंगे।

Because God desires us to want to be in His family (free will) and live with Him and one another in a caring righteous manner, He will not force any of us to do so. He desires a ***free-willed*** multi-personal

---

[52] Luke 18:18-19; 1 John 4:8,10,16,19. लूका 18:18–19; 1 यूहन्ना 4:8, 10, 16, 19.

[53] John 7:17; 8:31-36; live out the assigned good works (Eph 2:10). यूहन्ना 7:17; 8:31–36; सौंपे गए भल`कार्यों को पूरा करें (इफि 2:10).

[54] John 14:6; Acts 4:12; 1 Tim 2:3-5. यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के कार्य 4:12; 1तिमो 2:3–5.

relationship with everyone. God warns us that living in a self-centered, selfishness state of mind with its corresponding disobedience does not allow us to be developed properly and prohibits us from spending eternity with Him.[55] Therefore, we must learn to listen to God, or our separation will become so complete that we will feel an emptiness that is hard to comprehend. Scripture says that this emptiness and eventual extreme pain causes "wailing and gnashing of teeth."[56]

क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि हम उसके परिवार (स्वतंत्र इच्छा वाले) में रहना चाहें और उसके साथ और आपस में दूसरे मनुष्यों के साथ एक देखभाल करने वाले धार्मिक तरीके से रहें वह हममें से किसी को भी इस रास्ते को चुनने के लिए मजबूर नहीं करेगा। वह सभी के साथ एक स्वतंत्र इच्छा वाले बहु– वैयक्तिक संबंध की इच्छा रखता है। किंतु परमेश्वर हमें चेतावनी देता है कि आत्मकेंद्रित, स्वार्थी मन की स्थिति में रहना और उसी के प्रभाव में बने रहना हमें ठीक से विकसित नहीं होने देता और हमें उसके साथ अनंत काल बिताने से रोकता है।[55] इसलिए हमें परमेश्वर की बात सुनना सीखना चाहिए अन्यथा हमारा अलगाव इतना पूर्ण हो जाएगा कि हम एक खालीपन महसूस करेंगे जिसे समझना मुश्किल है। धर्मशास्त्र कहता है कि यह खालीपन और इसके कारण होने वाला अत्यधिक कष्ट "रोने और दांत पीसने का कारण" बनता है।[56]

Although the Father suffered great agony over His Son's rejection and death, both knew that they were making ***the right way possible*** for us to be with them forever. We know that this is true through Nature and the confirming consistent work of the Holy Spirit in everyone's lives.[57] Their combined demonstration of genuine love and

---

[55] The prodigal son needed something to happen in his life to show him the difference between godly love and selfishness (Luke 15). उड़ाऊ पुत्र का उसके जीवन में कुछ ऐसा घटित होने की आवश्यकता थी जो उसे ईश्वरीय प्रेम और स्वार्थ के बीच का अंतर दिखा सके (लूका 15)।

[56] Matt 13:41-50; 25:41-46, Rev 19:20; 20:11-15. Observe that in Matt 8:12, God's disobedient children will be cast into darkness vs. fire with light. Through metaphorical imagery, God gives everyone a glimpse of the pain that eternal separation from Him and judgment for bad actions brings. मत्ती 13:41–50; 25:41–46, प्रकाशित 19:20; 20:11–15 ध्यान दें कि मत्ती 8:12 में, परमेश्वर की अवज्ञाकारी संतानों को प्रकाशमय आग के बजाय अंधकार में डाल दिया जाएगा।परमेश्वर रूपकों के माध्यम से सभी को उस दर्द की झलक दिखाता है जो उससे अनंतकाल तक अलग रहने और बुरे कार्यों के लिए न्याय लाता है।

[57] Rom 1:20-22; John 16:7-11. रोमियों 1:20–22; यूहन्ना 16:7–11.

persistent encouragement should draw us to them. As we learn to listen to God, He cleanses us from our sins and draws us into His good works.

हालाँकि, पिता को अपने बेटे की अस्वीकृति और मृत्यु पर बहुत पीड़ा हुई लेकिन वे दोनों जानते थे कि वे हमारे लिए, हमेशा उनके साथ रहने के सही तरीके को संभव बना रहे थे। हम जानते हैं कि यह पवित्र आत्मा के पुष्टिकारी निरंतर कार्य के माध्यम से हर किसी के जीवन के लिए सच है।[57] उनके सच्चे प्यार और लगातार प्रोत्साहन के संयुक्त प्रदर्शन से हमें उनकी ओर आकर्षित होना चाहिए। जैसे–जैसे हम परमेश्वर की बात सुनना सीखते हैं वह हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है और हमें अपने अच्छे कार्यों में खींचता है।

As we learn to obey Jesus, we begin to stand upon our Father's promises. As we start walking with God, we start to develop a trust for His perfect plan of godly love and corresponding unity, and we join Him in His Great Work of Love, the Creation. We take great comfort in knowing that we will truly experience the best life now and obtain perfection after death,[58] living in a sinless world where there will no longer be pain and sorrow.[59]

जैसे–जैसे हम यीशु की आज्ञा मानना सीखते हैं हम अपने पिता की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखने लगते हैं। जैसे–जैसे हम परमेश्वर के साथ चलना शुरू करते हैं हम ईश्वरीय प्रेम और संगति में एकता की उनकी सिद्ध योजना के लिए विश्वास विकसित करना शुरू करते हैं और हम उनके प्रेम के महान कार्य अर्थात सृष्टि से उनके साथ जुड़ते हैं। हमें यह जानकर बहुत बहुत शांति मिलती है कि हम वास्तव में अब सबसे अच्छे जीवन का अनुभव करेंगे और मृत्यु के बाद पूर्णता प्राप्त करेंगे[58] एक पाप रहित दुनिया में रहेंगे जहाँ अब दर्द और दुख नहीं होगा।[59]

---

[58] Phil 1:6; Rom 8:29; 1 John 3:1-3. फिलि 1:6; रोमियों 8:29; 1 यूहन्ना 3:1–3.

[59] Rev 21:1-7. प्रका 21:1–7.

Chapter 2: Jesus Is Lord!
अध्याय 2: यीशु प्रभु हैं!

Jesus, "You (my disciples) are proclaiming me, The Teacher and The Lord, and you are speaking correctly, for I am." John 13:13

यीशु ने कहा, "तुम (मेरे शिष्यों) मुझे गुरू, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं।" यूहन्ना 13:13

Now, let the Holy Spirit, the Spirit of Truth, help us realize more fully who is encouraging, instructing, and leading those who listen.[60] This great teacher and leader is the Son of the living God.[61] He is working in perfect godly unity with the Father and Holy Spirit. Jesus teaches us reality so that we may mature and become free from bondage caused by our own selfishness. Jesus Christ is ***not*** just another good man; Jesus is ***not*** just another great prophet; Jesus Christ ***is*** the son of the Living God who worked in close unity with His father putting together the total Creation including the heavens, Earth, and humanity.[62] Jesus is the power who is literally holding the Creation together.[63] The Father has appointed Jesus, our Eldest Brother, to lead us for eternity.[64]

अब पवित्र आत्मा सत्य की आत्मा हमें और अधिक पूर्ण रूप से यह समझने में मदद करे कि कौन सुनने वालों को प्रोत्साहित निर्देश और नेतृत्व कर रहा है।[60] यह महान शिक्षक और अगुवा जीवित परमेश्वर का पुत्र है।[61] वह पिता

---

[60] John 14:23, "...We will come...," 26; 16:7-14. यूहन्ना 14:23, "....हम आएंगे...," 26; 16:7–14.

[61] Matt 16:16. According to Jesus, no one is to be proclaimed "leader" except Him (Matt 23:10). मत्ती 16:16. यीशु के अनुसार, उसके अलावा किसी को भी "स्वामी" घोषित नहीं किया जाना चाहिए (मत्ती 23:10)।

[62] Matt 16:13-17; John 1:3,10; Eph 2:10; Col 1:12-22; Heb 1:2. मत्ती 16:13–17; यूहन्ना 1:3,10; इफिसियों 2:10; कुलुस्सियों 1:12–22; इब्रानियों 1:2.

[63] Col 1:17. कुलु 1:17.

[64] Eph 1:19-21. इफि 1:19–21.

और पवित्र आत्मा के साथ पूर्ण ईश्वरीय एकता में काम कर रहा है। यीशु हमें वास्तविकता सिखाता है ताकि हम परिपक्व हो सकें और अपने स्वार्थ के कारण होने वाले बंधन से मुक्त हो सकें। यीशु मसीह सिर्फ़ एक और भला इंसान नहीं है, यीशु सिर्फ़ एक और महान भविष्यद्वक्ता नहीं है, यीशु मसीह जीवित परमेश्वर का पुत्र है जिसने अपने पिता के साथ घनिष्ठ एकता में काम किया और स्वर्ग पृथ्वी और मानवता सहित संपूर्ण सृष्टि को एक साथ रखा।[62] यीशु वह शक्ति है जो सचमुच सृष्टि को एक साथ रखती है।[63] पिता ने यीशु, अर्थात हमारे सबसे बड़े भाई को अनंत काल तक हमारा नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया है।[64]

Jesus' Farewell Discourse and Prayer
यीशु का विदाई प्रवचन और प्रार्थना

Jesus' farewell discourse and prayer is different in one very important aspect from all other leadership farewells recorded in God's Word. In His farewell discourse, Jesus never relinquishes His authority to a successor. After completing His last supper with them, Jesus speaks to His disciples before going to the Cross. He knows that He is responsible to continue teaching and leading all who are willing to trust and obey Him. John gives us this account of Jesus' commandments and exhortations to His disciples and His requests to the Father for His disciples of all ages in John 13-17. Let us begin looking at Jesus' ***continued*** lordship by examining His farewell discourse and prayer comparing it to other biblical farewell discourses.

यीशु का विदाई प्रवचन और प्रार्थना परमेश्वर के वचन में लिखे सभी अन्य प्रवचनों से एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू से अलग है। अपने विदाई प्रवचन में यीशु कभी भी अपने अधिकार को किसी उत्तराधिकारी को नहीं सौंपते। उनके साथ अपना अंतिम भोज पूरा करने के बाद यीशु क्रूस पर जाने से पहले अपने शिष्यों से बात करते हैं। वह जानते हैं कि जो उन पर भरोसा करने और उनकी आज्ञा मानने के लिए तैयार हैं, उन सभी को सिखाना और उनका नेतृत्व करना उनकी ज़िम्मेदारी है । यूहन्ना, हमें यूहन्ना 13:17 में यीशु की आज्ञाओं और उनके शिष्यों को दिए गए उपदेशों और सभी उम्र के अपने शिष्यों के लिए, पिता से किए गए अनुरोधों का विवरण देता है। आइए, हम यीशु के सतत प्रभुत्व का और उनके विदाई प्रवचन और प्रार्थना का गहराई से मनन करेंगे और इसकी तुलना बाइबिल के अन्य पात्रों के द्वारा दिए गए विदाई प्रवचनों से करके देखना शुरू करें।

The practice of commandment, exhortation, and prayer for one's loved ones at the point of death is a well-attested practice. Being responsible for the lives of their loved ones, the authority figure passes on his most valuable thoughts and concerns for those who will follow him. Before a final prayer or blessing, the last set of instructions and exhortations normally includes confirmation of the next authority figure, the one who is going to assume responsibility for the guidance and care

of the family or nation. Three examples from the Bible are: (1) Isaac's blessing of Jacob;[65] (2) Israel's (Jacob's) commandments and blessings to his sons and their families who made up the original families known as the nation of Israel;[66] and (3) Moses' exhortations, commandments, and prayer for the blessing of each tribe of Israel.[67] In the Gospel of John, we see Jesus engaging in the same action. In His farewell discourse, Jesus gives His disciples one new commandment, "Love one another just as I have loved you."[68] He also exhorts and encourages, "Let not your heart be troubled,[69] for we (Jesus and the Father) will come to you through another Comforter, the Spirit of Truth."[70]

मृत्यु के समय अपने प्रियजनों के लिए आज्ञा देकर जाना, उपदेश देना और प्रार्थना का अभ्यास करवाना एक अच्छा प्रमाणित अभ्यास है। अपने प्रियजनों के जीवन के प्रति जिम्मेदार होने के नाते अधिकार रखने वाला व्यक्ति अपने सबसे मूल्यवान विचारों और चिंताओं को उन लोगों के लिए व्यक्त करता है, जो उसका अनुसरण करेंगे। अंतिम प्रार्थना या आशीर्वाद से पहले निर्देशों और उपदेशों के अंतिम चरण में आम तौर पर अगले अधिकार प्राप्त व्यक्ति की पुष्टि शामिल होती है जो परिवार या राष्ट्र के मार्गदर्शन और देखभाल की जिम्मेदारी संभालने जा रहा है। बाइबल से तीन इसके उदाहरण हैं:(1) इसहाक द्वारा याकूब को आशीर्वाद;[65] (2) इस्राएल (याकूब द्वारा) अपने बेटों और उनके परिवारों को दी गई आज्ञाएँ और आशीर्वाद जिन्होंने इस्राएल राष्ट्र के रूप में जाने जाने वाले मूल परिवारों का गठन किया; [66] और (3) इस्राएल के प्रत्येक गोत्र के आशीर्वाद के लिए मूसा द्वारा दिए गए उपदेश, आज्ञाएँ और प्रार्थना।[67] यूहन्ना के सुसमाचार में, हम यीशु को उसी कार्य में संलग्न होते हुए देखते हैं। अपने विदाई प्रवचन में यीशु अपने शिष्यों को एक नई आज्ञा देते हैं, "एक दूसरे से वैसा ही प्रेम करो जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है।"[68] वह यह भी आग्रह और प्रोत्साहन देता है, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो,[69] "क्योंकि हम (यीशु और पिता) दूसरे सहायक अर्थात् सत्य के आत्मा के द्वारा तुम्हारे पास आएंगे।"[70]

The one ***major*** difference between Jesus' farewell discourse and prayer and all of the other biblical farewells is that Jesus never

---

[65] Gen 27:2, 27-30. उत्पत्ति 27:2, 27–30.

[66] Gen 48-49. उत्पत्ति 48–49.

[67] Deut 1-4, 32; 5-31; and Deut 33 respectively. व्यवस्था. 1–4, 32; 5–31; और व्यवस्थाविवरण 33 क्रमशः।

[68] John 13:34; 15:12, 17. यूहन्ना 13:34; 15:12, 17.

[69] John 14:1. यूहन्ना 14:1.

[70] John 14:16-17; in addition, see John 14:6, 18, 20, 26-27. यूहन्ना 14:16–17; इसके अतिरिक्त, यूहन्ना 14:6, 18, 20, 26–27 देखें।

relinquished His authority as the highest leader of the Church to another individual. Although dying leaders normally appointed new leaders to take their place, Jesus deliberately did not appoint a new leader, because He expected to become the ***risen*** Lord in just three days. And He knew that after His ascension, He would continue to teach and lead His people through the Spirit of Truth. Jesus said,

> **I shall not leave you orphans; I am coming to you. Yet a little while, and the world will no longer observe me, but you (pl) will observe me; because I am alive, indeed you shall live also. In that day you will know that I am in my Father, and you in me, and I in you . . . 26 But the Comforter, the Holy Spirit, whom the Father shall send in my name, He will teach you all things, and He shall remind you of all that I spoke to you. I am leaving peace for you; I am giving you my peace; not as the world gives do I give to you. Let not your heart be troubled nor afraid. John 14:18-27**

यीशु के विदाई उपदेश और प्रार्थना और बाइबिल के दूसरे सभी विदाई उदाहरणों के बीच एक बड़ा अंतर यह है कि यीशु ने चर्च के सर्वोच्च प्रमुख के रूप में अपना अधिकार कभी किसी अन्य व्यक्ति को नहीं सौंपा। हालाँकि यह प्रचलन में था कि मरने वाले अगुवे आम तौर पर अपनी जगह लेने के लिए नए अगुवे को नियुक्त करते थे लेकिन यीशु ने जानबूझकर एक नया अगुवा नियुक्त नहीं किया क्योंकि उन्हें पता था कि वे सिर्फ़ तीन दिनों में जी उठेंगे। और वह जानते थे कि उनके स्वर्गारोहण के बाद वह सत्य के आत्मा के माध्यम से अपने लोगों को सिखाना और उनका नेतृत्व करना जारी रखेंग,

> मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं। और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम (लोग) मुझे देखोगे, इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा। उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उस से कहा, हे प्रभु, क्या हुआ की तू अपने आप को हम पर प्रगट किया चाहता है, और संसार पर नहीं यीशु ने उस को उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ

वास करेंगे। जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं वरन पिता का है, जिस ने मुझे भेजा। ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं। परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देताः तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। यूहन्ना 14:18–27

Jesus Christ Is the Son of the Living God
यीशु मसीह जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं

Our eldest brother **is** the first son of the living God.[71] He is working in perfect unity with the Father. Yes, Jesus Christ is **not** just another good man nor is He just another great prophet; Jesus Christ **is** the son of the Living God who helped His father with our creation.[72] We can learn a lot about our savior and His great qualifications to lead us through Paul's letter to the Colossians. Jesus Christ is the ***Beloved Son*** of the Father who has redeemed us from our sins (Col 1:13-14); Jesus is loved tremendously by the Father. Jesus is the ***Image of God***, and God cannot be seen with human eyes,[73] yet we can see the Father's nature by observing Jesus.[74] He is the ***Firstborn*** having the rights of the firstborn over every creature (Col 1:15), yet He shares His rights with every Believer.[75]

---

[71] Matt 16:16. मत्ती 16:16.

[72] Matt 16:13-17; John 1:3,10; Eph 2:10; Heb 1:2. मत्ती 16:13–17; यूहन्ना 1:3,10; इफि 2:10; इब्रानियों 1:2.

[73] John 14:7 (We can see the Father through Jesus Christ); 1 John 4:12, 20: No one on Earth has seen the Father except Christ. यूहन्ना 14:7 (हम यीशु मसीह के माध्यम से पिता को देख सकते हैं); 1 यूहन्ना 4:12, 20: मसीह के अलावा पृथ्वी पर किसी ने पिता को नहीं देखा है।

[74] John 12:45; 14:9. यूहन्ना 12:45; 14:9.

[75] John 1:14 . . . 17:5 . . . 17:22. यूहन्ना 1:14 . . . 17:5 . . . 17:22.

हमारा सबसे बड़ा भाई जीवित परमेश्वर का पहला पुत्र है।[71] वह पिता के साथ पूर्ण एकता में काम कर रहा है। हाँ, यीशु मसीह सिर्फ़ एक और अच्छे इंसान की श्रेणी में ही नहीं है और न ही वह सिर्फ़ एक और महान भविष्यवक्ता है यीशु मसीह जीवित परमेश्वर का पुत्र है जिसने हमारे निर्माण में अपने पिता की सहायता की।[72] हम अपने उद्धारकर्ता और हमें कुलुस्सियों को लिखे पौलुस के पत्र के माध्यम से मार्गदर्शन करने के लिए उसकी महान योग्यताओं के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। यीशु मसीह पिता का प्रिय पुत्र है जिसने हमें हमारे पापों से छुड़ाया है (कुलुस्सियों 1:13–14) ; यीशु को पिता द्वारा अत्यधिक प्रेम किया जाता है। यीशु परमेश्वर की छवि है और परमेश्वर को मानवीय आँखों से नहीं देखा जा सकता है[73] फिर भी हम यीशु को देखकर पिता के स्वभाव को देख सकते हैं।[74] वह पहिलौठा है और उसे हर प्राणी पर पहिलौठे का अधिकार है (कुलुस्सियों 1:15), फिर भी वह अपने अधिकारों को हर विश्वासी के साथ साझा करता है।[75]

Jesus is the ***Master Craftsman***,[76] creating all things seen and unseen in Heaven and on Earth. We were created through Jesus for fellowship with Jesus (Col 1:16).[77] Jesus is the Word,[78] the Origin, the Source, from which the Creation came.[79] Jesus was before all,[80] ***the Eldest***, and it is ***through Him*** that all things continue. Literally, Jesus has set the Creation in motion and is continuing to hold it together (Col 1:17).

यीशु एक निपुण शिल्पकार हैं,[76] जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी पर देखी और अनदेखी सभी चीज़ों का निर्माण किया है। हमें यीशु के साथ संगति के लिए यीशु के द्वारा बनाया गया था (कुलु 1:16)।[77] यीशु वचन हैं,[78] मूल हैं, वह स्त्रोत हैं, जिससे सृष्टि अस्तित्व में आई।[79] यीशु सर्वप्रथम हैं,[80] सबसे बड़े ,और उनके द्वारा सब चीजें चल रही हैं। वस्तुतः यीशु ने सृष्टि को गति दी है और इसे एक साथ जोड़े रखना जारी रखा है (कुलु 1:17)।

---

[76] John 1:10; Eph 2:10, "For we are His (God's) workmanship, having been created in/through Christ Jesus for good works. . . . Heb 1:2. यूहन्ना 1:10; इफिसियों 2:10, "क्योंकि हम उसके (परमेश्वर के) बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में/उसके द्वारा भले कामों के लिये सृजे गए हैं. . . । इब्रि 1:2.

[77] 1 John 1:3. 1 यूहन्ना 1:3.

[78] John 1:3, 10. यूहन्ना 1:3,10.

[79] Rev 3:14. प्रका 3:14.

[80] John 1:1. यूहन्ना 1:1.

Jesus is the ***Head*** of the Body, the Church,[81] and sits at the right hand of the Father in power forever.[82] Jesus is the beginning of resurrected life, the ***Firstborn from the Dead***. Because Jesus is the oldest son, the first, and continues to obey our Father faithfully, He has the greatest eternal responsibility and corresponding authority over all things (Col 1:18).[83]

यीशु देह अर्थात कलीसिया का मुखिया है[81] और हमेशा के लिए सामर्थ में पिता के दाहिने हाथ पर बैठता है।[82] यीशु पुनर्जीवित जीवन की शुरुआत है, मृतकों में से पहिलौठा । क्योंकि यीशु सबसे बड़ा पुत्र है, प्रथम है, और हमारे पिता की आज्ञा का पालन विश्वसनीयता के साथ करना जारी रखता है, उसके पास सभी चीजों के ऊपर सबसे बड़ी शाश्वत जिम्मेदारी और संगत अधिकार है (कुलु 1:18)।[83]

Jesus is the ***Sinless Reconciler***, reconciling us and *those in Heaven* to the Father through the Cross (Col 1:19-20).[84] Prior to the Creation, our Heavenly Father and Jesus agreed together to make an atonement for our disobedience.[85]

यीशु पाप रहित एवं मेलमिलाप कराने वाला है जो क्रूस के माध्यम से हमें और स्वर्ग में रहने वालों को पिता से मेलमिलाप कराता है (कुलु 1:19–20)।[84] सृष्टि से पहले, हमारे स्वर्गीय पिता और यीशु ने हमारे आज्ञा उल्लंघन के लिए प्रायश्चित करने के लिए एक साथ सहमति व्यक्त की।[85]

The Father sent Jesus, the prophesied Messiah (Christ), to die on the Cross for all people, and then He raised Jesus from the dead and set Him over all powers and authorities in Heaven and on Earth forever. Today, this same Jesus delivers all who will come to trust and obey Him from the power of the Evil One.[86]

---

[81] Eph 1:22-23; 4:15; 5:23; Rom 12 and 1 Cor 12 discuss the Body. इफि 1:22–23; 4:15; 5:23; रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 में के बारे में चर्चा की गई है।

[82] Eph 1:20-21. इफिसियों 1:20–21.

[83] 1 Peter 3:22. 1 पतरस 3:22.

[84] Eph 1:7-10; Corinthians 5:17-21; Heb 9:22. इफि 1:7–10; कुरि. 5:17–21; इब्रा 9:22.

[85] Matt 25:34; Eph 1:4; 2 Tim 1:9; 1 Peter 1:19-20; Rev 13:8. मत्ती 25:34; इफि 1:4; 2 तीमु 1:9; 1 पत 1:19–20; प्रकाशित 13:8.

[86] John 10:10. यूहन्ना 10:10.

पिता ने यीशु को भविष्यवाणी किए गए मसीहा के रूप में अर्थात (मसीह) को सभी लोगों के लिए क्रूस पर मरने के लिए भेजा और फिर उसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया और उसे स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी शक्तियों और अधिकारों पर हमेशा के लिए नियुक्त किया। आज यही यीशु दुष्ट की शक्ति से उन सभी को बचाता है जो उस पर भरोसा करेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।[86]

Jesus ***is*** the Son of the one true living God.[87] During Jesus' earthly ministry, many Jewish leaders ***ignored*** His identity and ***rejected*** His authority ***because of their hardened hearts toward God***.[88] Their hearts had become hardened as they took matters into their own hands and stopped listening to God. They would not give up control over their fellow man, which they had wrongfully taken from God.[89] Therefore, Jesus removed all of their responsibility and corresponding authority including what He had originally given them.[90] Their Temple was destroyed and they were driven out of Jerusalem approximately thirty five to forty years after Jesus' death and resurrection. Throughout time since Jesus' earthly ministry, many have continued to ***ignore*** His identity and ***reject*** His authority because of hardened hearts wanting things their own way.

यीशु एकमात्र सच्चे जीवित परमेश्वर का पुत्र है। [87] यीशु की सांसारिक सेवकाई के दौरान कई यहूदी अगुवों ने उनकी पहचान को अनदेखा किया और परमेश्वर के प्रति अपने कठोर मन के कारण उनके अधिकार को अस्वीकार कर दिया।[88] उनके हृदय कठोर हो गए थे क्योंकि उन्होंने कई मामलों को अपने

---

[87] Matt 16:16 (the Christ, the Son of the Living God); Mark 8:29 (the Christ); John 6:69 (the Holy One of God). मत्ती 16:16 (मसीह, जीवित परमेश्वर का पुत्र); मरकुस 8:29 (मसीह); यूहन्ना 6:69 (परमेश्वर का पवित्र जन)।

[88] Jesus proclaims His identity through His words and actions: John 5:17, 19; 17:1. His Rejection: Matt 26:63; Mark 14:61; Luke 22:70; John 5:18; 19:7. Hardened Hearts: Matt 13:13-15. यीशु अपने शब्दों और कार्यों के माध्यम से अपनी पहचान की घोषणा करते हैं: यूहन्ना 5:17, 19; 17:1. उनका अस्वीकरण: मत्ती 26:63; मरकुस 14:61; लूका 22:70; यूहन्ना 5:18; 19:7, कठोर हृदय: मत्ती 13:13–15.

[89] Matt 21:33-39. मत्ती 21:33–39.

[90] John 8:31-47; Matt 21:43 (Kingdom taken from religious authorities); John 3:35; 5:22-23 (honor the Son), 30 (Jesus' seeks the Father's will); 17:2; Eph 1:21. यूहन्ना 8:31–47; मत्ती 21:43 (धार्मिक अधिकारियों से राज्य छीन लिया गया); यूहन्ना 3:35; 5:22–23 (पुत्र का आदर करें), 30 (यीशु पिता की इच्छा चाहता है); 17:2; इफिसियों 1:21.

हाथों में ले लिया और परमेश्वर की बात सुनना बंद कर दिया। वे अपने साथी बंधुओं पर अधिकार रखना नहीं छोड़ेंगे जिसे उन्होंने गलत तरीके से परमेश्वर से छीन लिया था।[89] इसलिए यीशु ने उनकी सारी ज़िम्मेदारी और संबंधित अधिकार को हटा दिया जिसमें वह भी शामिल था जो उसने मूल रूप से उन्हें दिया था।[90] उनका मंदिर नष्ट कर दिया गया और उन्हें यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के लगभग पैंतीस से चालीस साल बाद यरूशलेम से बाहर निकाल दिया गया। यीशु की सांसारिक सेवकाई के बाद से कई लोगों ने उनकी पहचान को अनदेखा करना और उनके अधिकार को अस्वीकार करना जारी रखा है क्योंकि उनके कठोर हृदय चीजों को अपने तरीके से चलाना चाहते हैं।

Those who hear and receive Jesus Christ hear and receive the Father; those who hear and receive Jesus' disciples hear and receive Jesus.[91] The Father clearly spoke through Jesus during His earthly ministry, and presently Jesus is speaking to all who listen through the Holy Spirit, Scripture, and His Body, the Church.[92]

जो लोग यीशु मसीह को सुनते और ग्रहण करते हैं वे पिता को सुनते और ग्रहण करते हैं जो लोग यीशु के शिष्यों को सुनते और ग्रहण करते हैं वे यीशु को सुनते और ग्रहण करते हैं।[91] पिता ने अपनी सांसारिक सेवकाई के दौरान यीशु के माध्यम से स्पष्ट रूप से बात की और वर्तमान में यीशु पवित्र आत्मा, पवित्र शास्त्र और उसकी देह अर्थात कलीसिया के माध्यम से उन सभी से बात कर रहे हैं, जो सुनते हैं।[92]

---

[91] Matt 10:40; Mark 9:37b; Luke 9:48b; John 12:44; Gal 4:14. मत्ती 10:40; मरकुस 9:37; मरकुस 9:48; यूहन्ना 12:44; गला 4:14.

[92] Jesus teaches us the Father's will (Heb 1:2; John 8:28, 47; 17:8). During this age, the Church is the Light to the World: Eph 3:10. In addition to the Father & Son being with us now through the Holy Spirit, we have God's written Word and the same Holy Spirit who originally helped the original writers write it helping us to understand it. We are to allow God to speak through us to the World– Evangelism: Matt 10:20 & Mark 13:11; Christian Defense: Matt 10:20 & Mark 13:11. यीशु हमें पिता की इच्छा सिखाता है (इब्रा 1:2; यूहन्ना 8:28, 47; 17:8)। इस युग के दौरान, कलीसिया दुनिया के लिए प्रकाश हैः इफि 3:10। पिता और पुत्र के पवित्र आत्मा के माध्यम से अब हमारे साथ होने के अलावा, हमारे पास परमेश्वर का लिखित वचन है और वही पवित्र आत्मा है जिसने मूल लेखकों को इसे लिखने में मदद की थी और हमें इसे समझने में मदद की। हमें परमेश्वर को हमारे माध्यम से दुनिया से बात करने की अनुमति देनी चाहिए–– सुसमाचार प्रचारः मत्ती 10:20 और मरकुस 13:11; मसीही बचावः मत्ती 10:20 और मरकुस 13:11।

God's Word Guarantees Inner Peace and Joy
परमेश्वर का वचन मन की शांति और खुशी की गारंटी देता है

Come to me all who are laboring and are burdened, and I will give you relief. Take up my yoke upon yourselves and learn from me, because I am gentle and humble in heart, and you will find relief for your souls. For my yoke is merciful and my burden is light (easy to bear).[93] **Matthew 11:28-30**

हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।[93] मत्ती 11:28–30

Because God truly cares for us, He asks us to give Him our anxieties, trading our heavy burdens for lighter loads. There is inner peace and joy for every individual who allows the Creator to guide his or her life.[94] God teaches all who learn to love Him that there is something much greater than self, a pure non-selfish interrelationship with God ***and*** other obedient members of His family. Jesus leads us through a learning experience that transforms our lives forever. He teaches us to love all people, and we learn to live as family members of God ministering to all.

क्योंकि परमेश्वर वास्तव में हमारी परवाह करता है वह हमसे हमारी चिंताओं को उसे सौंपने के लिए कहता है, हमारे भारी बोझ को हल्के बोझ से बदल देता है। हर व्यक्ति के लिए आंतरिक शांति और खुशी मिलना तय है जो निर्माता को अपने जीवन का मार्गदर्शन करने देता है।[94] परमेश्वर उन सभी को सिखाता है जो उससे प्रेम करना सीखते हैं कि स्वयं से बढ़कर भी कुछ है अर्थात परमेश्वर और उसके परिवार के अन्य आज्ञाकारी सदस्यों के साथ एक शुद्ध गैरस्वार्थी अंतर्संबंध। यीशु हमें एक सीखने के अनुभव के माध्यम से ले चलता है जो हमारे जीवन को हमेशा के लिए बदल देता है। वह हमें सभी लोगों से प्रेम करना सिखाता है और हम सभी की सेवा करते हुए परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के रूप में जीना सीखते हैं।

---

[93] Luke 4:18-21; Isaiah 61:1-2. लूका 4:18–21; यशा 61:1–2.

[94] John 17:13, 23; Rom 5:1-5. यूहन्ना 17:13, 23; रोमि 5:1–5.

Families are social units that should provide proper development and support. The family's primary role is to provide each new member of society, the child, with its core training in social skills and moral behavior. This training becomes part of that member's very being, their "inner self." The family continues to provide support for its members throughout all phases of life.

परिवार सामाजिक इकाइयाँ हैं जिन्हें उचित विकास और सहायता प्रदान करनी चाहिए। परिवार की प्राथमिक भूमिका समाज के प्रत्येक नए सदस्यए बच्चे को सामाजिक कौशल और नैतिक व्यवहार में बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान करना है। यह प्रशिक्षण उस सदस्य के अस्तित्व उनके "आंतरिक स्व" का हिस्सा बन जाता है। जीवन के हर चरण में परिवार अपने सदस्य को सहायता प्रदान करता है।

A biblical family structure on Earth is similar to God's eternal family structure. A husband is to love his wife as Jesus loves the Church. Therefore, a husband should learn to love his wife to the point of being willing to lay down his life to save her. Jesus put his love for us into action; He died for us and continues to lead us!

पृथ्वी पर बाइबिल के अनुसार पारिवारिक संरचना परमेश्वर की शाश्वत पारिवारिक संरचना के समान है। पति को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे यीशु कलीसिया से प्रेम करता है। इसलिए, पति को अपनी पत्नी से इस हद तक प्रेम करना सीखना चाहिए कि वह उसे बचाने के लिए अपनी जान देने को तैयार हो जाए। यीशु ने हमारे लिए अपने प्रेम को कार्य में परिणित किया, वह हमारे लिए मरे और हमारा मार्गदर्शन करना जारी रखते हैं!

A husband must learn to consider his wife's welfare as important or more than his own. A husband is never a dictator just as Jesus is not a dictator. Men must allow ***free will*** to work within their families just as God allows ***abundant free will*** to influence all humanity. In response to her husband's love, a wife is to submit to the authority of her husband and help him in every way possible. Although women are to submit to the authority of their husbands, they are not inferior to men in any way. God tells us clearly that all men and women of all nationalities and walks of life are equal to each other through Jesus Christ.[95] Jesus has made us ***free*** and ***equal family members*** through His death on a cross.

पति को अपनी पत्नी की भलाई को अपनी भलाई से ज़्यादा महत्वपूर्ण या ज़्यादा समझना सीखना चाहिए। पति कभी तानाशाह नहीं होता जैसे कि यीशु तानाशाह नहीं है। पुरुषों को अपने परिवार में स्वतंत्र इच्छा को काम करने देना चाहिए जैसे कि ईश्वर पूरी मानवता को प्रभावित करने के लिए भरपूर स्वतंत्र

---

[95] Matt 22:28-30; Gal 3:26-29; 1 Peter 3:7. मत्ती22:–28–30;गला 3–26–29; 1 पत 3:7.

इच्छा की अनुमति देता है। अपने पति के प्यार के जवाब में एक पत्नी को अपने पति के अधिकार के अधीन होना चाहिए और हर संभव तरीके से उसकी मदद करनी चाहिए। हालाँकि महिलाओं को अपने पति के अधिकार के अधीन होना चाहिए लेकिन वे किसी भी तरह से पुरुषों से कमतर नहीं हैं। ईश्वर हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि सभी राष्ट्रीयताओं और जीवन के सभी क्षेत्रों के सभी पुरुष और महिलाएँ यीशु मसीह के माध्यम से एक दूसरे के बराबर हैं।[95] यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से हमें स्वतंत्र और समान परिवार के सदस्य बनाया है।

The family of God is continually developed and directed through Jesus by our Heavenly Father. There cannot be peace in any organization without some form of order including levels of authority. We cannot be complete individually or corporately with its accompanying joy without allowing God to prepare us for our proper places in His family. If we listen to God, He will prepare us for our individual positions within His family. As we become people of grace and righteousness, God gives us more and more responsibility to help in His ministry to all. When we learn to listen to God, we begin a relationship with Him and others that provides both internal and eternal peace.[96]

ईश्वर का परिवार हमारे स्वर्गीय पिता द्वारा यीशु के माध्यम से निरंतर विकसित और निर्देशित होता है। किसी भी संगठन में बिना किसी प्रकार के आदेश के शांति नहीं हो सकती है जिसमें अधिकार के विभिन्न चरण भी शामिल हैं। हम व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से इसके साथ आने वाली खुशी के साथ पूर्ण नहीं हो सकते हैं जब तक कि ईश्वर हमें अपने परिवार में हमारे उचित स्थानों के लिए तैयार न करे। यदि हम ईश्वर की बात सुनते हैं तो वह हमें अपने परिवार के भीतर हमारे व्यक्तिगत पदों के लिए तैयार करेगा। जैसे–जैसे हम अनुग्रह और धार्मिकता के लोग बनते हैं, ईश्वर हमें दूसरों की सेवा के द्वारा, उनकी सेवकाई में मदद करने की अधिक से अधिक जिम्मेदारी देता है। जब हम ईश्वर की बात सुनना सीखते हैं तो हम उनके और दूसरों के साथ एक ऐसा रिश्ता शुरू करते हैं जो आंतरिक और शाश्वत शांति दोनों प्रदान करता है।[96]

We ***are*** children of God and have been called into a fantastic relationship that makes us equal family members with Jesus. We ***are*** loved by the Father as Jesus is loved, and we are coheirs with Him in

[96] Love: John 3:16-17; 1 John 4:20; Peace: Rom 5:1-5; Phil 4:4-7.
प्रेमः यूहन्ना 3:16–17; 1 यूहन्ना 4:20; शांतिः रोमियों 5:1–5; फिलिप्पियों 4:4–7.

everything.[97] Yet, we are clearly not equal with Jesus in responsibilities or authority: Jesus ***is*** our lord forever.

हम परमेश्वर के बच्चे हैं और हमें एक अप्रतिम रिश्ते में बुलाया गया है जो हमें यीशु के साथ एक बराबर स्तर पर पारिवारिक सदस्य बनाता है। पिता हमें वैसे ही प्यार करते हैं जैसे यीशु को प्यार किया जाता है और हम हर चीज में उनके साथ सह – उत्तराधिकारी हैं।[97] फिर भी हम स्पष्ट रूप से ज़िम्मेदारियों या अधिकार में यीशु के बराबर नहीं हैं, यीशु हमेशा के लिए हमारे प्रभु हैं।

As we learn to trust and obey God, Jesus shares some of His responsibility and authority with us.[98] We learn to work with Him in many ways ministering to people in our communities and all over the world.

जैसे–जैसे हम परमेश्वर पर भरोसा करना और उसकी आज्ञा मानना सीखते हैं यीशु अपनी कुछ ज़िम्मेदारी और अधिकार हमारे साथ बाँटते हैं।[98] हम अपने समुदायों और पूरी दुनिया में लोगों की सेवा करने के लिए कई तरीकों से उसके साथ काम करना सीखते हैं।

God does not call all people into full-time ministry, but He does ask all people to join Him in a full-time relationship. He gives us the resources, talent, and frame of mind to carry out the good works that He established from the beginning of the Creation for us.[99] Whatever good work God has established for you, feel assured that He has also provided abundantly the empowerment, resources, talent, and frame of mind needed for you to complete the work.[100]

परमेश्वर सभी लोगों को पूर्णकालिक सेवकाई में नहीं बुलाता लेकिन वह सभी लोगों से पूर्णकालिक संबंध में शामिल होने के लिए कहता है। वह हमें अच्छे कामों को पूरा करने के लिए संसाधन, प्रतिभा, और मन की स्थिति देता है जिसे उसने सृष्टि की शुरुआत से ही हमारे लिए स्थापित किया है।[99] परमेश्वर ने आपके लिए जो भी अच्छा काम स्थापित किया है आश्वस्त रहें कि उसने आपको उस काम को पूरा करने के लिए आवश्यक शक्ति संसाधन प्रतिभा और मन की स्थिति भी भरपूर मात्रा में प्रदान की है।[100]

---

[97] Rom 8:14-17; 1 Peter 3:7; Rev 21:7. रोमि 8:14–17; 1 पत 3:7; प्रकाशित 21:7.

[98] 1 Peter 2:9; Acts 1:8; Rev 3:21. 1 पत 2:9; प्रेरितों 1:8; प्रकाशित 3:21.

[99] Eph 2:10; Titus 2:14. Our good works include exposing and correcting wrongdoing (1 Cor 6:1-5). इफि 2:10; तीतुस 2:14 हमारे अच्छे कामों में गलत कामों को उजागर करना और सुधारना शामिल है (1 कुरिं. 6:1–5)।

[100] Acts 1:8; Eph 1:19; 3:14-20; Phil 4:13. प्रेरितों 1:8; इफि 1:19; 3:14–20; फिलि 4:13.

Repentance: Turning from Self to God
पश्चातापः स्वयं से ईश्वर की ओर मुड़ना

Being a child of God starts with a spiritual awakening that leads to repentance and corresponding commitment. Satan does his best to keep all people busy, confused, and focused on themselves. God continually works in peoples' minds and hearts to bring them to a place where they recognize the reality of His love and the destructive nature of self-centeredness and selfishness (spiritual awakening).[101] For some, God is able to reach them during some of their quieter moments; for others God has to set up or allow trials in order to produce spiritual awakenings through a crises.[102] In all cases, God does not want anyone to be eternally separated from Him; He patiently works with everyone wanting all to come to the point of repentance (turning from self to Him) so that they will turn to Him for salvation and an eternal place in His family (2 Peter 3:9).

परमेश्वर की संतान बनना आध्यात्मिक जागृति से शुरू होता है जो पश्चाताप और उसके अनुरूप प्रतिबद्धता की ओर ले चलता है। शैतान सभी लोगों को व्यस्त भ्रमित और खुद पर केंद्रित रखने के लिए अपना पूरा प्रयास करता है। परमेश्वर लगातार लोगों के मन और हृदय में काम करता है ताकि उन्हें ऐसी जगह पर लाया जा सके जहाँ वे उसके प्रेम की वास्तविकता को पहचान सके और आत्मकेंद्रितता और स्वार्थ (आध्यात्मिक जागृति)[101] की नष्ट करने वाली प्रकृति को पहचान सकें। कुछ लोगों के लिए, परमेश्वर उनके शांत क्षणों के दौरान उन तक पहुँचने में सक्षम है, और कुछ लोगों को जगाने के लिए संकट के माध्यम से परमेश्वर की उपस्थिति को पहचानना सिखाना पड़ता है।[102] उन्हें परीक्षाओं में पड़ने देने की अनुमति देना पड़ता है। दोनों ही स्थिति में पश्चाताप नहीं चाहता कि कोई भी उससे हमेशा के लिए अलग हो जाएय वह धैर्यपूर्वक सभी के साथ काम करता है और चाहता है कि सभी पश्चाताप के बिंदु पर आएँ (स्वयं से उसकी ओर मुड़ना) ताकि वे उद्धार और परमेश्वर के परिवार में एक शाश्वत स्थान के लिए उसकी ओर मुड़ें (2 पतरस 3:9)।

---

[101] Rom 1:18–2:16. रोम 1:18–2:16.

[102] One example is the account of the self-centered son (Prodigal Son: Luke 15:11–32) who through a major crisis finally came to understand reality; he came to himself, his senses (Luke 15:17). एक उदाहरण आत्म–केंद्रित (उड़ाऊ पुत्रः लूका 15:11–32 का वर्णन है) जो एक बड़े संकट के माध्यम से अंततः वास्तविकता को समझ पाया और अपने होश में आया (लूका 15:17)।

But beware! Jesus was clear, many stay on the wide road of self-centeredness and selfishness that leads to eternal shame and suffering and only a few turn off onto the narrow way of life that leads to repentance and corresponding commitment, which results in spiritual birth into God's eternal close-knit holy family.[103] Not only does Jesus stand at the door of everyone's life asking to be part of it, He asks us to seek and follow Him.[104]

लेकिन सावधान! यीशु ने स्पष्ट कहा था बहुत से लोग आत्मकेंद्रितता और स्वार्थ के चौड़े मार्ग पर चलते हैं, जो अनंत शर्म और पीड़ा की ओर ले जाता है और केवल कुछ ही लोग हैं जो जीवन के संकीर्ण मार्ग पर चलते हैं जो पश्चाताप और इसी तरह की प्रतिबद्धता की ओर ले जाता है, जिसके फलस्वरूप ईश्वर के अनंत घनिष्ठ पवित्र परिवार में उनका आध्यात्मिक जन्म होता है।[103] न केवल यीशु हर किसी के जीवन के द्वार पर खड़े होकर इसका भाग बनने के लिए कहते हैं बल्कि वे हमसे उन्हें खोजने और उनका अनुसरण करने के लिए कहते हैं।[104]

If we would be honest with one another, most of us would admit that we want things our own way and want everything to be as easy as possible. Scripture is clear that God is longsuffering and has been working hard on humanity's behalf from the very beginning. The Son of God, Jesus Christ, working with His Father died both physically and spiritually in order to provide a way for good to triumph over evil for all eternally. ***Through Jesus' spiritual death, He experienced separation from the Father for the first time in eternity due to our sin (bad actions) being made part of His life,*** so that those who were trusting God would never experience spiritual death even for one second.[105] Jesus provided a way to personally take on our bad actions, which gives those who submit to God a sinless past when entering into God's presence.[106]

अगर हम एक दूसरे के प्रति ईमानदार होंगे तो हममें से ज़्यादातर लोग यह स्वीकार करेंगे कि हम सब कुछ अपने तरीके से चाहते हैं और चाहते हैं कि

---

[103] Matt 7:13–14. मत्ती 7:13–14.

[104] Jesus: Rev 3:20; Us: Matt 7:7–8. यीशुः प्रकाशित 3:20; बनामः मत्ती 7:7–8.

[105] John 11:25–26; Heb 2:9. यूहन्ना 11:25–26; इब्रा 2:9.

[106] Heb 1:2-3; Gal 3:13–14; 2 Cor 5:21; cf. Acts 2:27, 31; Col 2:13–14; 1 Peter 2:24. इब्र 1:2–3; गला 3:13–14; 2 कुरिं 5:21; तुलनाप्रेरितों 2:27, 31; कुलु 2:13–14; 1 पत 2:24.

जीवन में जितनी गुंजाइश हो सके सब कुछ हमारे लिए उतना ही सरल हो। पवित्रशास्त्र स्पष्ट कहता है कि परमेश्वर धीरजवन्त है और शुरू से ही मानवता की ओर से कड़ी मेहनत कर रहा है। परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह, पिता के साथ काम करते हुए शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से मर गए ताकि सभी के लिए बुराई पर अच्छाई की जीत का मार्ग प्रदान किया जा सके। यीशु की आध्यात्मिक मृत्यु के माध्यम से उन्होंने हमारे पाप (बुरे कर्म) को अपने ऊपर लेकर अपने जीवन का हिस्सा बनाने के कारण अनंत काल में पहली बार पिता से अलगाव का अनुभव किया ताकि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा कर रहे थे उन्हें एक सेकंड के लिए भी आध्यात्मिक मृत्यु का अनुभव न करना पड़े।[105] यीशु ने हमारे बुरे कर्मों को व्यक्तिगत रूप अपने ऊपर लेकर एक ऐसा मार्ग प्रशस्त कर दिया जो परमेश्वर के प्रति समर्पित लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते समय एक पाप रहित अतीत देता है।[106]

John the Baptist started his ministry declaring that everyone needed to "repent." Jesus started His earthly ministry telling all to "repent." The Early Church proclaimed the need to "repent."[107] Without repentance, which is turning from self to God, one remains in a fallen self-centered selfish state of existence.

यूहन्ना बपतिस्मादाता ने अपनी सेवकाई की शुरुआत यह घोषणा करते हुए की कि सभी को "पश्चाताप" करने की आवश्यकता है। यीशु ने अपनी सांसारिक सेवकाई की शुरुआत सभी को "पश्चाताप" करने के लिए कहते हुए की। प्रारंभिक कलीसिया ने "पश्चाताप" करने की आवश्यकता की घोषणा की।[107] बिना पश्चाताप के जो स्वयं से ईश्वर की ओर मुड़ता है वह व्यक्ति अपने अस्तित्व की पतित, आत्मकेंद्रित स्वार्थी अवस्था में रहता है।

"Repentance" indicates a change of heart, which results in a change of one's life and life style, a turning from self and sin to God and His righteous way of life. ***Repentance triggers action.*** Repentance brings about a true commitment to stop living for self and start living for God and others. In reality, God knows everyone's heart and true repentance brings about conversion, which is when one is spiritually born into God's holy family, which is a work of God after genuine repentance.[108] ***Repentance with its corresponding commitment to submit to God's lordship and follow Jesus is the key to being born into God's eternal holy family!***

"पश्चाताप" हृदय परिवर्तन को दर्शाता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति के जीवन और जीवन शैली में बदलाव आता है और वह स्वयं और पाप से हटकर

---

[107] John: Matt 3:2; Jesus: Matt 4:17; the Early Church: Acts 2:38.
यूहन्नाः मत्ती 3:2; यीशुः मत्ती 4:17; आरंभिक कलीसियाः प्रेरितों के काम 2:38.

[108] John 1:12–13. यूहन्ना 1:12–13.

परमेश्वर और उसके बताए धार्मिक जीवन के मार्ग की ओर मुड़ता है। पश्चाताप कार्य को प्रेरित करता है। पश्चाताप स्वयं के लिए जीना बंद करके परमेश्वर और दूसरों के लिए जीना शुरू करने की सच्ची प्रतिबद्धता लाता है। वास्तव में परमेश्वर हर किसी के दिल को जानता है और सच्चा पश्चाताप रूपांतरण लाता है जो तब होता है जब व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर के पवित्र परिवार में जन्म लेता है।[108] परिवार का सदस्य बनाना परमेश्वर का कार्य है जो व्यक्ति के सच्चे पश्चाताप के बाद ही संभव होता है। परमेश्वर के आधिपत्य के प्रति समर्पण करने और यीशु का अनुसरण करने की अपनी प्रतिबद्धता के साथ पश्चाताप करना परमेश्वर के शाश्वत पवित्र परिवार में जन्म लेने की कुंजी है!

In Acts 26:19–20, Luke speaks of repentance being part of the process of "turning to" God. He recalled Paul telling King Agrippa that he, Paul, had been obedient to God's revelation to him, and therefore, he was proclaiming the Good News to many including the Gentiles telling them "to repent and turn to the (one true) God" ***doing works*** worthy of repentance.

प्रेरितों के काम 26:19–20 में लूका पश्चाताप करने को परमेश्वर की ओर "मुड़ने" की प्रक्रिया का हिस्सा बताता है। उसने पौलुस को राजा अग्रिप्पा से यह कहते हुए स्मरण दिलाया कि वह, पौलुस, परमेश्वर के रहस्योद्घाटन के प्रति आज्ञाकारी रहा है और इसलिए वह गैरयहूदियों सहित कई लोगों को सुसमाचार सुना रहा था और उनसे कह रहा था कि "पश्चाताप करो और (एक सच्चे) परमेश्वर" की ओर मुड़ने और पश्चाताप के योग्य काम करो।

Commitment & Discipleship
प्रतिबद्धता और शिष्यत्व

All who listen to God are commissioned by Him to represent Him as they become intentionally engaged in the spiritual battles going on all over the world for the eternal placement of each person.[109] God's children are not to sit on the sidelines. In fact, ***Jesus said that nobody is able to be one of His followers unless he or she is willing to deny self, pick up his or her cross daily, and follow Him*** into whatever battles He leads.[110] ***Nowhere in Scripture does God teach that someone can come to Him, pick up a pass to Heaven, ignore the battles going on around them, die physically, and have Jesus escort his or her spirit into Heaven.***

---

[109] Matt 5:13–10; 1 Peter 5:6–10; cf. John 15:1–2; 2 Cor 5:17–19; Eph 6:10–18. मत्ती 5:13–10; 1 पत 5:6–10; यूहन्ना 15:1–2; 2 कुरिं 5:17–19; इफि 6:10–18.

[110] Luke 9:23; 14:26–27. लूका 9:23; 14:26–27.

वे सभी जो परमेश्वर की बात सुनते हैं, उन्हें परमेश्वर द्वारा उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त किया जाता है, क्योंकि वे प्रत्येक व्यक्ति के अनन्त स्थान के लिए पूरे विश्व में चल रहे आत्मिक युद्धों में जानबूझकर शामिल हो जाते हैं।[109] परमेश्वर की संतान हाथ पर हाथ धरे बैठने के लिए नहीं है। वास्तव में यीशु ने कहा कि कोई भी व्यक्ति तब तक उसका अनुयायी नहीं बन सकता जब तक कि वह स्वयं को नकारने प्रतिदिन अपना क्रूस उठाने और उसके द्वारा नेतृत्व की जाने वाली [110] किसी भी लड़ाई में उसका अनुसरण करने के लिए तैयार न हो। पवित्रशास्त्र में कहीं भी परमेश्वर यह नहीं सिखाता है कि कोई भी व्यक्ति अपने आसपास चल रही लड़ाइयों को अनदेखा कर उसके पास आ सकता है, स्वर्ग जाने का मार्ग चुन सकता है और शारीरिक रूप से मरने पर यीशु उसकी आत्मा को स्वर्ग में ले जा सकता है।

So ***why*** do so many people today make some sort of profession of faith and never experience the new creation "in Christ"?[111] In reality, ***without a genuine commitment to follow Jesus, there will be no spiritual birth into God's family and a realization of being a new creation.***

तो फिर आज इतने सारे लोग क्यों किसी न किसी तरह से विश्वास का अंगीकार तो करते हैं लेकिन कभी भी "मसीह में" नई सृष्टि का अनुभव नहीं करते हैं?[111] वास्तव में, यीशु का अनुसरण करने की सच्ची प्रतिबद्धता के बिना परमेश्वर के परिवार में कोई आत्मिक जन्म नहीं होगा और न ही एक नई सृष्टि होने का एहसास होगा।

Satan has sold the world one of His biggest lies since the beginning of the Creation. ***Many believe that salvation is nothing more than obtaining a pass into heaven to be used when one dies.*** This lie causes people to think that they have to wait until they get to Heaven for anything to be better. ***What a lie!*** Sanctification, being molded and shaped by God, and good works starts immediately *for* ***all*** *who truly start following Jesus*.[112]

शैतान ने सृष्टि की शुरुआत से ही दुनिया को अपना सबसे बड़ा झूठ बेचा है। बहुत से लोग मानते हैं कि उद्धार का मतलब स्वर्ग में जाने का रास्ता पाने से ज़्यादा कुछ नहीं है जिसका उपयोग मरने के बाद किया जा सकता है। यह झूठ लोगों को यह सोचने पर मजबूर करता है कि उन्हें स्वर्ग जाने तक इंतज़ार करना होगा, तभी सब कुछ बेहतर होगा। पंरतु यह कितना झूठ है! असल में पवित्रीकरण का कार्य और परमेश्वर द्वारा ढाला और आकार दिया

---

[111] 2 Cor 5:17. 2 कुरि 5:17.

[112] Rom 6:22; cf. Eph 2:10; Phil 2:13. रोमि 6:22; इफि 2:10; फिलि 2:13.

जाना और अच्छे काम किये जाना उन सभी के लिए तुरंत शुरू हो जाते हैं जो वास्तव में यीशु का अनुसरण करना शुरू करते हैं।[112]

This new lie, which is being propagated by many proclaiming that everyone can pick up a pass leading into heaven by confessing their sins and claiming Jesus as their savior ***without following Him as lord***, is hindering many from considering a genuine commitment to follow Jesus. It is only through a turning from self and following Jesus (repentance with corresponding commitment) that one is saved from judgment as a sinner and spiritually born into God's family.

यह नया झूठ जिसे कई लोगों द्वारा प्रचारित किया जा रहा है ऐसा समझाते हुए कि हर कोई अपने पापों को स्वीकार करके और यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानने के द्वारा स्वर्ग में जाने का मार्ग चुन सकता है लेकिन यहां कमी इस बात की है कि यह नया झूठ प्रभु का सच्चाई से अनुसरण करने और उनके प्रति अपनी वास्तविक प्रतिबद्धता पर विचार करने से रोक रहा है। एक व्यक्ति पापी के रूप में न्याय से तभी बच पाता है और आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर के परिवार में तभी जन्म लेता है जब वह पुराने मनुष्यत्व से दूर हो जाए और (पश्चाताप करके प्रतिबद्ध होकर) यीशु के पीछे चले।

Spiritual renewal comes only from God according to His will and His rules.[113] Through spiritual birth into God's family comes the removal of sin and growth in God's righteousness. God's Word is clear, ***if individuals do not make true commitments to follow Jesus, they cannot be His disciples.***[114] Without making a true commitment to follow Jesus, there is no spiritual birth into God's eternal holy family. Heaven is only open to God's children and faithful heavenly beings.[115]

आध्यात्मिक नवीनीकरण केवल परमेश्वर की इच्छा और उसके नियमों के अनुसार ही होता है। [113] परमेश्वर के परिवार में आध्यात्मिक जन्म लेने के बाद पाप का निवारण होता है और परमेश्वर की धार्मिकता में वृद्धि होती है। परमेश्वर का वचन स्पष्ट है यदि व्यक्ति यीशु का अनुसरण करने के लिए सच में प्रतिबद्ध नहीं होते हैं तो वे उनके शिष्य नहीं हो सकते। [114] यीशु का अनुसरण करने के लिए सच्ची प्रतिबद्धता किए बिना परमेश्वर के शाश्वत पवित्र परिवार में आध्यात्मिक जन्म नहीं होता। स्वर्ग केवल परमेश्वर के बच्चों और विश्वसनीय स्वर्गीय प्राणियों के लिए खुला है।[115]

---

[113] John 1:13; 2 Peter 3:9. यूहन्ना 1:13; 2 पतरस 3:9.

[114] Luke 14:26–27. लूका 14:26–27.

[115] Rev 21:7–8, 27. प्रका 21:7–8, 27.

In addition to loss of eternal life, Satan's deceptions are causing many to live out unfulfilled lives instead of living fulfilled lives within God's family. Without spiritual rebirth, one lives without a personal relationship with God and misses out on a life filled with godly love, joy, and inner peace. It is only through repentance and corresponding commitment that one starts to experience the great joy of being part of God's family and working together with God and His family, the Church, to bring others into His eternal holy family for the best life now and forever.

अनंत जीवन के नुकसान के अलावा, शैतान के धोखे से कई लोग परमेश्वर के परिवार के भीतर रहने के बजाय अधूरे जीवन जी रहे हैं। आध्यात्मिक पुनर्जन्म के बिना व्यक्ति परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध के बिना रहता है और ईश्वरीय प्रेम, आनंद और आंतरिक शांति से भरा जीवन खो देता है। केवल पश्चाताप और इसी तरह की प्रतिबद्धता के माध्यम से ही व्यक्ति परमेश्वर के परिवार का हिस्सा होने और परमेश्वर और उसके परिवार चर्च के साथ मिलकर काम करने दूसरों को उसके अनंत पवित्र परिवार में लाने के महान आनंद का अनुभव करना शुरू कर सकता है।

Jesus' followers are being transformed,[116] and they are learning to love others as God loves all.[117] ***When they die physically, they do not need a pass into Heaven from anyone including church leaders because they are God's children.*** Heaven belongs to God ***and*** all of His children.[118] Jesus will meet them as they leave their physical bodies and escort them into the presence of their eternal Father (John 14:3; 1 John 3:1–2; Rev 21:3).

यीशु के अनुयायी बदल रहे हैं,[116] और वे दूसरों से वैसे ही प्रेम करना सीख रहे हैं जैसे परमेश्वर सभी से प्रेम करता है।[117] जब वे शारीरिक रूप से मरते हैं तो उन्हें चर्च के अगुवों से स्वर्ग में जाने का पास लेने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वे तो स्वयं परमेश्वर की संतान हैं। स्वर्ग परमेश्वर और उसके सभी बच्चों का है।[118] जब वे अपने भौतिक शरीर को छोड़ेंगे तो यीशु उनसे मिलेंगे और उन्हें उनके शाश्वत पिता की उपस्थिति में ले जाएंगे (यूहन्ना 14: 3; 1 यूहन्ना 3: 1–2; प्रकाशितवाक्य 21: 3)।

---

[116] 2 Cor 5:17; Gal 5:22–23. 2 कुरि 5:17; गला 5:22–23.

[117] 1 John 3:14; 4:16–19. 1 यूहन्ना 3:14; 4:16–19.

[118] John 14:1–3; 17:24; 20:17; Rom 8:17. यूहन्ना 14:1–3; 17:24; 20:17; रोम 8:17.

Beware, God will not be mocked![119] Each one of us will end up being judged according to our decisions and actions during this short physical portion of our eternal lives.[120] If you have never truly repented and made a corresponding commitment to follow Jesus' leading, now is a great time to do so. Make that commitment now. Tell God that you want to faithfully follow Jesus. He knows you and is waiting to receive you into His eternal loving righteous family.

चौकस रहिए कि परमेश्वर का मज़ाक नहीं उड़ाया जाए! [119] हममें से हर एक का हमारे अनंत जीवन के इस छोटे से भौतिक हिस्से के दौरान हमारे निर्णयों और कार्यों के अनुसार न्याय किया जाएगा।[120] अगर आपने कभी भी सच्चे मन से पश्चाताप नहीं किया है और यीशु के नेतृत्व का अनुसरण करने के लिए कोई प्रतिबद्धता नहीं जताई है तो ऐसा करने का यही सही समय है। अभी ऐसी प्रतिबद्धता का निर्माण करें। परमेश्वर से कहें कि आप यीशु का ईमानदारी से अनुसरण करना चाहते हैं। वह आपको जानता है और आपको अपने अनंत प्रेमपूर्ण धर्मी परिवार में शामिल करने के लिए इंतज़ार कर रहा है।

---

[119] Gal 6:7; cf. Luke 8:17; 16:15. गला 6:7; लूका 8:17; 16:15.

[120] Rom 2:11–16; 1 Peter 1:17. Compare the idea of life versus death as taught by God through Moses in Deut 28:12, 9, 15, and Moses' plea for Israel to "choose life" as shown in Deut 30:15–20. रोमियों 2:11–16; 1 पतरस 1:17. जीवन बनाम मृत्यु के विचार की तुलना करें जैसा कि परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से व्यवस्थाविवरण 28:12, 9, 15, में सिखाया, और मूसा द्वारा इस्राएल से "जीवन चुनने" की विनती जैसा कि व्यवस्थाविवरण 30:15–20 में दिखाया गया है।

Chapter 3: Experiencing Good & Evil Demands a Decision
अध्याय 3: अच्छाई और बुराई का अनुभव करना एक निर्णय की मांग करता ह

Even if you have not yet come to a place of trusting God, it is highly probable that you have sensed an ongoing battle of evil trying to prevail over good. Most of us have come to realize that there is a way of life that is beneficial and many ways of life that ultimately bring harm to ourselves and others. The way that we live with others makes a real difference in the here-and-now and in the future. In reality, God has created the universe with real absolute standards for all life. When we follow His rules, we do good for ourselves and others, when we do not and go against God and His way of life, we harm ourselves and others. Because God is communicating to all, on some level, subconsciously or consciously, everyone is aware of God and His standards.[121]

भले ही आप अभी तक परमेश्वर पर भरोसा करने की स्थिति में नहीं आए हों लेकिन यह बहुत संभव है कि आपने अच्छाई और बुराई के बीच चल रही लड़ाई को महसूस किया हो जो अच्छाई पर हावी होने की कोशिश कर रही है। हममें से अधिकांश लोगों ने महसूस किया है कि जीवन जीने का एक तरीका फायदेमंद है और कई ऐसे तरीके हैं जो अंततः खुद को और दूसरों को नुकसान पहुंचाते हैं। जिस तरह से हम दूसरों के साथ रहते हैं वह यहां और भविष्य में एक वास्तविक अंतर पैदा करता है। वास्तव में परमेश्वर ने समस्त जीवन के लिए वास्तविक पूर्ण मानकों के साथ ब्रह्मांड का निर्माण किया है। जब हम उनके नियमों का पालन करते हैं तो हम अपने और दूसरों के लिए अच्छा करते हैं लेकिन जब हम ऐसा नहीं करते हैं तब परमेश्वर और उनके जीवन जीने के तरीके के खिलाफ जाते हैं तो हम खुद को और दूसरों को भी नुकसान पहुंचाते हैं। क्योंकि परमेश्वर सभी से संवाद कर रहे हैं और किसी न किसी स्तर पर अवचेतन रूप से या सचेत रूप से हर कोई परमेश्वर और उनके मानकों के बारे में जानता है।[121]

Not only are most aware of the difference between good and evil, all participate in doing both. There is plenty of wrongdoing by all. No one is completely innocent. Everyone has fallen short of living out a perfectly righteous life according to God's standards *except Jesus Christ*.[122]

---

[121] Rom 1:18-32; 2:11-16. रोमियों 1:18–32; 2:11–16.

[122] Heb 1:2-3; Rom 3:23; Isa 53:4-9; 2 Cor 5:21; 1 Peter 2:21-24. इब्रा 1:2–3; रोम 3:23; यशा 53:4–9; 2 कुरि 5:21; 1 पत 2:21–24.

न केवल अधिकांश लोग अच्छे और बुरे के बीच के अंतर के बारे में जानते हैं बल्कि दोनों ही प्रकार के कामों में भाग भी लेते हैं। सभी लोग बहुत सारे गलत काम करते हैं। कोई भी पूरी तरह से निर्दोष नहीं है। यीशु मसीह को छोड़कर [122] सभी लोग परमेश्वर के मानकों के अनुसार पूरी तरह से धार्मिक जीवन जीने में असफल रहे हैं।

Evil is recognized by most societies around the world, and due to the harm done through evil actions, more time is spent keeping current on the latest evil than on good. Whether ignoring someone, speaking an unkind word, not helping someone whom God puts in our path, directly disobeying God's instructions for our lives, lying, cheating, stealing, killing, enslaving, sexually abusing, or doing some other form of evil, we all see and do some evil.

जीवन के लिए परमेश्वर के निर्देशों का सीधे तौर पर उल्लंघन करना हो, झूठ बोलना हो, धोखा देना हो, चोरी करना हो, हत्या करना हो, गुलाम बनाना हो, यौन शोषण करना हो या किसी और तरह की बुराई करना हो, हम सभी कोई न कोई बुराई देखते और करते हैं।

Evil versus Good
बुराई बनाम अच्छाई

Personally, we have all experienced times in our lives in which we have done something that has hurt someone else and have either felt immediate or eventual remorse. Even if someone has not been walking in spiritual awareness of God's presence and continual teaching, most recognize the fact that we all struggle with self-centered desires. Whether we listen to His leading or not, God talks to all and moves as many as listen into a place of awareness that helps make good choices easier.[123]

व्यक्तिगत रूप से हम सभी ने अपने जीवन में ऐसे समय का अनुभव किया होगा जब हमने किसी को ठेस पहुंचाई हो और तत्काल या बाद में पश्चाताप महसूस किया हो। भले ही कोई व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति और निरंतर शिक्षा के बारे में आध्यात्मिक जागरूकता में नहीं चल रहा हो और यह भी सच है कि हम इस तथ्य को पहचानते हैं कि हम सभी स्वकेंद्रित इच्छाओं से जूझते हैं। चाहे हम उसकी अगुवाई सुनें या न सुनें परमेश्वर सभी से बात करता है और जितने लोग सुनते हैं उन्हें जागरूकता के स्तर पर ले जाता है जहां उन्हें अच्छे विकल्प के रूप में विकसित होने में मदद करता है।[123]

---

[123] John 8:31b-32; 16:8-11. यूहन्ना 8:31ब –32; 16:8–11.

If we listen to God, He will help us look past our self-centered desires and block Satan's deceptions and noise. Satan's deceptions and noise are generated by many sources to include entertainment, technological gadgets, and even so-called friends at times. If we do not listen to God, we are controlled in some way by Satan, the Evil One. God desires to develop our individual consciences and teach each of us our assigned good works.[124] If we ignore or do not hear God's voice, it is easy to miss out on what is really going on including the blessings that come from living out our lives within God's will.

अगर हम परमेश्वर की बात सुनते हैं तो वह हमें अपनी स्वार्थी इच्छाओं से परे देखने और शैतान के धोखे और शोर को रोकने में सहायता करेगा। शैतान के धोखे और शोर कई स्रोतों से उत्पन्न होते हैं जिनमें मनोरंजन, तकनीकी गैजेट और कभी–कभी तथाकथित मित्र भी शामिल होते हैं। अगर हम परमेश्वर की बात नहीं सुनते हैं तो हम किसी तरह शैतान अर्थात दुष्ट द्वारा नियंत्रित होते हैं। परमेश्वर हमारी व्यक्तिगत अंतरात्मा को विकसित करना चाहता है और हममें से प्रत्येक को हमारे नियत अच्छे काम सिखाना चाहता है।[124] अगर हम परमेश्वर की आवाज़ को अनदेखा करते हैं या नहीं सुनते हैं तो वास्तव में जो चल रहा है उसे अनदेखा करना आसान होता है, लेकिन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपना जीवन जीने से मिलने वाली आशीषें को खोना भी शामिल हैं।

Even with those who are hostile toward God and His followers, God stays at work in everyone's life bringing as many as possible to a place of turning from self-centered lifestyles to Him and His righteous way of life for all. This turning is biblically called ***repentance***. God wants everyone to come to a place in his or her life that allows Him to teach them about His genuine concern and love for all, which in turn encourages many to come to Him for everyday help and eternal salvation.

यहाँ तक कि उन लोगों के साथ भी जो परमेश्वर और उसके अनुयायियों के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं परमेश्वर हर किसी के जीवन में काम करता रहता है और जितना संभव हो सके उतने लोगों को स्वकेंद्रित जीवन शैली से हटाकर उसके और सभी के लिए धार्मिक जीवन के तरीके की ओर मोड़ने के स्थान पर लाता है। इस मोड़ को बाइबिल में पश्चाताप कहा जाता है। परमेश्वर चाहता है कि हर कोई अपने जीवन में एक ऐसे स्थान पर पहुचें जहाँ वह उन्हें वास्तविक चिंता और प्रेम के बारे में सिखाने की अनुमति दे ताकि बदले में कई लोगों को रोज़मर्रा की सहायता और शाश्वत उद्धार के लिए उसके पास आने के लिए प्रोत्साहन मिले।

---

[124] Phil 2:13; Eph 2:10; 1 Cor 12:18. फिलि 2:13; इफि 2:10; 1 कुरि. 12:18.

Although many listen to God enough to know the difference between good and evil, there are many who have not listened well enough to know that ***our world is caught up in the middle of two powerful kingdoms at war:*** the Kingdom of God and the Kingdom of Hell presently ruled by Satan. God and His kingdom are more powerful and at the appropriate time will put Satan and his followers in an isolated place forever called Hell, the Lake of Fire, or Gehenna.

हालाँकि बहुत से लोग परमेश्वर की बात अच्छे से सुनते हैं जिससे वे अच्छे और बुरे के बीच का अंतर जान पाते हैं लेकिन बहुत से ऐसे भी हैं जिन्होंने इतने ध्यान से नहीं सुनी कि वे जान सकें कि हमारी दुनिया दो शक्तिशाली राज्यों के बीच युद्ध में फंसी हुई हैः परमेश्वर का राज्य और नरक का राज्य जिस पर वर्तमान में शैतान का शासन है। परमेश्वर और उनका राज्य अधिक शक्तिशाली हैं और उचित समय पर शैतान और उसके अनुयायियों को हमेशा के लिए एक अलग जगह पर डाल देंगे जिसे नरक, आग की झील या गेहेना कहा जाता है।

But, until that happens, God has been using Satan to force everyone to evaluate the good and evil around them and decide on which lifestyle they desire for eternity. Because all of us live out our lives doing and experiencing both good and evil, ***each has to decide*** if they want a close relationship with God and those who are listening to Him, or do they prefer to reject God's leadership and way of life not knowing that this alternative appears to give more freedom but in reality leads to a downward spiral toward eventual eternal shame, unrest, and suffering.

लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता तब तक परमेश्वर शैतान का इस्तेमाल करके सभी को अपने आसपास की अच्छाई और बुराई का मूल्यांकन करने और यह तय करने के लिए मजबूर करता रहा है कि वे अनंत काल तक किस जीवनशैली की इच्छा रखते हैं। चूँकि हम सभी अपना जीवन अच्छाई और बुराई दोनों करते हुए और अनुभव करते हुए जीते हैं, इसलिए प्रत्येक को यह तय करना होगा कि क्या वे परमेश्वर और उन लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध चाहते हैं जो उनकी बात सुन रहे हैं या वे परमेश्वर के नेतृत्व और जीवन के तरीके को अस्वीकार करना पसंद करते हैं इस बात से अनभिज्ञ रहते हुए कि यह विकल्प अधिक स्वतंत्रता देता प्रतीत होता है लेकिन वास्तव में अंततः अनंत शर्म, अशांति और पीड़ा की ओर नीचे और नीचे ले जाता है।

Satan is out to deceive as many as possible trying to keep them from listening to God so that they will never really get to know Him or His Word. God on the other hand, wants everyone to understand reality and consider carefully their future. When individuals start listening to God because of His great love and concern for all, He starts to mold and shape them into His own nature (likeness). On the other hand, for those who do not listen, God allows Satan to continue to deceive them into

thinking that they are going to have an abundant joyful life *on their own terms*.

शैतान जितना संभव हो सके उतने लोगों को धोखा देने की कोशिश कर रहा है ताकि उन्हें परमेश्वर की बात सुनने से रोका जा सके ताकि वे कभी भी उसे या उसके वचन को न जान सकें। दूसरी ओर परमेश्वर चाहता है कि हर कोई वास्तविकता को समझे और अपने भविष्य पर ध्यान से विचार करे। जब लोग परमेश्वर के महान प्रेम और सभी के लिए उनकी चिंता के कारण उनकी बात सुनना शुरू करते हैं तो वह उन्हें अपने स्वभाव (समानता) में ढालना और आकार देना शुरू कर देता है। दूसरी ओर जो लोग नहीं सुनते हैं उनके लिए परमेश्वर शैतान को उन्हें धोखे में रखने देता है कि वे ऐसा सोचते हैं कि वे अपनी शर्तों पर भरपूर आनंदमय जीवन जीने जा रहे हैं।

Whatever one ultimately decides determines one's ***eternal destiny***. No matter where you stand, you should stay alert knowing that our world is actually in the middle of a major spiritual war with eternal consequences and that God will eventually separate those who want to be with Him and His way of life from those who do not. God will rescue those who listen to Him from the long-term consequences of bad actions (sin).[125]

जो भी व्यक्ति अंततः निर्णय लेता है वह उसके शाश्वत भाग्य को निर्धारित करता है। चाहे आप कहीं भी खड़े हों आपको यह जानते हुए सतर्क रहना चाहिए कि हमारी दुनिया वास्तव में एक बड़े आध्यात्मिक युद्ध के बीच में है जिसके अनंत परिणाम हैं और परमेश्वर अंततः उन लोगों को अलग कर देगा जो उनके और उनके जीवन के तरीके के साथ रहना चाहते हैं और जो नहीं चाहते हैं। परमेश्वर उन लोगों को बचाएगा जो बुरे कार्यों (पाप)[125] के दीर्घकालिक परिणामों को समझकर उसकी बात सुनते हैं।

If you could look ahead in time and get a glimpse of both future kingdoms in their final states and see God and His perfected eternal sinless family living in love, peace, and joy, and Satan and those who follow in his footsteps continually hurting one another, what would you be willing to do for yourself and others in order to live with God and His family forever?

यदि समयकाल में आगे जाकर देखने की सुविधा हो और आप दोनों भावी राज्यों की अंतिम अवस्थाओं की एक झलक पा सकें तो एक तरफ आप देखेंगे कि परमेश्वर और उसका सिद्ध अनन्त, पापरहित परिवार प्रेम, शांति और आनन्द में रहता है और दूसरी तरफ शैतान और उसके पदचिन्हों पर चलने वालों को लगातार एक दूसरे को चोट पहुँचाते हुए देखेंगे तब आप क्या निर्णय

---

[125] Dan 12:2; cf. Matt 25:45-46; Rom 2:11-13; Gal 6:7; Rev 20:12.
दानि. 12:2; संदर्भ, मत्ती 25:45–46; रोमि 2:11–13; गला. 6:7; प्रकाशित 20:12.

लेंगे, परमेश्वर और उसके परिवार के साथ हमेशा रहने के लिए आप अपने और दूसरों के लिए क्या कदम उठाऐंगे?

In reality, God has already made a way for you to do this through Jesus Christ (John 14:6; Rom 1:16-17). If you really would like to know God better in order to follow Him, God will help you live out a more fulfilling life in the here-and-now experiencing His love, joy, and inner peace as part of your growing relationship with Him and other members of the Church.

वास्तव में, परमेश्वर ने यीशु मसीह के माध्यम से आपके लिए ऐसा करने का एक रास्ता पहले ही बना दिया है (यूहन्ना 14:6; रोमियों 1:16–17)। यदि आप वास्तव में परमेश्वर को बेहतर तरीके से जानना चाहते हैं ताकि उसका अनुसरण कर सकें तो परमेश्वर आपको इस संसार में और अधिक एक पूर्ण जीवन जीने में मदद करेगा जो उसके और उसकी देह के अन्य सदस्यों के साथ आपके बढ़ते रिश्ते के हिस्से के रूप में उसके प्रेम, आनंद और आंतरिक शांति का अनुभव करेगा।

Spiritual Warfare in General
सामान्य रूप से आध्यात्मिक युद्ध

From the days of John the Baptist until now, the Kingdom of the Heavens is suffering "violence," and "violent ones" are taking it by force.[126] Matt 11:12

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर "जोर" होता रहा है, और "बलवान" उसे छीन लेते हैं।[126] मत्ती 11:12

The Law and the prophets stood until John; from then the *Good News* of the Kingdom of God *is being proclaimed* and *everyone is "forcing himself through violence"* into *it.*[127] But, it is easier for the Heaven and Earth to pass away than for one stroke of a letter of the Law to fail. Luke 16:16-17

---

[126] Greek *biazetai* representing "violence." यूनानी शब्द बियाज़ेटाई का अर्थ है "हिंसा।"

[127] Ditto: Greek *biazetai* representing "violence." वहीः यूनानी शब्द बियाज़ेटाई का अर्थ है "हिंसा।"

> व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे; उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है और "हर कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है।"[127] आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है। लूका 16:16–17

Jesus said that He did not come into our world to produce world peace but instead division between those who would learn to follow Him and those who would not (Luke 12:49-51). And as noted directly above, Jesus also said that although many were trying to force their way into the Kingdom of Heaven, it would not happen. ***God has the final say and His conditions–given through the Law (God's instructions &commands) and prophets–will stand.*** It is easier for the heavens and the earth to be totally destroyed than for God's Word to fail.[128] It is clear through His Word, the Bible, that God's plans shall be accomplished without fail!

यीशु ने कहा कि वह हमारी दुनिया में विश्व शांति लाने के लिए नहीं आया था बल्कि उन लोगों के बीच विभाजन पैदा करने के लिए आया था जो उसका अनुसरण करना सीखेंगे और जो नहीं सीखेंगे (लूका 12:49.51)। और जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, यीशु ने यह भी कहा कि यद्यपि बहुत से लोग स्वर्ग के राज्य में जबरन घुसने की कोशिश कर रहे थे लेकिन ऐसा नहीं होगा। परमेश्वर का अंतिम निर्णय है और उसकी शर्तें जो व्यवस्था (परमेश्वर के निर्देश और आज्ञाएँ) और भविष्यवक्ताओं के माध्यम से दी गई हैं .कायम रहेंगी। स्वर्ग और पृथ्वी का पूरी तरह से नष्ट हो जाना परमेश्वर के वचन के विफल होने से कहीं ज़्यादा आसान है।[128] उनके वचन बाइबल के माध्यम से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की योजनाएँ बिना किसी असफलता के पूरी होंगी!

Everyone is trying to force their way into Heaven! Today, Satan is still at war with all of God's children blinding and deceiving as many as possible. As we keep in mind that all humanity is caught up in war between two kingdoms, God's and the rebels', keep in mind that Satan is a self-proclaimed dictator, who decided before the Creation to overthrow God, steal what He owns, and rule everything.[129] After Jesus' thousand-year reign toward the end of the Creation just for a brief moment, Satan will be allowed to lead once again those who are not

---

[128] Luke 16:16-17; cf. Isa 40:8; Matt 5:17-20. लूका 16:16–17; संदर्भ. यशा 40:8; मत्ती 5:17–20.

[129] Matt 4:8-10; Eph 6:12. मत्ती 4:8–10; इफि 6:12.

listening to God. After this final rebellion, Satan will be permanently isolated from God and all righteous ones. He will be placed with other rebellious souls in the eternal Lake of Fire, which is commonly called Hell.[130]

हर कोई स्वर्ग में जबरदस्ती घुसने की कोशिश कर रहा है! आज भी शैतान परमेश्वर की समस्त संतान के साथ युद्ध कर रहा है और जितना संभव हो सके उतने लोगों को अंधा बना रहा है और धोखा दे रहा है। जैसा कि हम ध्यान में रखते हैं कि पूरी मानवता दो राज्यों अर्थात परमेश्वर और विद्रोहियों के बीच युद्ध में फंसी हुई है ध्यान रखें कि शैतान एक स्वघोषित तानाशाह है जिसने सृष्टि से पहले परमेश्वर को उखाड़ फेंकने उनकी सत्ता को चुराने और सब पर शासन करने का फैसला किया था।[129] सृष्टि के अंत में यीशु के हज़ार साल के शासन के बाद थोड़े समय के लिए शैतान को एक बार फिर उन लोगों का नेतृत्व करने की अनुमति दी जाएगी जो परमेश्वर की बात नहीं सुन रहे हैं। इस अंतिम विद्रोह के बाद शैतान को हमेशा के लिए परमेश्वर और सभी धर्मी लोगों से अलग कर दिया जाएगा। उसे अन्य विद्रोही आत्माओं के साथ अनन्त आग की झील में रखा जाएगा जिसे आमतौर पर नर्क कहा जाता है।[130]

It is clear from Scripture that God's Creation is full of bloody battles with Evil trying to overcome Good. John the Baptist died proclaiming that the Messiah and His Kingdom had come. Jesus died representing God as He demonstrated the love of God through His actions and words. Most of Jesus' main disciples died proclaiming the truth about God's plan of salvation for those who would follow Jesus. Over the centuries, thousands upon thousands have died as they followed Jesus through the guidance of the Holy Spirit.

पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की सृष्टि बुराई के साथ खूनी युद्धों से भी भरी हुई है जो अच्छाई पर विजय पाने की कोशिश कर रही है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, मसीहा और उसके राज्य के आगमन की घोषणा करते हुए मरे। यीशु ने अपने कार्यों और शब्दों के माध्यम से परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करते हुए उनका प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी जान दे दी। यीशु के अधिकांश प्रमुख शिष्य उद्धार की ईश्वर की योजना के बारे में सच्चाई की घोषणा करते हुए मर गए ताकि आगे आने वाले लोग यीशु का अनुसरण करे। सदियों से हजारों–हजारों लोग पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में यीशु का अनुसरण करते हुए मरे हैं।

As you study Scripture, you come to realize that our Heavenly Father has had everything under control from the very beginning. He sent Jesus into our world to teach us further revelation and then at just

---

[130] Rev. 20:7-10; cf. Rev 12:12; John 12:31; 16:11. प्रका. 20:7–10; संदर्भ. प्रका. 12:12; यूहन्ना 12:31; 16:11.

the right time, Jesus died for all. God teaches us that this battle between His Kingdom and the Kingdom of Hell will come to an end in God's perfect time when the Kingdom of Heaven is filled with God's new children. God's Kingdom is commonly called the Kingdom of Heaven, and because of Jesus' redemptive work, it is also called the Kingdom of His Beloved Son, the Kingdom of Christ (Col 1:13; Eph 5:5).

जैसे–जैसे आप पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हैं आपको एहसास होता है कि हमारे स्वर्गीय पिता ने शुरू से ही सब कुछ अपने नियंत्रण में रखा है। उन्होंने हमें और अधिक रहस्योद्घाटन सिखाने के लिए यीशु को हमारी बीच में भेजा और फिर उचित समय पर यीशु ने सभी लोगों के लिए अपने प्राण दिए। परमेश्वर हमें सिखाता है कि उसके राज्य और नरक के राज्य के बीच यह लड़ाई परमेश्वर के ठहराए समय पर समाप्त हो जाएगी जब स्वर्ग का राज्य परमेश्वर की नयी संतानों से भर जाएगा। परमेश्वर के राज्य को आम तौर पर स्वर्ग का राज्य कहा जाता है और यीशु के छुटकारे के कार्य के कारण इसे उसके प्रिय पुत्र का राज्य अर्थात मसीह का राज्य भी कहा जाता है (कुलुस्सियों 1:13; इफिसियों 5:5)।

As we consider our participation in the ongoing battle around us, we all must eventually ***make a decision*** regarding our ***eternal allegiance***. On this large battlefield called earth, there has been and continues to be many deceivers teaching many false concepts about the one true God, whose name is Yahweh, and His holy nature.

जब हम अपने आसपास चल रही निरंतर लड़ाई में अपनी भागीदारी पर विचार करते हैं, तो हमें अंततः अपनी शाश्वत निष्ठा के बारे में निर्णय लेना होगा । पृथ्वी नामक इस विशाल युद्धक्षेत्र पर, कई धोखेबाज़ों ने, एक सच्चे ईश्वर, जिनका नाम यहोवा है, उनकी पवित्र प्रकृति के बारे में कई झूठे सिद्धांत सिखाए हैं और अभी भी सिखा रहे हैं।

Keep in mind that there are many non-existent fabricated gods who stand in for Satan. They are presented to humanity as substitutes to replace Yahweh. *Satan uses these shadows of himself* to distort reality and keep people from knowing their loving Creator and His desire for an eternal mature close loving-kind (holy) family. Additional information on Satan's created gods and religious institutions can be studied through books such as Josh McDowell's *A Ready Defense*.[131]

ध्यान रखें कि कई काल्पनिक और गढ़े गए देवता हैं, जो शैतान का स्थान लेते हैं। इन्हें मानवता के सामने यहोवा को प्रतिस्थापित करने के लिए

---

[131] Josh McDowell, *A Ready Defense* (San Bernardino: Here's Life, 1990, reprint 1991). जोश मैकडॉवेल, ए रेडी डिफेंस (सैन बर्नार्डिनोः हियर इज़ लाइफ, 1990, पुनर्मुद्रण 1991).

विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। शैतान स्वयं की इन छायाओं का उपयोग वास्तविकता को विकृत करने और लोगों को उनके प्रेममय सृष्टिकर्ता और उनकी शाश्वत, परिपक्व, निकट और प्रेममय (पवित्र) परिवार की इच्छा को जानने से रोकने के लिए करता है। शैतान द्वारा बनाए गए देवताओं और धार्मिक संस्थानों के बारे में अतिरिक्त जानकारी जोश मैकडॉवेल की पुस्तक ए रेडी डिफेंस[131] जैसे स्रोतों के माध्यम से अध्ययन की जा सकती है।

God's Anointed One, Jesus, the true prophesied Messiah, came to lead people into God's light teaching reality and saving them from eternal separation from Their Creator. Jesus came bringing abundant life to all who listen here-and-now and for eternity (John 10:10). Jesus is the only access to our Heavenly Father (John 10:9; 14:6, Eph 2:18). If Jesus' followers stay focused on Him and follow Him, they will not be deceived so easily by Satan and will lead others into God's presence. But, as the battle for the souls of humanity continues on through the Creation process, we understand from God that there are many who will stay in the dark (keep things hidden) in order to do things for themselves at the expense of others, and we know that God will not force them to change. They must change on their own (abundant free will).[132]

परमेश्वर के अभिषिक्त, यीशु, जो सच्चे भविष्यवाणी किए गए मसीहा हैं, लोगों को परमेश्वर के प्रकाश में ले जाने, वास्तविकता सिखाने और उन्हें उनके सृष्टिकर्ता से अनंत अलगाव से बचाने के लिए आए। यीशु सभी सुनने वालों के लिए वर्तमान, और अनंतकाल के लिए प्रचुर जीवन लेकर आए (यूहन्ना 10:10)। यीशु ही हमारे स्वर्गीय पिता तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग हैं (यूहन्ना 10:9; 14:6, इफिसियों 2:18)। यदि यीशु के अनुयायी उस पर केंद्रित रहते हैं और उसका अनुसरण करते हैं, तो वे शैतान द्वारा आसानी से धोखा नहीं खाएंगे और दूसरों को परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाएंगे। लेकिन, जैसे–जैसे सृष्टि प्रक्रिया के माध्यम से मानव आत्माओं के लिए युद्ध जारी रहता है, हम परमेश्वर से समझते हैं कि कई लोग अंधेरे में रहेंगे (चीजों को छिपाए रखेंगे) ताकि दूसरों की कीमत पर अपने लिए काम कर सकें, और हम जानते हैं कि परमेश्वर उन्हें बदलने के लिए मजबूर नहीं करेगा। उन्हें स्वयं बदलना होगा (प्रचुर स्वतंत्र इच्छा के आधार पर)।[132]

Those who listen to God and start following Jesus are encouraged to put on the armor of God and resist evil:

> **From now on, *be continually strengthened in the Lord in the strength of His might*. Put on all of the armor of God in order to enable yourselves to stand before**

---

[132] Matt 7:13; John 1:9-13; 3:19-20; 2 Thess 2:10-12. मत्ती 7:13; यूहन्ना 1:9–13; 3:19–20; 2 थिस्स 2:10–12.

> **the scheming of the Devil, *because our battle is not against blood and flesh*, but instead against the leaders, the authorities, the cosmic powers of this darkness, the spirits of evil in the heavenly places.**
> **Eph 6:10-12**

जो लोग परमेश्वर की बात सुनते हैं और यीशु का अनुसरण शुरू करते हैं, उन्हें परमेश्वर के हथियार धारण करने और बुराई का विरोध करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है:

> निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इफि 6:10–12

Let's keep on reminding ourselves that we are part of God's creative work! As God enlarges His intimate close-knit holy family, Satan continually keeps fighting hard against Him and His growing family. In this ongoing fight, there was a strategic time when Satan encouraged Israel's religious leaders to crucify Jesus in order to silence Him, but to his surprise ***instead of getting rid of the Father's only Son, he unknowingly lost the battle to separate all of God's children from their Creator for eternity.*** Jesus' death on a cross made it possible for many sons and daughters to become part of God's eternal holy sinless family.

आइए, हम स्वयं को निरंतर याद दिलाते रहें कि हम परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य का हिस्सा हैं! जैसे–जैसे परमेश्वर अपने निकटतम पवित्र परिवार को बढ़ाता है, शैतान निरंतर उसके और उसके बढ़ते परिवार के खिलाफ कड़ा संघर्ष करता रहता है। इस चल रहे युद्ध में, एक रणनीतिक समय था जब शैतान ने इस्राएल के धार्मिक नेताओं को यीशु को सूली पर चढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उसे चुप करा सके, लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि पिता के एकमात्र पुत्र को खत्म करने के बजाय उसने अनजाने में परमेश्वर के सभी बच्चों को उनके सृष्टिकर्ता से अनंतकाल के लिए अलग करने की लड़ाई हार दी। यीशु की क्रूस पर मृत्यु ने कई पुत्रों और पुत्रियों के लिए परमेश्वर के शाश्वत पवित्र निष्पाप परिवार का हिस्सा बनना संभव बनाया।

From the time of Jesus' death on the Cross and Satan's realization that he had lost the battle for the souls of all humanity, he has been doing his best to minimize God's victory. Satan has been

distracting, placating, intimidating, and misleading as many people as possible so that they will not take the time to figure out what eternity will be like without God's presence (Rev 12:9, 12).

यीशु की क्रूस पर मृत्यु और शैतान के इस अहसास के समय से कि उसने समस्त मानवता की आत्माओं के लिए युद्ध हार लिया है, वह परमेश्वर की जीत को कम करने की पूरी कोशिश कर रहा है। शैतान जितना संभव हो उतने लोगों को विचलित करने, शांत करने, डराने और गुमराह करने में लगा है ताकि वे यह समझने के लिए समय न निकालें कि परमेश्वर की उपस्थिति के बिना अनंतकाल कैसा होगा (प्रकाशितवाक्य 12:9, 12)।

Over the centuries, God has been building His eternal family and filling His eternal Kingdom with loving righteous individuals. Over the same stretch of time, Satan has come to realize that his time is becoming shorter and shorter. Because of this, Satan has been working hard at escalating his attacks on humanity through deception and intimidation.

सदियों से, परमेश्वर अपने शाश्वत परिवार का निर्माण कर रहा है और अपने शाश्वत राज्य को प्रेममय और धर्मी व्यक्तियों से भर रहा है। इसी अवधि में, शैतान को यह अहसास हो गया है कि उसका समय कम होता जा रहा है। इस कारण, शैतान छल और डराने–धमकाने के माध्यम से मानवता पर अपने हमलों को तेज करने में कड़ा परिश्रम कर रहा है।

This Is Personal
एक व्यक्तिगत बात

If you are a committed follower of Jesus, have you ever wondered why some of the good things that you wish to do seem so difficult to start and accomplish although part of you knows that it should be easier? Does it seem that during the times when you want to do some good knowing that God has put something special in your heart, you seem to be swimming in molasses instead of water? If this is the case, you have experienced spiritual warfare firsthand. You may have come to realize that many of your own doubts and hesitations coupled with circumstances around you were ***not*** just part of the natural order of everyday life. In many cases, they were caused by acts of spiritual warfare against you and the godly actions that you were contemplating.

यदि आप यीशु के समर्पित अनुयायी हैं तो क्या आपने कभी सोचा है कि कुछ अच्छी चीजें जिन्हें आप करना चाहते हैं तो उसे शुरू करना और पूरा करना इतना कठिन क्यों लगता है भले ही आपके मन का एक हिस्सा जानता हो कि यह आसान होना चाहिए क्या ऐसा लगता है कि जब आप कुछ अच्छा करना चाहते हैं यह जानते हुए कि परमेश्वर ने आपके दिल में कुछ खास डाला है लेकिन लगता ऐसा है जैसे आप पानी के बजाय गुड़ में तैर रहे हैं? यदि ऐसा

है, तो आपने आध्यात्मिक युद्ध का अनुभव किया है। आपको शायद यह अहसास हुआ होगा कि आपकी कई शंकाएँ और हिचकिचाहट, साथ ही आपके आसपास की परिस्थितियाँ, केवल रोजमर्रा की जिंदगी के सामान्य क्रम का हिस्सा नहीं थीं। कई मामलों में वे आपके खिलाफ और आपके द्वारा विचार किए जा रहे ईश्वरीय कार्यों के खिलाफ आध्यात्मिक युद्ध के कृत्यों के कारण थीं।

Satan and his followers are constantly trying to influence Jesus' followers looking for ways to hinder or stop completely what God has laid on their hearts. As God's children pray and seek His will for their individual and collective lives, they need to be aware–as Daniel was–that this ongoing battle is ultimately God's, as we do our individual parts. Keep in mind that God directly interacts in these ongoing battle and incorporates His angels to help Jesus' followers on an ongoing basis. And keep in mind that it is Jesus' followers joy, honor, and privilege to work under God's leadership as His ambassadors and priests (2 Cor 5:17-20; 1 Peter 2:9) awakening and rescuing those who will listen right up to the end of this Messianic Age.

शैतान और उसके अनुयायी निरंतर यीशु के अनुयायियों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं, यह देखते हुए कि परमेश्वर ने उनके दिलों में जो डाला है, उसे बाधित करने या पूरी तरह से रोकने के तरीके खोजे जाएँ। परमेश्वर की संतान को, जब वे अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक जिंदगियों के लिए प्रार्थना करते हैं और उसकी इच्छा की खोज करते हैं, जागरूक रहना चाहिए .जैसा दानिय्येल थाकृ जो मानता था कि कि यह चल रहा युद्ध अंततः परमेश्वर का है, और इस युद्ध में हम अपने–अपने व्यक्तिगत हिस्से निभाते हैं। यह ध्यान में रखें कि परमेश्वर इस चल रहे युद्ध में सीधे हस्तक्षेप करता है और यीशु के अनुयायियों की सहायता के लिए अपने स्वर्गदूतों को शामिल करता है। और यह भी ध्यान में रखें कि यीशु के अनुयायियों के लिए यह आनंद, सम्मान और विशेषाधिकार है कि वे परमेश्वर के नेतृत्व में उनके राजदूतों और याजकों के रूप में काम करें (2कुरिन्थियों 5:17–20; 1पतरस 2:9), जो इस मसीहाई युग के अंत तक सुनने वालों को जागृत और उद्धार करते हैं।

This Is Ongoing
यह जारी है

During the reigns of Darius, King of Chaldea, and Cyrus, King of Persia, God gave Daniel visions showing him future events (Dan 9-10). We see from Daniel's vision during the third year of Cyrus, that there was ongoing spiritual warfare just as today. One of Satan's angels, who was in a leadership position over Persia, had slowed one of God's angels down for 21 days until God's lead angel, Michael, came to his aid. Michael's intervention allowed God's assigned angel to go to Daniel and

give him insight regarding His plans in all that was transpiring (Dan 10:12-14). This messenger from God stated that as soon as he had given Daniel God's vision, he was going right back to continue his fight against the same demonic leader in Persia as well as engage in a battle against one of Satan's angels who was heading up warfare in Greece (Dan 10:20). Even today, Satan consistently wages war with those who faithfully follow God.

दारा, कसदियों का राजा, और साइरस, फारस के राजा, के शासन काल के दौरान, परमेश्वर ने दानिय्येल को भविष्य की घटनाओं को दिखाने वाला दर्शन दिया (दानिय्येल 9–10)। हम साइरस के तीसरे वर्ष के दौरान दानिय्येल के दर्शन से देखते हैं कि उस समय भी, आज की तरह, आध्यात्मिक युद्ध चल रहा था। शैतान का एक स्वर्गदूत, जो फारस पर नेतृत्व की स्थिति में था, ने परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को 21 दिनों तक रोक रखा था, जब तक कि परमेश्वर का प्रमुख स्वर्गदूत, माइकल, उसकी सहायता के लिए नहीं आया। माइकल के हस्तक्षेप ने परमेश्वर के नियुक्त स्वर्गदूत को दानिय्येल के पास जाने और उसे परमेश्वर की योजनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि देने की अनुमति दी, जो सभी घटनाओं में काम आने वाली थी (दानिय्येल 10:12–14)। परमेश्वर के इस दूत ने कहा कि जैसे ही उसने दानिय्येल को परमेश्वर का दर्शन दिया, वह तुरंत वापस जाकर फारस में उसी राक्षसी प्रधान के खिलाफ और यूनान में युद्ध का नेतृत्व कर रहे शैतान के एक अन्य स्वर्गदूत के खिलाफ लड़ाई जारी रखने के लिए निश्चयी होकर लौटा (दानिय्येल 10:20)। आज भी, शैतान उन लोगों के साथ निरंतर युद्ध छेड़ता है जो विश्वासपूर्वक परमेश्वर का अनुसरण करते हैं।

Approximately five hundred years later, we learn that the same type of ongoing spiritual warfare was continuing. Paul stated that Satan had slowed him down when wanting to visit and encourage the Thessalonians whom he had led to the true Messiah (1 Thess 2:18). Satan is consistently waging war against God's obedient children causing as much stumbling, suffering, and damage as possible;[133] but if we listen to God, He will use our trials and tribulations to help others and build our individual character.

लगभग पांच सौ वर्ष बाद हमें पता चलता है कि उसी प्रकार का आध्यात्मिक युद्ध निरंतर चल रहा था। पौलुस ने कहा कि शैतान ने उन्हें तब रोका किया जब वह थिस्सलुनीकियों को प्रोत्साहित करने और उनके पास जाने की इच्छा रखते थे जिन्हें वे सच्चे मसीहा की ओर लेकर आए थे (1 थिस्सलुनीकियों 2:18)। शैतान निरंतर परमेश्वर के आज्ञाकारी बच्चों के खिलाफ युद्ध छेड़ता है जितना संभव हो उतनी ठोकर, दुख और नुकसान पहुंचाता है;[133]

---

[133] e.g. 1 Thess 2:14-16; 3:4; 2 Thess 1:4-5; cf. Luke 16:13.
उदाहरणार्थ 1 थिस्स 2:14–16; 3:4; 2 थिस्स 1:4–5; लूका 16:13 से तुलना करें।

लेकिन यदि हम परमेश्वर की बात सुनते हैं, तो वह हमारी परीक्षाओं और कष्टों का उपयोग दूसरों की मदद करने और हमारे व्यक्तिगत चरित्र को विकसित करने के लिए करता है।

Daniel's account and Paul's warning about the bad angels who are helping Satan should be a warning for all of us. This ongoing war between good and evil has eternal consequences for all. Jesus did not ask our Heavenly Father to remove any of His followers from the evil of this world, but He did ask our Heavenly Father to protect His followers from the Evil One through His name (John 17:11b). Jesus' followers are part of His family and will be protected by God as part of His holy family. Whenever Jesus' followers fall short in any given battle or circumstance, God helps them do their part whether they physically live or die. The ultimate goal for Jesus' followers is to help as many as possible get to know God well enough to trust Him with their eternal lives out of a growing love for Him.

दानिय्येल का वृत्तांत और पौलुस की चेतावनी उन बुरे स्वर्गदूतों के बारे में जो शैतान की मदद कर रहे हैं हम सभी के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए। अच्छाई और बुराई के बीच चल रहा युद्ध सभी के लिए अनंत परिणाम लाता है। यीशु ने हमारे स्वर्गीय पिता से यह नहीं मांगा कि वह अपने अनुयायियों को इस संसार की बुराई से हटा दे, लेकिन उन्होंने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना की कि वह अपने नाम के द्वारा अपने अनुयायियों को उस दुष्ट से बचाए। यीशु के अनुयायी उनके परिवार का हिस्सा हैं और परमेश्वर द्वारा उनके पवित्र परिवार के हिस्से के रूप में संरक्षित किए जाएंगे। जब भी यीशु के अनुयायी किसी युद्ध या परिस्थिति में पीछे रह जाते हैं परमेश्वर उन्हें उनकी भूमिका निभाने में मदद करता है, चाहे वे शारीरिक रूप से जीवित रहें या मर जाएं। यीशु के अनुयायियों का अंतिम लक्ष्य यह है कि जितना संभव हो उतने लोगों को परमेश्वर को इतनी अच्छी तरह जानने में मदद करें कि वे उस पर अपने अनंत जीवन के लिए भरोसा करें, जो उसके प्रति बढ़ते प्रेम से उत्पन्न होता है।

Spiritual Warfare & Satan's Deceptions
आध्यात्मिक युद्ध और शैतान की छलनाएँ

Do not be amazed, for *Satan transforms (disguises) himself as an angel of light*. Therefore, it is not a great thing if indeed his servants transform/disguise themselves as servants of righteousness whose end shall be according to their works (actions).

2 Cor 11:14-15

> और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। सो यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं परन्तु उन का अन्त उन के कामों (चाल–चलन) के अनुसार होगा।
>
> 2 कुरू 11:14–15

There is a common thread to all of Satan's scheming and attacks on humanity. Satan wants to take over God's Creation and His authority. He has turned a third of the angels in Heaven against God (Rev 12:4) and now wishes to keep as many of God's children on Earth as possible from listening to Him. The truth of the matter is that whoever is not listening to God, is in reality listening to Satan (John 8:42-47 and more).

शैतान की सभी योजनाओं और मानवता पर हमलों में एक समान सूत्र है। शैतान परमेश्वर की सृष्टि और उनके अधिकार को हड़पना चाहता है। उसने स्वर्ग में एक तिहाई स्वर्गदूतों को परमेश्वर के खिलाफ भड़काया है (प्रकाशितवाक्य 12:4) और अब वह पृथ्वी पर परमेश्वर के जितने संभव हो, उतने बच्चों को उनकी बात सुनने से रोकना चाहता है। सच्चाई यह है कि जो कोई परमेश्वर की बात नहीं सुन रहा है, वह वास्तव में शैतान की बात सुन रहा है (यूहन्ना 8:42–47 और अन्य)।

If Satan can keep people focusing on themselves and their families, in reality, he has kept them from knowing God and His love for all. If people start listening to God, some will start obediently interacting with Him, and God will develop within them a loving trust for Him due to His love and faithfulness. Those who choose to listen to God and obey Him will eventually come to a place in their lives of turning from self to God and His way of life (repentance) and experience spiritual birth into His eternal holy family.

यदि शैतान लोगों को अपने और अपने परिवारों पर केंद्रित रख सकता है, तो वास्तव में, वह उन्हें परमेश्वर को और उनके सभी के लिए प्रेम को जानने से रोक देता है। यदि लोग परमेश्वर की बात सुनना शुरू करते हैं, तो कुछ लोग उनकी आज्ञाकारिता में उनके साथ संवाद करना शुरू करेंगे, और परमेश्वर उनके भीतर अपने प्रेम और विश्वासयोग्यता के कारण उनमें प्रेमपूर्ण भरोसा विकसित करेंगे। जो लोग परमेश्वर की बात सुनने और उनकी आज्ञा मानने का चयन करते हैं, वे अंततः अपने जीवन में एक ऐसे स्थान पर पहुंचेंगे जहां वे स्वयं से परमेश्वर और उनके जीवन के मार्ग की ओर मुड़ेंगे (पश्चाताप) और उनकी अनंत पवित्र परिवार में आध्यात्मिक जन्म का अनुभव करेंगे।

Journeying with Others toward Destruction
विनाश की ओर ले जाने वाला चौड़ा मार्ग

In his battle for ultimate control over everything, Satan has been constantly trying to preoccupy humanity with itself, scare humanity into submission, and/or turn humanity from God through the introduction of many counterfeit gods and religious institutions. Some of these counterfeits scare people into submission and others encourage people to remain self-centered living predominately for themselves and their families.

अपने सर्वोच्च नियंत्रण की लड़ाई में, शैतान लगातार मानवता को स्वयं में व्यस्त रखने, डराकर वश में करने, और/या अनेक नकली देवताओं और धार्मिक संस्थानों के माध्यम से मानवता को परमेश्वर से दूर करने की कोशिश करता रहा है। इनमें से कुछ नकली तत्व लोगों को डराकर वश में करते हैं, जबकि अन्य लोग स्वयं–केंद्रित जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिसमें लोग मुख्य रूप से अपने और अपने परिवारों के लिए जीते हैं।

In order to keep people focused on themselves instead of properly considering others, Satan has filled our world with counterfeits to replace God. Because Satan cannot remove knowledge of our Creator from humanity, he has created a myriad of religious institutions to confuse and/or placate many. In reality, through deceptions and half-truths, these false gods and hurtful philosophies satisfy many and help keep them away from the one true Creator. The last thing that Satan wants is for people to know reality.[134] In addition to riches, personal aspirations, entertainment, and even laziness, Satan uses individuals and fabricated religions to distort reality making it harder for people to know their one true Creator. Even with all of Satan's cunning deceptions, he cannot completely disguise his deceptive false teachings because they *all* exhibit some of his personal attributes, some much more than others. The better that you come to know God and His Word, the easier it is to recognize Satan and his counterfeits.

लोगों को दूसरों पर उचित ध्यान देने के बजाय स्वयं पर केंद्रित रखने के लिए, शैतान ने हमारे विश्व को परमेश्वर के स्थान पर नकली चीजों से भर दिया है। चूंकि शैतान मानवता से हमारे सृष्टिकर्ता के ज्ञान को पूरी तरह से नहीं हटा सकता, उसने अनेक धार्मिक संस्थानों का निर्माण किया है ताकि बहुतों को भ्रमित किया जाए और/या अपने में मिला लिया जाए। वास्तव में, छल और

[134] 2 Cor 4:3-4; cf. John 8:44. 2 कुरि 4:3–4; तुलना करें यूहन्ना 8:44।

आधी–अधूरी सच्चाइयों के माध्यम से, ये झूठे देवता और हानिकारक दर्शन कई लोगों को संतुष्ट करते हैं और उन्हें एकमात्र सच्चे सृष्टिकर्ता से दूर रखने में मदद करते हैं। शैतान की आखिरी इच्छा यही है कि सच्चाई पर परदा ही पड़ा रहे।[134] धन, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं, मनोरंजन, और यहां तक कि आलस्य के अलावा, शैतान व्यक्तियों और बनावटी धर्मों का उपयोग वास्तविकता को विकृत करने के लिए करता है, जिससे लोगों के लिए अपने एकमात्र सच्चे सृष्टिकर्ता को जानना कठिन हो जाता है। शैतान के सभी चालाक छलावों के बावजूद, वह अपनी भ्रामक झूठी शिक्षाओं को पूरी तरह से छिपा नहीं सकता, क्योंकि वे सभी उसके कुछ व्यक्तिगत दुर्गुणों को प्रदर्शित करते हैं, दूसरों की तुलना में कहीं अधिक। जितना बेहतर आप परमेश्वर और उनके वचन को जानते हैं, उतना ही आसान होता है, शैतान और उसके नकली रूपों को पहचानना।

Self-centeredness
स्व–केंद्रितता

If Satan can keep people thinking about themselves as the center of life, he has won. Due to the sin of God's first created, Adam and Eve, all are born into a self-centered, selfish world that is in constant rebellion against God and His standards (Rom 5:6-10). Satan uses the desires of fallen humanity against itself. If an individual is focused primarily on himself or herself, Satan is quick to remove anything that these individuals may have heard that is true about God from the forefront of their thoughts and replace that with substitutes (Matt 13:19).

यदि शैतान लोगों को जीवन के केंद्र में केवल खुद को रखकर सोचने के लिए प्रेरित करता है, तो वह जीत जाता है। परमेश्वर की प्रथम सृष्टि, आदम और हव्वा के पाप के कारण, सभी एक स्व–केंद्रित, स्वार्थी संसार में जन्म लेते हैं जो निरंतर परमेश्वर और उनके मानकों के खिलाफ विद्रोह में है (रोमियों 5:6–10)। शैतान पतित मानवता की इच्छाओं का उपयोग उसके खिलाफ करता है। यदि कोई व्यक्ति मुख्य रूप से स्वयं पर केंद्रित है, तो शैतान जल्दी से उन सभी सच्चाइयों को, जो इस व्यक्ति ने परमेश्वर के बारे में सुनी हो सकती हैं, उसके विचारों के अग्रभाग से हटा देता है और उनकी जगह झूठी चीजों को ला देता है (मत्ती 13:19)।

Loss of the Familiar
परिचित का नुकसान

As the Holy Spirit leads and individuals start thinking about God, Satan will try hard to make their lives miserable through many circumstances including the loss of friends and outbursts of others in the world. Satan knows that most people like what is familiar and will not

move easily into unfamiliar realms to include friendships without a good reason (Matt 13:20-21). But as God encourages all and some start trusting Him even a little, He is faithful to continue to draw them to Himself. He will teach them a better way of life based on a genuine love/concern for all.

जैसे ही पवित्र आत्मा मार्गदर्शन करता है और व्यक्ति परमेश्वर के बारे में सोचना शुरू करते हैं, शैतान कई परिस्थितियों के माध्यम से उनके जीवन को दुखी करने की कड़ी कोशिश करता है, जिसमें उसके मित्र अलग हो जाते हैं, संसार के लोगों का आक्रोश उसको सहन करना होता है। शैतान जानता है कि अधिकांश लोग परिचित चीजों को पसंद करते हैं और बिना किसी अच्छे कारण के अपरिचित क्षेत्रों, जैसे कि मित्रता इत्यादि में भरोसा नहीं करते हैं (मत्ती 13:20–21)। लेकिन जैसे ही परमेश्वर सभी को प्रोत्साहित करता है और कुछ लोग उस पर थोड़ा भी भरोसा करना शुरू करते हैं, वह विश्वासयोग्यता के साथ उन्हें अपने पास खींचता रहता है। वह उन्हें सभी के लिए सच्चे प्रेम/चिंता पर आधारित एक बेहतर जीवन शैली सिखाएगा।

Worldly Success
सांसारिक सफलता

When one considers following Jesus, he or she may encounter an even greater hurdle than making new friends. Jesus will start to reshape their priorities including redefining success, which may move Satan to tempt them with additional income. If he is able to keep them distracted with additional resources that require additional time, many will lose their developing spiritual connection to God and go back to following other gods including money (Matt 13:22).

जब कोई व्यक्ति यीशु का अनुसरण करने पर विचार करता है, तो उसे नए मित्र बनाने से भी बड़ी बाधा का सामना करना पड़ सकता है। यीशु उनकी प्राथमिकताओं को नया रूप देना शुरू करेगा, जिसमें सफलता को फिर से परिभाषित करना शामिल है, जिसके कारण शैतान उन्हें अतिरिक्त आय के साथ प्रलोभन दे सकता है। यदि वह उन्हें अतिरिक्त संसाधनों के साथ विचलित रखने में सफल हो जाता है, जिनके लिए अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है, तो कई लोग परमेश्वर के साथ अपनी विकसित हो रही आध्यात्मिक कड़ी को खो देंगे और धन सहित अन्य देवताओं का अनुसरण करने वापस लौट जाएंगे (मत्ती 13:22)।

Following Jesus and Intensifying Battles
यीशु का अनुसरण और बढ़ते हुए युद्ध

For those who start following Jesus wanting to live their lives according to our Heavenly Fathers' will and ways, the battles normally intensify. Satan will continue to battle against them trying to reduce their witness to the world through various forms of distraction. Satan knows that if he can distract Jesus' followers through some form of busyness or intimidation, they will not do God's assigned good works well, which in turn helps keep non-Christians in the dark and away from God. Therefore, Jesus' followers need to stay focused and intentionally journeying with God doing His good works. They should keep in mind that they are the light of the world and that God works through them, not around them. They are the physical hands and feet of Jesus.

जो लोग यीशु का अनुसरण शुरू करते हैं और हमारे स्वर्गीय पिता की इच्छा और मार्गों के अनुसार अपना जीवन जीना चाहते हैं, उनके लिए युद्ध आमतौर पर और तीव्र हो जाते हैं। शैतान उनके खिलाफ युद्ध जारी रखेगा, विभिन्न प्रकार की व्याकुलताओं के माध्यम से उनकी गवाही को संसार के सामने कम करने की कोशिश करेगा। शैतान जानता है कि यदि वह यीशु के अनुयायियों को किसी प्रकार की व्यस्तता या डराने–धमकाने के द्वारा विचलित कर सकता है, तो वे परमेश्वर द्वारा नियत अच्छे कार्यों को अच्छी तरह नहीं कर पाएंगे, जो बदले में गैर–मसीहियों को अंधेरे में और परमेश्वर से दूर रखने में मदद करता है। इसलिए, यीशु के अनुयायियों को केंद्रित रहने और परमेश्वर के साथ जानबूझकर उनके अच्छे कार्यों को करते हुए यात्रा करने की आवश्यकता है। उन्हें यह ध्यान में रखना चाहिए कि वे संसार की ज्योति हैं और परमेश्वर उनके माध्यम से कार्य करता है, उनके इर्द–गिर्द नहीं। वे यीशु के भौतिक हाथ और पैर हैं।

In my own life, I have had many times when I became aware of God's desire for me to do some task that would help His kingdom work both physically and spiritually. Many times without fail all types of situations would come up to distract me from doing my assignments (Matt 6:25-33). As I look back over more than forty years of following Jesus as an adult, I pray that I have completed God's desired purposes for me at least twenty percent of the time. If we do not stay focused on Jesus (Heb 12:1-3) and His will for our lives, it is easy to be sidetracked. I can recount everything from simple emergency repairs on our house or cars, to immediate family needs, to some other ministry needs, or even to expansion of current ministry or work that would try to pull me away

from doing a mission that God had placed on my heart. I know that I am not alone in experiencing these types of spiritual attacks.

मेरे अपने जीवन में कई बार ऐसा हुआ है जब मुझे परमेश्वर की इच्छा का पता चला कि मुझे कोई ऐसा कार्य करना है जो उनके राज्य के कार्य को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से बढ़ावा दे। कई बार बिना किसी अपवाद के विभिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती थीं जो मुझे मेरे नियत कार्यों को करने से विचलित करती थीं (मत्ती 6:25–33)। जब मैं अपने वयस्क जीवन में यीशु का अनुसरण करने के चालीस वर्षों से अधिक समय को पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैंने कम से कम बीस प्रतिशत समय तक परमेश्वर के इच्छित उद्देश्यों को पूरा किया हो। यदि हम यीशु पर (इब्रानियों 12:1–3) और उनके हमारे जीवन के लिए जो इच्छा है, उस पर पर केंद्रित नहीं रहते तो भटक जाना आसान है। मैं जानता हूं कि मैं घर की देखभाल या गाड़ियों की छोटी–मोटी आपातकालीन मरम्मत, तत्काल पारिवारिक जरूरतों की पूर्ति करना और अन्य सेवकाईयों की आवश्यकताओं या फिर वर्तमान सेवकाई या उससे संबंधित कार्य के विस्तार जैसी हर चीज को याद कर सकता हूँ जो मुझे उस मिशन से दूर खींचने की कोशिश करती थी जो परमेश्वर ने मेरे हृदय पर रखा था। मुझे पता है कि मैं इन प्रकार के आध्यात्मिक हमलों का अनुभव करने में अकेला नहीं हूँ।

No Pain, No Gain
बिना दर्द उठाए कोई लाभ नहीं

Another common deception permeating many of our churches today is the idea that God does not want us to work through anything that is difficult. Many of Jesus' followers are led to believe that if something is difficult, God must be shutting the door on that assignment. ***That is not true!*** Some of Jesus' followers just do not know any better, but there is a second group within our churches who do not know Jesus and therefore have no clue about what it means to deny themselves, pick up their individual crosses, and follow Him (Luke 14:26-27). This group of potential followers of Jesus confuse those who are truly trying to follow Him. Satan uses them to make complacency and other abnormalities look normal (2 Cor 11:14-15).

आज हमारी कई कलीसियाओं में एक आम छलावा फैला हुआ है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि हम किसी भी कठिनाई से गुजरें। यीशु के कई अनुयायियों को यह विश्वास कराया जाता है कि यदि कोई कार्य कठिन है, तो परमेश्वर उस कार्य के लिए द्वार बंद कर रहा है। यह सच नहीं है! यीशु के कुछ अनुयायी बस इससे आगे नहीं जानते, लेकिन हमारी कलीसियाओं में एक दूसरा समूह भी है जो यीशु को नहीं जानता और इसलिए उन्हें यह बिल्कुल भी

समझ नहीं कि स्वयं का त्याग करना, अपना अपना क्रूस उठाना क्या होता है और उनका अनुसरण करना क्या होता है (लूका 14:26–27)। यीशु के संभावित अनुयायियों का यह समूह उन लोगों को भ्रमित करता है जो वास्तव में उनका अनुसरण करने की कोशिश कर रहे हैं। शैतान उनका उपयोग आत्मसंतुष्टि और अन्य असामान्यताओं को सामान्य दिखाने के लिए करता है (2 कुरिन्थियों 11:14–15)।

The norm for a true Christian is ***to be radically different*** than those not listening to God as he or she tries to follow the leading of God. All we have to do is look at the New Testament accounts of our forefathers as they ministered in the first century and realize that most went through many trials and tribulations as they followed Jesus.

एक सच्चे मसीही के लिए सामान्य बात यह है कि वह उन लोगों से पूरी तरह अलग दिखाई पड़ता है, जो परमेश्वर की बात नहीं सुन रहे होते हैं, क्योंकि वह तो परमेश्वर के मार्गदर्शन का पालन करने की पूरी कोशिश करता है। हमें केवल नए नियम में हमारे पूर्वजों के वृत्तांतों को देखना है, जब उन्होंने पहली सदी में सेवा की थी, और यह महसूस करना है कि यीशु का अनुसरण करते समय उनमें से अधिकांश को कई परीक्षाओं और कष्टों से गुजरना पड़ा।

Following Jesus is not suppose to be easy, but it should be fulfilling! Following Jesus will not be easy because the battle over the outcome of every single life ***is*** significant. God loves everyone and wants all to come to a place in their lives where they will turn from their self-centered ways to Him and His ways, and in so doing be saved (2 Peter 3:9). We need to always keep in mind that there are eternal consequences for our actions, and that the outcome of faithful discipleship will bring some to a saving relationship with God.

यीशु का अनुसरण करना आसान नहीं माना जाता है लेकिन यह संतुष्टिदायक होना चाहिए! यीशु का अनुसरण करना आसान नहीं होगा क्योंकि प्रत्येक मसीही जीवन में किसी भी चुनाव और परिणाम के साथ आत्मिक युद्ध होना महत्वपूर्ण है। परमेश्वर सभी से प्रेम करता है और चाहता है कि सभी अपने जीवन में एक ऐसे स्थान पर पहुंचें जहां वे अपनी स्वकेंद्रित राहों के बजाय परमेश्वर की राहों की ओर मुड़ें और खुद पर केंद्रित जीवन जीने से बचाए जाएं (2 पतरस 3:9)। हमें हमेशा यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमारे कार्यों के अनंत परिणाम हैं और हमारी विश्वासयोग्य शिष्यता का परिणाम कुछ लोगों को परमेश्वर के साथ एक उद्धारकारी रिश्ते तक ले जाएगा।

Meaningful Relationships
सार्थक संबंध

Satan has caused many to replace meaningful periods of work and social interaction with self-centered entertainment and/or

technological activity that helps one feel productive but, in reality, keeps people too preoccupied to develop meaningful relationships. Many are now spending unnecessary long periods each day texting, emailing, internet browsing, gaming, and all sorts of self-absorbing activities that are contrary to building solid godly relationships. This type of activity is one of the new drugs of the twenty-first century. ***Self-centered activity and entertainment are easy. Working hard and building meaningful godly relationships takes time and effort but if worked through normally produces the most fulfilling lives.***

शैतान ने कई लोगों के सार्थक कार्य करने और सामाजिक मेलजोल के समय को आत्मकेंद्रित या तकनीकी गतिविधियों से बदलने के लिए प्रेरित किया है जो व्यक्ति को उत्पादक महसूस कराती हैं। लेकिन असल में यह लोगों को इतना व्यस्त रखती हैं कि वे सार्थक संबंध विकसित नहीं कर पाते हैं। कई लोग अब प्रत्येक दिन अनावश्यक रूप से लंबा समय टेक्स्टिंग, ईमेलिंग, इंटरनेट ब्राउज़िंग, गेमिंग और सभी प्रकार की आत्मकेंद्रित गतिविधियों में बिताते हैं जो कि ठोस ईश्वरीय संबंध बनाने के विपरीत हैं। इस प्रकार की गतिविधि इक्कीसवीं सदी की नए नशों में से एक है। आत्ममुग्ध गतिविधियाँ और मनोरंजन आसान हैं। किंतु कठिन परिश्रम करना और सार्थक ईश्वरीय संबंध बनाना समय और प्रयास मांगता है लेकिन यदि इसे ठीक से किया जाए तो यह आमतौर पर सबसे संतुष्टिदायक जीवन प्रदान करता है।

As we come to know God and His desire for our lives, we begin to understand the importance of a close mature holy relationship with God and one another. Even within everyday activities, Satan is at work destroying godly relationships through many perversions of things that God created for good (2 Tim 2:22-26).

जैसे–जैसे हम परमेश्वर और उनकी हमारे जीवन के लिए इच्छा को जानने लगते हैं, हम परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ एक घनिष्ठ, परिपक्व, पवित्र रिश्ते के महत्व को समझने लगते हैं। यहाँ तक कि रोज़मर्रा की गतिविधियों में भी, शैतान, परमेश्वर द्वारा अच्छे के लिए बनाई गई चीज़ों को कई विकृतियों के माध्यम से ईश्वरीय रिश्तों को नष्ट करने का काम करता है (2 तीमुथियुस 2:22–26)।

Consider food: God has created food to sustain our temporary physical bodies. Satan has caused many to substitute overeating, for godly intimate relationships. Overeating may be easy, building caring intimate relationships normally takes work.

भोजन पर विचार करें: परमेश्वर ने भोजन को हमारी अस्थायी भौतिक देह को बनाए रखने के लिए बनाया है। शैतान ने कई लोगों को ईश्वरीय घनिष्ठ संबंधों के बदले अति भोजन करने के लिए प्रेरित किया है। अति भोजन करना आसान हो सकता है, लेकिन देखभाल करने वाले घनिष्ठ संबंध बनाए रखना सामान्य रूप से मेहनत मांगता है।

Consider drugs: God has given us the wisdom to use certain drugs and natural supplements to assist the body. Satan has caused many to misuse all types of chemicals and supplements as a substitute for godly caring relationships that serve one another. The misuse of drugs may be the easier way to cope at times, but putting the work into building caring relationships is well worth the work.

दवाओं पर विचार करें: परमेश्वर ने हमें कुछ दवाओं और प्राकृतिक पूरकों का उपयोग करने की बुद्धि दी है ताकि शरीर की सहायता की जा सके। शैतान ने कई लोगों को सभी प्रकार के रसायनों और पूरकों का दुरुपयोग करने के लिए प्रेरित किया है, जो एक दूसरे की सेवा करने वाले ईश्वरीय देखभाल करने वाले संबंधों के विकल्प के रूप में है। दवाओं का दुरुपयोग कभी–कभी बीमारी का सामना करने का आसान तरीका हो सकता है लेकिन देखभाल करने वाले रिश्ते बनाने में की गई मेहनत सार्थक है।

Consider sex: God has created sex as one of our bodily functions in order to procreate building family units with the potential of adding to His eternal holy family. It should also help increase intimacy between a man and a woman within a life-long marriage relationship. Yet, Satan has caused many to substitute perverted forms of sex instead of building godly intimate caring relationships. Perverted sex may be temporarily satisfying, but building a godly caring relationship between a man and a woman within the confines of marriage will produce the best and most fulfilling relationship. And keep in mind that a godly marriage is the basis of a sound family structure for the proper edification of our children and in reality is best for the whole human race.

अब यौन संबंध पर विचार करें: परमेश्वर ने यौन संबंध को हमारे शरीर के कार्यों में से एक के रूप में सृजित किया है, ताकि संतान उत्पन्न हो सके और परिवार की इकाइयों का निर्माण हो, जिनमें उसकी अनन्त पवित्र परिवार में जुड़ने की क्षमता हो। इसका उद्देश्य जीवनभर के विवाह संबंध में एक पुरुष और एक स्त्री के बीच आत्मीयता को बढ़ाना भी है। किंतु शैतान ने बहुतों को परमेश्वर–भक्ति से भरे, प्रेमपूर्ण और देखभाल करने वाले संबंधों के निर्माण के स्थान पर यौन विकृतियों के विकल्प अपनाने के लिए प्रेरित किया है। विकृत यौन संबंध अस्थायी रूप से संतोष दे सकते हैं, परंतु विवाह की सीमाओं के भीतर एक पुरुष और एक स्त्री के बीच परमेश्वर–भक्ति से भरा, प्रेमपूर्ण संबंध ही सबसे उत्तम और सबसे अधिक संतोष देने वाला संबंध उत्पन्न करता है। और यह भी ध्यान रखें कि एक परमेश्वर–भक्त विवाह ही एक सुदृढ़ पारिवारिक संरचना की नींव है, जो हमारे बच्चों के उचित पालन–पोषण और निर्माण के लिए आवश्यक है, और वास्तव में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए सर्वोत्तम है।

Beware, Satan is out to kill and destroy as many caring relationships as possible. ***If one listens to God,*** solid caring relationships

will be built, which bring lasting fulfillment, long lasting joy, and inner peace.

सावधान रहें, शैतान जितना संभव हो उतने देखभाल करने वाले संबंधों को नष्ट करने और मारने के लिए निकला है। यदि कोई परमेश्वर की बात सुनता है, तो ठोस देखभाल करने वाले संबंध बनेंगे, जो स्थायी संतुष्टि, लंबे समय तक चलने वाली खुशी और आंतरिक शांति लाते हैं।

Heaven or Hell?
स्वर्ग या नरक?

Have you ever wondered why God does not just take each of us into Heaven and show us around and then take us to Hell and do likewise, so that we might be able to make an informed decision of where we want to live for eternity? At one time in my life, I did. It seemed that manifesting the two worlds would be an easier way to convince many to follow Him. But, as I became more grounded in God's Word, I realized that ***God does not want anyone making a decision to follow Him based on material things but instead on godly eternal interactive relationships.***

क्या आपने कभी सोचा है कि परमेश्वर हम में से प्रत्येक को स्वर्ग में क्यों नहीं ले जाता और हमें वहाँ का दर्शन कराकर, फिर नरक में ले जाकर वैसा ही क्यों नहीं करता, ताकि हम यह सूचित निर्णय ले सकें कि हम अनंतकाल के लिए कहाँ रहना चाहते हैं? मेरे जीवन में एक समय था जब मैंने ऐसा सोचा था। मुझे लगता था कि दोनों संसारों की एक झलक पाना, कई लोगों को उसका अनुसरण करने के लिए मनाने का एक आसान तरीका होगा। लेकिन, जैसे–जैसे मैं परमेश्वर के वचन में अधिक गहराई से स्थापित हुआ, मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी भौतिक चीजों के आधार पर उसका अनुसरण करने का निर्णय ले, बल्कि ईश्वरीय अनंत संवादात्मक संबंधों के आधार पर निर्णय लें।

Although Heaven is going to be a great place to call home, a place that will make even the most beautiful places on earth seem mediocre, God wants us to base our eternal choice of family and friends on a desire to live with Him and others in a truly caring interactive community versus basing our decision on the physical pleasantries of an environment. If we do not submit to our Heavenly Father due to His great love for everyone and allow Him to complete our transformation into His caring nature toward all, we have automatically chosen Hell for our eternal home.

यद्यपि स्वर्ग एक शानदार जगह होगी जिसे घर कहना गर्व की बात होगी, एक ऐसी जगह जो पृथ्वी के सबसे सुंदर स्थानों को भी साधारण बना

देगी, परमेश्वर चाहता है कि हम अपने अनंतकाल के परिवार और मित्रों के चयन को उनके साथ और दूसरों के साथ एक सच्चे देखभाल करने वाले संवादात्मक समुदाय में रहने की इच्छा पर आधारित करें, न कि किसी पर्यावरण की भौतिक सुख–सुविधाओं पर आधारित। यदि हम अपने स्वर्गीय पिता के प्रति, सभी के लिए उनके महान प्रेम के कारण, समर्पण नहीं करते और सभी के प्रति उनकी देखभाल करने वाली प्रकृति उन्हें हमारे अंदर बदलाव लाने की अनुमति नहीं देती है, तो हमने स्वतः ही नरक को अपने अनंतकाल के घर के रूप में चुन लिया है।

Hell
नरक

When we look to God's Word to understand the living conditions of the Kingdom of Hell more fully, we come away with a deeper desire to help as many as possible make good choices about their relationship with God and man. Hell is a very disturbing and hurtful place. Once one is imprisoned there, he or she stays forever.[135]

जब हम परमेश्वर के वचन को देखते हैं ताकि नरक के राज्य की जीवन स्थितियों को और अधिक पूरी तरह समझ सकें, तो हमें एक गहरी इच्छा होती है कि हम जितना संभव हो उतने लोगों को परमेश्वर और मनुष्य के साथ उनके रिश्ते के बारे में अच्छे निर्णय लेने में मदद करें। नरक एक बहुत ही परेशान करने वाली और दुखदायी जगह है। एक बार वहाँ कैद होने के बाद, व्यक्ति हमेशा के लिए वहीं रहता है।[135]

We learn from Scripture that those who are placed in Hell undergo eternal shame and suffering. We see metaphorical imagery depicting physical pain compared to being burned continuously by fire and an eternal worm devouring the flesh but never completing the task (Isa 66:24; Mark 9:47-48). We also see the emotional pain of Hell as something similar to having just experienced the loss of a loved one who is very dear to you causing much "weeping and gnashing of teeth [Matt 8:12; 13:42; 25:30]." There are also other metaphorical images of general humiliation, shame, and discomfort including metaphorical imagery of sleeping on a bed of maggots and having a giant worm for a covering (Isa 14:11; Dan 12:2). We do not have explicit statements regarding the shame, pain, suffering, and humiliation of being eternally in Hell, but we

---

[135] Dan 12:2; Matt 25:46; cf. Rev 20:11-15. दानि 12:2; मत्ती 25:46; तुलना करें, प्रका 20:11–15।

have enough metaphorical imagery that shouts loudly, ***"beware, stay out, shame, pain, suffering, and humiliation ahead!"***

हम पवित्रशास्त्र से सीखते हैं कि जो लोग नरक में डाले जाते हैं, वे अनंतकाल तक शर्मिंदगी और कष्ट सहते हैं। हम रूपकात्मक चित्रण देखते हैं जो शारीरिक दर्द को निरंतर आग से जलने और एक अनंत कीड़े द्वारा मांस को खाने की तुलना में चित्रित करते हैं, और यह पीड़ा कभी खत्म नहीं होती है (यशायाह 66:24; मरकुस 9:47–48)। हम नरक के भावनात्मक दर्द को भी देखते हैं, जो किसी बहुत प्रिय व्यक्ति के नुकसान का अनुभव करने के समान है, जिसके कारण बहुत "रोना और दाँत पीसना" होता है (मत्ती 8:12; 13:42; 25:30)। इसके अलावा, सामान्य अपमान, शर्मिंदगी और असुविधा के अन्य रूपकात्मक चित्रण भी हैं, जिनमें कीड़ों के बिस्तर पर सोने और एक विशाल कीड़े को ढकने के लिए उपयोग करने की रूपकात्मक छवियां शामिल हैं (यशायाह 14:11; दानिय्येल 12:2)। हमारे पास नरक में अनंतकाल तक शर्मिंदगी, दर्द, कष्ट और अपमान के बारे में स्पष्ट बयान नहीं हैं, लेकिन हमारे पास पर्याप्त रूपकात्मक चित्रण हैं जो चिल्ला चिल्ला कर कहते हैं, "सावधान रहें, बाहर रहिए, दूर रहिए,आगे शर्मिंदगी, दर्द, कष्ट और अपमान है!"

Before Jesus died on a cross for the sins of all, Sheol/Hades was the place where ***all*** went when they died, because everyone had to wait for the Messiah's atoning work. Until He came, all waited in either upper or lower Sheol. Upper Sheol contained those who had come to trust and obey God during their lifetime while lower Sheol contained those who had not.

जब तक यीशु ने सभी के पापों के लिए क्रूस पर मृत्यु नहीं दी थी, तब तक शेओल/हेड्स वह स्थान था जहाँ मृत्यु के बाद सभी जाते थे, क्योंकि सभी को मसीहा के प्रायश्चित कार्य की प्रतीक्षा करनी थी। उनके आने तक, सभी शेओल के ऊपरी या निचले हिस्से में प्रतीक्षा करते थे। ऊपरी शेओल में वे लोग थे जिन्होंने अपने जीवनकाल में परमेश्वर पर भरोसा किया और उसका आज्ञापालन किया, जबकि निचला शेओल उन लोगों के लिए था जिन्होंने ऐसा नहीं किया था।

The Old Testament writers knew of a range of depth within Sheol.[136] Jesus' account of Lazarus and the rich man's death and subsequent life in Hades/Sheol helps us understand that there are two major areas within Hades with the higher reserved for the faithful and preferred over the second, which was further down in the depths of Hades and reserved for those who had not listened to God and followed His way of life. From Jesus' promise to one of the criminals with whom

---

[136] Deut 32:22; Prov 9:18; and more. व्यवस्था 32:22; नीतिवचन 9:18; और भी बहुत कुछ।

He was crucified, we learn that he was going to be with Him that very day in the upper area of Hades, which Jesus called "Paradise."

पुराने नियम के लेखकों को शेओल के भीतर गहराई की एक सीमा का ज्ञान था।[136] यीशु द्वारा लाजर और धनी व्यक्ति की मृत्यु और उसके बाद हेड्स/शेओल में उनके जीवन के वर्णन से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि हेड्स में दो प्रमुख क्षेत्र हैं, जिनमें से ऊपरी क्षेत्र विश्वासियों के लिए आरक्षित है और इसे निचले क्षेत्र से बेहतर माना जाता है, जो हेड्स की गहराइयों में है और उन लोगों के लिए है जिन्होंने परमेश्वर की बात नहीं मानी और उनके जीवन के मार्ग का पालन नहीं किया। यीशु के उस अपराधी को दिए गए वचन से, जिसके साथ वह क्रूस पर चढ़ाया गया था, हम जानते हैं कि वह उसी दिन यीशु के साथ हेड्स के ऊपरी क्षेत्र में था, जिसे यीशु ने "स्वर्ग" पैराडाइज़ कहा।

The ungodly group is still presently waiting in lower Sheol (Hades) for the final trial and judgment. At that time, they will stand trial before Jesus, who will be seated on His great white throne, and be sentenced to appropriate punishment according to their actions along with a sentence of eternal isolation from God, which is also known as the second death (Rev 20:11-15).

अधर्मी समूह वर्तमान में निचले शेओल (हेड्स) में अंतिम परीक्षण और न्याय के लिए प्रतीक्षा कर रहा है। उस समय, वे यीशु के सामने परीक्षण में खड़े होंगे, जो अपने महान श्वेत सिंहासन पर बैठे होंगे, और उनके कर्मों के अनुसार उचित दंड प्राप्त करेंगे, साथ ही परमेश्वर से शाश्वत अलगाव की सजा, जिसे दूसरी मृत्यु भी कहा जाता है (प्रकाशितवाक्य 20:11–15)।

After Jesus spent three days in Sheol proclaiming the goodness of God, the Father raised Him from the dead, and Jesus raised those who lived in the upper area of Sheol, Paradise, and escorted them into His Father's presence (Eph 4:7-10). Ignatius (A.D. 37-107), an early Christian writer and martyr, said that after dying on a cross, Jesus went down into Hades alone but ascended with a multitude having torn down the "middle-wall," which had been dividing God and man.[137] It appears from Paul's testimony, that after Jesus' resurrection, Paradise (Upper Sheol) was moved into an area of heaven called the "Third Heaven," which God allowed Paul to visit and hear things that encouraged him, but that he dared not repeat (2 Cor 12:1-5).

---

[137] Ignatius of Antioch, "To the Trallians," Long Version, Book 2, 2.9.4. This matches Scripture such as Acts 2:27, 31 and Eph 4:8-10. अन्ताकिया के इग्नाटियस, "ट्रेलियन्स के लिए", दीर्घ संस्करण, पुस्तक 2, 2.9.4। यह प्रेरितों के काम 2:27, 31 और इफिसियों 4:8–10 से मेल खाता है।

यीशु के तीन दिन शेओल में परमेश्वर की भलाई का प्रचार करने के बाद, पिता ने उन्हें मृतकों में से जीवित किया, और यीशु ने शेओल के ऊपरी क्षेत्र, स्वर्ग (पैराडाइस), में रहने वालों को जीवित किया और उन्हें अपने पिता की उपस्थिति में ले गए (इफिसियों 4:7–10)। इग्नाटियस (37–107 ईस्वी), एक प्रारंभिक मसीही लेखक और शहीद, ने कहा कि क्रूस पर मरने के बाद, यीशु अकेले हेड्स में गए, लेकिन एक भीड़ के साथ ऊपर चढ़े, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर और मनुष्य को विभाजित करने वाली "मध्य दीवार" को तोड़ दिया था।[137] पौलुस की गवाही से ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु के पुनरुत्थान के बाद, स्वर्ग (ऊपरी शेओल) को स्वर्ग के एक क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसे "तीसरा स्वर्ग" कहा जाता है, जहाँ परमेश्वर ने पौलुस को जाने और ऐसी बातें सुनने की अनुमति दी जो उसे प्रोत्साहित करती थीं, लेकिन जिन्हें दोहराने की वह हिम्मत नहीं कर सका (2 कुरिन्थियों 12:1–5)।

Those who were trusting God prior to the Cross were made perfectly righteous through Jesus' atoning death and were then allowed to be in God's immediate presence. Now, there is only the lower level of Sheol, which contains those from all time who are waiting on their trial due to their rejection of God and His way of life (Rev 20:11-13-15).

वे लोग जो क्रूस से पहले परमेश्वर पर भरोसा कर रहे थे, यीशु की प्रायश्चितकारी मृत्यु के माध्यम से पूर्ण रूप से धार्मिक बनाए गए और फिर उन्हें परमेश्वर की तत्काल उपस्थिति में रहने की अनुमति दी गई। अब, केवल शेओल का निचला स्तर बचा है, जिसमें संपूर्ण समयकाल के वे लोग शामिल हैं जो परमेश्वर और उनके जीवन के मार्ग को अस्वीकार करने के कारण अपने परीक्षण की प्रतीक्षा कर रहे हैं (प्रकाशितवाक्य 20:11–13–15)।

The New Heaven
नया स्वर्ग

I heard a great voice coming from the Throne saying, "Behold, the dwelling of the [one true] God is with the [redeemed] people, and He shall dwell with them, and they shall be His people, and He shall wipe away every tear from their eyes, and death shall be no more, nor sorrow, nor weeping, nor suffering shall be any more; the first things have passed."

Rev 21:3-4

फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर

होगा। और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं"। प्रका 21:3–4

What about God's desired relationship with us? We know that God has created us to be part of His eternal mature loving righteous close-knit interactive family, and if we receive Him into our lives as ***both lord and savior***, God's desire becomes reality for us. God has created each of us to be an intimate family member experiencing perfect love, peace, and joy with Him forever.

परमेश्वर हमसे वांछित संबंध के विषय में क्या कहते हैं? हम जानते हैं कि परमेश्वर ने हमें अपनी शाश्वत, परिपक्व, प्रेममय, धार्मिक, और घनिष्ठ पारिवारिक संगति का हिस्सा बनने के लिए सृजित किया है। यदि हम उन्हें अपने जीवन में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर की इच्छा हमारे लिए वास्तविकता बन जाती है। परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को एक घनिष्ठ पारिवारिक सदस्य के रूप में सृजित किया है, जो उनके साथ सदा के लिए पूर्ण प्रेम, शांति, और आनंद का अनुभव करता है।

In Jesus' personal revelation to John for His followers, we take note that in our future New Heaven, our Heavenly Father is ***with*** His children (Rev 21:6; 22:1-2). He does not distance Himself in any way from His children, but instead, He is right in the midst of His family, and each individual who learns to trust the Father and Son will be transformed into the likeness of the Father and Son's very nature (Phil 3:20-21; Rom 8:29).

यीशु के अपने अनुयायियों के लिए यूहन्ना को दिए गए व्यक्तिगत प्रकाशन में, हम ध्यान देते हैं कि हमारे भविष्य के नए स्वर्ग में, हमारा स्वर्गीय पिता अपने बच्चों के साथ है (प्रकाशितवाक्य 21:6; 22:1–2)। वह अपने बच्चों से किसी भी तरह से दूरी नहीं रखता, बल्कि वह अपने परिवार के बीच में ही रहता है, और प्रत्येक व्यक्ति जो पिता और पुत्र पर भरोसा करना सीखता है, वह पिता और पुत्र के स्वरूप में परिवर्तित हो जाएगा (फिलिप्पियों 3:20–21; रोमियों 8:29)।

Part of being like Jesus– ***with similar resurrected bodies*** –means that the miracle of Jesus' death on a cross will become reality for all who learn to trust and obey God from the beginning of time right up to the final judgment. In Heaven, all sin has been removed along with any propensity to sin. Without sin in Heaven, there will be no more unrest, pain, sorrow, and death. God's children will drink from the Water of Life and eat from the Tree of Life abundantly (Rev 21:6; 22:1-2; cf. Rom 8:18-23).

यीशु के समान होने का हिस्सा – उनके समान पुनरुत्थित शरीरों के साथ – यह अर्थ है कि यीशु की क्रूस पर मृत्यु का चमत्कार उन सभी के लिए वास्तविकता बन जाएगा जो समय की शुरुआत से लेकर अंतिम न्याय तक परमेश्वर पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा मानना सीखते हैं। स्वर्ग में, सारा पाप हटा दिया गया है, साथ ही पाप करने की प्रवृत्ति भी। स्वर्ग में पाप के बिना, वहाँ न तो अशांति, न दर्द, न शोक, और न ही मृत्यु होगी। परमेश्वर के बच्चे जीवन के जल से पीएंगे और जीवन के से प्रचुर मात्रा में खाएंगे (प्रका 21:6; 22:1–2; तुलना, रोमियों 8:18–23) ।

When Jesus prayed the night before He died on the Cross as the Savior of the World, we should take special note of the fact that He stated that ***He was sharing His glory with all who were and would be trusting in Him.*** Through His desire to share His sonship and holy nature with His followers, He was insuring our close-knit holy unity. All who become part of God's holy family are guaranteed perfect godly unity with the Father, the Son, the Holy Spirit, and all other eternal holy family members (John 17:20-23).

जब यीशु ने विश्व के उद्धारकर्ता के रूप में क्रूस पर मरने से पहले की रात प्रार्थना की, हमें विशेष रूप से इस तथ्य पर ध्यान देना चाहिए कि उन्होंने कहा कि वे अपनी महिमा उन सभी के साथ साझा कर रहे हैं जो उन पर भरोसा कर रहे थे और भविष्य में करेंगे। अपने अनुयायियों के साथ अपनी पुत्रता और पवित्र स्वभाव को साझा करने की उनकी इच्छा के माध्यम से, वे हमारी घनिष्ठ पवित्र एकता को सुनिश्चित कर रहे थे। जो भी परमेश्वर के पवित्र परिवार का हिस्सा बनते हैं, उन्हें पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा, और सभी अन्य शाश्वत पवित्र परिवार के सदस्यों के साथ पूर्ण ईश्वरीय एकता की गारंटी दी जाती है (यूहन्ना 17:20–23)।

In Jesus' resurrected body, we note that Jesus could walk through walls, He could change His appearance, people could touch His body and feel substance, He could eat food, and He could ascend in that body from our physical realm into the very presence of His spiritual Heavenly Father. The capabilities of the resurrected body are awesome working within both the spiritual and physical realms.

हम देखते हैं कि यीशु अपने पुनरुत्थित शरीर में दीवारों के आर–पार चल सकते थे, वे अपना स्वरूप बदल सकते थे, लोग उनके शरीर को छू सकते थे और उसमें ठोसपन महसूस कर सकते थे, वे भोजन खा सकते थे, और वे उसी शरीर में हमारे भौतिक क्षेत्र से अपने आध्यात्मिक स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में चढ़ सकते थे। पुनरुत्थित शरीर की क्षमताएँ आध्यात्मिक और भौतिक दोनों क्षेत्रों में कार्य करने वाली अद्भुत हैं।

All who faithfully follow Jesus will have a similar resurrected body with their own unique personal features. They will have the same

abilities to operate in both a physical and spiritual world simultaneously within the New Heaven and on the New Earth.

जो सभी यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करते हैं, उनके पास भी उनके अपने अद्वितीय व्यक्तिगत लक्षणों के साथ एक समान पुनरुत्थित शरीर होगा। उनके पास नये स्वर्ग और नई पृथ्वी में एक साथ भौतिक और आध्यात्मिक संसार में कार्य करने की वही क्षमताएँ होंगी।

As socially responsible family members, each will take on their assigned responsibilities and corresponding authority. This is why the New Heaven is going to be so great. Have you ever considered what it would be like to live where everyone loved you to the point that you did not ever have to worry about somebody trying to hurt you spiritually, mentally, or physically?

सामाजिक रूप से जिम्मेदार पारिवारिक सदस्यों के रूप में, प्रत्येक व्यक्ति अपनी नियुक्त जिम्मेदारियों और उससे संबंधित अधिकार को स्वीकार करेगा। यही कारण है कि नया स्वर्ग इतना अद्‌भुत होने वाला है। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसी जगह पर रहना कैसा होगा जहाँ हर कोई आपको इतना प्रेम करता हो कि आपको कभी इस चिंता की आवश्यकता न हो कि कोई आपको आध्यात्मिक, मानसिक, या शारीरिक रूप से चोट पहुँचाने की कोशिश करेगा?

In addition, we will not be hiding from God or others due to past bad actions (sin) because all of our bad actions have been removed. We will become fully known no longer being afraid of what others might think, and we will joyfully serve one another as we take on our assigned responsibilities. We will all be sinlessly serving one another in perfected unbiased love for all under the lordship of the Father and Son. We will be living in a world where our Heavenly Father and Eldest Brother have saved us from the bondage and corruption of sin in order that we may experience an eternal perfect life of love, joy, and peace with Them and one another.

हम परमेश्वर या दूसरों से अपने पिछले बुरे कार्यों (पाप) के कारण छिपेंगे नहीं, क्योंकि हमारे सभी बुरे कार्य हटा दिए गए होंगे। हम पूरी तरह से पहचाने जाएंगे, अब इस डर के बिना कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोच सकते हैं, और हम आनंदपूर्वक एक–दूसरे की सेवा करेंगे क्योंकि हम अपनी नियुक्त जिम्मेदारियों को स्वीकार करेंगे। हम सभी पिता और पुत्र के प्रभुत्व के तहत, निष्पाप रूप से एक–दूसरे की सेवा करेंगे, सभी के लिए पूर्ण निष्पक्ष प्रेम में। हम ऐसी दुनिया में रहेंगे जहाँ हमारे स्वर्गीय पिता और ज्येष्ठ भाई ने हमें पाप के बंधन और भ्रष्टाचार से बचाया है, ताकि हम उनके और एक–दूसरे के साथ प्रेम, आनंद, और शांति की शाश्वत पूर्ण जीवन का अनुभव कर सकें।

Heaven is going to be great–not because of how great the physical and spiritual realm will be–but because we will finally be free

from sin and able to know God and one another perfectly (1 Cor 13:12). At this point in time, we can only imagine what it will be like to speak in casual meaningful conversations with our Heavenly Father, Jesus Christ, the Holy Spirit, and all who have obediently listened to God over the ages. ***Although it seems too good to be true, those of us who are following Jesus are looking forward to that day when we will actually be able to participate in a close relationship with God and one another.***

स्वर्ग अद्‌भुत होने वाला है – इसलिए नहीं कि उसके भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र कितने शानदार होंगे किंतु वहां हम परमेश्वर को और परस्पर एक दूसरे को पूर्ण रूप से जान सकेंगे और अंततः पाप से मुक्त होंगे (1 कुरिन्थियों 13:12)। इस समय, हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि हमारे स्वर्गीय पिता, यीशु मसीह, पवित्र आत्मा, और उन सभी के साथ जो युगों–युगों से परमेश्वर की आज्ञा मानते आए हैं, उनके संग सामान्य लेकिन अर्थपूर्ण बातचीत करना कैसा होगा। हालाँकि यह सच घटित होगा इसलिए यह जानकर बहुत अच्छा लगता है, हम में से हरेक जो यीशु का अनुसरण कर रहे हैं, वे उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब हम वास्तव में परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध में भाग ले सकेंगे।

For those of you who have not really committed to following Jesus up to this point in your life, I encourage you to journey with me a little further and seriously consider following Jesus. Although many who are not following Jesus know that something is wrong and desire something better, Satan has been deceiving them into thinking that things cannot get better. ***This is a lie!*** God gives everyone multiple chances to turn to Him (spiritual awakenings) and obediently follow Him and His way of life. ***It is God who helps people change for the better, which simultaneously improves life in general.***

आप में से उन लोगों के लिए जो अब तक अपने जीवन में यीशु का अनुसरण करने के लिए पूरी तरह से समर्पित नहीं हुए हैं, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि मेरे साथ थोड़ा और आगे की यात्रा करें और यीशु का अनुसरण करने पर गंभीरता से विचार करें। हालाँकि कई लोग जो यीशु का अनुसरण नहीं कर रहे हैं, यह समझते हैं कि कहीं कुछ गलत है और वे कुछ बेहतर की इच्छा रखते हैं। शैतान उन्हें यह सोचकर धोखा दे रहा है कि जो है वही सच है और इससे बेहतर और क्या होगा। लेकिन यह उसका झूठ है! परमेश्वर हर किसी को उनके पास आने के लिए और उनकी आज्ञा मानकर उनके जीवन के मार्ग का पालन करने के लिए कई अवसर देता है (आध्यात्मिक जागृति)। यह परमेश्वर ही है जो लोगों को बेहतर के लिए बदलने में मदद करता है, साथ ही साथ सामान्य रूप से जीवन को बेहतर बनाता है।

Resist Satan
शैतान का विरोध करें

When I consider a good friend and a former pastor of mine, Dr. Mark Corts, I remember that his life was anything but easy. God teaches us through the Apostle Peter to ***resist Satan*** and he will eventually flee (1Peter 5:8-9). Jesus' followers should not flee spiritual battles because they serve the one true God, who is with and in them and able to overcome all enemies.

जब मैं अपने एक अच्छे मित्र और पूर्व पास्टर, डॉ. मार्क कॉर्ट्स के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे याद आता है कि उनका जीवन कतई आसान नहीं था। परमेश्वर हमें प्रेरित पतरस के माध्यम से सिखाता है कि शैतान का विरोध करें और वह अंततः भाग जाएगा (1 पतरस 5:8–9)। यीशु के अनुयायियों को आध्यात्मिक युद्धों से भागना नहीं चाहिए, क्योंकि वे एकमात्र सच्चे परमेश्वर की सेवा करते हैं, जो उनके साथ और उनके भीतर हैं और सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हैं।

Mark Corts was a follower of Christ who resisted Satan continuously doing what he knew to be right. He constantly had to deal with spiritual battles within his congregation, and for the last fifteen years of his life, he had to deal with ongoing spiritual battles intensified by physical illness. Mark wrote a book prior to his death entitled *The Truth about Spiritual Warfare: Your Place in the Battle between God and Satan*, which discusses some of his battles and spiritual warfare in general.[138] Because of his steadfast work in proclaiming God's Word and his resolve to do God's will at any cost, he became an effective contemporary role model. It was through Mark's willingness to give of himself and follow Jesus faithfully that I came to a place in my life at twenty eight where I was willing to do likewise and made a genuine commitment as an adult to follow Jesus faithfully.

मार्क कॉर्ट्स मसीह के अनुयायी थे, जिन्होंने शैतान का लगातार विरोध किया और वह किया जो उन्हें सही पता था। उन्हें अपनी कलीसिया के भीतर आध्यात्मिक युद्धों से निरंतर जूझना पड़ा, और अपने जीवन के अंतिम पंद्रह वर्षों में, उन्हें शारीरिक बीमारी से तीव्र हुए आध्यात्मिक युद्धों से भी निपटना पड़ा। मार्क ने अपनी मृत्यु से पहले एक पुस्तक लिखी, जिसका शीर्षक था आध्यात्मिक

---

[138] C. Mark Corts, *The Truth about Spiritual Warfare: Your Place in the Battle Between God and Satan* (Nashville: Broadman & Holman, 2006). सी. मार्क कॉर्ट्स, आध्यात्मिक युद्ध के बारे में सच्चाईः ईश्वर और शैतान के बीच युद्ध में आपका स्थान (नैशविलेः ब्रॉडमैन और होल्मन, 2006)।

युद्ध के बारे में सत्यः परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध में आपका स्थान, जिसमें उनकी कुछ लड़ाइयों और सामान्य रूप से आध्यात्मिक युद्ध पर चर्चा की गई है।[138] परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में उनकी दृढ़ता और किसी भी कीमत पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के उनके संकल्प के कारण, वे एक प्रभावी समकालीन रोल मॉडल बन गए। मार्क की आत्म–समर्पण और यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करने की इच्छा के माध्यम से ही मैं अपने जीवन में अट्ठाईस वर्ष की आयु में उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ मैं भी ऐसा करने को तैयार हुआ और एक वयस्क के रूप में यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करने के लिए एक सच्ची प्रतिबद्धता की।

Under Mark's teaching, various Bible classes, and personal Bible study, Jesus not only became my active big brother looking out for me, but He also became *my lord* and *primary mentor*. As I looked at Jesus' life on earth, I began to get a glimpse of what He had given up in Heaven (Phil 2:5-8) and suffered on earth in order to make a way for everyone's sins to be removed.

मार्क की शिक्षा, विभिन्न बाइबल कक्षाओं, और व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन के माध्यम से, यीशु न केवल मेरे लिए एक सक्रिय बड़े भाई बने, जो मेरी देखभाल करते थे, बल्कि वे मेरे प्रभु और प्राथमिक गुरु भी बन गए। जब मैंने यीशु के पृथ्वी पर जीवन को देखा, तो मुझे इस बात की झलक मिलने लगी कि उन्होंने स्वर्ग में कैसा त्याग किया था (फिलिप्पियों 2:5–8) और पृथ्वी पर क्या कष्ट सहे, ताकि प्रत्येक व्यक्ति के पापों को हटाने का मार्ग बनाया जा सके।

As I continued to study Scripture, the Apostle Paul became another mentor teaching me what faithful service looked like. When it was the right time, Jesus revealed Himself to Paul and corrected his understanding of God's plan of salvation.[139] From that point on, Paul was willing to give up his religious prestige and secure life in Judea and endure hardship after hardship following Jesus (2 Cor 11:22-31) in order to proclaim the reality of the righteousness of God and His atoning work through Jesus Christ. Paul sacrificed everything in order to help rescue those who did not know God but were willing to listen to the Good News (Gospel) as he proclaimed it through his actions and words.

जैसे–जैसे मैंने पवित्र शास्त्र का अध्ययन जारी रखा, प्रेरित पौलुस मेरे लिए एक और गुरु बन गए, जिन्होंने मुझे विश्वासयोग्य सेवा का स्वरूप सिखाया। जब सही समय आया, यीशु ने पौलुस के सामने स्वयं को प्रकट किया और परमेश्वर की उद्धार की योजना के बारे में उनकी समझ को सुधारा।[139] उस बिंदु से, पौलुस अपनी धार्मिक प्रतिष्ठा और यहूदिया में सुरक्षित जीवन को

---

[139] Acts 9:1-20; 22:1-16; Gal 1:11-17. प्रेरितों 9:1–20; 22:1–16; गला 1:11–17.

त्यागने के लिए तैयार हो गए और यीशु का अनुसरण करते हुए एक के बाद एक कठिनाई सहन की (2कुरिन्थियों 11:22–31), ताकि परमेश्वर की धार्मिकता और यीशु मसीह के माध्यम से उनके प्रायश्चित कार्य की वास्तविकता का प्रचार कर सकें। पौलुस ने उन लोगों को बचाने में मदद करने के लिए सब कुछ बलिदान कर दिया, जो परमेश्वर को नहीं जानते थे, लेकिन सुसमाचार (शुभ समाचार) को सुनने के लिए तैयार थे, जैसा कि उन्होंने अपने कार्यों और वचनों के माध्यम से इसका प्रचार किया।

Jesus did only good as He walked according to His Father's will, and He suffered greatly. Paul suffered greatly after he started following Jesus. Dr. Corts suffered much as he followed Jesus. In general, all who follow Jesus will be asked to give up some of what they could have had for themselves in this world, suffering loss in order to overcome the schemes of Satan. Everything that God asks of His children helps others to see God's love and compassion for all, which in turn helps some come to their senses and ask Him for help in changing their lives to match His. Everything that God asks His obedient children to do will help others to see that there is a better way of life here-and-now and also for eternity, and Jesus' followers will be refined in the process (godly maturity through sanctification; see Rom 6:22 & others).

यीशु ने केवल भला किया क्योंकि वे अपने पिता की इच्छानुसार चले और उन्होंने बहुत कष्ट सहे। पौलुस को यीशु का अनुसरण शुरू करने के बाद बहुत कष्ट सहे। डॉ. कॉर्ट्स ने भी यीशु का अनुसरण करते हुए बहुत कष्ट सहने पड़े। सामान्य रूप से, जो भी यीशु का अनुसरण करते हैं, उनसे इस संसार में अपने लिए मिल सकने वाली कुछ चीजों को त्यागने और शैतान की चालों पर विजय पाने के लिए नुकसान सहन करने को कहा जाएगा। परमेश्वर जो कुछ भी अपने बच्चों से माँगता है, वह दूसरों को परमेश्वर का प्रेम और करुणा देखने में मदद करता है, ताकि बदले में कुछ लोगों को, उनके जीवन को, परमेश्वर के अनुसार बदलने के लिए उससे मदद माँगने में सहायता करता है। परमेश्वर जो कुछ भी अपने आज्ञाकारी बच्चों से करने को कहता है, वह दूसरों को यह देखने में मदद करता है कि यहाँ और अभी, साथ ही अनंतकाल के लिए एक बेहतर जीवन शैली है, और इस प्रक्रिया में यीशु के अनुयायी और परिष्कृत होंगे (पवित्रीकरण के माध्यम से ईश्वरीय परिपक्वता; देखें रोमियों 6:22 और अन्य)।

I believe that Satan's two most effective forms of combat against Jesus' followers are deception and intimidation. His greatest deception is tricking Jesus' followers into thinking that they are not worthy of witnessing, not able to witness, and/or not needed. In reality, all of Jesus' followers are called to witness, enabled to witness through the empowerment of the Holy Spirit, and worthy of witnessing through Jesus' righteousness working in them.

मेरा मानना है कि यीशु के अनुयायियों के खिलाफ शैतान के दो सबसे प्रभावी युद्ध के तरीके हैं छल और धमकी। उसका सबसे बड़ा छल यह है कि वह यीशु के अनुयायियों को यह सोचने में धोखा देता है कि वे गवाही देने के योग्य नहीं हैं, गवाही देने में सक्षम नहीं हैं, और/या उनकी आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, यीशु के सभी अनुयायी गवाही देने के लिए बुलाए गए हैं, पवित्र आत्मा के सशक्तिकरण के माध्यम से गवाही देने में सक्षम हैं, और यीशु की धार्मिकता जो उनमें कार्य करती है, उनके द्वारा गवाही देने के योग्य हैं।

If you fear witnessing for any reason, ask God to give you discernment and empowerment. He will help you know when and how to witness in all circumstances.

यदि आप किसी भी कारण से गवाही देने से डरते हैं, तो परमेश्वर से प्रज्ञा और सशक्तिकरण माँगें। वह आपको सभी परिस्थितियों में कब और कैसे गवाही देनी है, यह जानने में मदद करेगा।

Putting on the Whole Armor of God
परमेश्वर का सम्पूर्ण कवच धारण करना

God empowers and guides those who are listening to Him. Since the Cross, Jesus personally guides, protects, and empowers His followers through ***the indwelling of the Holy Spirit*** (John 14:16-17; Acts 1:8). Jesus' followers from all Christian denominations need to keep their spiritual armor in good working order, properly fitted, and ***on*** at all times in order to see through Satan's deceptions and move according to God's will. The Father Himself protects them as they follow Jesus through the ongoing spiritual battles. At times, God asks His children to give up their physical lives and come Home helping others to know Him through their ultimate sacrifice.

परमेश्वर उन लोगों को सशक्त करता और मार्गदर्शन देता है जो उसकी बात सुन रहे हैं। क्रूसीकरण के बाद से, यीशु व्यक्तिगत रूप से अपने अनुयायियों को पवित्र आत्मा के निवास के माध्यम से मार्गदर्शन, सुरक्षा, और सशक्तिकरण प्रदान करते हैं (यूहन्ना 14:16–17; प्रेरितों 1:8)। सभी मसीही संप्रदायों के यीशु के अनुयायियों को अपने आध्यात्मिक कवच को अच्छी कार्यशील स्थिति में, ठीक ढंग से फिट, और हर समय धारण किए रखने की आवश्यकता है, ताकि वे शैतान के छल को देख सकें और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चल सकें। पिता स्वयं उनकी रक्षा करते हैं, जब वे चल रहे आध्यात्मिक युद्धों में यीशु का अनुसरण करते हैं। कभी–कभी, परमेश्वर अपने बच्चों से अपने भौतिक जीवन को त्यागने और घर आने को कहते हैं, ताकि उनके असली बलिदान के माध्यम से दूसरों को उन्हें जानने में मदद मिले।

When Paul used the metaphor of putting on the whole armor of God in Ephesians chapter 6 as a way to be prepared to do spiritual battle

against Satan and his accomplices, he wanted Jesus' followers to realize that they need God's help, and ***as long as they walk according to God's will, they have all the protection that they need.*** Like a good soldier putting on each piece of defensive and offensive gear in order to be prepared properly for battle, they will be able to overcome Satan and his schemes.

जब पौलुस ने इफिसियों अध्याय 6 में परमेश्वर के पूरे कवच को धारण करने के रूपक का उपयोग किया ताकि शैतान और उसके साथियों के खिलाफ आध्यात्मिक युद्ध के लिए तैयार रहा जाए तो वह चाहता था कि यीशु के अनुयायी यह समझें कि उन्हें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है और जब तक वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलते हैं उनके पास सभी आवश्यक सुरक्षा है। जैसे एक अच्छा सैनिक युद्ध के लिए ठीक ढंग से तैयार होने के लिए प्रत्येक रक्षात्मक और आक्रामक उपकरण को धारण करता है वैसे ही वे शैतान और उसकी चालों पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

Look at Paul's list of pieces comprising the spiritual armor that all of Jesus' followers are to wear:

(1) ***truth***, which metaphorically compares to a soldier's carrying belt for all of his spiritual tools;
(2) ***righteousness***, which metaphorically compares to a soldier's breastplate protecting vital organs;
(3) ***faith***, which metaphorically provides a movable shield to be positioned as needed to stop Satan's deadly thrusts;
(4) ***salvation***, which metaphorically provides a helmet covering their heads so that they do not suffer loss of ability to see, hear, and understand what is happening;
(5) ***knowledge of the Word of God*** through the teaching of the Holy Spirit and willingness to follow His leading, which empowers each with both an offensive and defensive sword in order to clear the way for truth to be known;
(6) ***preparedness to proclaim the Gospel of Peace***, which makes them effective witnesses wherever God leads; and
(7) ***continual prayer*** at all times staying in contact with God through ongoing communication: listening and talking.

पौलुस द्वारा दिए गए आध्यात्मिक कवच के हिस्सों की सूची पर विचार करें, जो यीशु के सभी अनुयायियों को धारण करना है:

(1) सत्य, जो रूपक में एक सैनिक के बेल्ट की तुलना है, जो उसके सभी आध्यात्मिक उपकरणों को संभाले रखता है;
(2) धार्मिकता, जो रूपक में एक सैनिक के कवच की तुलना में है, जो महत्वपूर्ण अंगों की रक्षा करता है;

(3) विश्वास, जो रूपक में एक चलायमान ढाल प्रदान करता है, जिसे आवश्यकतानुसार स्थानांतरित किया जा सकता है ताकि शैतान के घातक प्रहारों को रोका जा सके;
(4) उद्धार, जो रूपक में एक हेलमेट प्रदान करता है, जो उनके सिर को ढकता है ताकि वे देखने, सुनने, और समझने की क्षमता को न खोएँ;
(5) परमेश्वर के वचन का ज्ञान, जो पवित्र आत्मा की शिक्षा और उसके मार्गदर्शन का पालन करने की इच्छा के माध्यम से प्राप्त होता है, जो प्रत्येक को आक्रामक और रक्षात्मक तलवार प्रदान करता है ताकि सत्य को जानने का मार्ग साफ हो सके;
(6) शांति के सुसमाचार का प्रचार करने की तत्परता, जो उन्हें परमेश्वर जहाँ भी ले जाए, वहाँ प्रभावी गवाह बनाती है; और
(7) निरंतर प्रार्थना, जो हर समय परमेश्वर के साथ निरंतर संवाद के माध्यम से संपर्क में रहने को दर्शाती हैः सुनना और बात करना।

Living holy lives and handling the Word of God correctly through the instruction and leading of the Holy Spirit allows Jesus' followers to proclaim the "Good News" effectively and defend themselves against Satan and his deceptive practices.[140]

पवित्र आत्मा की शिक्षा और मार्गदर्शन के माध्यम से पवित्र जीवन जीना और परमेश्वर के वचन को सही ढंग से संभालना, यीशु के अनुयायियों को "शुभ समाचार" को प्रभावी ढंग से प्रचार करने और शैतान और उसकी भ्रामक प्रथाओं के खिलाफ अपनी रक्षा करने की अनुमति देता है।[140]

Even if we live righteously, study God's Word, and follow the leading of the Holy Spirit, a holy life does not mean that we will not someday become a casualty of war. Like Jesus, our Heavenly Father is using our efforts including at times the loss of our physical lives for the ultimate building up of His eternal holy family and kingdom, which is also ***our*** eternal close-knit holy family and kingdom. Just know that God will bring good out of every experience of pain and suffering that His children undergo (Rom 8:28; cf. Col 1:24).

भले ही हम धार्मिकता से जीवन जिएँ परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करें पवित्र जीवन का अर्थ यह नहीं है कि हम कभी युद्ध के शिकार नहीं होंगे। यीशु की तरह हमारा स्वर्गीय पिता हमारे प्रयासों का उपयोग करता है जिसमें कभी कभी हमारे भौतिक जीवन का नुकसान भी शामिल है ताकि उसके शाश्वत पवित्र परिवार और राज्य का निर्माण हो जो हमारा शाश्वत घनिष्ठ पवित्र परिवार और राज्य भी है। बस यह

---

[140] Eph 6:10-18; 1 Thess 5:14-22. इफि 6:10–18; 1 थिस्स 5:14–22.

जान लें कि परमेश्वर अपने बच्चों के हर दर्द और कष्ट के अनुभव से अच्छाई लाएगा (रोमियों 8:28; तुलना करें, कुलुस्सियों 1:24)।

Chapter 4: Waking Up Spiritually
अध्याय 4: आध्यात्मिक रूप से जागृत होना

Have you ever had a dream in which everything happening within the dream felt so real that you were surprised when you woke up and realized that it had all been a dream? In a very similar way, when someone starts listening to God, he or she starts realizing that there is more to the world around them than meets the eye.[141] God does not allow us to interact directly with the spiritual world that is directly interconnected to our physical world, but He gives us awareness of it. Within our physical world, God encourages all to engage in godly social interaction as we consider choosing eternal good over evil.

चीज इतनी वास्तविक लगती हो कि जब आप जागते हैं, तो आपको यह जानकर आश्चर्य होता है कि वह सब सिर्फ एक सपना था? ठीक उसी तरह, जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की बात सुनना शुरू करता है, तो उसे यह एहसास होने लगता है कि उसके आसपास की दुनिया में वह सब कुछ नहीं है जो आंखों से दिखता है।[141] परमेश्वर हमें उस आध्यात्मिक दुनिया के साथ सीधे तौर पर बातचीत करने की अनुमति नहीं देता जो हमारी भौतिक दुनिया से गहराई से जुड़ी हुई है, लेकिन वह हमें इसके प्रति जागरूकता प्रदान करता है। हमारी भौतिक दुनिया में, परमेश्वर सभी को प्रोत्साहित करता है कि वे ईश्वरीय सामाजिक मेलजोल में भाग लें और अनंत अच्छाई को बुराई के ऊपर चुनने पर विचार करें।

Although we are not given the ability to interact directly with the spiritual world around us, those who listen to God are taught to understand that many of the battles that we personally experience are spiritually based and can be won ***only*** through His assistance (Eph 6:10-18). The physical world is affected by the spiritual and visa-versa. In the present, we affect the spiritual world through our actions in this physical world including through our prayers as God and His Heavenly Host defend righteousness in both worlds. For those who listen to God, the reality of a future world that is divided into two isolated regions called Heaven and Hell becomes the main focus even as we live out our physical lives in the here-and-now (1 Peter 1:3-9; 2:9-10). ***Our present***

---

[141] Compare Rom 13:11; 1 John 1:5-10; 2:15-29; John 3:19-21. तुलना करें रोमियों 13:11; 1 यूहन्ना 1:5–10; 2:15–29; यूहन्ना 3:19–21.

world is temporary, and the future sinless Heaven and sinful Hell are permanent.

हालांकि हमें अपने आसपास की आध्यात्मिक दुनिया के साथ सीधे तौर पर बातचीत करने की क्षमता नहीं दी गई है, जो लोग परमेश्वर की बात सुनते हैं, उन्हें यह समझाया जाता है कि हमारे कई व्यक्तिगत संघर्ष आध्यात्मिक आधार पर होते हैं और इन्हें केवल उनकी सहायता से जीता जा सकता है (इफिसियों 6:10–18)। भौतिक दुनिया आध्यात्मिक दुनिया से प्रभावित होती है और इसके विपरीत भी। वर्तमान में, हम अपनी भौतिक दुनिया में किए गए कार्यों, जिसमें हमारी प्रार्थनाएं भी शामिल हैं, के माध्यम से आध्यात्मिक दुनिया को प्रभावित करते हैं, क्योंकि परमेश्वर और उनके स्वर्गीय दूत दोनों दुनियाओं में धार्मिकता की रक्षा करते हैं। जो लोग परमेश्वर की बात सुनते हैं, उनके लिए भविष्य की एक ऐसी दुनिया की वास्तविकता, जो दो अलग–अलग क्षेत्रोंकृस्वर्ग और नरककृमें विभाजित है, मुख्य ध्यान बन जाती है, भले ही हम अभी इस भौतिक जीवन में जी रहे हों (1 पतरस 1:3–9; 2:9–10)। हमारी वर्तमान दुनिया अस्थायी है, जबकि भविष्य का पापरहित स्वर्ग और पापपूर्ण नरक स्थायी हैं।

From the beginning of the Creation, God has asked everyone to make choices. Originating from Adam and Eve's sin of partaking of the fruit of the tree ***of the knowledge*** of good and evil, we are all born into sin and forced to experience both good and evil. We learn from both and then must choose to obey or disobey, to follow God or continue in our self-centered ways. It has been part of God's creative design to give everyone a fairly extreme amount of free will in order to allow each person to decide if he or she wants to join Him and others in a mutual caring interactive righteous way of life. God does not stand over His Creation as a hovering parent forcing everyone to do what is right. Through the Holy Spirit's teaching, God works with our individual consciences and shows us the advantages of living caring righteous gracious (holy) lives with Him.[142]

सृष्टि की शुरुआत से, परमेश्वर ने सभी से निर्णय लेने के लिए कहा है। आदम और हव्वा के पाप – अच्छाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने़ – से शुरू होकर, हम सभी पाप में जन्म लेते हैं और हमें अच्छाई और बुराई दोनों का अनुभव करना पड़ता है। हम दोनों से सीखते हैं और फिर आज्ञा मानने या न मानने, परमेश्वर का अनुसरण करने या अपने स्वार्थी रास्तों पर चलने का चुनाव करते हैं। यह परमेश्वर की सृजनात्मक योजना का हिस्सा रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति को काफी हद तक स्वतंत्र इच्छा दी जाए ताकि वह यह तय कर सके कि वह परमेश्वर और दूसरों के साथ एक आपसी देखभाल करने वाले,

---

[142] Rom 1:18-32; 2:11-16; and others. रोमियों 1:18–32; 2:11–16; और अन्य.

धार्मिक जीवन जीने में शामिल होना चाहता है या नहीं। परमेश्वर अपनी सृष्टि के ऊपर एक नियंत्रक माता–पिता की तरह खड़ा नहीं होता जो सभी को सही करने के लिए मजबूर करता हो। पवित्र आत्मा की शिक्षा के माध्यम से, परमेश्वर हमारे व्यक्तिगत विवेक के साथ काम करता है और हमें उसके साथ दयालु, धार्मिक, और कृपापूर्ण (पवित्र) जीवन जीने के लाभ दिखाता है।[142]

Although God works righteously and graciously in our lives, many openly rebel against Him and His holy way of life (Rom 5:8-10). Even with open rebellion and sometimes hostility, God persistently works with all not wanting any to perish but all to come to a place in their life where they willingly turn to Him looking for help in living a holy life.[143] As God encourages everyone to know Him and His way of life more fully, many will not change, but others at various levels of rebellion including some hitting rock bottom will start willingly submitting to His authority because they come to realize how good He is and how trustworthy and able He is to complete the good Creation that He has started. They start changing from self-rule to seeking His leadership, which leads to a much better life now and forever.[144]

हालांकि परमेश्वर हमारे जीवन में धार्मिकता और कृपा के साथ काम करता है, कई लोग खुलकर उसके और उसके पवित्र जीवन–मार्ग के खिलाफ विद्रोह करते हैं (रोमियों 5:8–10)। खुले विद्रोह और कभी–कभी शत्रुता के बावजूद, परमेश्वर सभी के साथ लगातार काम करता है, यह नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, बल्कि सभी अपने जीवन में उस बिंदु पर पहुंचें जहां वे स्वेच्छा से उसकी ओर मुड़ें और पवित्र जीवन जीने में मदद मांगें।[143] जैसे–जैसे परमेश्वर सभी को उसे और उसके जीवन–मार्ग को और अधिक गहराई से जानने के लिए प्रोत्साहित करता है, कई लोग नहीं बदलते, लेकिन कुछ लोग, जो विभिन्न स्तरों पर विद्रोह में हैं, जिसमें कुछ लोग जो पूरी तरह टूट चुके हैं, वे परमेश्वर की प्रभुता को स्वेच्छा से स्वीकार करना शुरू कर देते हैं क्योंकि उन्हें यह एहसास होता है कि वह कितना अच्छा है और वह कितना भरोसेमंद और सक्षम है कि उसने जो अच्छी सृष्टि शुरू की है, उसे पूरा करे। वे स्व–शासन से परमेश्वर के नेतृत्व की तलाश में बदलना शुरू कर देते हैं, जिससे अब और हमेशा के लिए एक बेहतर जीवन मिलता है।[144]

Today, some think that God loves us so much that He will not allow anyone to reject Him and go to Hell or that going to Hell will be temporary and just feel like an eternity. ***This is wrong!*** Without

---

[143] 2 Peter 3:9; cf. 1 Tim 2:4. 2 पतरस 3:9; तुलना करें: 1 तीमुथियुस 2:4.

[144] John 10:9-11; Rom 6:22; Rev 21:1-4. यूहन्ना 10:9–11; रोमियों 6:22; प्रकाशितवाक्य 21:1–4.

submission to God out of a growing love, people will eternally be confined in the future to an isolated place, a prison, called the Lake of Burning Fire or more commonly "Hell." ***What one decides while physically living truly matters!***

आज, कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर हमसे इतना प्यार करता है कि वह किसी को भी उसे अस्वीकार करने और नरक में जाने की अनुमति नहीं देगा या कि नरक में जाना अस्थायी होगा और केवल अनंतकाल जैसा महसूस होगा। यह गलत है! परमेश्वर के प्रति बढ़ते प्रेम से उनकी प्रभुता को स्वीकार किए बिना, लोग भविष्य में हमेशा के लिए एक अलग–थलग जगह, एक जेल, जिसे जलती आग की झील या अधिक सामान्य रूप से "नरक" कहा जाता है, में कैद रहेंगे। भौतिक जीवन जीते समय कोई जो निर्णय लेता है, वह वास्तव में मायने रखता है!

Born into Sin
पाप में जन्म

As we consider God's Creation, we can make a few observations:

(1) everyone was created as an eternal being without having a say in the matter;

(2) everyone other than Adam and Eve was born into a world corrupted by sin and is living on a common wide life-path (road) leading eventually to eternal shame and pain with marred characters if they do not get off; and

(3) everyone who learns to trust and obey God out of a growing love for Him will get off the wide-road and start following Jesus as a member of God's eternal close-knit holy family.

जब हम परमेश्वर की सृष्टि पर विचार करते हैं, तो हम कुछ अवलोकन कर सकते हैं:

(1) प्रत्येक व्यक्ति को बिना उनकी सहमति के अनंत प्राणी के रूप में बनाया गया है;

(2) आदम और हव्वा को छोड़कर, सभी लोग पाप से दूषित दुनिया में जन्म लेते हैं और एक सामान्य व्यापक जीवन–पथ (मार्ग) पर जीते हैं, जो अंततः अनंत शर्म और दर्द की ओर ले जाताहै; यदि वे उस मार्ग से नहीं हटते तो उनके चरित्र में दोष आ जाते हैं; और

(3) जो लोग परमेश्वर के प्रति बढ़ते प्रेम के साथ उन पर भरोसा करना और उनकी आज्ञामानना सीखते हैं, वे इस व्यापक मार्ग से हट जाते हैं और परमेश्वर के अनंत घनिष्ठ पवित्रपरिवार के सदस्य के रूप में यीशु का अनुसरण शुरू करते हैं।

So, how marred are we, and why would anyone want to submit to God's lordship? God tells us not to love the fallen corrupted world nor the various ways of the world because they are not of Him.[145] He describes the ways of the world as a life based on self-centeredness versus centered on God and a love for all.

तो, हम कितने दूषित हैं, और कोई भी परमेश्वर की प्रभुता के अधीन क्यों होना चाहेगा? परमेश्वर हमें बताता है कि हमें इस पतित, दूषित दुनिया या इसके विभिन्न तरीकों से प्रेम नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे उससे नहीं हैं।[145] वह दुनिया के तरीकों को स्व–केंद्रित जीवन के रूप में वर्णित करता है, जो परमेश्वर और सभी के लिए प्रेम पर केंद्रित होने के विपरीत है।

Let's consider a couple uncaring sons within the Prodigal Son parable recorded in Luke 15:11-32. As we look at Jesus' teaching about a loving father and ***two*** self-centered sons (Luke 15:1-2, 11-32), we note three important points:

(1) the loving father worked hard to provide for his family and workers. From the limited information given within the story, it is noted that He lived his life with a genuine concern for the people around him;

(2) the openly rebellious younger son was not concerned with others nor the future. When he became old enough to be on his own, he left home living in the moment in such a way as to experience as much worldly pleasure as possible not considering how that would affect his future; and

(3) ***the second son,*** who was also highlighted in Jesus' story, demonstrated a certain degree of faithfulness to his father by staying home and helping to maintain their land, but ***he was also distant from God*** because of his lack of genuine love for others shown through his lack of love for his lost brother.

आइए, लूका 15:11–32 में दर्ज खोए हुए पुत्र की दृष्टांत में दो असंवेदनशील पुत्रों पर विचार करें। यीशु की शिक्षाओं में एक प्रेम करने वाले पिता और दो स्व–केंद्रित पुत्रों (लूका 15:1–2, 11–32) के बारे में तीन महत्वपूर्ण बिंदु हैं:

(1) प्रेम करने वाले पिता ने अपने परिवार और कर्मचारियों के लिए कठिन परिश्रम किया। कहानी में दी गई सीमित जानकारी से पता चलता है कि उन्होंने अपने आसपास के लोगों के लिए सच्ची चिंता के साथ जीवन जिया;

---

[145] 1 John 2:15; and they will not last 2 Peter 3:7-13; Rev 22:1.

1 यूहन्ना 2:15; और वे टिकेंगे नहीं 2 पतरस 3:7–13; प्रकाशितवाक्य 22:1.

(2) खुलकर विद्रोही छोटा पुत्र दूसरों या भविष्य की चिंता नहीं करता था। जब वह स्वतंत्र होने के लिए पर्याप्त बड़ा हुआ, तो उसने घर छोड़ दिया और वर्तमान में जीते हुए अधिक से अधिक सांसारिक सुखों का अनुभव करने की कोशिश की, बिना यह सोचे कि इसका उसके भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा; और
(3) दूसरा पुत्र, जिसे यीशु की कहानी में भी उजागर किया गया, अपने पिता के प्रति कुछ हद तक निष्ठा दिखाता था, क्योंकि वह घर पर रहा और उनकी जमीन को बनाए रखने में मदद की, लेकिन वह भी परमेश्वर से दूर था, क्योंकि उसके पास दूसरों के लिए सच्चा प्रेम नहीं था, जो उसके खोए हुए भाई के प्रति प्रेम की कमी से प्रकट होता है।

In reality, Jesus' story closes with two lost sons, who have experienced love from their biological father, and who had not yet allowed God to grow genuine love and concern in them. One son came home repenting because of a chance for a better life that his father might offer him, and the other who stayed at home was living legally within his father's moral criteria but did not have a genuine love for others starting with his lost brother.

वास्तव में, यीशु की कहानी दो खोए हुए पुत्रों के साथ समाप्त होती है, जिन्होंने अपने जैविक पिता से प्रेम का अनुभव किया था, लेकिन अभी तक परमेश्वर को उनमें सच्चा प्रेम और चिंता विकसित करने की अनुमति नहीं दी थी। एक पुत्र पश्चाताप करते हुए घर लौटा, क्योंकि उसे अपने पिता द्वारा बेहतर जीवन की संभावना दिखी, और दूसरा जो घर पर रहा, वह अपने पिता के नैतिक मापदंडों के भीतर वैधानिक रूप से जी रहा था, लेकिन उसके पास अपने खोए हुए भाई सहित दूसरों के लिए सच्चा प्रेम नहीं था।

When Jesus closed this story, He did not say whether either son had a genuine love for their father or others. It is possible that eventually both–having experienced totally different circumstances–would eventually come to the place of allowing God to teach them to love others according to His standards. If they did not, neither would be allowed into God's eternal holy family. Allowing God to lead and teach each of us to love Him and others more and more is crucial to becoming part of His eternal family.[146]

जब यीशु ने इस कहानी को समाप्त किया, तो उन्होंने यह नहीं बताया कि क्या दोनों पुत्रों में से किसी ने अपने पिता या दूसरों के लिए सच्चा प्रेम विकसित किया। यह संभव है कि अंततः दोनोंकृपूरी तरह से अलग–अलग

[146] Matt 5:43-48; 22:37-40; Luke 10:30-37. मत्ती 5:43–48; 22:37–40; लूका 10:30–37.

परिस्थितियों का अनुभव करने के बादकृउस स्थान पर पहुंचे जहां उन्होंने परमेश्वर को उनके मानकों के अनुसार दूसरों से प्रेम करना सिखाने की अनुमति दी। यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो दोनों में से कोई भी परमेश्वर के अनंत पवित्र परिवार में शामिल नहीं हो सकता था। परमेश्वर को हमें नेतृत्व करने और हमें उनसे और दूसरों से अधिक से अधिक प्रेम करना सिखाने की अनुमति देना उनके अनंत परिवार का हिस्सा बनने के लिए महत्वपूर्ण है।[146]

In this story, note that Jesus is talking primarily to the antagonistic Pharisees. The Pharisees are known to be morally good and can be compared to many of our contemporary church members. Many church members today have fairly good morals but are lacking a genuine concern for others. It is a good and noble thing to follow God's moral laws faithfully; but without genuine love and concern for others, one is missing what is most important (1 Cor 13:1-8a).

इस कहानी में, ध्यान दें कि यीशु मुख्य रूप से विरोधी फरीसियों से बात कर रहे हैं। फरीसी नैतिक रूप से अच्छे माने जाते थे और उनकी तुलना हमारे समकालीन चर्च के कई सदस्यों से की जा सकती है। आज कई चर्च के सदस्यों के पास काफी अच्छे नैतिक मूल्य हैं, लेकिन उनमें दूसरों के लिए सच्ची चिंता की कमी है। परमेश्वर के नैतिक नियमों का पालन करना अच्छा और सम्मानजनक है; लेकिन दूसरों के लिए सच्चे प्रेम और चिंता के बिना, व्यक्ति सबसे महत्वपूर्ण चीज को खो देता है (1 कुरिन्थियों 13:1–8)।

Jesus makes us vividly aware that the ability to know good and to do good comes only from our Heavenly Father.[147] He is the One who is good, and all goodness flows from Him. Therefore, we need the Creator to help us evaluate our motives for the things that we do. The only way to realize any true godly love is to live out our lives listening to God as we live according to His standards. God wants us to experience a good life and helps all who listen to Him grow in their love for others as He loves all.[148]

यीशु हमें स्पष्ट रूप से जागरूक करते हैं कि अच्छाई को जानने और अच्छा करने की क्षमता केवल हमारे स्वर्गीय पिता से आती है।[147] वही एकमात्र अच्छा है, और सारी अच्छाई उसी से बहती है। इसलिए, हमें अपने कार्यों के लिए अपने उद्देश्यों का मूल्यांकन करने में सृष्टिकर्ता की मदद की आवश्यकता है। सच्चा ईश्वरीय प्रेम केवल तभी अनुभव किया जा सकता है, जब हम परमेश्वर की बात सुनते हुए उनके मानकों के अनुसार जीवन जीते हैं। परमेश्वर

---

[147] Matt 19:17; Luke 18:19; John 20:17. मत्ती 19:17; लूका 18:19; यूहन्ना 20:17.

[148] John 13:34; 15:10-13. यूहन्ना 13:34; 15:10–13.

चाहता है कि हम अच्छा जीवन अनुभव करें और जो लोग उसकी बात सुनते हैं, उनकी मदद करता है कि वे दूसरों के लिए प्रेम में वृद्धि करें, जैसा कि वह सभी से प्रेम करता है।[148]

During Moses' day, God taught those who would follow Him that they had to live loving-kind righteous (holy) lives: lives that were distinctly separate from those who were not walking in His ways. Israel agreed to follow God and was commanded to be a holy nation manifesting God's true caring nature to the entire world (Ex 19:5-6). They were to be a light to the world just as Christ's followers are today (1 Peter 2:9). From the very beginning, God has wanted as many as are willing from all nations to join Him as part of His eternal holy family. God with His righteous nature does not allow the co-existence of good and evil in His eternal presence knowing that such brings corruption and pain (Rom 8:18-23). That is why Scripture teaches us over and over again that God is holy and demands that we, His created children, strive for holiness (Lev 18:1-5; 19:1-2; and more).

मूसा के समय में, परमेश्वर ने उन लोगों को सिखाया जो उनका अनुसरण करेंगे कि उन्हें प्रेममय, धार्मिक (पवित्र) जीवन जीना होगाः ऐसे जीवन जो उन लोगों से पूरी तरह अलग हों जो उनके मार्ग पर नहीं चल रहे थे। इस्राएल ने परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए सहमति दी और उन्हें एक पवित्र राष्ट्र बनने का आदेश दिया गया, जो परमेश्वर की सच्ची देखभाल करने वाली प्रकृति को पूरी दुनिया में प्रकट करे (निर्गमन 19:5–6)। उन्हें दुनिया के लिए एक प्रकाश बनना था, जैसा कि आज मसीह के अनुयायी हैं (1 पतरस 2:9)। शुरू से ही, परमेश्वर चाहता था कि सभी राष्ट्रों से जितने लोग इच्छुक हों, वे उनके अनंत पवित्र परिवार का हिस्सा बनें। परमेश्वर अपनी धार्मिक प्रकृति के साथ अच्छाई और बुराई के सह–अस्तित्व को अपनी अनंत उपस्थिति में अनुमति नहीं देता, क्योंकि वह जानता है कि ऐसा करना भ्रष्टाचार और दर्द लाता है (रोमियों 8:18–23)। यही कारण है कि शास्त्र हमें बार–बार सिखाता है कि परमेश्वर पवित्र है और वह मांग करता है कि हम, उनके बनाए हुए बच्चे, पवित्रता के लिए प्रयास करें (लैव्यव्यवस्था 18:1–5; 19:1–2; और अधिक)।

Sin Removal Is a Necessity
पाप को हटाना आवश्यक है

Because our Heavenly Father is holy, and it appears that He will not allow sin to exist in close proximity to Him for any real length of time, Paul declared emphatically that "the wages of sin is death (eternal separation from God) [Rom 6:23]!" He also stated emphatically that, "all have sinned and are falling short of the Glory of God [Rom 3:23]." After his encounter with the risen Lord, Paul came to understand that he and

many of countrymen had not really understood the necessity of God performing a costly miracle stemming from His righteousness to remove sin from their lives.[149] In God's economy, sin, our bad actions, had to be removed like bad cancer cells, not covered up. When we begin to understand how righteous God really is and that we all have some sin in our lives, we can make this personal by joining Isaiah and saying with him, "Woe to me, because I have been cutoff (from God) because I am a man of unclean lips . . . (I know this because) my eyes have seen the King, Yahweh, (who is leader) of the (Heavenly) Hosts (who is holy, holy, holy) [Isa 6:5; see also 6:3]."

क्योंकि हमारे स्वर्गीय पिता पवित्र हैं, और ऐसा प्रतीत होता है कि वह पाप को अपनी निकटता में लंबे समय तक रहने की अनुमति नहीं देंगे, पौलुस ने जोर देकर कहा कि "पाप की मजदूरी मृत्यु (परमेश्वर से अनंत अलगाव) है (रोमियों 6:23)!" उन्होंने यह भी जोर देकर कहा कि, "सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से कम पड़ते हैं (रोमियों 3:23)।" पुनर्जनन प्रभु के साथ अपनी मुलाकात के बाद, पौलुस को समझ में आया कि उन्होंने और उनके कई देशवासियों ने वास्तव में यह नहीं समझा था कि परमेश्वर को उनकी धार्मिकता से उत्पन्न होने वाले एक महंगे चमत्कार के माध्यम से उनके जीवन से पाप को हटाने की आवश्यकता थी। परमेश्वर की अर्थव्यवस्था में,[149] पाप, हमारे बुरे कार्यों को, कैंसर की खराब कोशिकाओं की तरह हटाना पड़ता है, न कि ढकना पड़ता है। जब हम यह समझना शुरू करते हैं कि परमेश्वर वास्तव में कितना धार्मिक है और हम सभी के जीवन में कुछ न कुछ पाप है, तो हम इसे व्यक्तिगत बना सकते हैं और यशायाह के साथ कह सकते हैं, "हाय मुझे, क्योंकि मैं परमेश्वर से कट गया हूँ, क्योंकि मेरे होंठ अशुद्ध हैं... (मुझे यह पता है क्योंकि) मेरी आँखों ने राजा, यहोवा को देखा है, जो (स्वर्गीय) सेनाओं का (पवित्र, पवित्र, पवित्र) नेता है (यशायाह 6:5; देखें 6:3 भी)।"

Well, as we begin to understand why God does not allow anyone with any sin in His eternal family (Rom 8:18-23 & more), we begin to understand that we have a real problem. We begin to understand that God is holy and that ***sin is unacceptable over a long period of time! It is like cancer. If unchecked it will destroy godly relationships with God and one another.*** Yet, we know that God has created us to be with Him in close proximity as close-knit holy family members. In addition, we realize that although God gave us the written Law through Moses as one of His many acts of grace, neither the Law nor our obedience to His laws

---

[149] Rom 1:16-17; Phil 3:4-11; Heb 1:2-3; 2 Cor 5:21. रोम 1:16–17; फिल 3:4–11; इब्रानियों 1:2–3; 2 कुर 5:21.

have saved anyone because of ***everyone's failure*** to live out the requirements of the Law perfectly.

जब हम यह समझना शुरू करते हैं कि परमेश्वर अपने अनंत परिवार में किसी भी पाप वाले व्यक्ति को क्यों नहीं आने देता (रोमियों 8:18–23 और अधिक), तो हमें यह समझ में आता है कि हमारे सामने एक वास्तविक समस्या है। हम समझते हैं कि परमेश्वर पवित्र है और पाप लंबे समय तक अस्वीकार्य है! यह कैंसर की तरह है। यदि इसे नियंत्रित नहीं किया गया, तो यह परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ ईश्वरीय संबंधों को नष्ट कर देगा। फिर भी, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने हमें उनके साथ निकटता में उनके घनिष्ठ पवित्र परिवार के सदस्यों के रूप में रहने के लिए बनाया है। इसके अलावा, हम यह भी महसूस करते हैं कि हालांकि परमेश्वर ने हमें मूसा के माध्यम से लिखित व्यवस्था अपनी कई कृपाओं में से एक के रूप में दी, न तो व्यवस्था और न ही हमारी उसकी व्यवस्थाओं का पालन करने की आज्ञाकारिता ने किसी को बचाया है, क्योंकि सभी लोग व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरी तरह से जीने में विफल रहे हैं।

To live in God's immediate presence for eternity, there must be ***no sin*** with its resulting harm to relationships and the world in general. ***We come face-to-face with the reality that without God's help, we would all face the second death spoken of in Revelation 20:11-15***. We would not have the victory through Jesus over sin and death that Paul was celebrating in 1 Corinthians 15, when he declared, ***"O Death, where is your victory! [15:55-56]"***

परमेश्वर की तत्काल उपस्थिति में अनंत काल तक जीने के लिए, पाप और इसके परिणामस्वरूप संबंधों और सामान्य रूप से दुनिया को होने वाली हानि नहीं होनी चाहिए। हम इस वास्तविकता का सामना करते हैं कि परमेश्वर की मदद के बिना, हम सभी को प्रकाशितवाक्य 20:11–15 में उल्लिखित दूसरी मृत्यु का सामना करना पड़ेगा। हम पाप और मृत्यु पर यीशु के माध्यम से उस विजय को प्राप्त नहीं कर पाएंगे, जिसका जश्न पौलुस 1 कुरिन्थियों 15 में मना रहा था, जब उसने घोषणा की, "हे मृत्यु, तेरी जीत कहाँ है! (15:55–56)"

Becoming Sinless (Justification)
पापरहित बनना (न्याय करना)

As we reflect on our Heavenly Father's supreme righteous act of love on our behalf, the death of His Son Jesus, the prophesied Messiah, we come to realize that although the Father suffered great agony over His Son's rejection and death, both knew that they were making ***the only way possible*** for us to be reconciled to them forever. ***Jesus' death was***

necessary to remove all sin from those who learned to trust Him.[150] In God's economy, the penalty for transgressing others had to be satisfied in such a way that all sin is removed and eternally eradicated. If any of God's Creation was going to live closely with Him for eternity, ***justification, being made righteous without sin, was required; it was not optional.***

जब हम अपने स्वर्गीय पिता के हमारे लिए किए गए सर्वोच्च धार्मिक प्रेम के कार्य, उनके पुत्र यीशु, भविष्यवाणी किए गए मसीहा की मृत्यु पर विचार करते हैं, तो हमें यह महसूस होता है कि हालांकि पिता को अपने पुत्र की अस्वीकृति और मृत्यु पर बहुत दुख हुआ, दोनों जानते थे कि वे हमारे लिए उनके साथ हमेशा के लिए मेल–मिलाप करने का एकमात्र रास्ता बना रहे थे। यीशु की मृत्यु उन लोगों से सभी पाप हटाने के लिए आवश्यक थी जो उन पर भरोसा करना सीखते हैं।[150] परमेश्वर की अर्थव्यवस्था में, दूसरों का अतिक्रमण करने की सजा को इस तरह से संतुष्ट करना था कि सभी पाप हटा दिए जाएं और हमेशा के लिए समाप्त हो जाएं। यदि परमेश्वर की सृष्टि का कोई भी हिस्सा उनके साथ अनंत काल तक निकटता में जीने वाला था, तो न्याय करना, पापरहित धार्मिक बनाना, आवश्यक था; यह वैकल्पिक नहीं था।

When someone becomes aware of God's holiness and his or her own sinfulness, there may be a personal desire to clean up one's life prior to submitting to God and His way of life. The problem is that without God's help, no one is able through his or her own strength to achieve ***perfect*** holiness.

जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की पवित्रता और अपनी पापपूर्णता के बारे में जागरूक होता है, तो वह अपने जीवन को परमेश्वर और उनके जीवन–मार्ग के प्रति समर्पित करने से पहले उसे साफ करने की व्यक्तिगत इच्छा रख सकता है। समस्या यह है कि परमेश्वर की मदद के बिना, कोई भी अपनी ताकत से पूर्ण पवित्रता प्राप्त नहीं कर सकता।

That is why our Heavenly Father made plans prior to implementing the physical Creation to provide a way to remove our sins and renew our character according to His holy nature. It is God's righteous work–not our own–that ultimately has the ability to transform us into loving righteous (holy) beings suitable to live with Him and one another in His Heavenly Kingdom (Rom 1:16-17; Eph 2:8). Through the miracle of Jesus' death on the Cross, those who obediently follow Him have ***all sin removed and are given God's righteousness in exchange*** (2 Cor 5:17, 21; 1 Peter 2:24).

---

[150] John 3:14-15; Greek *dei*, "it is necessary." यूहन्ना 3:14–15; यूनानी देई, "यह ज़रूरी है।"

यही कारण है कि हमारे स्वर्गीय पिता ने भौतिक सृष्टि को लागू करने से पहले योजनाएँ बनाईं ताकि हमारे पापों को हटाने और उनकी पवित्र प्रकृति के अनुसार हमारे चरित्र को नवीनीकृत करने का एक रास्ता प्रदान किया जा सके। यह परमेश्वर का धार्मिक कार्य हैकृहमारा नहींकृजो अंततः हमें प्रेममय धार्मिक (पवित्र) प्राणियों में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है, जो उनके और एक–दूसरे के साथ उनके स्वर्गीय राज्य में रहने के लिए उपयुक्त हैं (रोमियों 1:16–17; इफिसियों 2:8)। यीशु की क्रूस पर मृत्यु के चमत्कार के माध्यम से, जो लोग उनकी आज्ञाकारिता से उनका अनुसरण करते हैं, उनके सभी पाप हटा दिए जाते हैं और बदले में उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता दी जाती है (2 कुरिन्थियों 5:17, 21; 1 पतरस 2:24)।

Over the years, I have personally seen many continually reject God's invitation into His holy family, because they wanted to wait until they had their lives more in alignment with His or simply wanted more time to enjoy life on their own terms. No one is able to straighten out his or her life enough to approach God without God's help, and the Good News is that no one has to. God just wants us to come to the place of starting to return His love and desiring to live holy lives thus making a commitment to follow Him. He does the rest. ***It is God who shapes and empowers us so that we may start living godly lives in the here-and-now.***

वर्षों से, मैंने व्यक्तिगत रूप से कई लोगों को परमेश्वर के पवित्र परिवार में उनके निमंत्रण को बार–बार अस्वीकार करते देखा है, क्योंकि वे चाहते थे कि पहले उनका जीवन उनके साथ अधिक संरेखित हो या वे बस अपने तरीके से जीवन का आनंद लेने के लिए और समय चाहते थे। कोई भी अपने जीवन को परमेश्वर की मदद के बिना इतना ठीक नहीं कर सकता कि वह परमेश्वर के पास जा सके, और अच्छी खबर यह है कि किसी को ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर केवल यह चाहता है कि हम उस स्थान पर पहुंचें जहां हम उसका प्रेम लौटाना शुरू करें और पवित्र जीवन जीने की इच्छा करें, इस तरह उनके अनुसरण के लिए प्रतिबद्धता बनाएं। बाकी वह करता है। परमेश्वर ही हमें आकार देता है और सशक्त बनाता है ताकि हम अभी और यहाँ ईश्वरीय जीवन जीना शुरू कर सकें।

With this in mind, let us consider again the meaning of reconciled sonship as described in Romans 8:28-30. Our Heavenly Father is telling us that ***if we learn to love Him*** because of His great love for us:

> (1) we are ***called*** (***chosen***) and He will help us to mature more and more into the likeness of Jesus with His great grace and righteousness;

(2) we are ***justified:*** our sins are removed through a great miraculous work of God through Jesus' atoning death on a cross and time spent in Sheol/Hades, who personally made our bad actions (sins) His, and in exchange for our sins, He has given us some of His righteousness;[151] and
(3) we are ***glorified***, given full-sonship and eventual perfect moral character matching Jesus' sonship and character.

इसे ध्यान में रखते हुए, आइए रोमियों 8:28–30 में वर्णित पुत्रत्व के मेल–मिलाप के अर्थ पर फिर से विचार करें। हमारे स्वर्गीय पिता हमें बता रहे हैं कि यदि हम उनके प्रति उनके महान प्रेम के कारण उनसे प्रेम करना सीखते हैं:

(1) हम बुलाए गए (चुने गए) हैं और वह हमें अपनी महान कृपा और धार्मिकता के साथ यीशु की समानता में और अधिक परिपक्व होने में मदद करेगा;
(2) हम न्यायसंगत हैं: हमारे पाप परमेश्वर के महान चमत्कारी कार्य के माध्यम से, यीशु की क्रूस पर प्रायश्चित करने वाली मृत्यु और शेओल/हेड्स में बिताए समय के माध्यम से हटा दिए जाते हैं, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से हमारे बुरे कार्यों (पापों) को अपना बनाया, और हमारे पापों के बदले में, उन्होंने हमें अपनी धार्मिकता का कुछ हिस्सा दिया;[151] और
(3) हम महिमामंडित हैं, हमें पूर्ण पुत्रत्व और अंततः यीशु के पुत्रत्व और चरित्र से मेल खाने वाला पूर्ण नैतिक चरित्र दिया गया है।

As we learn to start trusting and obeying Jesus out of a growing love, we begin to stand upon our Father's promises. As we start walking with God, we start to develop a trust for His perfect plan for an eternal holy family and corresponding peace and begin looking forward to the day that we will be in Heaven with Him. As we join God in His Great Work of Love, His Creation, and allow Him to develop us over time, we come to realize that we will not reach perfection during this portion of our eternal life, but ***we trust God to complete our transformation*** (Heb 1:2-3). As the Father continually softens our hearts and strengthens our resolve to follow Jesus more fully, we become more and more compassionate toward others. There is great comfort in knowing that in the not-to-distant future, we will have our sins totally removed and will be conformed perfectly into Christ's moral nature as we enter God's immediate presence where there will be no more pain nor sorrow.

---

[151] Rom 3:21-28; Gal 3:13-14; Col 2:13-14; 2 Cor 5:21; 1 Peter 2:24.
रोमि 3:21–28; गला 3:13–14; कुलु 2:13–14; 2 कुरि 5:21; 1 पतरस 2:24.

जैसे–जैसे हम यीशु पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा मानना शुरू करते हैं, बढ़ते प्रेम के साथ, हम अपने पिता के वादों पर खड़े होने लगते हैं। जैसे–जैसे हम परमेश्वर के साथ चलना शुरू करते हैं, हम उनके अनंत पवित्र परिवार के लिए उनकी सही योजना पर भरोसा विकसित करना शुरू करते हैं और उस दिन की प्रतीक्षा करने लगते हैं जब हम उनके साथ स्वर्ग में होंगे। जैसे–जैसे हम परमेश्वर के महान प्रेम के कार्य, उनकी सृष्टि में शामिल होते हैं, और उन्हें हमें समय के साथ विकसित करने की अनुमति देते हैं, हमें यह महसूस होता है कि हम अपने अनंत जीवन के इस हिस्से के दौरान पूर्णता तक नहीं पहुंचेंगे, लेकिन हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि वह हमारा परिवर्तन पूरा करेगा (इब्रानियों 1:2–3)। जैसे–जैसे पिता हमारे दिलों को नरम करता है और यीशु का अधिक पूर्णता से अनुसरण करने के हमारे संकल्प को मजबूत करता है, हम दूसरों के प्रति अधिक से अधिक करुणामय बनते हैं। यह जानकर बहुत सांत्वना मिलती है कि निकट भविष्य में, हमारे पाप पूरी तरह से हटा दिए जाएंगे और हम मसीह की नैतिक प्रकृति में पूरी तरह से ढल जाएंगे, जब हम परमेश्वर की तत्काल उपस्थिति में प्रवेश करेंगे जहां अब और कोई दर्द या दुख नहीं होगा।

Choices Have Consequences
निर्णयों के परिणाम

God created everyone with abundant free will requiring each person to make decisions that have eternal consequences and does not force Himself or His way of life on anyone. It is clear from Scripture that God would like everyone to learn to trust Him and choose to live with Him for eternity (John 8:51; 11:25-26 & more), but He knows that many will want to live life their own way and reject His leadership. He consistently encourages everyone to look beyond themselves and choose a life of unbiased love, peace, and joy with Him and others who want the same thing.

परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रचुर स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाया है, जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे निर्णय लेने की आवश्यकता होती है जिनके अनंत परिणाम होते हैं और वह किसी पर भी स्वयं को या अपने जीवन–मार्ग को जबरदस्ती नहीं थोपता। शास्त्र से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर चाहता है कि हर कोई उस पर भरोसा करना सीखे और अनंत काल तक उनके साथ रहने का चयन करे (यूहन्ना 8:51; 11:25–26 और अधिक), लेकिन वह जानता है कि कई लोग अपने तरीके से जीवन जीना चाहेंगे और उनकी अगुवाई को अस्वीकार करेंगे। वह लगातार सभी को प्रोत्साहित करता है कि वे अपने से परे देखें और उनके और दूसरों के साथ निष्पक्ष प्रेम, शांति और आनंद का जीवन चुनें जो वही चाहते हैं।

With abundant free will being a critical element of God's Creation, it is also clear from Scripture that God gives everyone multiples opportunities (spiritual awakenings) to learn to trust and obey Him. When the Creation is finalized, our Heavenly Father, Jesus, and the Holy Spirit want the members of Their close loving righteous family to interact maturely and freely within the Family under the overall leadership of the Father.[152]

परमेश्वर की सृष्टि में प्रचुर स्वतंत्र इच्छा एक महत्वपूर्ण तत्व होने के नाते, यह भी शास्त्र से स्पष्ट है कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उनके प्रति भरोसा करने और उनकी आज्ञा मानने के लिए कई अवसर (आध्यात्मिक जागृति) देता है। जब सृष्टि अंतिम रूप लेगी, हमारे स्वर्गीय पिता, यीशु, और पवित्र आत्मा चाहते हैं कि उनके घनिष्ठ प्रेममय धार्मिक परिवार के सदस्य पिता की समग्र अगुवाई के तहत परिवार के भीतर परिपक्व और स्वतंत्र रूप से बातचीत करें।[152]

Although the first individuals of God's Creation, Adam and Eve, went against Him and His commandment that instructed them not to partake of the fruit of the tree of knowledge of good and evil (Gen 2:16-17; 3:1-6), we would all have done the same due to the lure of knowing and experiencing the unknown, if we thought that we might come out better in the long run through the experience.

हालांकि परमेश्वर की सृष्टि के पहले व्यक्ति, आदम और हव्वा, उनके और उनकी आज्ञा के खिलाफ गए, जो उन्हें अच्छाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की शिक्षा देती थी (उत्पत्ति 2:16–17; 3:1–6), हम सभी ने भी वही किया होता, क्योंकि अज्ञात को जानने और अनुभव करने की लालच के कारण, यदि हमें लगता कि इससे लंबे समय में हमें बेहतर परिणाम मिलेंगे।

What Adam and Eve did not know is that this disobedient act would cause much pain and sorrow for them and all of their descendants, but God knew ahead of time what they would do, what everyone else would do throughout the Creation, and what They would do to create a free-will ***sinless*** eternal family.

आदम और हव्वा को यह नहीं पता था कि यह अवज्ञाकारी कार्य उनके और उनके सभी वंशजों के लिए बहुत दर्द और दुख लाएगा, लेकिन परमेश्वर को पहले से पता था कि वे क्या करेंगे, सृष्टि के दौरान बाकी सभी क्या करेंगे, और वे एक स्वतंत्र इच्छा वाला पापरहित अनंत परिवार बनाने के लिए क्या करेंगे।

---

[152] 1 Cor 11:3; 15:28; cf. Eph 1:15-23; Heb 1. 1 कुरिन्थियों 11:3; 15:28; तुलना करें इफिसियों 1:15–23; इब्रानियों 1.

Although God knew in advance that all of His Creation would struggle because of Adam and Eve's decision to disobey Him, He placed such a high value on creating everyone with the ability to make important eternal decisions that He allowed such and provided a way to restore fully those who learned to listen to Him. All of this was done so that God's Creation would come to completion with a ***volunteer*** eternal close-knit sinless family that would live together in mutual love, peace, and great joy in a spiritual-physical state that matches Jesus' resurrected state (Phil 3:20-21).

हालांकि परमेश्वर को पहले से पता था कि आदम और हव्वा के अवज्ञा करने के निर्णय के कारण उनकी सारी सृष्टि को संघर्ष करना पड़ेगा, उन्होंने महत्वपूर्ण अनंत निर्णय लेने की क्षमता के साथ सभी को बनाने को इतना महत्व दिया कि उन्होंने ऐसा होने दिया और उन लोगों को पूरी तरह से बहाल करने का रास्ता प्रदान किया जो उनकी बात सुनना सीखते हैं। यह सब इसलिए किया गया ताकि परमेश्वर की सृष्टि एक स्वैच्छिक अनंत घनिष्ठ पापरहित परिवार के साथ पूरी हो, जो आपसी प्रेम, शांति और महान आनंद में एक साथ आध्यात्मिक–भौतिक अवस्था में रहे, जो यीशु की पुनर्जनन अवस्था से मेल खाती हो (फिलिप्पियों 3:20–21)।

With our great freedom to make choices comes great personal responsibility. It is important to remember that in order to become a mature loving-kind righteous sinless child of God, we must play by His rules following His righteous ways.[153] There are some today who think that God's ways are antiquated, and therefore, we can reject those portions of His life instructions (commandments) that we do not like.[154] ***This is false! Keep in mind that all of God's ways are based on His eternal nature*** and are for everyone's good. We should continuously thank God for His patience in teaching us how to live holy lives giving those who listen the best life possible now and forever.

हमारी महान स्वतंत्रता के साथ निर्णय लेने की बड़ी व्यक्तिगत जिम्मेदारी आती है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का परिपक्व प्रेममय धार्मिक पापरहित बच्चा बनने के लिए, हमें उनके नियमों का पालन करते हुए उनकी धार्मिक राहों का अनुसरण करना होगा।[153] आज कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर के तरीके पुराने हो चुके हैं, और इसलिए, हम उनकी जीवन–शिक्षाओं (आज्ञाओं) के उन हिस्सों को अस्वीकार कर सकते हैं जो हमें पसंद नहीं

---

[153] Lev 19:2; Matt 25:46; 1 John 2:29; 3:10; cf. John 8:51.
लैव्यव्यवस्था 19:2; मत्ती 25:46; 1 यूहन्ना 2:29; 3:10; यूहन्ना 8:51 से तुलना करें।

[154] Isa 40:8; Matt 5:17-20; Luke16:17. यशायाह 40:8; मत्ती 5:17–20; लूका 16:17.

हैं।[154]यह गलत है! ध्यान रखें कि परमेश्वर के सभी तरीके उनकी अनंत प्रकृति पर आधारित हैं और सभी के भले के लिए हैं। हमें लगातार परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि वह हमें धैर्यपूर्वक पवित्र जीवन जीना सिखाता है, जो उनकी बात सुनने वालों को अब और हमेशा के लिए सबसे अच्छा जीवन देता है।

Through His parable about a wedding feast, Jesus warns everyone including religious leaders that God judges all according to their heart and actions. All are called at various times, but only those who come in proper attire are allowed to stay (Matt 22:1-14). He concluded this parable by warning those listening that "many are called (invited), but few chosen."

अपने विवाह भोज के दृष्टांत के माध्यम से, यीशु सभी को, जिसमें धार्मिक नेता भी शामिल हैं, चेतावनी देते हैं कि परमेश्वर सभी का उनके दिल और कार्यों के अनुसार न्याय करता है। सभी को विभिन्न समय पर बुलाया जाता है, लेकिन केवल वे ही रहने की अनुमति पाते हैं जो उचित वस्त्र में आते हैं (मत्ती 22:1–14)। उन्होंने इस दृष्टांत को यह चेतावनी देकर समाप्त किया कि "कई बुलाए गए हैं, लेकिन कुछ ही चुने गए हैं।"

As individuals begin to ask God for help, some start to understand reality more fully through the teaching of the Holy Spirit. This helps them to see more fully the good and bad existing in the world, which in turn brings some to a place of wanting God's help to live according to His way of life,[155] which includes following Jesus (Luke 14:26-33). Within the process of receiving God into their lives and learning to love and trust Him, the moment that they truly want Him to be lord as well as savior turning from self to God and His way of life, God gives them spiritual birth into His eternal holy family.[156]

जैसे–जैसे व्यक्ति परमेश्वर से मदद मांगना शुरू करते हैं, कुछ लोग पवित्र आत्मा की शिक्षा के माध्यम से वास्तविकता को और अधिक पूरी तरह से समझने लगते हैं। इससे उन्हें दुनिया में मौजूद अच्छाई और बुराई को और अधिक स्पष्ट रूप से देखने में मदद मिलती है, जो कुछ लोगों को उस स्थान पर लाता है जहां वे परमेश्वर की मदद से उनके जीवन–मार्ग के अनुसार जीना चाहते हैं,[155] जिसमें यीशु का अनुसरण करना शामिल है (लूका 14:26–33)। परमेश्वर को अपने जीवन में स्वीकार करने और उन पर प्रेम और भरोसा करना सीखने की प्रक्रिया में, जिस क्षण वे वास्तव में चाहते हैं कि वह उनके प्रभु और

---

[155] John 4:34; 8:31b-32. यूहन्ना 4:34; 8:31ब–32.

[156] John 1:11-13; Rev 3:20; Eph 1:13-14. यूहन्ना 1:11–13; प्रकाशितवाक्य 3:20; इफिसियों 1:13–14.

उद्धारक बनें, स्वयं से परमेश्वर और उनके जीवन–मार्ग की ओर मुड़ते हुए, परमेश्वर उन्हें उनके अनंत पवित्र परिवार में आध्यात्मिक जन्म देता है।[156]

Jesus taught that even some of those who called Him "lord" would not be in Heaven because they were not striving to do the will of His Father (Matt 7:21), and therefore, in reality, they did not have a relationship with Him (Matt 7:23). He followed this teaching with a parable that taught the importance of having a strong foundation for life, which is God and His way of life. If we want a life with lasting love, joy, and inner peace, our foundation for life needs to be God and His way of life (Matt 7:24-27). This is why Jesus warns everyone that if they are not willing to listen to Him they are not worthy to be His followers (Luke 14:27). Everyone who desires to be a member of God's eternal holy family must willingly follow His leadership (Luke 14:26).

यीशु ने सिखाया कि कुछ लोग जो उन्हें "प्रभु" कहते हैं, वे भी स्वर्ग में नहीं होंगे, क्योंकि वे उनके पिता की इच्छा करने का प्रयास नहीं कर रहे थे (मत्ती 7:21), और इसलिए, वास्तव में, उनका उनके साथ कोई संबंध नहीं था (मत्ती 7:23)। उन्होंने इस शिक्षण के बाद एक दृष्टांत दिया जिसमें जीवन के लिए एक मजबूत नींव रखने का महत्व बताया गया, जो परमेश्वर और उनका जीवन–मार्ग है। यदि हम स्थायी प्रेम, आनंद और आंतरिक शांति के साथ जीवन चाहते हैं, तो हमारे जीवन की नींव परमेश्वर और उनका जीवन–मार्ग होना चाहिए (मत्ती 7:24–27)। यही कारण है कि यीशु सभी को चेतावनी देते हैं कि यदि वे उनकी बात सुनने को तैयार नहीं हैं, तो वे उनके अनुयायी बनने के योग्य नहीं हैं (लूका 14:27)। जो कोई भी परमेश्वर के अनंत पवित्र परिवार का सदस्य बनना चाहता है, उसे स्वेच्छा से उनकी अगुवाई का पालन करना होगा (लूका 14:26)।

In reality, there are no "do overs." The writer of Hebrews said that it is appointed for each of us to *die once* and then *a judgment* (Heb 9:27). ***There is no reincarnation!*** All people live this physical portion of their eternal life *only one time*, and all will be judged according to the way that they responded to God during this short portion of eternity (1 Peter 1:17).

वास्तव में, कोई "दोबारा मौका" नहीं है। इब्रानियों के लेखक ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक बार मरना और फिर न्याय होना नियत है (इब्रानियों 9:27)। कोई पुनर्जनन नहीं है! सभी लोग अपने अनंत जीवन के इस भौतिक हिस्से को केवल एक बार जीते हैं, और सभी का न्याय इस आधार पर होगा कि उन्होंने अनंत काल के इस छोटे से हिस्से के दौरान परमेश्वर का जवाब कैसे दिया (1 पतरस 1:17)।

Although it may be hard to believe, the hardest part of life for most people is ***just waking up*** to the reality of the spiritual world around them. If we do not listen to God and allow Him to teach us, ***our personal***

desires remain similar to little children's and they cloud our reasoning blinding us to what is really going on (rationalization).

हालांकि यह विश्वास करना कठिन हो सकता है, लेकिन ज्यादातर लोगों के लिए जीवन का सबसे कठिन हिस्सा उनके आसपास की आध्यात्मिक दुनिया की वास्तविकता को जागृत करना है। यदि हम परमेश्वर की बात नहीं सुनते और उन्हें हमें सिखाने की अनुमति नहीं देते, तो हमारी व्यक्तिगत इच्छाएँ छोटे बच्चों की तरह रहती हैं और वे हमारी तर्कशक्ति को धुंधला कर देती हैं, जिससे हमें यह नहीं दिखता कि वास्तव में क्या हो रहा है (तर्कसंगति)।

Our self-centered desires along with Satan's deceptions and busyness combine to produce a mental and spiritual smokescreen keeping many from coming to know God well. At times, God breaks through that smokescreen and reveals Himself. ***Through His revelation***, we come to realize how empty our lives are without a close relationship with Him and that He has many faithful followers working worldwide bringing as many as will listen into His eternal presence.

हमारी स्व–केंद्रित इच्छाएँ, शैतान की धोखाधड़ी और व्यस्तता के साथ मिलकर, एक मानसिक और आध्यात्मिक धुंध पैदा करती हैं, जो कई लोगों को परमेश्वर को अच्छी तरह से जानने से रोकती हैं। कभी–कभी, परमेश्वर उस धुंध को तोड़ता है और स्वयं को प्रकट करता है। उनकी रहस्योद्घाटन के माध्यम से, हमें यह महसूस होता है कि उनके साथ घनिष्ठ संबंध के बिना हमारा जीवन कितना खाली है और उनके पास कई निष्ठावान अनुयायी हैं जो विश्व स्तर पर काम कर रहे हैं, जितनों को सुनने की इच्छा है, उन्हें उनकी अनंत उपस्थिति में ला रहे हैं।

God brings bits of reality into all people's lives through personal revelation, evangelists, preachers, teachers, family members, friends, associates, and even strangers. In our modern world, there are many ways to disburse information including pamphlets, magazines, books, phones, computers, ipads, android tablets, radio, TV, and more. Through these various forms of media, God asks us all to study and reflect on His written Word, the Bible, in order to dispel the darkness around us. This helps us see reality more clearly freeing us more and more from the bondage of sin.[157]

परमेश्वर व्यक्तिगत रहस्योद्घाटन, प्रचारकों, शिक्षकों, परिवार के सदस्यों, दोस्तों, सहयोगियों और यहाँ तक कि अजनबियों के माध्यम से सभी लोगों के जीवन में वास्तविकता के टुकड़े लाता है। हमारे आधुनिक विश्व में, जानकारी वितरित करने के कई तरीके हैं, जिनमें पत्रिकाएँ, पत्रिकाएँ, किताबें, फोन,

---

[157] John 8:31-34; cf. John 8:51; 11:25-26. यूहन्ना 8:31–34; तुलना करें यूहन्ना 8:51; 11:25–26.

कंप्यूटर, आईपैड, एंड्रॉइड टैबलेट, रेडियो, टीवी और बहुत कुछ शामिल हैं। इन विभिन्न माध्यमों के माध्यम से, परमेश्वर हम सभी से उनकी लिखित वचन, बाइबल का अध्ययन करने और उस पर विचार करने के लिए कहता है, ताकि हमारे आसपास की अंधेरे को दूर किया जा सके। यह हमें वास्तविकता को और अधिक स्पष्ट रूप से देखने में मदद करता है, जिससे हमें पाप के बंधन से अधिक से अधिक मुक्त किया जाता है।[157]

Billy Graham once wrote about a young lady who had written him a letter telling him how totally miserable she had been in her former free-spirited life. She had been pursuing the sensual pleasures of this world but found neither inner peace nor lasting joy from such. Through God's guidance, she decided to go to a Bible study and stump everyone with her cynicism. Instead, God used that time to build an interest in her to read His Word. She began studying His Word on a regular basis and several months later God brought her to a point where she realized that He really loved her and had a much better plan for her life than she had for herself. At that point, she submitted her life to her loving Creator. She said in her letter that after committing to follow Jesus, she experienced a happiness that she did not know existed. She stated that all those sensual pleasures were traps that had led her to confusion, unhappiness, guilt, and near-suicide. Now she was truly free as she followed Jesus.[158]

बिली ग्राहम ने एक बार एक युवा महिला के बारे में लिखा था, जिसने उन्हें एक पत्र लिखा था जिसमें बताया गया था कि वह अपने पूर्व स्वच्छंद जीवन में कितनी दुखी थी। उसने इस दुनिया के कामुक सुखों का पीछा किया था, लेकिन उसे इससे न तो आंतरिक शांति मिली और न ही स्थायी आनंद। परमेश्वर के मार्गदर्शन के माध्यम से, उसने एक बाइबल अध्ययन में जाने का फैसला किया और अपने नास्तिक दृष्टिकोण से सभी को हैरान करने की कोशिश की। इसके बजाय, परमेश्वर ने उस समय का उपयोग करके उसमें उनकी वचन पढ़ने की रुचि पैदा की। उसने नियमित रूप से उनकी वचन का अध्ययन शुरू किया और कई महीनों बाद परमेश्वर उसे उस बिंदु पर ले आया जहां उसे यह महसूस हुआ कि वह वास्तव में उससे प्रेम करता है और उसके लिए उसके पास उसकी अपनी योजना से कहीं बेहतर योजना थी। उस बिंदु पर, उसने अपने जीवन को अपने प्रेम करने वाले सृष्टिकर्ता को समर्पित कर दिया। उसने अपने पत्र में कहा कि यीशु का अनुसरण करने की प्रतिबद्धता के बाद, उसने ऐसी खुशी का अनुभव किया जो उसे पहले नहीं पता थी। उसने कहा कि वे सभी

---

[158] Billy Graham, *How To Be Born Again* (Waco: Word Books, 1977), 152-53. बिली ग्राहम, हाउ टू बी बोर्न अगेन (वाकोः वर्ड बुक्स, 1977), 152–53.

कामुक सुख जाल थे, जिन्होंने उसे भ्रम, दुख, अपराधबोध और आत्महत्या के करीब ले जाया था। अब वह यीशु का अनुसरण करते हुए वास्तव में स्वतंत्र थी।[158]

One of my former seminary students, Dr. Greg Viehman, tells through his book, *The God Diagnosis*, about some of his spiritual awakening moments where God eventually got through to him by having him consider the potential outcome of his life if it were not eternal. After his death, would he, his family, and all of their memories just become like the shifting sand of a sea with no remaining evidence of the lives they had lived? [159]

मेरे एक पूर्व सेमिनरी छात्र, डॉ. ग्रेग वीहमैन, अपनी पुस्तक द गॉड डायग्नोसिस के माध्यम से अपनी कुछ आध्यात्मिक जागृति के क्षणों के बारे में बताते हैं, जहां परमेश्वर ने अंततः उन्हें यह विचार करने के लिए प्रेरित किया कि यदि उनका जीवन अनंत नहीं होता तो इसका परिणाम क्या होता। उनकी मृत्यु के बाद, क्या वह, उनका परिवार, और उनकी सभी यादें समुद्र की बदलती रेत की तरह हो जाएँगी, जिसमें उनके जीए गए जीवन का कोई सबूत नहीं बचेगा?[159]

Later, after Greg's two sons experienced sadness due to the Christian neighborhoods' children not allowing them to join them while playing (pp. 34-35), Greg started studying the Bible so that he might prove to his Christian neighbors that they were not properly following God's loving righteous way of life. While studying God's Word, God helped Greg focus on three questions: (1) why couldn't Jesus give everyone eternal life if He was God; (2) if Jesus was God, why was He crucified; and (3) why didn't God create many ways to Heaven instead of only one (p. 43)?

बाद में, जब ग्रेग के दो बेटों ने ईसाई पड़ोस के बच्चों द्वारा उन्हें खेल में शामिल न करने के कारण दुख का अनुभव किया (पृष्ठ 34–35), ग्रेग ने बाइबल का अध्ययन शुरू किया ताकि वह अपने ईसाई पड़ोसियों को सिद्ध कर सके कि वे परमेश्वर के प्रेममय धार्मिक जीवन–मार्ग का ठीक से पालन नहीं कर रहे थे। परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते समय, परमेश्वर ने ग्रेग को तीन सवालों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद कीः (1) यदि यीशु परमेश्वर हैं, तो वे सभी को अनंत जीवन क्यों नहीं दे सकते; (2) यदि यीशु परमेश्वर हैं, तो उन्हें

---

[159] Greg E. Viehman, M.D., *The God Diagnosis: a Physician's Shocking Journey to Life after Death* (Sylacauga, AL: Big Mac Publishers, 2010), 11-15. ग्रेग ई. विहमान, एम.डी., द गॉड डायग्नोसिसः ए फिजिशियन्स शॉकिंग जर्नी टू लाइफ आफ्टर डेथ (सिलाकागा, एएलः बिग मैक पब्लिशर्स, 2010), 11–15.

क्रूस पर क्यों चढ़ाया गया; और (3) परमेश्वर ने स्वर्ग के लिए कई रास्ते क्यों नहीं बनाए, केवल एक क्यों (पृष्ठ 43)?

After a fair amount of investigation into the Word of God including proving its historical accuracy, Greg came to the point of intellectually accepting the Apostle John's eyewitness account of Jesus and His atoning work (p. 108). He was now ready for God to give him a final spiritual awakening, a personal review of his sins and the opportunity to ask God for forgiveness of those sins (pp. 116-119, 192).

परमेश्वर के वचन में काफी जांच और इसकी ऐतिहासिक सटीकता को सिद्ध करने के बाद, ग्रेग उस बिंदु पर पहुंचे जहां उन्होंने प्रेरित यूहन्ना के यीशु और उनके प्रायश्चित कार्य के प्रत्यक्षदर्शी विवरण को बौद्धिक रूप से स्वीकार किया (पृष्ठ 108)। अब वह परमेश्वर के लिए तैयार थे कि वे उन्हें अंतिम आध्यात्मिक जागृति दें, उनके पापों की व्यक्तिगत समीक्षा और उन पापों के लिए क्षमा मांगने का अवसर (पृष्ठ 116–119, 192)।

After Greg received Jesus into his life as lord and savior, he was born spiritually into God's family and felt like he had just awakened from a thirty-six year dream, a dream based on deception (pp. 121, 181). Now that Greg was malleable as a new creation in Christ, God started molding him into His moral image (sanctification). Soon after being born spiritually and realizing that he was changing, Greg started self-diagnosing and came to realize that through the work of the Holy Spirit, his personality was becoming more like Jesus' and his spiritual understanding was improving dramatically (pp. 166-168).

ग्रेग ने यीशु को अपने जीवन में प्रभु और उद्धारक के रूप में स्वीकार करने के बाद, वह परमेश्वर के परिवार में आध्यात्मिक रूप से जन्मे और उन्हें ऐसा लगा जैसे वह छत्तीस साल के एक सपने से जाग गए हों, एक धोखे पर आधारित सपने से (पृष्ठ 121, 181)। अब जब ग्रेग मसीह में एक नई सृष्टि के रूप में निंदनीय हो गए थे, परमेश्वर ने उन्हें उनकी नैतिक छवि में ढालना शुरू किया (पवित्रीकरण)। आध्यात्मिक रूप से जन्म लेने और यह महसूस करने के तुरंत बाद कि वह बदल रहा था, ग्रेग ने आत्म–निदान शुरू किया और यह महसूस किया कि पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से, उनकी व्यक्तित्व यीशु की तरह बन रही थी और उनकी आध्यात्मिक समझ नाटकीय रूप से सुधर रही थी (पृष्ठ 166–168)।

God Is Always at Work
परमेश्वर हमेशा कार्यरत है

Part of the Good News (Gospel) is that God is always at work helping as many as will listen understand the reality of the physical and spiritual realms of this world (John 5:17; 18:37). ***Everyone senses both***

realms through what they see in the physical world and what the Holy Spirit helps them see spiritually,[160] but keep in mind that it is only through their willingness to listen to the Creator that anyone is able to understand some of what is really going on around them.[161] Through God's help, everyone has the potential to understand something of both realms.

गुड न्यूज (सुसमाचार) का हिस्सा यह है कि परमेश्वर हमेशा कार्यरत है, जो लोग सुनने को तैयार हैं, उन्हें इस दुनिया के भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों की वास्तविकता को समझने में मदद करता है (यूहन्ना 5:17; 18:37)। हर कोई भौतिक दुनिया में जो देखता है और पवित्र आत्मा के माध्यम से जो आध्यात्मिक रूप से देखने में मदद करता है, दोनों क्षेत्रों को महसूस करता है,[160] लेकिन ध्यान रखें कि केवल सृष्टिकर्ता की बात सुनने की इच्छा के माध्यम से ही कोई भी यह समझ पाता है कि उनके आसपास वास्तव में क्या हो रहा है।[161] परमेश्वर की मदद से, हर किसी में दोनों क्षेत्रों को कुछ समझने की क्षमता है।

It is sad that for most, God has to allow bad things to happen in order to get people's attention. It seems that when things are going well according to our way of thinking, we do not have the time nor desire to listen to God even when we are not experiencing the type of full life that He desires for us. Yet, God remains persistent working with all to awaken those who are willing to listen. The Holy Spirit is always actively working in everyone's heart and mind. Sometimes God gets our attention during quiet moments, sometimes through miraculous events, sometimes through tragedies including near death experiences, and in many cases through everyday experiences.

यह दुखद है कि ज्यादातर लोगों के लिए, परमेश्वर को लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बुरी चीजों को होने देना पड़ता है। ऐसा लगता है कि जब चीजें हमारे सोचने के तरीके के अनुसार अच्छी चल रही होती हैं, तो हमारे पास परमेश्वर की बात सुनने का समय या इच्छा नहीं होती, भले ही हम उस पूर्ण जीवन का अनुभव नहीं कर रहे हों जो वह हमारे लिए चाहता है। फिर भी, परमेश्वर लगातार सभी के साथ काम करता है, जो सुनने को तैयार हैं उन्हें जागृत करने के लिए। पवित्र आत्मा हमेशा सभी के दिल और दिमाग में सक्रिय रूप से काम करता है। कभी–कभी परमेश्वर हमारा ध्यान शांत क्षणों में, कभी–कभी चमत्कारी घटनाओं के माध्यम से, कभी–कभी त्रासदियों सहित मृत्यु

---

[160] Rom 1:18-22; 2:11-16; John 3:19-20. रोमियों 1:18–22; 2:11–16; यूहन्ना 3:19–20.

[161] John 3:21; 7:17; Acts 22:14a; 1 Cor 2:10, 16. यूहन्ना 3:21; 7:17; प्रेरितों के काम 22:14; 1 कुरिन्थियों 2:10, 16.

के निकट के अनुभवों के माध्यम से, और कई मामलों में रोजमर्रा के अनुभवों के माध्यम से प्राप्त करता है।

The greatest spiritual battle that every individual has to face is whether he or she will allow God to awaken him or her from the dreamlike state in which he or she lives. In reality, it normally feels safer and more comfortable to stay in this dreamlike state than to wake up. This state is somewhat like an altered state of consciousness wherein each individual has found a familiar place within a certain group of friends and activities to avoid the unknown whether good or bad.

प्रत्येक व्यक्ति को जो सबसे बड़ी आध्यात्मिक लड़ाई लड़नी पड़ती है, वह यह है कि क्या वह परमेश्वर को उस सपने जैसी अवस्था से जागृत करने की अनुमति देगा जिसमें वह जी रहा है। वास्तव में, इस सपने जैसी अवस्था में रहना आमतौर पर सुरक्षित और अधिक आरामदायक लगता है, बजाय इसके कि जाग जाएँ। यह अवस्था कुछ हद तक चेतना की बदली हुई अवस्था की तरह है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति ने कुछ दोस्तों और गतिविधियों के बीच एक परिचित स्थान ढूंढ लिया है ताकि अज्ञात से बचा जा सके, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

Allowing God to awaken us to the reality of the existing spiritual realm that permeates and influences our physical world can be just as traumatic as getting off drugs. God consistently works with us to awaken us to the reality of our spiritual and physical world and the consequences of our ongoing decisions.

परमेश्वर को हमें हमारे भौतिक विश्व को प्रभावित करने वाली आध्यात्मिक दुनिया की वास्तविकता के प्रति जागृत करने की अनुमति देना उतना ही कष्टदायक हो सकता है जितना कि नशीली दवाओं से छुटकारा पाना। परमेश्वर लगातार हमारे साथ काम करता है ताकि हमें हमारी आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया की वास्तविकता और हमारे चल रहे निर्णयों के परिणामों के प्रति जागृत किया जा सके।

For those who listen, God starts them on a path within a much bigger world than first realized. Those who allow God to awaken them start realizing a need to reevaluate past presuppositions and make appropriate adjustments in order to realize a proper relationship with God and others. Their understanding of their world starts shifting from one that had been very self-centered to one that becomes more and more in tune with God, His standards, and His Creation. God is bringing as many as will listen into alignment with His holy nature producing eternal lives full of love, joy, inner peace, and excitement.

जो लोग सुनते हैं, उनके लिए परमेश्वर उन्हें एक ऐसी राह पर शुरू करता है जो पहले महसूस की गई दुनिया से कहीं बड़ी है। जो लोग परमेश्वर को उन्हें जागृत करने की अनुमति देते हैं, वे अपनी पिछली धारणाओं का

पुनर्मूल्यांकन करने और परमेश्वर और दूसरों के साथ उचित संबंध स्थापित करने के लिए उचित समायोजन करने की आवश्यकता को महसूस करने लगते हैं। उनकी दुनिया की समझ एक बहुत ही स्व–केंद्रित दुनिया से बदलकर ऐसी दुनिया में आती है जो परमेश्वर, उनके मानकों और उनकी सृष्टि के साथ अधिक से अधिक सामंजस्य में होती है। परमेश्वर जितने लोगों को सुनने की इच्छा है, उन्हें उनकी पवित्र प्रकृति के साथ संरेखित करता है, जिससे प्रेम, आनंद, आंतरिक शांति और उत्साह से भरा अनंत जीवन उत्पन्न होता है।

For all who allow God to awaken them from their personal self-centered worlds and start learning to trust and obey the Creator of the universe, they eventually come to realize that:

> (1) life is truly eternal for all people of all time with good or bad eternal consequences depending on choices made during each person's physical life;
> (2) those who obediently listen to God immediately become part of His eternal close-knit holy family and are given "good work"[162] assignments during their physical lives; and
> (3) those who obediently listen to God will eventually be fully transformed into Jesus' perfect moral nature and live forever with Them and the rest of Their close-knit holy family members in Heaven experiencing continuous ongoing godly love, joy, and inner peace.

जो लोग परमेश्वर को अपनी व्यक्तिगत स्व–केंद्रित दुनिया से जागृत करने और विश्व के सृष्टिकर्ता पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा मानना सीखने की अनुमति देते हैं, वे अंततः यह महसूस करते हैं कि:

> (1) सभी समय के सभी लोगों के लिए जीवन वास्तव में अनंत है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के भौतिक जीवन के दौरान किए गए निर्णयों के आधार पर अच्छे या बुरे अनंत परिणाम होते हैं;
> (2) जो लोग परमेश्वर की आज्ञाकारिता से सुनते हैं, वे तुरंत उनके अनंत घनिष्ठ पवित्र परिवार का हिस्सा बन जाते हैं और उन्हें उनके भौतिक जीवन के दौरान "अच्छे कार्य"[22] के असाइनमेंट दिए जाते हैं; और
> (3) जो लोग परमेश्वर की आज्ञाकारिता से सुनते हैं, वे अंततः यीशु की पूर्ण नैतिक प्रकृति में पूरी तरह से बदल जाएंगे और उनके और उनके घनिष्ठ पवित्र परिवार के अन्य सदस्यों के साथ स्वर्ग में हमेशा के लिए रहेंगे, निरंतर चल रहे ईश्वरीय प्रेम, आनंद और आंतरिक शांति का अनुभव करेंगे।

---

[162] Eph 2:10. इफिसियों 2:10.

Coming to Our Senses: Spiritual Awakening
होश में आनाः आध्यात्मिक जागृति

. . . there was a great famine . . . and he desired to eat his fill . . . and coming to himself (his senses) . . . and arising, he went to his father. Luke 15:14-20

... एक बड़ा अकाल पड़ा ... और वह पेट भरना चाहता था ... और होश में आकर ... वह उठा और अपने पिता के पास गया। लूका 15:14–20

Have you ever sensed that God has been or presently is saying to you, "Join Me"? God is constantly asking people and nations to wake up, understand the consequences of sin, and begin living holy lives with Him. In Jesus' day–as in every period of history–many people stayed busy building their careers and estates. But, too much busyness is counterproductive in developing relationships with the Creator and others. Whether it is technological distractions, general entertainment, perversions, perverted relationships, work, or just busyness in general, one should not allow busyness to sidetrack one from listening to God. Through the Holy Spirit's work and Jesus' leadership, the Father uses His faithful people of every generation to help awaken those who are spiritually slumbering through personal interaction. He also uses personal crises and other events in the life of each person to either draw people to Him or strengthen those who are already committed and following Him.

क्या आपने कभी महसूस किया है कि परमेश्वर आपसे कह रहा है या अभी कह रहा है, "मेरे साथ शामिल हो"? परमेश्वर लगातार लोगों और राष्ट्रों से कह रहा है कि वे जागें, पाप के परिणामों को समझें, और उनके साथ पवित्र जीवन जीना शुरू करें। यीशु के समय मेंकृजैसा कि इतिहास के हर दौर मेंकृकई लोग अपने करियर और संपत्ति बनाने में व्यस्त रहते थे। लेकिन, बहुत अधिक व्यस्तता परमेश्वर और दूसरों के साथ संबंध विकसित करने में प्रतिकूल होती है। चाहे वह तकनीकी विकर्षण हों, सामान्य मनोरंजन, विकृतियाँ, विकृत संबंध, काम, या सामान्य रूप से बस व्यस्तता, किसी को भी व्यस्तता को परमेश्वर की बात सुनने से भटकने नहीं देना चाहिए। पवित्र आत्मा के कार्य और यीशु की अगुवाई के माध्यम से, पिता हर पीढ़ी के अपने निष्ठावान लोगों का उपयोग उन लोगों को जागृत करने के लिए करता है जो आध्यात्मिक रूप से सो रहे हैं, व्यक्तिगत बातचीत के माध्यम से। वह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में व्यक्तिगत संकटों और अन्य घटनाओं का उपयोग भी करता है ताकि लोगों को

अपने पास खींचे या उन लोगों को मजबूत करे जो पहले से ही प्रतिबद्ध हैं और उनका अनुसरण कर रहे हैं।

Initially, most people do not listen to God. Instead, many ask some of Satan's counterfeit gods to help them fulfill their desires and needs or they simply count solely on their own ability. Just as this is true today including counting on the many gods of resources or success, this was true thousands of years ago.

प्रारंभ में, ज्यादातर लोग परमेश्वर की बात नहीं सुनते। इसके बजाय, कई लोग शैतान के नकली देवताओं से अपनी इच्छाओं और जरूरतों को पूरा करने में मदद मांगते हैं या वे केवल अपनी क्षमता पर भरोसा करते हैं। जैसा कि आज यह सच है, जिसमें संसाधनों या सफलता के कई देवताओं पर भरोसा करना शामिल है, यह हजारों साल पहले भी सच था।

Even today many people, who proclaim that there is only one true God, consider Him more like a genie who might help them with various difficulties in life, instead of seeking His help in building a sound personal relationships with Him. But, the Good News includes the fact that God is at work with all encouraging as many as will listen learn to care about Him, His ways, and other people outside their families.

आज भी कई लोग, जो यह घोषणा करते हैं कि केवल एक सच्चा परमेश्वर है, उसे एक जिन्न की तरह मानते हैं जो जीवन की विभिन्न कठिनाइयों में उनकी मदद कर सकता है, बजाय इसके कि वे उनके साथ ठोस व्यक्तिगत संबंध बनाने में उनकी मदद मांगें। लेकिन, अच्छी खबर में यह तथ्य शामिल है कि परमेश्वर सभी के साथ काम कर रहा है, जितने लोग सुनने को तैयार हैं, उन्हें प्रोत्साहित करता है कि वे उसकी, उसके तरीकों और अपने परिवारों के बाहर के अन्य लोगों की परवाह करें।

For those who start to listen beyond their immediate concerns, God starts guiding them off the wide-road leading to separation from Him and onto their individualized tailored roads with Him. These individualized narrow roads comprise the biblical narrow road that leads through Jesus into eternal life with God. In addition, this narrow road leads those who listen into the good works that the Father has assigned (Eph 2:10 and more).

जो लोग अपनी तत्काल चिंताओं से परे सुनना शुरू करते हैं, परमेश्वर उन्हें उस व्यापक मार्ग से हटाने शुरू करता है जो उनसे अलगाव की ओर ले जाता है और उनके साथ व्यक्तिगत रूप से तैयार किए गए मार्गों पर ले जाता है। ये व्यक्तिगत संकीर्ण मार्ग बाइबिल के संकीर्ण मार्ग का निर्माण करते हैं जो यीशु के माध्यम से परमेश्वर के साथ अनंत जीवन की ओर ले जाता है। इसके अलावा, यह संकीर्ण मार्ग उन लोगों को उन अच्छे कार्यों की ओर ले जाता है जो पिता ने सौंपे हैं (इफिसियों 2:10 और अधिक)।

In addition to what God teaches everyone about Himself through His Creation, He asks all who are willing–whether committed to Him yet or not–to learn more about Him through the reading of His Word.[163] God has inspired each of the writers of the Bible, and it profits all who read and then act appropriately to what they have read (2 Tim 3:16-17). The Holy Spirit will teach ***those who have a genuine desire to do what God desires*** (John 7:17).

परमेश्वर अपनी सृष्टि के माध्यम से सभी को अपने बारे में जो कुछ सिखाता है, इसके अलावा, वह सभी से जो इच्छुक हैंकृचाहे वे अभी तक उनके प्रति प्रतिबद्ध हों या नहींकृउनसे अपनी वचन पढ़ने के माध्यम से उनके बारे में और अधिक जानने के लिए कहता है।[163] परमेश्वर ने बाइबल के प्रत्येक लेखक को प्रेरित किया है, और यह उन सभी को लाभ देता है जो पढ़ते हैं और फिर जो पढ़ा है उसके अनुसार उचित रूप से कार्य करते हैं (2 तीमुथियुस 3:16–17)। पवित्र आत्मा उन लोगों को सिखाएगा जिनमें परमेश्वर जो चाहता है उसे करने की सच्ची इच्छा है (यूहन्ना 7:17)।

Keep in mind that everyone starts out with some level of blindness not fully seeing the devastating consequences of their bad actions, but to help overcome this blindness, ***God gives everyone moments of awakening with its corresponding lucidity.*** During those lucid moments, everyone has to go through an inner struggle deciding whether or not they are willing to give up some of their temporary worldly pleasures. It is during these lucid moments that individuals realize that God has a better life for them, if they are willing to follow Him and His way of life versus their own ways. But many stay focused on themselves and soon revert back to the old familiar less satisfying life and remain self-absorbed forgetting the better life that God had just shown them.[164]

हर कोई अपने जीवन की शुरुआत में कुछ हद तक अंधेपन के साथ शुरू करता है, जो अपने बुरे कर्मों के विनाशकारी परिणामों को पूरी तरह से नहीं देख पाता। लेकिन इस अंधेपन को दूर करने में मदद करने के लिए, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को जागृति के क्षण प्रदान करता है, जिसमें स्पष्टता भी होती है। उन स्पष्ट क्षणों के दौरान, प्रत्येक व्यक्ति को एक आंतरिक संघर्ष से गुजरना पड़ता है, जिसमें यह तय करना होता है कि क्या वे अपनी अस्थायी सांसारिक

---

[163] Deut 4:1; 30:15-16; Ps 103:17-18; 119:5-12. व्यवस्थाविवरण 4:1; 30:15–16; भज 103:17–18; 119:5–12.

[164] James 1:23-24; Rev 3:15-20. याकूब 1:23–24; प्रकाशितवाक्य 3:15–20.

सुखों को छोड़ने के लिए तैयार हैं। इन स्पष्ट क्षणों में ही लोग यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर उनके लिए एक बेहतर जीवन प्रदान करता है, यदि वे उसे और उसके जीवन जीने के तरीके को अपनाने के लिए तैयार हों, न कि अपने तरीकों को। लेकिन कई लोग स्वयं पर केंद्रित रहते हैं और जल्द ही पुराने, परिचित, कम संतुष्टिदायक जीवन में वापस लौट जाते हैं, और परमेश्वर द्वारा दिखाए गए बेहतर जीवन को भूलकर आत्ममुग्ध रहते हैं।[164]

But, for those who listen, they become followers of Jesus and is so doing become new creations, who are transformed into God's nature (2 Cor 5:17; Gal 5:22-23). They go through a process learning to love others as God loves all. When they die physically, ***they do not need a pass into Heaven*** from anyone–including church leaders– because they are God's children. They know that Heaven belongs to God ***and*** all of His holy children. They also know that when they die physically, Jesus will meet them as their spirit leaves their bodies, and He will escort them into the presence of their eternal Father.[165]

लेकिन जो लोग सुनते हैं, वे यीशु के अनुयायी बन जाते हैं और ऐसा करने में नई सृष्टि बन जाते हैं, जो परमेश्वर के स्वभाव में परिवर्तित हो जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17; गलातियों 5:22–23)। वे दूसरों को परमेश्वर के प्रेम की तरह प्रेम करना सीखने की प्रक्रिया से गुजरते हैं। जब वे शारीरिक रूप से मरते हैं, तो उन्हें स्वर्ग में प्रवेश के लिए किसी से भी – यहाँ तक कि चर्च के नेताओं से भी – अनुमति की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वे परमेश्वर के बच्चे हैं। वे जानते हैं कि स्वर्ग परमेश्वर का है और उसके सभी पवित्र बच्चों का है। वे यह भी जानते हैं कि जब वे शारीरिक रूप से मरते हैं, तो यीशु उनकी आत्मा के शरीर छोड़ने पर उनसे मिलेंगे और उन्हें अपने शाश्वत पिता की उपस्थिति में ले जाएंगे।[165]

Is the Cost of Following Jesus Too High?
क्या यीशु का अनुसरण करने की कीमत बहुत अधिक है?

It is difficult for many people, who are contemplating following Jesus, to start this journey, because they know that one must put aside some personal desires (dying to self) in order to start building a close relationship with God and others. God is asking everyone to set aside some personal pleasure and ambition and accept His individualized path for each (the narrow road).

---

[165] John 14:3; 1 John 3:1-2; Rev 21:3. यूहन्ना 14:3; 1 यूहन्ना 3:1–2; प्रकाशितवाक्य 21:3.

कई लोगों के लिए, जो यीशु का अनुसरण करने पर विचार कर रहे हैं, इस यात्रा को शुरू करना कठिन होता है, क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर और दूसरों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए कुछ व्यक्तिगत इच्छाओं को छोड़ना पड़ता है (स्वयं को मृत करना)। परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति से कुछ व्यक्तिगत सुख और महत्वाकांक्षा को छोड़ने और प्रत्येक के लिए उनके द्वारा निर्धारित व्यक्तिगत मार्ग (संकरा मार्ग) को स्वीकार करने के लिए कहता है।

What I have found over time is that many have difficulty in giving up present personal desires for a life of ongoing service in God's holy family even if that service leads to a more fulfilling life now and an eternally close life with God and others in the future. For many, it just seems really hard to accept such an offer from God because of ***the possible lack of immediate gain***. Even when they know that Heaven is secured by God due to His great ability and power over everything, many still want things their own way. They are not willing to allow God to reshape their character to become more and more like His nor wait for the finalized New Heaven and New Earth without its sin, tears, and sorrow. In reality, many consider a present life of following Jesus ***too high a cost*** to give up present short-lived worldly pleasures and ambitions even if they could obtain more joy and inner peace now and a perfected eternal life after physical death.

मैंने समय के साथ पाया है कि कई लोगों को परमेश्वर के पवित्र परिवार में निरंतर सेवा के जीवन के लिए वर्तमान व्यक्तिगत इच्छाओं को छोड़ने में कठिनाई होती है, भले ही वह सेवा अभी अधिक पूर्ण जीवन और भविष्य में परमेश्वर और दूसरों के साथ शाश्वत घनिष्ठ जीवन की ओर ले जाए। कई लोगों के लिए, परमेश्वर का यह प्रस्ताव स्वीकार करना बहुत कठिन लगता है क्योंकि इसमें तत्काल लाभ की कमी हो सकती है। भले ही वे जानते हों कि परमेश्वर की महान क्षमता और सर्वशक्तिमानता के कारण स्वर्ग सुरक्षित है, फिर भी कई लोग अपनी इच्छा के अनुसार चीजें चाहते हैं। वे परमेश्वर को अपने चरित्र को उनके जैसा बनाने की अनुमति देने के लिए तैयार नहीं हैं, न ही वे पाप, आंसुओं और दुख के बिना पूर्ण नया स्वर्ग और नई पृथ्वी की प्रतीक्षा करना चाहते हैं। वास्तव में, कई लोग यीशु का अनुसरण करने की वर्तमान कीमत को बहुत अधिक मानते हैं, भले ही इससे अभी अधिक आनंद और आंतरिक शांति और शारीरिक मृत्यु के बाद पूर्ण शाश्वत जीवन प्राप्त हो सकता है।

Jesus asks all to consider carefully the cost of following Him in order that no one start out on a journey that they are not taking seriously. He tells all who are considering following Him that they need to put aside personal ambition, commit their lives to helping others know God, and follow His lead within a loving righteous (holy) lifestyle that will include some sacrifice. He warns all that if they are not willing to do

such, they will not be able to become part of His eternal holy family that prioritizes love (care) for all over everything (Luke 14:26-33).

यीशु सभी से कहता है कि वे उसके अनुसरण की कीमत को ध्यान से विचार करें ताकि कोई भी ऐसी यात्रा शुरू न करे जिसे वे गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। वह सभी को बताता है कि जो लोग उसका अनुसरण करने पर विचार कर रहे हैं, उन्हें व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा को छोड़ना होगा, दूसरों को परमेश्वर को जानने में मदद करने के लिए अपने जीवन को समर्पित करना होगा, और कुछ बलिदान सहित एक प्रेमपूर्ण धार्मिक (पवित्र) जीवनशैली में उसका नेतृत्व करना होगा। वह चेतावनी देता है कि यदि वे ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं, तो वे उसके शाश्वत पवित्र परिवार का हिस्सा नहीं बन पाएंगे जो सभी के लिए प्रेम (देखभाल) को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है (लूका 14:26–33)।

Personal investment of time, energy, and resources into the lives of others is part of God's plan for all. In order to successfully implementing God's plan, one must listen to Him and learn to love Him and others (1 Cor 13:4-7). Returning God's love is contingent on getting to know and trust Him. Trust in God is developed through obediently following Jesus and actively stepping out in a growing trust to accomplish His will (Heb 5:14; cf. James 1:22-25).

दूसरों के जीवन में समय, ऊर्जा और संसाधनों का व्यक्तिगत निवेश परमेश्वर की सभी के लिए योजना का हिस्सा है। परमेश्वर की योजना को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए, व्यक्ति को उसे सुनना होगा और उसे और दूसरों को प्रेम करना सीखना होगा (1 कुरिन्थियों 13:4–7)। परमेश्वर का प्रेम लौटाना उसे जानने और उस पर भरोसा करने पर निर्भर करता है। परमेश्वर पर भरोसा यीशु का आज्ञाकारी अनुसरण करने और उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए बढ़ते विश्वास में सक्रिय रूप से कदम उठाने के माध्यम से विकसित होता है (इब्रानियों 5:14; तुलना याकूब 1:22–25)।

God is pleased with any and all good that we do, but He is also clear that any sin in our lives that is not removed will prevent us from spending eternity with Him, and He reminds us that all have sinned. At first glance, this sounds pretty bleak, but we should keep in mind that God has created all of us to be with Him forever. So, in reality, He values our choices and wants us to come to a place in our lives that ***we actually want to be with Him <u>not</u> for the things that He can do for us as if He were some uncaring distant genie <u>but because of who He is</u>***. God truly loves and cares deeply about everyone, saved and unsaved, encouraging our godly development and always doing what is best for each.

परमेश्वर हमारे द्वारा किए गए किसी भी और सभी अच्छे कार्यों से प्रसन्न होता है, लेकिन वह यह भी स्पष्ट करता है कि हमारे जीवन में कोई भी पाप जो हटाया नहीं गया है, वह हमें उसके साथ अनंत काल बिताने से रोकेगा,

और वह हमें याद दिलाता है कि सभी ने पाप किया है। पहली नजर में, यह बहुत निराशाजनक लगता है, लेकिन हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि परमेश्वर ने हम सभी को उसके साथ हमेशा के लिए रहने के लिए बनाया है। इसलिए, वास्तव में, वह हमारे विकल्पों को महत्व देता है और चाहता है कि हम अपने जीवन में उस स्थान पर पहुंचें जहां हम वास्तव में उसके साथ रहना चाहते हैं, न कि उसके द्वारा हमारे लिए किए जा सकने वाले कार्यों के लिए जैसे कि वह कोई उदासीन दूर का जिन्न हो, बल्कि इसलिए कि वह कौन है। परमेश्वर वास्तव में सभी से गहराई से प्रेम करता है और उनकी परवाह करता है, चाहे वे उद्धार प्राप्त हों या न हों, हमारे धार्मिक विकास को प्रोत्साहित करता है और हमेशा प्रत्येक के लिए सबसे अच्छा करता है।

A Personal Testimony
एक व्यक्तिगत

As we start maturing, most of us find that life is more complicated than what we had been told as a child. By my mid-twenties, I had finished my military duty, undergraduate studies, and was starting a business. In addition, my wife and I had our first child on the way. I had worked hard and was now ready to settle down taking care of my family, continuing to work hard, going to church on Sunday, and seeking occasional times to relax with family and friends.

जैसे–जैसे हम परिपक्व होते हैं, हम में से अधिकांश यह पाते हैं कि जीवन उससे कहीं अधिक जटिल है जितना हमें बचपन में बताया गया था। अपनी मध्य–बीस की उम्र तक, मैंने अपनी सैन्य सेवा, स्नातक पढ़ाई पूरी कर ली थी और एक व्यवसाय शुरू कर रहा था। इसके अलावा, मेरी पत्नी और मेरे पहले बच्चे की उम्मीद कर रहे थे। मैंने कड़ी मेहनत की थी और अब अपने परिवार की देखभाल करने, कड़ी मेहनत करने, रविवार को चर्च जाने और परिवार और दोस्तों के साथ कभी–कभी आराम करने के लिए तैयार था।

But, something started to happen along my life journey that probably happens to most people as they live out their adult lives. God persistently and consistently helped me to understand more accurately the finalized world that He is in the process of creating. As I studied His Word and applied what He was teaching me, He helped me understand more fully His eternal plans for a perfect Heaven and a place of separation, a prison, normally called Hell or the Lake of Fire.

लेकिन, मेरे जीवन की यात्रा के दौरान कुछ ऐसा होने लगा जो शायद ज्यादातर लोगों के साथ उनके वयस्क जीवन में होता है। परमेश्वर ने मुझे लगातार और निरंतर रूप से उस अंतिम दुनिया को अधिक सटीक रूप से समझने में मदद की, जिसे वह बना रहा है। जैसे–जैसे मैंने उसके वचन का अध्ययन किया और जो वह मुझे सिखा रहा था उसे लागू किया, उसने मुझे

उसकी शाश्वत योजनाओं को पूर्ण स्वर्ग और अलगाव की जगह, जिसे आमतौर पर नरक या आग की झील कहा जाता है, को और अधिक समझने में मदद की।

I came to realize that being sentenced eternally to Hell was not solely God's judgment for bad behavior but also an alternative life for those who did not want to follow His lordship nor His holy way of life, which is based on a pure impartial love for all. I become more and more aware of God's goodness and came to understand that even prior to the beginning of the physical Creation, God had already made a way for everyone who would live during the Creation to be with Him in His completed perfect world, if they would become willing to return His love and follow His way of life.

मुझे यह महसूस हुआ कि नरक में अनंत काल की सजा केवल परमेश्वर का बुरे व्यवहार के लिए निर्णय नहीं था, बल्कि उन लोगों के लिए एक वैकल्पिक जीवन भी था जो उसके प्रभुत्व और उसके पवित्र जीवन के तरीके का पालन नहीं करना चाहते थे, जो सभी के लिए शुद्ध निष्पक्ष प्रेम पर आधारित है। मैं परमेश्वर की अच्छाई के प्रति अधिक से अधिक जागरूक होता गया और यह समझने लगा कि भौतिक सृष्टि की शुरुआत से पहले ही, परमेश्वर ने हर उस व्यक्ति के लिए जो सृष्टि के दौरान जीवित रहेगा, उसके साथ उसके पूर्ण विश्व में रहने का मार्ग बना लिया था, यदि वे उसका प्रेम लौटाने और उसके जीवन के तरीके का पालन करने के लिए तैयार हों।

As I began to understand God's way of life more fully and understand how good it is to follow Jesus, I started to want to please Him more, and I started letting go of my childhood dreams and receive His much more fulfilling plans for my eternal life.

जैसे–जैसे मैंने परमेश्वर के जीवन के तरीके को और अधिक समझा और यह समझा कि यीशु का अनुसरण करना कितना अच्छा है, मैं उसे और अधिक प्रसन्न करना चाहता था, और मैंने अपने बचपन के सपनों को छोड़ना शुरू कर दिया और उसके मेरे शाश्वत जीवन के लिए बहुत अधिक पूर्ण योजनाओं को स्वीकार करना शुरू कर दिया।

I do not think that our initial childhood dreams and careers make much difference ultimately in deciding whether or not God is worthy to follow. Some of us may start off without any real aspirations but simply desire to take care of ourselves and our families, while others may have high expectations of rewarding careers in an assortment of fields. Others may simply not care to engage in anything and may just start off drifting without any real direction. But, in all cases whether or not we have followed the One True God from childhood, I believe there comes a time when each of us realizes that there is a living interactive power higher than ourselves and that something is missing in our lives, if

we are not interacting positively with that higher power. This is because at various times, God interacts with everyone from every cultural and religious background from conception to physical death encouraging every heart and mind to follow Him and His way of life (spiritual awakenings).[166]

मुझे नहीं लगता कि हमारे प्रारंभिक बचपन के सपने और करियर अंततः इस निर्णय में ज्यादा अंतर करते हैं कि परमेश्वर का अनुसरण करना योग्य है या नहीं। हम में से कुछ लोग बिना किसी वास्तविक आकांक्षाओं के शुरू हो सकते हैं, बस खुद और अपने परिवार की देखभाल करने की इच्छा रखते हैं, जबकि अन्य लोग विभिन्न क्षेत्रों में पुरस्कृत करियर की उच्च उम्मीदें रख सकते हैं। अन्य लोग बस कुछ भी करने में रुचि नहीं रखते और बिना किसी वास्तविक दिशा के भटकना शुरू कर सकते हैं। लेकिन, सभी मामलों में, चाहे हम बचपन से एक सच्चे परमेश्वर का पालन करते हों या नहीं, मेरा मानना है कि एक समय ऐसा आता है जब हम में से प्रत्येक को यह महसूस होता है कि हमारे ऊपर एक जीवित इंटरैक्टिव शक्ति है और अगर हम उस उच्च शक्ति के साथ सकारात्मक रूप से बातचीत नहीं कर रहे हैं तो हमारे जीवन में कुछ कमी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विभिन्न समयों पर, परमेश्वर हर सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के प्रत्येक व्यक्ति के साथ गर्भाधान से लेकर शारीरिक मृत्यु तक संवाद करता है, उनके दिल और दिमाग को उसे और उसके जीवन के तरीके का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करता है (आध्यात्मिक जागृति)।[166]

For me after military service, undergraduate college, and within five to six years of successfully growing a company, I started to realize that success and a reasonable amount of money were not as personally satisfying as I had initially thought. While I had been developing our new company, God had been developing me. I was becoming more and more concerned about others through regular exposure to His Word and Jesus' leading through the Holy Spirit. They encouraged me to minister to others including the homeless and those in prison. I started to realize that caring relationships with God and others was the only thing of eternal value.

मेरे लिए, सैन्य सेवा, स्नातक कॉलेज, और पांच से छह साल तक एक कंपनी को सफलतापूर्वक विकसित करने के बाद, मुझे यह महसूस होने लगा कि सफलता और उचित मात्रा में धन उतना व्यक्तिगत रूप से संतुष्टिदायक नहीं था जितना मैंने शुरू में सोचा था। जब मैं हमारी नई कंपनी विकसित कर रहा था, परमेश्वर मुझे विकसित कर रहा था। मैं उसके वचन और पवित्र आत्मा के माध्यम से यीशु के नेतृत्व के माध्यम से दूसरों के प्रति अधिक से अधिक चिंतित

---

[166] Rom 2:11-16; cf. Rom 1:18-32. रोमियों 2:11–16; तुलना करें रोमियों 1:18–32।

होता जा रहा था। उन्होंने मुझे बेघर और जेल में बंद लोगों सहित दूसरों की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया। मुझे यह महसूस होने लगा कि परमेश्वर और दूसरों के साथ देखभाल करने वाले रिश्ते ही एकमात्र ऐसी चीज थी जो शाश्वत मूल्य की थी।

As I listened to God, He developed within me a love for others that brought me great joy whenever I could help anyone grow in their relationship with Him. I realized that having a right relationship with God was the most important thing that anyone could have now and forever. As I personally grew in my relationship with God, I realized that He was inviting me to limit my business activity and minister more to others. He was asking me to let go of my childhood dreams and accept the good works that He had planned out specifically for me before the physical Creation started. I just needed to follow His lead.

जैसे–जैसे मैंने परमेश्वर की बात सुनी, उसने मुझमें दूसरों के लिए एक ऐसा प्रेम विकसित किया जो मुझे बहुत खुशी देता था जब भी मैं किसी को उसके साथ उनके रिश्ते को बढ़ाने में मदद कर सकता था। मुझे यह महसूस हुआ कि परमेश्वर के साथ सही रिश्ता होना सबसे महत्वपूर्ण चीज थी जो कोई भी अब और हमेशा के लिए रख सकता था। जैसे–जैसे मैं व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में बढ़ता गया, मुझे यह महसूस हुआ कि वह मुझे मेरी व्यावसायिक गतिविधियों को सीमित करने और दूसरों की अधिक सेवा करने के लिए आमंत्रित कर रहा था। वह मुझसे मेरे बचपन के सपनों को छोड़ने और उन अच्छे कार्यों को स्वीकार करने के लिए कह रहा था जो उसने मेरे लिए भौतिक सृष्टि शुरू होने से पहले विशेष रूप से योजनाबद्ध किए थे। मुझे बस उसका नेतृत्व करना था।

Although I had recommitted my life to following Jesus more closely at twenty-eight, it was not until I reached thirty-seven that I was ready to close my business and take the next step in following Him. Over the following years, I have come to realize that following Jesus is a journey that provides constant godly growth as we learn to trust and obey Him more faithfully day by day–many times in the face of adversity even from those around us.

हालांकि मैंने अट्ठाईस साल की उम्र में यीशु का और अधिक निकटता से अनुसरण करने के लिए अपने जीवन को फिर से समर्पित किया था, लेकिन सैंतीस साल की उम्र तक मैं अपनी कंपनी बंद करने और उसके अनुसरण में अगला कदम उठाने के लिए तैयार नहीं था। बाद के वर्षों में, मैंने यह महसूस किया कि यीशु का अनुसरण करना एक ऐसी यात्रा है जो हमें हर दिन अधिक विश्वासपूर्वक उस पर भरोसा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना सिखाती है – कई बार हमारे आसपास के लोगों से विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के बावजूद।

Doing the Will of God
परमेश्वर की इच्छा करना

Jesus said that only those who had a desire ***to do the will of the Father*** would come to know Him.[167] He also said that there would be some who called Him "lord" who would not be with Him in Heaven because ***they had not done the Father's will*** (Matt 7:21). If someone wants to know God, he or she must be willing to follow His lead. God does not weigh people's good and bad activities throughout their lives to see if they have done enough good to enter Heaven. In reality, the Father only accepts people into His eternal holy family who are willing to allow Him to shape them into Jesus' moral nature and obediently follow Him. ***God requires commitment with corresponding action (John 3:36; 8:51; Rom 2:13)!***

यीशु ने कहा कि केवल वही जो पिता की इच्छा करने की इच्छा रखते हैं, उसे जान पाएंगे।[167] उन्होंने यह भी कहा कि कुछ लोग जो उन्हें "प्रभु" कहते हैं, वे स्वर्ग में उनके साथ नहीं होंगे क्योंकि उन्होंने पिता की इच्छा नहीं की (मत्ती 7:21)। यदि कोई परमेश्वर को जानना चाहता है, तो उसे उनके नेतृत्व का पालन करने के लिए तैयार होना चाहिए। परमेश्वर लोगों के अच्छे और बुरे कार्यों को उनके जीवन भर तौलकर यह नहीं देखता कि उन्होंने स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त अच्छा किया है या नहीं। वास्तव में, पिता केवल उन लोगों को अपने शाश्वत पवित्र परिवार में स्वीकार करता है जो उन्हें यीशु के नैतिक स्वभाव में ढालने और उनकी आज्ञाकारी अनुसरण करने की अनुमति देने के लिए तैयार हैं। परमेश्वर को प्रतिबद्धता और उसके अनुरूप कार्रवाई की आवश्यकता है (यूहन्ना 3:36; 8:51; रोमियों 2:13)!

Just as in Malachi's time, God wants us to trust Him enough to do our part in supporting His creative work. It is one thing to know about something, ***it is something else to love God and others enough to get involved.*** God asks all to listen to Him, learn to return His love, and to step out in faith and do His will. ***Our Creator is seeking out and working with all who love and honor Him through their actions as well as their words*** (Matt 25:31-46; Luke 6:46; Rev 22:12). Let's all be willing to follow Jesus faithfully.

जैसा कि मलाकी के समय में, परमेश्वर चाहता है कि हम उस पर इतना भरोसा करें कि हम अपने हिस्से का समर्थन उसकी रचनात्मक कार्य में

---

[167] John 7:17; 8:39-47; cf. Matt 25:31-46; Rom 2:13. यूहन्ना 7:17; 8:39–47; तुलना करें: मत्ती 25:31–46; रोमियों 2:13।

करें। किसी चीज के बारे में जानना एक बात है, परमेश्वर और दूसरों को इतना प्रेम करना कि उसमें शामिल हो जाएं, यह दूसरी बात है। परमेश्वर सभी से कहता है कि वे उसे सुनें, उसका प्रेम लौटाना सीखें, और विश्वास में कदम उठाकर उसकी इच्छा को पूरा करें। हमारा सृष्टिकर्ता उन सभी को खोज रहा है और उनके साथ काम कर रहा है जो अपने कार्यों और शब्दों के माध्यम से उसे प्रेम और सम्मान करते हैं (मत्ती 25:31–46; लूका 6:46; प्रकाशितवाक्य 22:12)। आइए हम सभी यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करने के लिए तैयार हों।

Let's keep in mind that ***now*** is the time for the followers of Jesus of this generation to engage our culture and dispel the spiritual darkness around us. ***Now*** is the time for the Church to demonstrate clearly God's love for ***all*** through our actions as well as our words. Through our spiritual rebirth and faithfully following Jesus, we should experience more and more excitement, joy, and inner peace as we make God more fully known to the world around us.

आइए यह ध्यान में रखें कि अब इस पीढ़ी के यीशु के अनुयायियों के लिए हमारी संस्कृति में शामिल होने और हमारे आसपास के आध्यात्मिक अंधेरे को दूर करने का समय है। अब समय है कि चर्च हमारे कार्यों और शब्दों के माध्यम से सभी के लिए परमेश्वर के प्रेम को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करे। हमारे आध्यात्मिक पुनर्जनन और यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करने के माध्यम से, हमें दुनिया को परमेश्वर को और अधिक पूर्ण रूप से जानने में मदद करते हुए अधिक से अधिक उत्साह, आनंद और आंतरिक शांति का अनुभव करना चाहिए।

There Are No Passes to Heaven
स्वर्ग के लिए कोई पास नहीं

Jesus' followers have <u>not</u> picked up passes to Heaven and are just waiting to go home, and they are <u>not</u> presently sitting on the sidelines acting as spectators watching God at work! Jesus' followers enjoy being interactive co-laborers with the Creator. ***They have the privilege, honor, and duty of representing God on earth*** helping fellow disciples and helping those who are living under the deceptions and leadership of Satan. It brings Jesus' followers ***great joy*** to help fellow followers of Jesus and even greater joy to help rescue those who are not following Jesus from present ungodly lifestyles and future eternal shame, unrest, and suffering.

यीशु के अनुयायियों ने स्वर्ग के लिए पास नहीं उठाए हैं और बस घर जाने की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं, और वे वर्तमान में दर्शकों के रूप में किनारे पर बैठकर परमेश्वर को काम करते हुए नहीं देख रहे हैं! यीशु के अनुयायी सृष्टिकर्ता के साथ सह–श्रमिक होने का आनंद लेते हैं। उनके पास पृथ्वी पर

परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने का विशेषाधिकार, सम्मान और कर्तव्य है, जो सह–शिष्यों की मदद करता है और उन लोगों को बचाने में मदद करता है जो शैतान के छल और नेतृत्व के तहत जी रहे हैं। यीशु के अनुयायियों को सह–शिष्यों की मदद करने और उन लोगों को वर्तमान अधार्मिक जीवनशैली और भविष्य के शाश्वत शर्म, अशांति और कष्ट से बचाने में बहुत खुशी मिलती है।

As part of the universal Church, Paul teaches that Jesus' followers are "in Christ." ***Being "in Christ," means having a close obedient interactive relationship with Jesus, God's Anointed One, the true Messiah. It is critically important to have a close relationship with Jesus in order to function well in the spiritual warfare that is constantly going on around us.*** It is our obedient close association with Jesus that gives us access to the Father and enables us to overcome evil as we train some and lead others to Him.[168] As we faithfully follow Jesus, we come to know more fully the Father's will.

सार्वभौमिक चर्च के हिस्से के रूप में, पौलुस सिखाता है कि यीशु के अनुयायी "मसीह में" हैं।"मसीह में" होने का अर्थ है यीशु, परमेश्वर के अभिषिक्त, सच्चे मसीहा के साथ एक घनिष्ठ आज्ञाकारी इंटरैक्टिव संबंध रखना। हमारे आसपास निरंतर चल रही आध्यात्मिक युद्ध में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए यीशु के साथ घनिष्ठ संबंध होना महत्वपूर्ण है। यह हमारी यीशु के साथ आज्ञाकारी घनिष्ठता है जो हमें पिता तक पहुंच प्रदान करती है और हमें बुराई पर काबू पाने और कुछ को प्रशिक्षित करने और दूसरों को उसके पास ले जाने में सक्षम बनाती है।[168] जैसे–जैसे हम यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करते हैं, हम पिता की इच्छा को और अधिक पूर्ण रूप से जानते हैं।

Being "in Christ" is the only way that anyone finds true peace as they are developed more and more by the Father to have the mind of Christ (1 Cor 2:16). Through Jesus' leading through the Holy Spirit, the Father rearranges Jesus' followers' priorities, and they experience great joy being part of His great rescue operation throughout the Creation. Jesus' followers take the necessary time *to make and train* new disciples.

"मसीह में" होना ही एकमात्र तरीका है जिससे कोई भी सच्ची शांति पाता है क्योंकि वे पिता द्वारा मसीह की मानसिकता में और अधिक विकसित होते हैं (1 कुरिन्थियों 2:16)। पवित्र आत्मा के माध्यम से यीशु के नेतृत्व के माध्यम से, पिता यीशु के अनुयायियों की प्राथमिकताओं को पुनर्व्यवस्थित करता है, और वे सृष्टि भर में उसकी महान बचाव कार्रवाई का हिस्सा होने का बहुत आनंद अनुभव करते हैं। यीशु के अनुयायी नए शिष्यों को बनाने और प्रशिक्षित करने के लिए आवश्यक समय लेते हैं।

---

[168] Eph 2:18; 6:10-20. इफिसियों 2:18; 6:10–20.

Those who are "in Christ" are also part of the Body of Christ. Jesus is the head of the Body, the Church (Col 1:18). The phrase "Body of Christ" appears in the New Testament to represent Jesus' literal body or figuratively to represent His followers working together as ***His bodily representatives*** throughout the last part of the Creation following Jesus' resurrection.

जो लोग "मसीह में" हैं, वे मसीह की देह का हिस्सा भी हैं। यीशु देह का सिर है, चर्च (कुलुस्सियों 1:18)। "मसीह की देह" वाक्यांश नए नियम में यीशु की शाब्दिक देह या उनके अनुयायियों का प्रतीकात्मक रूप से सृष्टि के अंतिम भाग में यीशु के पुनरुत्थान के बाद उनके शारीरिक प्रतिनिधियों के रूप में एक साथ काम करने के लिए दर्शाता है।

Considering the Body of Christ, Paul wants all of Jesus' followers to understand the importance of each member. ***Everyone is important and has work to do under the headship of Jesus.*** When considering any physical living body, each member–whether foot, hand, ear, eye, heart, lungs, kidneys, and the list goes on–has an important contributing function to the overall ability and well being of that body (1 Cor 12:12-25).

मसीह की देह को ध्यान में रखते हुए, पौलुस चाहता है कि यीशु के सभी अनुयायी प्रत्येक सदस्य के महत्व को समझें। हर कोई महत्वपूर्ण है और यीशु के नेतृत्व में काम करने के लिए है। किसी भी शारीरिक जीवित देह को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक अंग – चाहे पैर, हाथ, कान, आंख, हृदय, फेफड़े, गुर्दे, और सूची चलती जाती है – का देह की समग्र क्षमता और कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण योगदानकारी कार्य होता है (1 कुरिन्थियों 12:12–25)।

Considering how the various members of a living physical body work together for the good of the whole, Paul stressed the importance of ***godly unity*** among the various members of the Body of Christ. In Ephesians, Paul emphasized the importance for Gentile and Jewish Christians to treat each other as ***equal family members*** disregarding the prejudices that they had learned through their various religious and cultural backgrounds (Eph 2:11-22). Paul went on to explicitly state that both Judean (Jewish) and Gentile *Christians* were members of the same family, God's household, which made them family members and fellow citizens of His eternal kingdom. He closed this important teaching on Christian unity by using one last image. Jesus' followers could consider themselves metaphorically as individual parts of the great House of God, which is continually under construction until the last person is added (Eph 2:20-22). Through Jesus, the holy family of God can now experience inner peace within itself despite the various backgrounds, trials, and tribulations of its members.

शारीरिक जीवित देह के विभिन्न अंगों के एक साथ काम करने के तरीके को ध्यान में रखते हुए, पौलुस ने मसीह की देह के विभिन्न सदस्यों के बीच ईश्वरीय एकता के महत्व पर जोर दिया। इफिसियों में, पौलुस ने यहूदी और गैर–यहूदी मसीहियों के लिए एक–दूसरे को समान परिवार के सदस्यों के रूप में व्यवहार करने के महत्व पर जोर दिया, उनकी विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से सीखी गई पूर्वाग्रहों की परवाह किए बिना (इफिसियों 2:11–22)। पौलुस ने स्पष्ट रूप से कहा कि यहूदी और गैर–यहूदी मसीही दोनों ही एक ही परिवार, परमेश्वर के घराने के सदस्य हैं, जो उन्हें परिवार के सदस्य और उनके शाश्वत राज्य के सह–नागरिक बनाता है। उन्होंने इस महत्वपूर्ण शिक्षण को एक अंतिम छवि के साथ समाप्त किया। यीशु के अनुयायी स्वयं को परमेश्वर के महान घर के व्यक्तिगत हिस्सों के रूप में प्रतीकात्मक रूप से मान सकते हैं, जो अंतिम व्यक्ति के शामिल होने तक निरंतर निर्माणाधीन है (इफिसियों 2:20–22)। यीशु के माध्यम से, परमेश्वर का पवित्र परिवार अब अपनी विभिन्न पृष्ठभूमियों, कष्टों और क्लेशों के बावजूद अपने भीतर आंतरिक शांति का अनुभव कर सकता है।

Chapter 5: Being a Child of God
अध्याय 5: परमेश्वर की संतान होना

I do not ask only for these (my immediate disciples), but also for those who will believe in me through their word, that all of them may be one, as you, Father, are in me, and I am in you, that they also may be in us. John 17:20-21a

मैं केवल इन्हीं के लिये (मेरे निकटतम शिष्य) बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों ।
यूहन्ना 17:20–21अ

When Jesus prayed that all people of all time who are believing (trusting) in Him may be "one," united with God and each other, He illuminates the meaning of eternal life and salvation declared in John 3:14-17. Jesus is praying for all who learn to trust and obey Him out of love to be united in the same special way to the Father that He is united to Him.

जब यीशु ने प्रार्थना की कि सभी समय के सभी लोग जो उन पर विश्वास (भरोसा) करते हैं, वे "एक" हों, परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ एकजुट हों, तो उन्होंने अनंत जीवन और उद्धार के अर्थ को स्पष्ट किया, जैसा कि यूहन्ना 3:14–17 में घोषित किया गया है। यीशु उन सभी के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जो प्रेम से उन पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा मानना सीखते हैं, ताकि वे उसी विशेष तरीके से पिता के साथ एकजुट हों, जैसे वे स्वयं पिता के साथ एकजुट हैं।

Because of God's unconditional love for us, we can learn to trust and obey Him. When we examine one of our best known scriptures regarding God's love for us, John 3:16, we see that eternal life is provided for all who ***are believing (trusting)*** in Jesus. The original Greek root *pistis* normally translated as "faith or belief" also has a basic meaning of "trust." This Greek wording is used in verses such as John 3:16 (believing) and Eph 2:8 (faith) in which God declares our salvation

through our trust in Jesus.[169] This asserts that our salvation and transformation come through Jesus when we believe in Him and make a conscious decision to trust His faithfulness toward us.[170]

परमेश्वर के हमारे प्रति बिना शर्त प्रेम के कारण, हम उन पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा मानना सीख सकते हैं। जब हम परमेश्वर के हमारे प्रति प्रेम से संबंधित सबसे प्रसिद्ध पदों में से एक, यूहन्ना 3:16, की जांच करते हैं, तो हम देखते हैं कि अनंत जीवन उन सभी के लिए प्रदान किया गया है जो यीशु पर विश्वास (भरोसा) करते हैं। मूल यूनानी शब्द "पिस्तिस" जिसे सामान्य रूप से "विश्वास" या "आस्था" के रूप में अनुवादित किया जाता है, का मूल अर्थ "भरोसा" भी है। इस यूनानी शब्द का उपयोग यूहन्ना 3:16 (विश्वास करने) और इफिसियों 2:8 (आस्था) जैसे पदों में किया गया है, जिसमें परमेश्वर हमारे उद्धार को यीशु में हमारे भरोसे के माध्यम से घोषित करता है।[169] यह दावा करता है कि हमारा उद्धार और परिवर्तन तब होता है जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं और उनके प्रति उनकी विश्वसनीयता पर भरोसा करने का सचेत निर्णय लेते हैं।[170]

As we learn to return God's love through ***interaction*** with Him and others, we gain ***experience*** in trusting God,[171] and it is ultimately through our growing trust that we come to know how and why we exist. Godly faith (trust) is not blind faith; we learn to trust God by entering into His work and experiencing His love and faithfulness toward us in action (Heb 5:13-14). As we walk with God learning to trust Him, we also learn to obey Him because of His great love for us. We develop wanting to please Him.

जैसे–जैसे हम परमेश्वर के साथ और दूसरों के साथ संवाद के माध्यम से उनके प्रेम को लौटाना सीखते हैं, हम परमेश्वर पर भरोसा करने का अनुभव प्राप्त करते हैं,[171] और अंततः हमारे बढ़ते भरोसे के माध्यम से हम यह जान पड़ते हैं कि हम क्यों और कैसे अस्तित्व में हैं। ईश्वरीय विश्वास (भरोसा) अंधा विश्वास नहीं है; हम परमेश्वर के कार्य में शामिल होकर और उनके प्रेम और विश्वसनीयता को कार्य में अनुभव करके उन पर भरोसा करना सीखते हैं (इब्रानियों 5:13–14)। जैसे–जैसे हम परमेश्वर के साथ चलते हुए उन पर भरोसा

---

[169] In addition, see Rom 1:15-16-32. इसके अतिरिक्त, रोमियों 1:15–16–32 देखें।

[170] Rom 3:22-28; 10:9-13. रोमियों 3:22–28; 10:9–13.

[171] Rom 10:10; Gal 5:6; cf. Heb 5:13-14; cf. Heb 11. रोमियों 10:10; गला 5:6; तुलना करें: इब्रा 5:13–14; तुलना करें: इब्रा 11।

करना सीखते हैं, हम उनके हमारे प्रति महान प्रेम के कारण उनकी आज्ञा मानना भी सीखते हैं। हम उनको प्रसन्न करने की इच्छा विकसित करते हैं।

The apostle John uses the term "Believer" as an individual who has come to know Jesus as ***both*** savior and lord. The Believer trusts and obeys Him out of love.[172] God puts the two words "trust" and "obedience" together because they work hand-in-hand as shown in one of John the Baptist's statements,

> **The one who is believing in (trusting) the Son has eternal life, but the one who is not obeying the Son will not see (eternal) life, but the judgement of God remains upon him.**
>
> **John 3:36**

प्रेरित यूहन्ना "विश्वासी" शब्द का उपयोग उस व्यक्ति के लिए करते हैं जो यीशु को उद्धारकर्ता और प्रभु दोनों के रूप में जान चुका है। विश्वासी प्रेम से उन पर भरोसा करता है[172] और उनकी आज्ञा मानता है। परमेश्वर "भरोसा" और "आज्ञाकारिता" इन दो शब्दों को एक साथ रखता है क्योंकि वे एक–दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं, जैसा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के एक कथन में दिखाया गया है,

> जो पुत्र पर विश्वास करता (भरोसा करता) है, उसके पास अनंत जीवन है, लेकिन जो पुत्र की आज्ञा नहीं मानता, वह (अनंत) जीवन नहीं देखेगा, बल्कि परमेश्वर का न्याय उस पर बना रहेगा। यूहन्ना 3:36

This verse clearly indicates that those who trust Jesus also obey Him. Jesus tells us that those who obey Him do it out of love.[173] Those who love the Father, love the One whom He sent to save us.[174] If we truly love Jesus, we will learn to trust and obey Him.[175]

---

[172] Regarding obedience, examine John 14: 21, 23; Gal 5:6. आज्ञाकारिता के संबंध में, यूहन्ना 14:21, 23; गला 5:6 की जांच करें।

[173] John 14:15, 21, 23-24. यूहन्ना 14:15, 21, 23–24.

[174] Matt 10:40; Mark 9:37; Luke 9:48; John 8:42; 12:44; cf. John 1:29. मत्ती 10:40; मरकुस 9:37; लूका 9:48; यूहन्ना 8:42; 12:44; तुलना करें: यूह 1:29।

[175] John 14:15, 21, 23-24; Gal 5:6. यूहन्ना 14:15, 21, 23–24; गला 5:6.

यह पद स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि जो लोग यीशु पर भरोसा करते हैं, वे उनकी आज्ञा भी मानते हैं। यीशु हमें बताते हैं कि जो लोग उनकी आज्ञा मानते हैं, वे प्रेम के कारण ऐसा करते हैं।[173] जो लोग पिता से प्रेम करते हैं, वे उस व्यक्ति से भी प्रेम करते हैं जिसे पिता ने हमें बचाने के लिए भेजा।[174] यदि हम सच्चे मन से यीशु से प्रेम करते हैं, तो हम उन पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा मानना सीखेंगे।[175]

We do not naturally obey someone just because we trust them. Although we may know that an individual is honest and will do everything that they promise, that does not in and of itself obligate nor encourage us to obey them. Trustworthiness without love is not worthy of obedience. We learn to trust God's motives and actions as we learn how much He loves us; He is righteous and loves us so much that He sent Jesus to die on a cross for us. As we reflect on John 3, we begin to realize that in order to be born from above and start our journey homeward to be with God in Heaven, we must allow Jesus to lead us. From the moment that we decide to allow Jesus to be both our savior and lord forever, we are born from above, born of the Spirit; we become God's reconciled children forever.[176] The Holy Spirit dwells within us helping us to communicate with God in close fellowship for eternity as Jesus leads us in our assigned good works.[177]

हम स्वाभाविक रूप से किसी की आज्ञा पालन नहीं करते केवल इसलिए कि हम उस पर भरोसा करते हैं। भले ही हम जानते हों कि कोई व्यक्ति ईमानदार है और वह जो वादा करता है, उसे पूरा करता है, फिर भी यह अपने आप में हमें उनकी आज्ञा मानने के लिए बाध्य या प्रोत्साहित नहीं करता। प्रेम के बिना विश्वसनीयता आज्ञाकारिता के योग्य नहीं है। हम परमेश्वर के इरादों और कार्यों पर भरोसा करना तब सीखते हैं जब हम यह जान पड़ते हैं कि वह हमसे कितना प्रेम करता है; वह इतना धार्मिक है और हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने यीशु को हमारे लिए क्रूस पर मरने के लिए भेजा। जब हम यूहन्ना 3 पर विचार करते हैं, तो हमें यह समझ में आने लगता है कि स्वर्ग में परमेश्वर के साथ होने के लिए ऊपर से जन्म लेने और अपने घर की यात्रा शुरू करने के लिए, हमें यीशु को हमारा मार्गदर्शन करने देना होगा। जिस क्षण से हम यह

---

[176] Born From Above: John 3:3-5; Eph 1:13-14; 1 Peter 1:22-23. Being God's Children: Eph 1:4-5, 13-14; Rom 8:14-17. ऊपर से जन्माः यूहन्ना 3:3–5; इफि 1:13–14; 1 पत 1:22–23। परमेश्वर की संतान होनाः इफि 1:4–5, 13–14; रोमि 8:14–17.

[177] Holy Spirit: John 14:16-17; 16:13. Good Works: Eph 2:10; 1 Cor 3:9; 2 Tim 1:8-9; Titus 2:14. पवित्र आत्माः यूहन्ना 14:16–17; 16:13। भले कार्यः इफि 2:10; 1 कुरि. 3:9; 2 तीमु 1:8–9; तीतुस 2:14.

निर्णय लेते हैं कि यीशु को हमेशा के लिए हमारा उद्धारकर्ता और प्रभु दोनों बनने देना है, हम ऊपर से जन्म लेते हैं, आत्मा से जन्म लेते हैं; हम हमेशा के लिए परमेश्वर के समेटे हुए बच्चे बन जाते हैं।[176] पवित्र आत्मा हमारे भीतर निवास करता है, जो हमें यीशु द्वारा सौंपे गए अच्छे कार्यों में मार्गदर्शन करते हुए, परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति में अनंतकाल तक संवाद करने में मदद करता है।[177]

Being Created in the Image and Likeness of God
परमेश्वर की छवि और समानता में सृजित होना

After God had created all of the animals according to their own individual kinds, He created humanity in His own image according to the likeness of His own nature. Scripture proclaims that our Heavenly Father working with His beloved Son and Holy Spirit created a people in Their own image according to Their own likeness.[178] This wording informs us that Adam was created in Their image and likeness referring to the Father, Son, and Holy Spirit.

परमेश्वर ने सभी पशुओं को उनकी अपनी–अपनी प्रजाति के अनुसार सृजित करने के बाद, उन्होंने मानवता को अपनी छवि में, अपनी स्वयं की प्रकृति की समानता के अनुसार सृजित किया। पवित्र शास्त्र घोषणा करता है कि हमारे स्वर्गीय पिता ने अपने प्रिय पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ मिलकर एक ऐसे लोगों को सृजित किया जो उनकी छवि और समानता में थे।[178] यह शब्दावली हमें सूचित करती है कि आदम को उनकी छवि और समानता में सृजित किया गया था, जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को संदर्भित करता है।

Just as the Son of God has been granted great free will by our Heavenly Father, humanity was granted great free will. Not being bound by time and knowing that everyone would initially rebel against Him, God still insisted that all go through the pain and corruption caused by bad choices along with learning to make good choices. The Father and Son knew in advance the cost of this free-will righteous volunteer family and were willing to do what it took to produce it. After much pain and

[178] Gen 1:24-27: literally "in the image Us," and in the "likeness of Us"; cf. 3:22; Acts 17:22-34; James 3:9. उत्पत्ति 1:24–27: शाब्दिक "हमारी छवि में," और "हमारी समानता में"; तुलना करें: उत्प 3:22; प्रेरितों 17:22–34; याकूब 3:9।

suffering, all will be made right by Them for all who learn to return Their love and follow Their leadership.[179]

जिस प्रकार परमेश्वर के पुत्र को हमारे स्वर्गीय पिता द्वारा महान स्वतंत्र इच्छा प्रदान की गई है, उसी प्रकार मानवता को भी महान स्वतंत्र इच्छा दी गई। समय से बंधे न होने और यह जानते हुए कि प्रत्येक व्यक्ति शुरू में उनके खिलाफ विद्रोह करेगा, परमेश्वर ने फिर भी जोर दिया कि सभी को गलत विकल्पों से होने वाली पीड़ा और भ्रष्टाचार से गुजरना होगा, साथ ही अच्छे विकल्प चुनना भी सीखना होगा। पिता और पुत्र को पहले से ही इस स्वतंत्र इच्छा वाले धार्मिक स्वैच्छिक परिवार की कीमत का पता था और वे इसे उत्पन्न करने के लिए जो कुछ भी करना पड़े, उसके लिए तैयार थे। बहुत दर्द और कष्ट के बाद, जो लोग उनके प्रेम को लौटाना और उनके नेतृत्व का पालन करना सीखेंगे, उनके लिए सब कुछ ठीक कर दिया जाएगा।[179]

Even with so much pain generated throughout the Creation, God considers His Creation with its perfected outcome as exceedingly good. Although the sinful acts of mankind in rebellion against Him produces much pain, it was the only way to bring about an abundantly free-will family. Therefore, as we consider the fact that God knows what He is doing, we should note the importance that God places on our ability to make important choices, good or bad, even with so much pain generated by our bad actions (sin).

सृष्टि में इतनी पीड़ा होने के बावजूद, परमेश्वर अपनी सृष्टि को, उसके पूर्ण परिणाम सहित, अत्यंत उत्तम मानते हैं। यद्यपि उनके विरुद्ध विद्रोह करने वाले मानवजाति के पाप कर्म बहुत पीड़ा उत्पन्न करते हैं, फिर भी एक पूर्णतः स्वतंत्र परिवार की स्थापना का यही एकमात्र उत्कृष्ट तरीका था। इसलिए, जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं कि परमेश्वर जानता है कि वह क्या कर रहा है, तो हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि परमेश्वर हमारे बुरे कर्मों (पाप) से उत्पन्न इतनी पीड़ा के बावजूद, अच्छे या बुरे, महत्वपूर्ण चुनाव करने की हमारी क्षमता को कितना महत्व देता है।

Brothers and Sisters
भाइयों और बहनों

One day when Jesus was teaching about the Kingdom of God, someone came to Him and told Him that His mother and brothers were outside and wanted to speak to Him. This became an opportune time to teach those around Him about the inclusiveness of God's eternal holy

---

[179] Rom 8:18-23; 2 Cor 5:21; Heb 1:2-3; Rev 21:1-4. रोमियों 8:18–23; 2 कुरू 5:21; इब्रा 1:2–3; प्रका 21:1–4.

family. Jesus asked the one who had made the request on behalf of His biological family, "Who is my mother and who are my brothers?" He then proceeded to answer His own question by stretching out His hand toward His disciples and saying, "Behold, my mother and my brothers! ***For whoever will do the will of my Father in Heaven, he is my brother and sister and mother*** [Matt 12:48-50; cf. Luke 8:19-21]."

एक दिन जब यीशु परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखा रहे थे, तब कोई उनके पास आया और उसने उनसे कहा कि उनकी माँ और भाई बाहर हैं और उनसे बात करना चाहते हैं। यह उनके आसपास के लोगों को परमेश्वर के अनंत पवित्र परिवार की समावेशिता के बारे में सिखाने का एक उपयुक्त अवसर बन गया। यीशु ने उस व्यक्ति से, जिसने उनके जैविक परिवार की ओर से अनुरोध किया था, पूछा, "मेरी माँ कौन है और मेरे भाई कौन हैं?" फिर उन्होंने अपने ही प्रश्न का उत्तर देने के लिए आगे बढ़ते हुए, अपने शिष्यों की ओर हाथ बढ़ाकर कहा, "देखो, मेरी माँ और मेरे भाई! क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा को पूरा करेगा, वही मेरा भाई, बहन और माँ है (मत्ती 12:48–50; तुलना करें लूका 8:19–21)।"

With this teaching, Jesus wanted those who were present and all future disciples to reconsider the idea of family. Although our biological families are normally closer than any other earthly relationships, Jesus' followers are in reality closer to God and one another than any earthly biological family relationship. Yes, we all have a God-given responsibility to take care of our immediate family members, but Jesus is teaching all who listen that His Heavenly Father is the head of all and that His followers comprise a very close-knit loving righteous (holy) family that is closer than biological relatives. ***Jesus is so close to each of His followers that whenever someone does something good or bad toward any of them, they are also doing it directly for or against Him.***[180]

इस शिक्षण के साथ, यीशु चाहते थे कि वहाँ उपस्थित लोग और भविष्य के सभी शिष्य परिवार की अवधारणा पर पुनर्विचार करें। यद्यपि हमारे जैविक परिवार सामान्य रूप से किसी भी अन्य सांसारिक रिश्तों से अधिक निकट होते हैं, यीशु के अनुयायी वास्तव में परमेश्वर और एक–दूसरे के इतने करीब हैं कि यह किसी भी सांसारिक जैविक परिवार के रिश्ते से अधिक है। हाँ, हम सभी की परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारी है कि हम अपने निकटतम परिवार के सदस्यों की देखभाल करें, लेकिन यीशु उन सभी को सिखा रहे हैं जो सुनते हैं कि उनके स्वर्गीय पिता सभी के प्रमुख हैं और उनके अनुयायी एक बहुत ही घनिष्ठ, प्रेममय, धार्मिक (पवित्र) परिवार का निर्माण करते हैं जो जैविक रिश्तेदारों से भी

[180] Matt 25:31-46. मत्ती 25:31–46.

अधिक निकट है। यीशु अपने प्रत्येक अनुयायी के इतने करीब हैं कि जब कोई उनके किसी भी अनुयायी के प्रति कुछ अच्छा या बुरा करता है, तो वह वास्तव में यीशु के लिए या उनके खिलाफ सीधे तौर पर करता है। [180]

The Completed Family of God
परमेश्वर का पूर्ण परिवार

The godly unity within God's completed eternal holy family will be far superior to even the best family unity on earth due to our present less than perfect nature that struggles to live in righteousness. Ultimately, God's eternal holy family members will love one another with perfect unbiased love loving God and one another as God loves us. Keep in mind that on earth, there are millions of small family units. This is not so in the New Heaven. The small family units will be gone, and there will be one God (Sustainer) and Father of all and one holy Family. Jesus said that in Heaven there would be no marriages, but instead, the Father's children would be like the angels in this regard.[181] When the Creation is complete, there is no longer a need to reproduce. God's eternal holy family will be complete. The present function of creating additional children for God's eternal sinless family through small family units will cease.

परमेश्वर के पूर्ण अनंत पवित्र परिवार के भीतर ईश्वरीय एकता, पृथ्वी पर सबसे अच्छी पारिवारिक एकता से भी कहीं अधिक उत्कृष्ट होगी, क्योंकि हमारी वर्तमान अपूर्ण प्रकृति धार्मिकता में जीने के लिए संघर्ष करती है। अंततः, परमेश्वर के अनंत पवित्र परिवार के सदस्य एक–दूसरे से पूर्ण निष्पक्ष प्रेम करेंगे, परमेश्वर और एक–दूसरे से उसी तरह प्रेम करेंगे जैसे परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। ध्यान रखें कि पृथ्वी पर लाखों छोटी पारिवारिक इकाइयाँ हैं। नये स्वर्ग में ऐसा नहीं होगा। छोटी पारिवारिक इकाइयाँ समाप्त हो जाएंगी, और वहाँ एक परमेश्वर (पालनहार) और सभी का पिता होगा और एक पवित्र परिवार होगा। यीशु ने कहा कि स्वर्ग में कोई विवाह नहीं होगा, बल्कि इस मामले में पिता के बच्चे स्वर्गदूतों की तरह होंगे।[181] जब सृष्टि पूर्ण हो जाएगी, तब प्रजनन की आवश्यकता नहीं रहेगी। परमेश्वर का अनंत पवित्र परिवार पूर्ण हो जाएगा। परमेश्वर के अनंत पापरहित परिवार के लिए छोटी पारिवारिक इकाइयों के माध्यम से अतिरिक्त बच्चों की रचना का वर्तमान कार्य समाप्त हो जाएगा।

[181] Matt 22:30; Luke 20:35-36. मत्ती 22:30 लूका 20:35–36.

Adoption: Our Legal Status as Sons of God
गोद लेनाः परमेश्वर के पुत्रों के रूप में हमारी कानूनी स्थिति

He came unto His own, and His own did not receive Him. *But, as many as did receive Him, He gave to them authority to be children of God*, to those who were believing/trusting in His name.

John 1:11-12

वह अपने लोगों के पास आया, और उसके अपने लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया। परंतु, जितनों ने उसे स्वीकार किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, उन लोगों को जो उसके नाम पर विश्वास/भरोसा कर रहे थे। यूहन्ना 1:11–12

The first point made in this passage from John's Gospel presentation is that the majority of God's Creation–including Israel–rejected Jesus' presence in their lives as both lord and savior. The second point is that ***Jesus officially declared that those who actually receive Him are the legal children of God*** (cf. Rev 3:20).

यूहन्ना की सुसमाचार प्रस्तुति के इस अंश में पहला बिंदु यह है कि ईश्वर की सृष्टि का अधिकांश हिस्सा – जिसमें इस्राएल भी शामिल है –ने यीशु को अपने जीवन में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने से इंकार कर दिया। दूसरा बिंदु यह है कि यीशु ने आधिकारिक रूप से घोषणा की कि जो लोग वास्तव में उन्हें स्वीकार करते हैं, वे ईश्वर के वैधानिक संतान हैं (देखें, प्रकाशितवाक्य 3:20)।

Paul, a skilled lawyer of God's laws (life instructions), lived in a world of Hebrew, Greek, and Roman culture and thought, and he used similar Greek terminology stating that Jesus' followers have the same legal rights as Jesus Himself. This is an important concept. In the first century Greco-Roman world, if you had legal status as a son through adoption, you had all the legal rights of a biological son.

पौलुस, जो ईश्वर के नियमों (जीवन के निर्देशों) का एक कुशल विद्वान था, हिब्रू, यूनानी और रोमन संस्कृति और विचारधारा की दुनिया में रहता था, और उसने समान यूनानी शब्दावली का उपयोग करते हुए कहा कि यीशु के अनुयायियों को वही वैधानिक अधिकार प्राप्त हैं जो यीशु को स्वयं प्राप्त हैं। यह एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। प्रथम शताब्दी के यूनानी–रोमन विश्व में, यदि आपको गोद लेने के माध्यम से पुत्र का वैधानिक दर्जा प्राप्त था, तो आपके पास जैविक पुत्र के समान सभी वैधानिक अधिकार होते थे।

In his letter to the Romans, Paul stated that Jesus' followers were children of God and ***fellow heirs with Christ***, who eventually would be glorified with Him. They were eagerly waiting for the realization of their adoption as sons[182] and the redemption of their bodies, which is purification from sin (Rom 8:15-17, 23). In his letter to the Galatians, Paul stated that those who are chosen by God are received into His eternal holy family through adoption as sons [Gal 4:4-6]."[183] In Ephesians, Paul stated that prior to the physical implementation of the Creation according to God's loving-kindness, He predestined each of those whom He called to adoption as a son through Jesus Christ (Eph 1:3-6; 2:4-7).[184]

अपनी पत्री में रोमियों को लिखते हुए, पौलुस ने कहा कि यीशु के अनुयायी ईश्वर के संतान हैं और मसीह के साथ सह–उत्तराधिकारी हैं, जो अंततः उनके साथ महिमामंडित होंगे। वे उत्सुकता से अपनी गोद लिए गए पुत्रों के रूप में स्वीकृति[182] और अपने शरीर के उद्धार, जो पाप से शुद्धिकरण है, की प्रतीक्षा कर रहे थे (रोम 8:15–17, 23)। गलातियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने कहा कि जिन्हें ईश्वर ने चुना है, उन्हें उनके शाश्वत पवित्र परिवार में गोद लेने के माध्यम से पुत्रों के रूप में स्वीकार किया जाता है (गल 4:4–6)।[183] इफिसियों में, पौलुस ने कहा कि ईश्वर की प्रेममयी कृपा के अनुसार सृष्टि के भौतिक कार्यान्वयन से पहले, उसने उनमें से प्रत्येक को, जिन्हें उसने बुलाया, यीशु मसीह के माध्यम से पुत्र के रूप में गोद लेने के लिए पूर्वनियति की थी (इफ 1:3–6; 2:4–7)।[184]

We also learn from Paul that those who are called by God are those who learn to return His love. When discussing Jesus' relationship with His followers, he stated that those who returned God' love would be sanctified, justified, and glorified (Rom 8:28-30). After His resurrection, Jesus told Mary Magdalen to go to His "brothers" and tell them that He was ascending to His father, who was also their father, and His god (lord and sustainer), who was also their god (lord and sustainer) (John 20:17). In Heaven, God's children, both male and female, are equal beings having assigned responsibilities and authority dependent on their

---

[182] Greek *huiothesia*, meaning "adoption as a son." यूनानी पद हुइओथेसिया अर्थात "पुत्र के रूप में गोद लेना।"

[183] Ditto: Greek *huiothesia*, meaning "adoption as a son." उपरोक्त के समान "पुत्र के रूप में गोद लेना।"

[184] Ditto: Greek *huiothesia*, meaning "adoption as a son." उपरोक्त के समान "पुत्र के रूप में गोद लेना।"

earthly faithfulness to God; on one level, they are all considered as sons (Matt 5:9; Luke 20:34-36; Rom 8:14, 19; Gal 3:26).

हम पौलुस से यह भी सीखते हैं कि जिन्हें ईश्वर ने बुलाया है, वे वे हैं जो उसके प्रेम को लौटाना सीखते हैं। यीशु और उनके अनुयायियों के संबंधों की चर्चा करते हुए, उन्होंने कहा कि जो लोग ईश्वर के प्रेम को लौटाते हैं, वे पवित्र, धर्मी और महिमामंडित किए जाएंगे (रोम 8:28–30)। अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने मरियम मगदलीनी को कहा कि वह उनके "भाइयों" के पास जाए और उन्हें बताए कि वह अपने पिता के पास, जो उनका भी पिता है, और अपने ईश्वर (प्रभु और पालक) के पास, जो उनका भी ईश्वर (प्रभु और पालक) है, जा रहे हैं (यूहन्ना 20:17)। स्वर्ग में, ईश्वर के संतान, पुरुष और स्त्री दोनों, समान प्राणी हैं, जिन्हें उनकी सांसारिक ईश्वर के प्रति निष्ठा के आधार पर जिम्मेदारियां और अधिकार सौंपे जाते हैं; एक स्तर पर, उन्हें सभी को पुत्रों के रूप में माना जाता है (मत्ती 5:9; लूका 20:34–36; रोम 8:14, 19; गल 3:26)।

Oneness: Extreme Intimacy with God & One Another
एकताः ईश्वर और एक–दूसरे के साथ अत्यंत घनिष्ठता

And not concerning these alone (immediate disciples) am I asking, but even concerning those *who are and will be trusting in me* through their word/message, in order that all of them *may be "one"*[185] just as you, Father, are *in/with* me and I am *in/with* you, in order that even they may be *in/with* us, with the result that the world may believe that you sent me. And the *glory* that you have given to me, I have given to them in order that they may be "one" just as we are "one": I in them and you in me in order that they may be made complete (perfected) into "one" with the result that the world may know that you sent me and that *you love them just as you love me*." John 17:20-23

मैं केवल इन्हीं (निकटतम शिष्यों) के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब "एक"[185] हों। जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी "हम" में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। और

[185] The Greek word *hen* is being translated into the English "one" for all cases in John 17:20-23. ग्रीक शब्द हैन को यूहन्ना 17:20–23 में सभी स्थानों पर अंग्रेजी में "एक" के रूप में अनुवादित किया जा रहा है।

> वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही "एक" हों जैसे की हम "एक" हैं। मैं उन में और तू मुझ में कि वे (सिद्ध) होकर "एक" हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा।" यूहन्ना 17:20–23

The night prior to Jesus' crucifixion, He prayed aloud to His Heavenly Father allowing everyone to know that He was asking that His eternal holy brothers and sisters have the same close unity with Him, His Father, and one another that He had always had with His Father. Jesus started this part of His prayer saying, "And not concerning these alone (immediate disciples) am I asking, but even concerning those ***who are and will be trusting*** in me through their word/message [John 17:20]."

यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की पूर्व रात्रि में, उन्होंने अपने स्वर्गीय पिता से जोर से प्रार्थना की, जिससे सभी को पता चला कि वे प्रार्थना कर रहे थे कि उनके शाश्वत पवित्र भाई–बहन उनके साथ, उनके पिता और एक–दूसरे के साथ वही घनिष्ठ एकता रखें जो उन्होंने हमेशा अपने पिता के साथ रखी थी। यीशु ने अपनी इस प्रार्थना के इस भाग को शुरू करते हुए कहा, "मैं न केवल इनके (निकटतम शिष्यों) लिए प्रार्थना कर रहा हूँ, बल्कि उन लोगों के लिए भी जो उनके वचन/संदेश के माध्यम से मुझ पर विश्वास करते हैं और करेंगे (यूहन्ना 17:20)।"

When Jesus started this portion of His prayer, asking on behalf of all people who learn to trust Him, He is helping us understand that through Their Creation, His requested ***godly unity*** for God's expanded holy family is open for all who learn to trust and listen obediently to Him and the Father.

जब यीशु ने अपनी प्रार्थना का यह हिस्सा शुरू किया, जिसमें उन्होंने उन सभी लोगों की ओर से प्रार्थना की जो उन पर विश्वास करना सीखते हैं, तो वे हमें यह समझाने में मदद कर रहे हैं कि उनकी सृष्टि के माध्यम से, ईश्वर के विस्तारित पवित्र परिवार के लिए उनकी मांगी गई ईश्वरीय एकता उन सभी के लिए खुली है जो उन पर और पिता पर विश्वास करना और आज्ञाकारी रूप से सुनना सीखते हैं।

Jesus continued praying, "in order that all of them may be one just as you, Father, are in/with me and I am in/with you, in order that even they may be in/with us, with the result that the world may believe that you sent me [John 17:21]." When Jesus prayed that all present and future disciples may be "one," a close godly unity,[186] with God and one

---

[186] Greek: *hen*, "a close unity." ग्रीकः हैन, "एक घनिष्ठ एकता।"

another, He illuminates what it means to be saved and have eternal life with God. Jesus prayed for all who would learn to trust and obey Him out of love[187] to be united in the same special way to His Heavenly Father that He is.[188]

यीशु ने प्रार्थना जारी रखी, "ताकि वे सब एक हों, जैसे तू, हे पिता, मुझ में/के साथ है और मैं तुझ में/के साथ हूँ, ताकि वे भी हम में/के साथ हों, जिसके परिणामस्वरूप संसार विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है (यूहन्ना 17:21)।" जब यीशु ने प्रार्थना की कि सभी वर्तमान और भविष्य के शिष्य "एक" हों, एक घनिष्ठ ईश्वरीय एकता[186] परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ, तो उन्होंने यह प्रकाशित किया कि उद्धार प्राप्त करना और परमेश्वर के साथ अनंत जीवन प्राप्त करना क्या है। यीशु ने उन सभी के लिए प्रार्थना की जो प्रेम से उन पर भरोसा करना[187] और आज्ञा मानना सीखेंगे, ताकि वे अपने स्वर्गीय पिता के साथ उसी विशेष एकता में हों, जो उनके पास है।[188]

When we look to God's Word for a better understanding of "oneness/godly unity," we are reminded that God said, "Let us make Adam in our image according to our likeness." The Father, Son, and Holy Spirit's unity is so close that Israel considered their God, which was written in the plural form, "our gods," as "one" entity, one triune God.[189] ***Jesus was praying that all who ever learn to love, trust, and obey God would have the same close unity that He has always had with the Father, which includes God's children being loved by the Father just as He is***.

जब हम "एकता/ईश्वरीय एकता" की बेहतर समझ के लिए परमेश्वर के वचन की ओर देखते हैं, तो हमें याद आता है कि परमेश्वर ने कहा, "आओ, हम आदम को अपनी छवि में, अपनी समानता के अनुसार बनाएं।" पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की एकता इतनी घनिष्ठ है कि इस्राएल ने अपने परमेश्वर को, जो बहुवचन रूप में लिखा गया था, "हमारा परमेश्वर," "एक" ही सत्ता, एक त्रिएक परमेश्वर के रूप में माना।[189] यीशु प्रार्थना कर रहे थे कि जो कोई भी परमेश्वर से प्रेम करना, भरोसा करना और आज्ञा मानना सीखेगा, उसे वही घनिष्ठ एकता प्राप्त हो जो उनके पास हमेशा से पिता के साथ रही है, जिसमें परमेश्वर के बच्चों को पिता द्वारा वैसे ही प्रेम किया जाना शामिल है जैसे वह प्रेम करता है।

---

[187] John 14:15, 21, 23. यूहन्ना 14:15, 21, 23.

[188] cf. John 10:30; 17:5. देखें यूहन्ना 10:30; 17:5।

[189] Hebrew: *eḥad*, "one" entity, one god. हिब्रू: एहद, "एक" इकाई, एक परमेश्वर.

Jesus Shares His Glory
यीशु अपनी महिमा साझा करते हैं

Jesus finished this part of His prayer saying, "And the *glory* that you have given to me, I have given to them in order that they may be "one" *just as we are "one";* I in them and you in me in order that they may be made complete (perfected) into "one" with the result that the world may know that you sent me and that *you love them just as you love me*."
John 17:22-23[190]

यीशु ने अपनी प्रार्थना का यह हिस्सा समाप्त करते हुए कहा, "और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही "एक" हों जैसे की हम "एक" हैं। मैं उन में और तू मुझ में कि वे (सिद्ध) होकर "एक" हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा।" यूहन्ना 17:22–23[190]

This passage gives us the clearest meaning of what our finalized relationship will be like with the Father, Son, Holy Spirit, and one another. We come to understand that God's Crown Jewel of the Creation, His eternal holy Family, will have a godly unity based on sharing Jesus' glory, which includes His sinless love. Jesus was filled with great joy as He looked forward to providing total sin removal through His atoning death the next day for all people throughout the entire Creation who learn to trust and obey Them out of a developing love (John 17:13). God's timeless love is clearly portrayed through His creative work at the Cross.

यह पाठ हमें सबसे स्पष्ट अर्थ देता है कि पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा और एक–दूसरे के साथ हमारा अंतिम संबंध कैसा होगा। हम यह समझते हैं कि सृष्टि के परमेश्वर का मुकुट रत्न, उनका अनंत पवित्र परिवार, यीशु की महिमा को साझा करने पर आधारित एक ईश्वरीय एकता रखेगा, जिसमें उनका निष्पाप प्रेम शामिल है। यीशु बहुत आनंद से भरे हुए थे क्योंकि वे अगले दिन अपने प्रायश्चितकारी मृत्यु के माध्य म से समस्त सृष्टि के उन सभी लोगों के लिए पूर्ण पाप–निवारण प्रदान करने की आशा कर रहे थे, जो प्रेम के विकास के साथ उन पर भरोसा करना और आज्ञा मानना सीखते हैं (यूहन्ना 17:13)। परमेश्वर का

---

[190] Greek *hen,* is being translated as "one"; cf. John 14:19-21. ग्रीक शब्द हैन को "एक" के रूप में अनुवाद किया जा रहा है; देखें यूहन्ना 14:19–21।

कालातीत प्रेम उनकी क्रूस पर रचनात्मक कार्य के माध्यम से स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है।

In order to make this godly relationship possible within God's eternal close-knit holy family, Jesus shares His glory with His brothers and sisters. Earlier in this prayer, we learned that Jesus asked that His disciples be protected under His Father's name thereby showing that His followers are ***an intimate part of God's eternal holy family*** (John 17:11b). In addition to this request, Jesus declared a powerful truth to encourage all who were trusting God throughout all time by illuminating the truth of their present and future relationship with God and one another.

परमेश्वर के अनंत घनिष्ठ पवित्र परिवार के भीतर इस ईश्वरीय संबंध को संभव बनाने के लिए, यीशु अपनी महिमा अपने भाइयों और बहनों के साथ साझा करते हैं। इस प्रार्थना में पहले, हमने सीखा कि यीशु ने प्रार्थना की कि उनके शिष्यों को उनके पिता के नाम के तहत संरक्षित किया जाए, जिससे यह दर्शाया गया कि उनके अनुयायी परमेश्वर के अनंत पवित्र परिवार का एक अंतरंग हिस्सा हैं (यूहन्ना 17:11इ)। इस अनुरोध के अतिरिक्त, यीशु ने एक शक्तिशाली सत्य घोषित किया ताकि सभी समय में परमेश्वर पर भरोसा करने वालों को, उनके वर्तमान और भविष्य के परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ संबंध की सच्चाई को उजागर करके, प्रोत्साहित किया जाए।

As we look at John 17:22, we see ***Jesus sharing His glory*** and thereby making it possible for those who will return God's love to come into His Father's household ***with the same unity that He has always had with His Father.*** The glory that Jesus is sharing with His followers stems from His relationship with the Father and His resulting character. Jesus is like His Father, who is full of grace and truth. As described in John 1:14, Jesus' glory is similar to His Father's glory as described in Exodus 33:18-19 and 34:6. Jesus' nature matches His Father's, who is full of grace and truth. It is Jesus' sonship ***and*** loving righteous character that accentuate His glory and attracts individuals to Him much more than His intellect and/or power. God's children will also have a godly character similar to Jesus'.

जब हम यूहन्ना 17:22 को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि यीशु अपनी महिमा साझा करते हैं और इस तरह उन लोगों के लिए संभव बनाते हैं जो परमेश्वर के प्रेम को लौटाएंगे, कि वे उनके पिता के घर में उसी एकता के साथ आएं जो उनके पास हमेशा से अपने पिता के साथ रही है। यीशु जो महिमा अपने अनुयायियों के साथ साझा कर रहे हैं, वह उनके पिता के साथ उनके संबंध और उनके परिणामी चरित्र से उत्पन्न होती है। यीशु अपने पिता के समान हैं, जो कृपा और सत्य से परिपूर्ण हैं। जैसा कि यूहन्ना 1:14 में वर्णित है, यीशु की महिमा उनके पिता की महिमा के समान है, जैसा कि निर्गमन 33:18–19

और 34:6 में वर्णित है। यीशु का स्वभाव उनके पिता के स्वभाव से मेल खाता है, जो कृपा और सत्य से परिपूर्ण है। यह यीशु का पुत्रत्व और प्रेमपूर्ण धार्मिक चरित्र है जो उनकी महिमा को उजागर करता है और लोगों को उनकी बुद्धि और/या शक्ति से कहीं अधिक आकर्षित करता है। परमेश्वर के बच्चे भी यीशु के समान एक ईश्वरीय चरित्र रखेंगे।

The very nature of Jesus' glory is easy to miss if we think only in terms of power. A major clue to the specific meaning of Jesus' shared glory within verse 22 can be deduced from the fact that Jesus is sharing His glory with ***all*** who follow Him from all ages ***with the result that its quality enables godly unity***. Gifts of the Spirit such as power, wisdom, knowledge, miracles, healing, proclamation, prophecy, and tongues would not in and of themselves help us form a perfect godly union and are not shared equally with all Christ's followers.[191]

यीशु की महिमा की प्रकृति को समझना आसान नहीं है यदि हम केवल शक्ति के संदर्भ में सोचते हैं। यूहन्ना 17:22 में यीशु की साझा की गई महिमा के विशिष्ट अर्थ का एक प्रमुख संकेत इस तथ्य से निकाला जा सकता है कि यीशु अपनी महिमा को सभी युगों के उन सभी लोगों के साथ साझा कर रहे हैं जो उनका अनुसरण करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप इसकी गुणवत्ता ईश्वरीय एकता को सक्षम बनाती है। आत्मा के वरदान जैसे शक्ति, बुद्धि, ज्ञान, चमत्कार, चंगाई, प्रचार, भविष्यवाणी, और विभिन्न भाषाएँ, अपने आप में हमें पूर्ण ईश्वरीय एकता बनाने में मदद नहीं करेंगे और न ही ये सभी मसीह के अनुयायियों के साथ समान रूप से साझा किए जाते हैं।[191]

The glory that Jesus is sharing with *all* of His student followers (disciples) *will enable* them in the future to live in perfect loving righteous (holy) unity with God and one another just as Jesus already lives in perfect godly unity with His Heavenly Father. Therefore, when Jesus said, "I have given them the glory that you have given me ***in order that they may be "one" as we are "one"*** [John 17:22]," we come to realize that in addition to sharing His moral nature, ***He gave up His exclusive position as the Father's only son.*** Jesus is sharing His ***sonship and His Father's nature of grace and truth*** with those who follow Him. We recognize that the very essence of Jesus' glory, which He shares with all Believers, is derived from His Father's nature and His position as an only son.

यीशु जो महिमा अपने सभी शिष्य अनुयायियों (शिष्यों) के साथ साझा कर रहे हैं, वह उन्हें भविष्य में परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ पूर्ण प्रेमपूर्ण धार्मिक (पवित्र) एकता में जीने में सक्षम बनाएगी, जैसा कि यीशु पहले से ही

---

[191] Acts 1:8; 1 Cor 12-13. प्रेरितों के काम 1:8; 1 कुरिन्थियों 12–13.

अपने स्वर्गीय पिता के साथ पूर्ण ईश्वरीय एकता में जीते हैं। इसलिए, जब यीशु ने कहा, "मैंने उन्हें वह महिमा दी है जो तूने मुझे दी है, ताकि वे 'एक' हों जैसे हम 'एक' हैं (यूहन्ना 17:22)," तो हम यह समझते हैं कि अपनी नैतिक प्रकृति को साझा करने के अलावा, उन्होंने पिता के एकमात्र पुत्र के रूप में अपनी विशेष स्थिति को भी छोड़ दिया । यीशु अपने पुत्रत्व और अपने पिता की कृपा और सत्य की प्रकृति को अपने अनुयायियों के साथ साझा कर रहे हैं। हम यह पहचानते हैं कि यीशु की महिमा का मूल सार, जिसे वह सभी विश्वासियों के साथ साझा करते हैं, उनके पिता की प्रकृति और एकमात्र पुत्र के रूप में उनकी स्थिति से प्राप्त होता है।

Imagine how that would have sounded to the people of the first century as they considered how much more important it would be to be the only son of the Most High God in comparison even to being the only son of their greatest leader, the Roman Emperor, which would be extremely important. If you lived in the first-century Mediterranean world and the Emperor had only one son, you would have had great respect for him considering both his present and future political positions.

कल्पना करें कि पहली शताब्दी के लोगों को यह सुनकर कैसा लगा होगा जब उन्होंने इस बात पर विचार किया कि सर्वोच्च परमेश्वर के एकमात्र पुत्र होने का महत्व, उनके सबसे महान नेता, रोमन सम्राट के एकमात्र पुत्र होने की तुलना में भी कितना अधिक महत्वपूर्ण होगा, जो कि अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। यदि आप पहली शताब्दी के भूमध्यसागरीय विश्व में रहते थे और सम्राट का केवल एक पुत्र होता, तो आप उसका बहुत सम्मान करते, यह देखते हुए कि उसकी वर्तमान और भविष्य की राजनीतिक स्थिति कितनी महत्वपूर्ण है।

It brought great joy to all who were listening to God in the first century when they heard that Jesus Christ, the only son of the Most High God, had given up His exclusive right of sonship and was sharing it with all who learned to trust and obey His Heavenly Father out of a growing love for Them. ***Jesus had made a way for all of the Father's obedient children to have perfect godly unity with Them and one another and be loved by the Father just as Jesus is loved! What a wonderful part of the Gospel Message!***

पहली शताब्दी में परमेश्वर की बात सुनने वाले सभी लोगों के लिए यह बहुत बड़ा आनंद लेकर आया जब उन्होंने सुना कि यीशु मसीह, सर्वोच्च परमेश्वर के एकमात्र पुत्र, ने अपनी विशेष पुत्रत्व की स्थिति को त्याग दिया और इसे उन सभी के साथ साझा कर रहे हैं जो उनके स्वर्गीय पिता पर बढ़ते प्रेम के साथ भरोसा करना और आज्ञा मानना सीखते हैं। यीशु ने पिता के सभी आज्ञाकारी बच्चों के लिए उनके और एक–दूसरे के साथ पूर्ण ईश्वरीय एकता प्राप्त करने और पिता द्वारा वैसे ही प्रेम किए जाने का मार्ग बना दिया, जैसे

यीशु को प्रेम किया जाता है! सुसमाचार के संदेश का यह कितना अद्भुत हिस्सा है!

Let's start implementing that godly unity now as we live out our physical lives helping people know God more fully and knowing that our godly unity will be perfected when we enter into God's presence. Our effort to live out godly unified lives will help many come to understand how good God really is and that He did send Jesus into our world as its savior. Godly actions coupled with godly unity produce a strong witness of God's love and grace toward all.

आइए, अब हम उस ईश्वरीय एकता को लागू करना शुरू करें, जैसा कि हम अपने शारीरिक जीवन में लोगों को परमेश्वर को और अधिक पूर्ण रूप से जानने में मदद करते हैं, यह जानते हुए कि हमारी ईश्वरीय एकता तब पूर्ण होगी जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करेंगे। ईश्वरीय एकीकृत जीवन जीने का हमारा प्रयास कई लोगों को यह समझने में मदद करेगा कि परमेश्वर वास्तव में कितने अच्छे हैं और उन्होंने यीशु को हमारे संसार के उद्धारकर्ता के रूप में भेजा था। ईश्वरीय कार्यों के साथ–साथ ईश्वरीय एकता परमेश्वर के प्रेम और कृपा का सभी के प्रति एक मजबूत गवाही उत्पन्न करती है।

Looking Closely at the Meaning of "One"
"एक" के अर्थ को गहराई से देखना

In the world of the Old Testament and in Jesus' day, the Hebrew word, "one," could mean a single entity, or a group of two or more people operating as a single entity.[192] During the four hundred years leading up to Jesus' ministry and during the first century of our present era, the Greek translation of the Hebrew word, "one," within the Septuagint–when referring to unity among God's people within the Old Testament–was consistently translated into a common Greek form (masculine, feminine, or neuter) of "one" depending on which form was needed for proper grammar.[193]

पुराने नियम के समय और यीशु के युग में, हिब्रू शब्द "एक" का अर्थ एकल सत्ता हो सकता था, या दो या अधिक लोगों का समूह जो एक सत्ता के रूप में कार्य करता हो।[192] यीशु के सेवकाई से पहले के चार सौ वर्षों के दौरान और हमारी वर्तमान युग की पहली शताब्दी में, पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों

---

[192] Hebrew word *eḥad*, "one." हिब्रू शब्द एहद, "एक।

[193] Greek masculine, feminine, or neuter forms of "one": *heis, mia, hen*. ग्रीक का पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, या नपुंसक रूप "एक" के लिएः हेइस, मिया, हेन।

के बीच एकता का उल्लेख करते समय, हिब्रू शब्द "एक" का ग्रीक अनुवाद, सेप्टुआजिंट में, लगातार एक सामान्य ग्रीक रूप (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, या नपुंसक) में "एक" के रूप में अनुवादित किया गया था, जो उचित व्याकरण के लिए आवश्यक रूप पर निर्भर करता था।[193]

We have already noted that when God created Adam and then Eve, they were created in Their image according to Their likeness (image and likeness of Us). We should note further that the Father, Son, and Holy Spirit were proclaimed to be "One" in Deuteronomy 6:4. This proclaims the "oneness/close unity" of the Father, Son, and Holy Spirit.

हम पहले ही देख चुके हैं कि जब परमेश्वर ने आदम और फिर हव्वा को बनाया, तो उन्हें उनकी छवि में और उनकी समानता के अनुसार बनाया गया (लिखा है, हमारी छवि और समानता)। हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि व्यवस्थाविवरण 6:4 में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को "एक" घोषित किया गया था। यह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की "एकता/घनिष्ठ एकता" को घोषित करता है।

After God created Adam and Eve as male and female, we see Him saying in Gen 2:24 that they will work together in a close godly unity that we call "marriage" expressed through the Hebrew language as "one" flesh.[194] The Hebrew "one" of Gen 2:24 is translated in the Greek Septuagint as "one" flesh just as it is written in New Testament Greek of Matt 19:5.[195]

परमेश्वर के आदम और हव्वा को नर और नारी के रूप में सृजित करने के बाद, हम देखते हैं कि उत्पत्ति 2:24 में वे कहते हैं कि वे एक घनिष्ठ ईश्वरीय एकता में एक साथ काम करेंगे, जिसे हम "विवाह" कहते हैं, और यह हिब्रू भाषा में "एक" देह के रूप में व्यक्त किया गया है।[194] उत्पत्ति 2:24 का हिब्रू "एक" शब्द ग्रीक सेप्टुआजिंट में "एक" देह के रूप में अनुवादित किया गया है, जैसा कि ग्रीक नए नियम के मत्ती 19:5 में लिखा गया है।[195]

We see from God's Word that when a man and woman commit to each other in godly unity (marriage), they are committing to work together as a close godly team versus agreeing to work together as two independent beings. They are agreeing to work together in a very close godly unity with genuine concern and overall love for each other.

हम परमेश्वर के वचन से देखते हैं कि जब एक पुरुष और एक स्त्री भक्तिपूर्ण एकता विवाह में एक दूसरे के प्रति समर्पित होते हैं तो वे दो स्वतंत्र

---

[194] Hebrew *eḥad*, "one." हिब्रू एहद, "एक.

[195] Hebrew: *eḥad*; Greek: *mian* both meaning "one." हब्रू: एहद; ग्रीकः मियां, दोनों का अर्थ "एक।"

व्यक्तियों की तरह साथ काम करने के लिए सहमत नहीं होते बल्कि एक निकट भक्तिपूर्ण टीम के रूप में साथ मिलकर कार्य करने का संकल्प लेते हैं। वे एक दूसरे के प्रति सच्ची चिंता और संपूर्ण प्रेम के साथ बहुत निकट की भक्तिपूर्ण एकता में मिलकर जीवन बिताने के लिए सहमत होते हैं।

As other scriptures are examined, we read in verses such as Judges 20:1, 8, 11, and 1 Sam 11:7 that when Israel was attacked by others, large numbers of men came out as "one" man[196] to overcome adversity and wrongdoing. This was translated in the Greek Septuagint as "one"[197] man. The men of Israel came out as a godly close-knit team working together to overcome their common enemies. There are other examples such as in Genesis 34:16 when Jacob's sons deceptively told Shechem and his father Hamor that if they and their people would become like Israel and circumcise their males they would all become "one" people allowing them to intermarry. The Septuagint translates this part as "one" race showing that "one" was used to show a desired close oneness (unity) and was translated accordingly into the same common Greek word expressing "one" or "oneness."

पदों की जैसे–जैसे जाँच की जाती है, हम न्याया 20:1, 8, 11 और 1 शमूएल 11:7 जैसे वचनों में पढ़ते हैं कि जब इस्राएल पर दूसरों द्वारा हमला किया गया, तो बड़ी संख्या में पुरुष "एक" पुरुष के रूप में विपत्ति और गलत कार्यों को दूर करने के लिए निकले।[196] इसे ग्रीक सेप्टुआजिंट में "एक" पुरुष के रूप में अनुवादित किया गया था।[197] इस्राएल के पुरुष एक घनिष्ठ ईश्वरीय टीम के रूप में एक साथ काम करने के लिए निकले ताकि अपने सामान्य शत्रुओं को परास्त कर सकें। अन्य उदाहरण भी हैं, जैसे कि उत्पत्ति 34:16 में, जब याकूब के पुत्रों ने शेकेम और उसके पिता हमोर को छल से कहा कि यदि वे और उनके लोग इस्राएल की तरह बन जाएँ और अपने पुरुषों का खतना कर लें, तो वे सभी "एक" लोग बन जाएँगे, जिससे उन्हें आपस में विवाह करने की अनुमति मिलेगी। सेप्टुआजिंट इस भाग को "एक" प्रजाति के रूप में अनुवादित करता है, जो दर्शाता है कि "एक" का उपयोग एक वांछित घनिष्ठ एकता (एकता) को दिखाने के लिए किया गया था और इसे उसी सामान्य ग्रीक शब्द में अनुवादित किया गया था जो "एक" या "एकता" को व्यक्त करता है।

As the Apostle John wrote to Gentiles in the common Greek of his day, it helps us understand Jesus' prayer for godly unity among His followers. We take note that John used the same Greek wording of the Septuagint corresponding to the Hebrew idea of "one/oneness." This

---

[196] Hebrew: *eḥad*, "one." हिब्रू: एहाद, "एक."

[197] Greek: *heis*, "one." ग्रीकः हेइस, "एक."

helps us to understand that Jesus prayed for us to share in the same godly unity that He always had with His Heavenly Father and would again share with Him after His Father raised Him from dead.[198]

जब प्रेरित यूहन्ना ने अपने समय की सामान्य ग्रीक में गैर–यहूदियों को लिखा, तो यह हमें यीशु की अपने अनुयायियों के बीच ईश्वरीय एकता के लिए प्रार्थना को समझने में मदद करता है। हम ध्यान देते हैं कि यूहन्ना ने सेप्टुआजिंट के उसी ग्रीक शब्द का उपयोग किया जो हिब्रू विचार "एक/एकता" के अनुरूप है। इससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि यीशु ने प्रार्थना की कि हम उसी ईश्वरीय एकता में हिस्सा लें जो उनके पास हमेशा अपने स्वर्गीय पिता के साथ थी और जो उनके पिता द्वारा मृतकों में से जीवित किए जाने के बाद फिर से उनके साथ साझा होगी।[198]

As John shared Jesus' prayer with others in the first century, they would have understand John to be saying that Jesus' death on a cross and the sharing of His glory would result in a godly unity for His followers that would eventually match Jesus' unity with His Heavenly Father. Through Jesus' prayer recorded in John 17, we have a clear understanding of how close we will be to God and one another at the end of the Creation in the New Heaven and on the New Earth.

जब यूहन्ना ने पहली शताब्दी में यीशु की प्रार्थना को दूसरों के साथ साझा किया, तो वे समझ गए होंगे कि यूहन्ना कह रहे हैं कि यीशु की क्रूस पर मृत्यु और उनकी महिमा का साझाकरण उनके अनुयायियों के लिए एक ऐसी ईश्वरीय एकता का परिणाम होगा जो अंततः यीशु की अपने स्वर्गीय पिता के साथ एकता के समान होगी। यूहन्ना 17 में दर्ज यीशु की प्रार्थना के माध्यम से, हमें यह स्पष्ट समझ मिलती है कि सृष्टि के अंत में, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर, हम परमेश्वर और एक–दूसरे के कितने निकट होंगे।

Through this same prayer, God's obedient children should also understand that they should experience some of this godly unity while living out their physical lives, which helps provide a great witness that **Jesus is the Sent Son of God;** this helps our lost World understand that God sent Jesus to die for ***all*** and loves His obedient children in the same way that He loves Jesus.[199] Let's all consider the Early Church as described in Acts and strive to follow Jesus closely showing some of our future perfected godly unity, which will in turn provide a better life for us now and a better witness to the world around us that God has the best way of life for all who listen to Him now and in the future.

---

[198] Acts 2:22-36. प्रेरितों के काम 2:22–36.

[199] John 17:23. यूहन्ना 17:23.

इस प्रार्थना के माध्यम से, परमेश्वर के आज्ञाकारी बच्चों को यह भी समझना चाहिए कि उन्हें अपने शारीरिक जीवन को जीते हुए इस ईश्वरीय एकता का कुछ अनुभव करना चाहिए, जो यह साक्षी देने में मदद करता है कि यीशु परमेश्वर का भेजा हुआ पुत्र है; इससे हमारे भटके हुए संसार को यह समझने में मदद मिलती है कि परमेश्वर ने यीशु को सभी के लिए मरने के लिए भेजा और वह अपने आज्ञाकारी बच्चों को उसी तरह प्रेम करता है जैसे वह यीशु से प्रेम करता है।[199] आइए, हम सभी प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णित प्रारंभिक कलीसिया पर विचार करें और यीशु का निकटता से अनुसरण करने का प्रयास करें, अपनी भविष्य की पूर्ण ईश्वरीय एकता को कुछ हद तक प्रदर्शित करते हुए, जो बदले में हमारे लिए अब बेहतर जीवन और हमारे आसपास के संसार के लिए एक बेहतर गवाही प्रदान करेगा कि परमेश्वर के पास उन सभी के लिए सर्वोत्तम जीवन शैली है जो अब और भविष्य में उसकी बात सुनते हैं।

All Are Equal: the Father Has No Favorites
सभी समान हैं: पिता का कोई पसंदीदा नहीं है।

There is neither Jew nor Greek;
there is neither slave nor freeman;
and there is not male *and* female;
because *all of you are "one"* [200]
through Christ Jesus. Gal 3:28

अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी;
न कोई दास, न स्वतंत्र;
न कोई नर, न नारी;
क्योंकितुम सब मसीह यीशु में "एक" हो।[200] गला 3:28

Jesus prayed that ***the children of God's eternal family would all be united in close godly unity***: they would be "one" (John 17:20-23). Paul used the same Greek root in Gal 3:28 as shown above. ***God does not have favorites*** (James 2:1-5). God has created each individual uniquely different emotionally and physically including such attributes as eye, hair, and skin color. ***Although He has created everyone with unique attributes, He wants all to work together in close godly unity*** (1 Cor 12). God's unbiased love encourages Jesus' followers to love all people equally (John 3:16; 2 Peter 3:9; 1 Tim 2:4; cf. 1 Cor 13).

यीशु ने प्रार्थना की कि परमेश्वर के अनंत परिवार के बच्चे सभी घनिष्ठ ईश्वरीय एकता में एकजुट हों: वे "एक" हों (यूहन्ना 17:20–23)। पौलुस

[200] The same Greek wording for unity as in John 17: *heis*, "one."
यूहन्ना 17 में एकता के लिए वही ग्रीक शब्द: हेइस, "एक"।

ने गलातियों 3:28 में उसी ग्रीक मूल शब्द का उपयोग किया, जैसा कि ऊपर दिखाया गया है। परमेश्वर पक्षपात नहीं करता (याकूब 2:1–5)। परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को भावनात्मक और शारीरिक रूप से अद्वितीय बनाया है, जिसमें आँखों, बालों और त्वचा का रंग जैसे गुण शामिल हैं। यद्यपि उसने प्रत्येक को अद्वितीय गुणों के साथ बनाया है, वह चाहता है कि सभी घनिष्ठ ईश्वरीय एकता में एक साथ काम करें (1 कुरिन्थियों 12)। परमेश्वर का निष्पक्ष प्रेम यीशु के अनुयायियों को सभी लोगों से समान रूप से प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित करता है (यूहन्ना 3:16; 2 पतरस 3:9; 1 तीमुथियुस 2:4; देखें 1 कुरिन्थियों 13)।

The moment that we fully receive Jesus Christ into our lives as our ***lord and savior***—which means turning our lives over to the potter, who is our Heavenly Father, so that He can finish the good work that He started in us—we begin to realize our father-only-son relationship. Once we are born from above, it is a done deal. Even in our present state of sin, we become our Father's justified children who are learning to be more and more like Jesus, who eventually will be completed in His likeness. God tells us that when we have been born of the Spirit, He places His Seed, which is the Holy Spirit into us (Eph 1:13-14). When we submit to God and His way, He begets us spiritually into His eternal family, and we can no longer **continually . . . continually . . . continually** sin.[201]

जिस क्षण हम यीशु मसीह को अपने जीवन में अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में पूर्ण रूप से स्वीकार करते हैं जिसका अर्थ है अपने जीवन को उस कुम्हार, जो हमारा स्वर्गीय पिता है, के हवाले कर देना, ताकि वह हम में शुरू किया गया अच्छा कार्य पूरा कर सके हम अपने पिता–एकल–पुत्र संबंध को समझने लगते हैं। एक बार जब हम ऊपर से जन्म लेते हैं, तो यह तय हो जाता है। हमारी वर्तमान पापमय स्थिति में भी, हम अपने पिता के धर्मी बच्चे बन जाते हैं जो यीशु के समान और अधिक बनना सीख रहे हैं, और जो अंततः उनकी समानता में पूर्ण होंगे। परमेश्वर हमें बताता है कि जब हम आत्मा से जन्म लेते हैं, तो वह अपने बीज, जो पवित्र आत्मा है, को हम में डाल देता है (इफिसियों 1:13–14)। जब हम परमेश्वर और उनके मार्ग के प्रति समर्पण करते हैं, तो वह हमें आध्यात्मिक रूप से अपने अनंत परिवार में जन्म देता है, और हम अब लगातार... लगातार... लगातार पाप नहीं कर सकते।[201]

As soon as we are born a second time, this time with the Holy Spirit uniting with us forever within the Family of God, our walk with God starts improving and will continue to improve over time. This helps the World see God's goodness and His great rewarding way of life more fully.

---

[201] 1 John 3:9. 1 यूहन्ना 3:9.

जैसे ही हम दूसरी बार जन्म लेते हैं, इस बार पवित्र आत्मा के साथ जो परमेश्वर के परिवार में हमेशा के लिए हमारे साथ एकजुट होता है, हमारा परमेश्वर के साथ चलना सुधरने लगता है और समय के साथ और बेहतर होता जाएगा। इससे संसार को परमेश्वर की भलाई और उनके महान पुरस्कृत जीवन मार्ग को और अधिक पूर्ण रूप से देखने में मदद मिलती है।

The loving righteous nature and close godly unity between the Father and the Son makes it possible to know Both by simply knowing Jesus: when you know Jesus, you also know the Father through Jesus' nature.[202] Where Jesus' followers are, Jesus and the Father are. Jesus introduces us to a third individual who is united perfectly to the Father and Him, the Spirit of Truth. If you know Jesus, you know the Father. If the Spirit of Truth lives in you, the Father and Jesus live in you through the Holy Spirit.[203]

पिता और पुत्र के बीच प्रेमपूर्ण धार्मिक प्रकृति और घनिष्ठ ईश्वरीय एकता दोनों को जानना संभव बनाती है केवल यीशु को जानकरः जब आप यीशु को जानते हैं, तो आप यीशु की प्रकृति के माध्यम से पिता को भी जानते हैं।[202] यीशु के अनुयायी जहाँ हैं, वहाँ यीशु और पिता भी हैं। यीशु हमें एक तीसरे व्यक्ति से परिचय कराते हैं जो पिता और उनके साथ पूर्ण रूप से एकजुट है, सत्य का आत्मा। यदि आप यीशु को जानते हैं, तो आप पिता को जानते हैं। यदि सत्य का आत्मा आपके अंदर रहता है, तो पिता और यीशु पवित्र आत्मा के माध्यम से आपके अंदर रहते हैं।[203]

The world continues to hear the Gospel from the Father and the Son through Jesus' obedient followers who are assisted by the Spirit of Truth, who is dwelling in them. The Father and the Son ***working together in perfect unity*** have sent the Spirit of Truth, the Holy Spirit, to comfort and guide all of Jesus' followers. This is similar to the way that the Father had sent the Holy Spirit to help Jesus during His earthly ministry (Matt 3:16-17; 4:1; John 8:29; 9:3; 16:32; cf. Isa 11:2; 61:1). When Jesus asked the Father to give His disciples a comforter to replace His physical presence,[204] ***He was making this special Father-only-Son relationship start immediately for all of His disciples through the indwelling and empowering of the Holy Spirit*** (Acts 1:8; Eph 1:13-14; cf. John 16:7).

---

[202] John 14:7-11; Heb 1:3. यूहन्ना 14:7–11; इब्रा 1:3.

[203] John 14:23; Matt 25:40; Acts 9:4. यूहन्ना 14:23; मत्ती 25:40; प्रेरितों 9:4.

[204] John 14:16-17; 16:13. यूहन्ना 14:16–17; 16:13.

संसार पिता और पुत्र से सुसमाचार सुनना जारी रखता है, यीशु के आज्ञाकारी अनुयायियों के माध्यम से, जिन्हें सत्य के आत्मा का सहारा मिलता है, जो उनमें वास करता है। पिता और पुत्र, पूर्ण एकता में एक साथ काम करते हुए, ने सत्य के आत्मा, पवित्र आत्मा को भेजा है, ताकि वह यीशु के सभी अनुयायियों को सांत्वना दे और उनका मार्गदर्शन करे। यह उसी तरह है जैसे पिता ने यीशु के सांसारिक सेवकाई के दौरान उनकी सहायता के लिए पवित्र आत्मा को भेजा था (मत्ती 3:16–17; 4:1; यूहन्ना 8:29; 9:3; 16:32; तुलना करें यशायाह 11:2; 61:1)। जब यीशु ने पिता से अपने शिष्यों को उनकी शारीरिक उपस्थिति के स्थान पर एक सांत्वनादाता देने के लिए कहा,[204] तो उन्होंने इस विशेष पिता–मात्र–पुत्र संबंध को तुरंत सभी शिष्यों के लिए शुरू किया, पवित्र आत्मा के वास और सामर्थ्य के माध्यम से (प्रेरितों 1:8; इफिसियों 1:13–14; तुलना करें यूहन्ना 16:7)।

Early Church Understanding
प्रारंभिक कलीसिया की समझ

How did the Early Church understand the idea of Emmanuel, "God with us," and the godly unity that God desires for His children? Satan has been at work from the beginning of the Creation to keep as many people as possible from drawing close to God. But, he works even harder against those who start paying attention to God's invitation to join His eternal close loving righteous family. In his studies, Constantine Scouteris discovered that the Early Church Fathers had a sound understanding of God's desired closeness through the apostles teachings on Christ.[205]

प्रारंभिक कलीसिया ने इम्मानुएल, "परमेश्वर हमारे साथ," और परमेश्वर की अपने बच्चों के लिए इच्छित ईश्वरीय एकता के विचार को कैसे समझा? शैतान सृष्टि की शुरुआत से ही कार्यरत रहा है ताकि जितना संभव हो उतने लोगों को परमेश्वर के करीब आने से रोका जाए। लेकिन, वह उन लोगों के खिलाफ और भी कठिन परिश्रम करता है जो परमेश्वर के निमंत्रण पर ध्यान देना शुरू करते हैं कि वे उनके अनंत घनिष्ठ प्रेमपूर्ण धार्मिक परिवार में शामिल हों।

---

[205] Constantine Scouteris, "The People of God-Its Unity and Its Glory: A Discussion of John 17:17-24 in the Light of Patristic Thought," *The Greek Orthodox Theological Review* 30, no. 4 (Winter 1985): 399-414. कॉन्स्टेंटाइन स्काउटेरिस, "परमेश्वर के लोगकृइसकी एकता और इसकी महिमाः प्राचीन पितृसत्तात्मक विचार के प्रकाश में यूहन्ना 17:17–24 की चर्चा," द ग्रीक ऑर्थोडॉक्स थियोलॉजिकल रिव्यू 30, नंबर 4 (शीतकाल 1985): 399–414।

अपने अध्ययनों में, कॉन्स्टेंटाइन स्काउटेरिस ने पाया कि प्रारंभिक कलीसिया के संरक्षकों को प्रेरितों के द्वारा मसीह के बारे में जो शिक्षा दी जाती थी शिक्षाओं के उसके माध्यम से परमेश्वर की इच्छित निकटता की ठोस समझ थी।[205]

Regarding Jesus' prayer for unity among Believers, Scouteris stated that the New Testament presents Jesus' followers with the possibility of realizing that ***Christ's communion (fellowship/unity) removes in the most radical way any worldly communion***. Christ's communion is the creation of a new relationship, a relationship involving God and Jesus' disciples. He went on to say that John 17 has two major themes: (1) the godly unity desired by Jesus for His followers is not only for His immediate disciples ***but also for all future disciples*** who will learn to trust Jesus through apostolic teaching and proclamation; and (2) all disciples participate in Jesus' divine glory. Scouteris wrote that these two points became a solid foundation for understanding God and His desired unity (p. 401).

यीशु की विश्वासियों के बीच एकता के लिए प्रार्थना के संबंध में, स्काउटेरिस ने कहा कि नया नियम यीशु के अनुयायियों को इस संभावना के साथ प्रस्तुत करता है कि मसीह का संनाद (सहभागिता/एकता) किसी भी सांसारिक संनाद को सबसे कट्टरपंथी तरीके से हटा देता है। मसीह का संनाद एक नया संबंध बनाता है, एक ऐसा संबंध जिसमें परमेश्वर और यीशु के शिष्य शामिल हैं। उन्होंने आगे कहा कि यूहन्ना 17 में दो प्रमुख विषय हैं: (1) यीशु द्वारा अपने अनुयायियों के लिए इच्छित ईश्वरीय एकता न केवल उनके तत्काल शिष्यों के लिए है, बल्कि उन सभी भविष्य के शिष्यों के लिए भी है जो प्रेरितों की शिक्षा और प्रचार के माध्यम से यीशु पर भरोसा करना सीखेंगे; और (2) सभी शिष्य यीशु की दिव्य महिमा में भाग लेते हैं। स्काउटेरिस ने लिखा कि ये दो बिंदु परमेश्वर और उनकी इच्छित एकता को समझने के लिए एक ठोस आधार बन गए (पृ. 401)।

From Ignatius' letter to the Philadelphians written around A.D. 107, Scouteris concluded that a radical change had occurred for God's children after Jesus' ascension: their focus had moved from a subject-object relationship to one of ***participation*** with God (p. 403). God had made a way through Jesus' atoning death for a closer relationship. In Origen's (A.D. 185-254) work titled *De Principiis*, one sees Origen teaching both the future perfection into a divine likeness and unity that Jesus had prayed for (3.6.1) and a present practical unity that expresses itself in Jesus' followers being like-minded in godly unity (1.6.2).

इग्नाटियस के फिलाडेल्फियनों को लिखे पत्र से, जो लगभग 107 ईस्वी में लिखा गया था, स्काउटेरिस ने निष्कर्ष निकाला कि यीशु के स्वर्गारोहण के बाद परमेश्वर की संतानों के लिए एक क्रांतिकारी परिवर्तनहुआ था: उनका ध्यान विषय–वस्तु संबंध से हटकर परमेश्वर के साथ सहभागिता के संबंध पर केंद्रित

हो गया था (पृ. 403)। परमेश्वर ने यीशु कीप्रायश्चितकारी मृत्यु के माध्यम से एक निकटतर संबंध का मार्ग बनाया था। ओरिजन (185–254 ईस्वी) के डे प्रिन्सिपियस में, हम देखते हैं कि ओरिजन यीशु द्वारा प्रार्थना की गई भविष्य की पूर्णता, दिव्य समानता और एकता (3.6.1) के साथ–साथ वर्तमान व्यावहारिक एकता की शिक्षा दे रहे हैं, जो यीशु के अनुयायियों के एक समान सोच और ईश्वरीय एकता में व्यक्त होती है (1.6.2)।

In light of our early Greek Fathers, Scouteris sees God the Father as an accessible divine person who generates the Son and causes the Holy Spirit to go forth establishing a unique unity within the Father's kingdom. The Father has given of His divine essence to the Son and Holy Spirit, and in return they respond in freedom and love with absolute obedience to the Father's will (p. 405-06). He noted that the Early Church Fathers could now promote unity of God's people through the unifying force of Jesus Christ. In the person of Jesus, all divisions among God's children were abolished (p. 407).

प्रारंभिक ग्रीक पितृपुरुष के प्रकाश में, स्काउटेरिस परमेश्वर पिता को एक सुलभ दिव्य व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो पुत्र को उत्पन्न करते हैं और पवित्र आत्मा को आगे बढ़ाने का कारण बनते हैं, जिससे पिता के राज्य के भीतर एक अद्वितीय एकता स्थापित होती है। पिता ने अपने दिव्य सारतत्व को पुत्र और पवित्र आत्मा को दिया है, और बदले में वे स्वतंत्रता और प्रेम के साथ पिता की इच्छा के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देते हैं (पृ. 405–06)। उन्होंने उल्लेख किया कि प्रारंभिक कलीसिया के पितृपुरुष अब यीशु मसीह की एकजुट करने वाली शक्ति के माध्यम से परमेश्वर के लोगों की एकता को बढ़ावा दे सकते थे। यीशु के व्यक्तित्व में, परमेश्वर की संतानों के बीच सभी विभाजन समाप्त हो गए थे (पृ. 407)।

Scouteris went on to discuss Gregory of Nyssa's (A.D. 330-95) teachings regarding the divided nature of each individual due to sin derived from self-centeredness. This divided nature due to sin deprived mankind of any possibility of living in godly fellowship with God or others. But, Jesus' self-sacrifice has the potential of reestablishing God's original desired harmony bringing those who listen back into a perfect unity with Him and others (p. 411). By becoming a real man with a concrete human nature, Jesus, who was of the same nature as our Heavenly Father, took on the nature of humanity and transferred godly unity to the human level enabling the unity that Jesus prayed for all of His followers (p. 414).

स्काउटेरिस ने ग्रेगरी ऑफ निस्सा (330–395 ईस्वी) की शिक्षाओं पर चर्चा की, जो स्वार्थ से उत्पन्न पाप के कारण प्रत्येक व्यक्ति की विभाजित प्रकृति के बारे में थीं। पाप के कारण यह विभाजित प्रकृति मानवजाति को परमेश्वर या दूसरों के साथ ईश्वरीय सहभागिता में जीने की किसी भी संभावना से वंचित

करती थी। लेकिन, यीशु के आत्म–बलिदान में परमेश्वर की मूल इच्छित सामंजस्य को पुनः स्थापित करने की क्षमता है, जो उन लोगों को जो सुनते हैं, उनके साथ और दूसरों के साथ पूर्ण एकता में वापस लाती है (पृ. 411)। एक वास्तविक मानव बनकर, जिसमें ठोस मानव प्रकृति थी, यीशु, जो हमारे स्वर्गीय पिता की समान प्रकृति के थे, ने मानव प्रकृति को ग्रहण किया और ईश्वरीय एकता को मानव स्तर पर स्थानांतरित कर दिया, जिससे वह एकता सक्षम हुई जिसके लिए यीशु ने अपने सभी अनुयायियों के लिए प्रार्थना की थी (पृ. 414)।

Having studied the terminology of being "in" the Father and being "in" Christ from a first-century Mediterranean perspective, C. H. Dodd came to the conclusion that individuals living in the first-century Mediterranean world would have understood this type of wording to denote a unity that transcends human unity, a close godly unity.[206] He said that Jesus' prayer shows a completed picture of unity for the Father, Son, and the Son's followers with love being the key. ***It is love*** that leads Jesus' disciples to obey His commands just as He obeys His Heavenly Father's commands out of love for Him.[207] The idea of "God in us" represents the most intimate union conceivable between God and man.[208]

पहली सदी के भूमध्यसागरीय दृष्टिकोण से "पिता में" और "मसीह में" होने की शब्दावली का अध्ययन करने के बाद, सी. एच. डोड ने निष्कर्ष निकाला किपहली सदी के भूमध्यसागरीय विश्व में रहने वाले लोग इस प्रकार की शब्दावली को एक ऐसी एकता के रूप में समझते थे जो मानवीय एकता से परे, एक गहन ईश्वरीय एकता को दर्शाती है।[206] उन्होंने कहा कि यीशु की प्रार्थना पिता, पुत्र और पुत्र के अनुयायियों के लिए एक पूर्ण एकता की तस्वीर प्रस्तुत करती है, जिसमें प्रेम प्रमुख है। यह प्रेम ही है जो यीशु के शिष्यों को उनकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रेरित करता है, जैसे कि यीशु अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञाओं का पालन प्रेम के कारण करते हैं।[207] "ईश्वर हम में" की अवधारणा ईश्वर और मनुष्य के बीच सबसे गहन एकता को दर्शाती है, जो कि कल्पनाशील है।[208]

---

[206] C. H. Dodd, *The Interpretation of the Fourth Gospel* (New York: Cambridge University Press, 1953, reprint 1958), 187-200; cf. John 14:20. सी. एच. डोड, द इंटरप्रिटेशन ऑफ द फोर्थ गोस्पेल (न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1953, पुनर्मुद्रण 1958), 187–200; देखें यूहन्ना 14:20।

[207] p. 196. पेज 196.

[208] p. 197. पेज 197.

God's Grace & Creation Are Hard To Believe
ईश्वर की कृपा और सृष्टि पर विश्वास करना कठिन है

The Gospel, "Good News" message brings *such good news* that many are afraid that it cannot possibly be true. But, it is true, and it is ***never too late*** to receive Jesus Christ into one's life as one' personal lord and savior. When one makes a conscious heart-felt acknowledgment of repentance of his or her sins and receives Jesus into his or her heart as lord as well as savior, it is known by the Father, who ***immediately reconciles*** that person to Himself as one of His sons with the same inheritance as Jesus. Eventually, when all sin is removed, the children of God will experience a close godly unity that initially was only experienced by the Father, Son, and Holy Spirit.[209] The Father receives ***all*** who follow Jesus as His eternal holy children ***with all the rights of Jesus, His son***, not as His servants (Gal 4:7). In fact, Jesus not only calls His followers "brothers" but also "friends [John 15:12-15]." Being loved as a family member and as a friend produces the highest level of godly love and unity possible.

"शुभ समाचार" का संदेश इतना अच्छा समाचार लाता है कि कई लोगों को डर है कि यह संभवतः सत्य नहीं हो सकता। लेकिन, यह सत्य है, और यीशु मसीह को अपने जीवन में व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने में कभी देर नहीं होती। जब कोई व्यक्ति अपने पापों के लिए हृदय से पश्चाताप को सचेत स्वीकार करता है और यीशु को अपने हृदय में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता है, तो यह पिता को ज्ञात होता है, जो तुरंत उस व्यक्ति को अपने पुत्रों में से एक के रूप में स्वीकार करता है, जिसे यीशु के समान विरासत प्राप्त होती है। अंततः, जब सारा पाप हटा लिया जाएगा, तो परमेश्वर के बच्चे उस गहन ईश्वरीय एकता का अनुभव करेंगे जो प्रारंभ में केवल पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा द्वारा अनुभव की गई थी।[209] पिता यीशु के सभी अनुयायियों को अपने शाश्वत पवित्र बच्चों के रूप में स्वीकार करता है, जिन्हें उसके पुत्र यीशु के समान सभी अधिकार प्राप्त हैं, न कि सेवकों के रूप में (गलातियों 4:7)। वास्तव में, यीशु अपने अनुयायियों को न केवल "भाई" बल्कि "मित्र" भी कहता है (यूहन्ना 15:12–15)। परिवार के सदस्य और मित्र के रूप में प्रेम किए जाने से उच्चतम स्तर की ईश्वरीय प्रेम और एकता उत्पन्न होती है जो संभव है।

Are you getting a little nervous because God is calling as many as will receive Him on His terms into His close intimate holy family?

---

[209] John 17:20-23. यूहन्ना 17:20–23.

Being part of God's intimate eternal loving righteous family places one into a mutually close relationship with the Father. It sounded like heresy to Israel's religious leaders in the first-century when Jesus told them that He was God's son, because by proclaiming to be His Heavenly Father's son, He was proclaiming to be a member of God's immediate family. He had made Himself equal in family membership to the Father (John 5:18).

क्या आप थोड़ा घबरा रहे हैं क्योंकि परमेश्वर उन सभी को अपनी शर्तों पर अपनी निकटतम पवित्र परिवार में बुला रहे हैं जो उन्हें स्वीकार करेंगे? परमेश्वर के निकटतम शाश्वत प्रेमपूर्ण धार्मिक परिवार का हिस्सा होने से व्यक्ति का पिता के साथ एक परस्पर निकट संबंध स्थापित होता है। पहली सदी में इज़राइल के धार्मिक नेताओं को यह विधर्म जैसा लगा जब यीशु ने उन्हें बताया कि वह परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि अपने स्वर्गीय पिता का पुत्र होने की घोषणा करके, वह परमेश्वर के निकटतम परिवार का सदस्य होने की घोषणा कर रहा था। उसने स्वयं को परिवार की सदस्यता में पिता के समान बना लिया था (यूहन्ना 5:18)।

Does it look like the deeper we dig, the more we have taken away from God's glory by our up-and-coming mature close interactive relationship with Him? The answer is an emphatic "***no***." In reality, the deeper we look, the more we realize how loving and gracious our Heavenly Father is in working with us through His Creation even in our sinful and sometimes hostile states. Knowing that we are far from perfect makes it difficult to accept that God's Creation is headed toward a pure sinless loving interactive relationship with Him. But, this is where God's Creation is heading for all who want to be part of His holy family and receive Him as their leader striving to live out their lives according to His loving righteous way of life.[210]

ऐसा लगता है कि जितना गहरा हम खोजते हैं, उतना ही हम परमेश्वर की महिमा को अपने उभरते हुए परिपक्व और निकट संवादात्मक संबंध से कम कर रहे हैं? इसका उत्तर है एक स्पष्ट "नहीं।" वास्तव में, जितना गहरा हम देखते हैं, उतना ही हमें एहसास होता है कि हमारा स्वर्गीय पिता कितना प्रेमपूर्ण और कृपालु है जो हमसे अपनी सृष्टि के माध्यम से हमारे पापपूर्ण और कभी–कभी शत्रुतापूर्ण अवस्थाओं में भी कार्य करता है। यह जानते हुए कि हम पूर्णता से बहुत दूर हैं, यह स्वीकार करना कठिन हो जाता है कि परमेश्वर की सृष्टि उसके साथ एक शुद्ध, पापरहित, प्रेमपूर्ण संवादात्मक संबंध की ओर बढ़ रही है। लेकिन, यही वह दिशा है जिसमें परमेश्वर की सृष्टि उन सभी के लिए बढ़ रही है जो उसके पवित्र परिवार का हिस्सा बनना चाहते हैं और उसे अपने

[210] Rom 5:1-5; 1 John 2:28. रोमियों 5:1–5; 1 यूहन्ना 2:28.

अगुवे के रूप में स्वीकार करते हैं, जो उसके प्रेमपूर्ण धार्मिक जीवन शैली के अनुसार अपने जीवन को जीने का प्रयास करते हैं।[210]

God's planned perfect mutually-interactive relationship within His eternal family leaves ***nothing to separate us from Him*** in the future when all sin is removed. All of the walls/barriers that sin produces will have been torn down allowing for perfect godly unity among all members of God's eternal holy family.

परमेश्वर का नियोजित पूर्ण परस्पर–संनादात्मक संबंध उनके शाश्वत परिवार के भीतर भविष्य में हमें उनसे अलग करने के लिए कुछ भी नहीं छोड़ता, जब सारा पाप हटा लिया जाएगा। पाप द्वारा उत्पन्न सभी दीवारें/अवरोध नष्ट हो जाएंगे, जिससे परमेश्वर के शाश्वत पवित्र परिवार के सभी सदस्यों के बीच पूर्ण ईश्वरीय एकता संभव हो सकेगी।

Let's faithfully follow Jesus knowing that God will finish His fantastically good Creation keeping our eyes on Jesus, who is our great eldest brother. With the Father's help and looking to Jesus for leadership, Jesus' followers can have great confidence that in the not-to-distant future, they too will have a very close godly unity with God and one another based on godly unbiased love, which produces godly righteousness, grace, and truth within the members of God's eternal holy family. While we journey with God through this part of eternity, let's all strive to show more of God's unity within our local churches and around the world. This will produce a more fulfilling life now along with a greater witness to the world as we declare the goodness of God through our godly actions as well as His words.

आइए हम विश्वासपूर्वक यीशु का अनुसरण करें, यह जानते हुए कि परमेश्वर अपनी अद्भुत रूप से अच्छी सृष्टि को पूरा करेंगे, हमारी नजरें यीशु पर टिकी रहें, जो हमारे महान ज्येष्ठ भाई हैं। पिता की सहायता और यीशु के नेतृत्व की ओर देखते हुए, यीशु के अनुयायी इस बात में बहुत विश्वास रख सकते हैं कि निकट भविष्य में, वे भी परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ एक बहुत निकट ईश्वरीय एकता प्राप्त करेंगे, जो ईश्वरीय निष्पक्ष प्रेम पर आधारित है, जो परमेश्वर के शाश्वत पवित्र परिवार के सदस्यों के भीतर ईश्वरीय धार्मिकता, कृपा और सत्य उत्पन्न करता है।

Chapter 6: God's Great Commission
अध्याय 6: परमेश्वर का महान आदेश

Jesus spoke and said, "All authority in Heaven and on Earth has been given to me. Therefore, while sojourning (traveling through this life with God) make disciples of every nation, baptizing them in the name of the Father, the Son, and the Holy Spirit, teaching them to keep all that I commanded you. And behold! I am with you (pl) every day until the completion of the Age." Matthew 28:18-20

यीशु ने उन के पास आकर कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे (बहुवचन) संग हूं"
मत्ती 28:18–20

Until this age of grace is completed, Jesus commands us to make disciples as we live out our daily lives. We are to proclaim the Gospel Message that has the power to make all people whole and help develop those who receive God into their lives as lord as well as savior. The Father, Son, and Holy Spirit are drawing all who receive Them into Their eternal holy family with its perfect godly unity.

जब तक यह अनुग्रह का युग पूरा नहीं हो जाता, यीशु हमें आदेश देते हैं कि हम अपने दैनिक जीवन में शिष्य बनाएं। हमें उस सुसमाचार संदेश का प्रचार करना है जिसमें सभी लोगों को पूर्ण करने की शक्ति है और उन लोगों को विकसित करने में मदद करनी है जो परमेश्वर को अपने जीवन में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा उन सभी को अपनी अनंत पवित्र परिवार में खींच रहे हैं, जो उन्हें स्वीकार करते हैं, जिसमें पूर्ण ईश्वरीय एकता है।

As we continue living out our lives in God's Word, we are set freer and freer from the bondage of sin, which we impose upon ourselves through our self-centeredness and selfishness. We have all been ensnared in the past by a multitude of sins such as desire for control, temporary pleasures, material security, or something else, which stopped

us from doing God's good works. But through God's grace, Jesus helps us identify and turn from our sins so that we may do our Father's will. Through Jesus Christ, we can journey along a new path, a path that leads us Home to be with God for eternity. A path that includes encouraging others to join us along the way.

जैसे–जैसे हम परमेश्वर के वचन में अपने जीवन को जीते रहते हैं, हम पाप के बंधन से और अधिक स्वतंत्र होते जाते हैं, जो हम अपनी आत्मकेंद्रितता और स्वार्थ के माध्यम से स्वयं पर थोपते हैं। हम सभी अतीत में कई पापों, जैसे नियंत्रण की इच्छा, क्षणिक सुख, भौतिक सुरक्षा, या किसी अन्य चीज में फंस चुके हैं, जिसने हमें परमेश्वर के अच्छे कार्य करने से रोक दिया था। लेकिन परमेश्वर की कृपा के माध्यम से, यीशु हमें अपने पापों को पहचानने और उनसे मुंह मोड़ने में मदद करते हैं ताकि हम अपने पिता की इच्छा को पूरा कर सकें। यीशु मसीह के माध्यम से, हम एक नए मार्ग पर यात्रा कर सकते हैं, एक ऐसा मार्ग जो हमें अनंत काल तक परमेश्वर के साथ रहने के लिए घर की ओर ले जाता है। एक ऐसा मार्ग जिसमें दूसरों को भी हमारे साथ इस यात्रा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है।

We have come to understand that our permanent place of residence is not on Earth; it is in Heaven. Trusting the Creator, we expect Him to guide us Home fully conformed into Jesus' holy nature.[211] We live out this short part of eternity focused on Jesus and His leadership versus the many distractions of this world. We live with godly love growing in our hearts, which in turn radically alters our outlook toward others.

हमें यह समझ आ गया है कि हमारा स्थायी निवास स्थान पृथ्वी पर नहीं है; यह स्वर्ग में है। सृष्टिकर्ता पर भरोसा करते हुए, हम उम्मीद करते हैं कि वह हमें यीशु की पवित्र प्रकृति में पूरी तरह ढलकर घर तक मार्गदर्शन करेगा।[211] हम अनंत काल के इस छोटे से हिस्से को यीशु और उनके नेतृत्व पर केंद्रित होकर जीते हैं, न कि इस संसार के अनेक विकर्षणों पर। हम अपने हृदयों में बढ़ते हुए ईश्वरीय प्रेम के साथ जीते हैं, जो बदले में दूसरों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल देता है।

As Jesus' followers step out in faith ***growing daily in their love for God and others,*** they become more and more willing to suffer and sacrifice to help those whom God puts on their hearts. In doing so, they experience a growing inner peace and joy. ***This presents a paradox to***

---

[211] Trust: Eph 1:13-14; Heb 11; cf. John 3:14-17; Transformation: Phil 1:6; Rom 12:2; 8:28-30; 1 John 3:1-3. विश्वासः इफि 1:13–14; इब्रा 11; देखें, यूहन्ना 3:14–17; बदलावरू फिली 1:6; रोमियों 12:2; 8:28–30; 1 यूहन्ना 3:1–3.

many who are not following Jesus because without a genuine love for God and others, one would normally not experience joy by helping those who normally will not pay them back for their efforts. Through Jesus' followers' individual and collective good works for all, the world has a better opportunity to understand the loving caring nature of God towards everyone.

जैसे–जैसे यीशु के अनुयायी विश्वास में आगे बढ़ते हैं और परमेश्वर तथा दूसरों के लिए अपने प्रेम में प्रतिदिन वृद्धि करते हैं, वे उन लोगों की मदद करने के लिए अधिक से अधिक तैयार हो जाते हैं जिन्हें परमेश्वर उनके हृदयों में रखता है, चाहे इसके लिए उन्हें कष्ट सहना पड़े या बलिदान देना पड़े। ऐसा करने से, वे एक बढ़ती हुई आंतरिक शांति और आनंद का अनुभव करते हैं। यह उन लोगों के लिए एक विरोधाभास प्रस्तुत करता है जो यीशु का अनुसरण नहीं कर रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर और दूसरों के लिए सच्चे प्रेम के बिना, कोई सामान्य रूप से उन लोगों की मदद करने में आनंद का अनुभव नहीं करेगा जो उनके प्रयासों का बदला नहीं दे सकते। यीशु के अनुयायियों के व्यक्तिगत और सामूहिक अच्छे कार्यों के माध्यम से, दुनिया को परमेश्वर की सभी के प्रति प्रेममयी और देखभाल करने वाली प्रकृति को बेहतर ढंग से समझने का अवसर प्राप्त होता है।

Jesus expects His followers to help others with their needs as He leads, but more importantly, He expects His followers to help others become disciples ***and*** grow in their interrelationship with God and others. ***It is Jesus' followers' honor, privilege, and duty to engage people wherever they are in their spiritual journey and help them to know well the one true God.***

यीशु अपने अनुयायियों से अपेक्षा करते हैं कि वे दूसरों की ज़रूरतों में उनकी मदद करें जैसा कि वह मार्गदर्शन करते हैं, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह अपने अनुयायियों से अपेक्षा करते हैं कि वे दूसरों को शिष्य बनने और परमेश्वर तथा अन्य लोगों के साथ उनके आपसी संबंधों में बढ़ने में मदद करें। यह यीशु के अनुयायियों का सम्मान, विशेषाधिकार और कर्तव्य है कि वे लोगों से उनकी आध्यात्मिक यात्रा में जहां कहीं भी वे हों, वहां मिलें और उन्हें एकमात्र सच्चे परमेश्वर को अच्छी तरह जानने में मदद करें।

As God develops a proper world-view in Jesus' followers, they realize that doing His work starts at home. Literally, joining God in His world-wide ministry starts by helping our individual families, then our local church families, then our communities, and finally the entire world. Our families, churches, and local communities are our ***daily*** mission field.

जैसे–जैसे परमेश्वर यीशु के अनुयायियों में एक उचित विश्व–दृष्टिकोण विकसित करता है, वे समझते हैं कि उसका कार्य घर से शुरू होता है। शाब्दिक रूप से, परमेश्वर के विश्व–व्यापी सेवकाई में शामिल होना सबसे पहले हमारे

व्यक्तिगत परिवारों की मदद से शुरू होता है, फिर हमारे स्थानीय चर्च परिवारों, फिर हमारे समुदायों, और अंत में पूरे विश्व की मदद से। हमारे परिवार, चर्च, और स्थानीय समुदाय हमारा दैनिक मिशन क्षेत्र हैं।

The Great Commission Is a Call To Bear Much Fruit
महान आदेश बहुत फल लाने का आह्वान है।

Jesus, "In this way my Father is glorified: that you bear much fruit indeed being my disciples." John 15:8

"मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।" यूहन्ना 15:8

As Jesus' followers help others to know how good God is, some who have been either directly fighting against God or who have ignored Him come to realize that the Father, Son, and Holy Spirit are caring, righteous beings, who are full of grace and truth with abundant loving-kindness toward all. ***They are truly glorious and worthy to follow!***

जैसे–जैसे यीशु के अनुयायी दूसरों को यह जानने में मदद करते हैं कि परमेश्वर कितना अच्छा है, कुछ लोग जो या तो परमेश्वर के खिलाफ सीधे लड़ रहे थे या जिन्होंने उनकी उपेक्षा की थी, यह समझने लगते हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा देखभाल करने वाले, धर्मी प्राणी हैं, जो कृपा और सत्य से परिपूर्ण हैं और सभी के प्रति असीम प्रेम–कृपा रखते हैं। वे वास्तव में महिमामय और अनुसरण करने योग्य हैं!

As Jesus' followers proclaim God's loving nature to a world that is engulfed in many deceptions and corrupted by sin, some turn from Satan and his deceptions to God for a much better life now and forever. They come to realize that spiritual warfare is ongoing (Eph 6:10-12) and learn to do their assigned parts (Eph 2:10 & more) as they join Jesus, who constantly opposes Satan and leads all who will listen against him.

जैसे–जैसे यीशु के अनुयायी एक ऐसे संसार में परमेश्वर की प्रेममयी प्रकृति का प्रचार करते हैं जो अनेक छलावों में डूबा हुआ है और पाप से भ्रष्ट हो चुका है, कुछ लोग शैतान और उसके छलावों से मुड़कर परमेश्वर की ओर आते हैं ताकि अब और हमेशा के लिए एक बेहतर जीवन प्राप्त करें। वे यह समझने लगते हैं कि आध्यात्मिक युद्ध निरंतर चल रहा है (इफिसियों 6:10–12) और वे अपने नियुक्त कार्यों (इफिसियों 2:10 और अन्य) को सीखते हैं क्योंकि वे यीशु के साथ जुड़ते हैं, जो लगातार शैतान का विरोध करते हैं और उन सभी का नेतृत्व करते हैं जो उसके खिलाफ उनकी बात सुनेंगे।

Just as Jesus called many from the first century into obedient discipleship, He continues to call obedient disciples from every successive generation to proclaim the good news of His growing eternal

holy family and kingdom. As Jesus' followers work together, they should be confident in God's ability and celebrate the fact that they are able to do the greatest works of the Creation because of Jesus' ongoing leadership and His finished reconciling work.[212] Jesus' followers know that the Gospel message is empowered by God through the Holy Spirit and is working in everyone's life including their own. They also know that God's way of life is the only way whereby people can find inner peace and godly joy now and forever.

जैसे यीशु ने पहली सदी में कई लोगों को आज्ञाकारी शिष्यत्व के लिए बुलाया, वैसे ही वह प्रत्येक बाद की पीढ़ी से आज्ञाकारी शिष्यों को अपने बढ़ते हुए अनंत पवित्र परिवार और राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बुलाते रहते हैं। जैसे–जैसे यीशु के अनुयायी एक साथ काम करते हैं, उन्हें परमेश्वर की क्षमता पर भरोसा करना चाहिए और इस तथ्य का उत्सव मनाना चाहिए कि वे यीशु के निरंतर नेतृत्व और उनके पूर्ण किए गए मेल–मिलाप के कार्य के कारण सृष्टि के सबसे महान कार्य कर सकते हैं।[212] यीशु के अनुयायी जानते हैं कि सुसमाचार का संदेश पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा सशक्त किया गया है और यह सभी के जीवन में, जिसमें उनका स्वयं का जीवन भी शामिल है, कार्य कर रहा है। वे यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का जीवन जीने का तरीका ही एकमात्र रास्ता है जिसके द्वारा लोग अब और हमेशा के लिए आंतरिक शांति और ईश्वरीय आनंद पा सकते हैं।

The Father's main mission is also His family's main mission. The Father's main mission for His Creation is to bring as many as will obediently listen to Him into His eternal close-knit loving righteous (holy) family. With the great level of freedom that the Father has given everyone, He desires that all come to a place of turning from their individual desires and aspirations to Him and His way of life.[213] Jesus' followers do their part in helping those who are not listening to God start listening by openly displaying God's goodness through their actions as well as their words. If those who normally are not listening start to realize how good God is, they have a better chance of paying attention to the teaching and leading of Jesus through the Holy Spirit as well as listening to Jesus' followers.

पिता का मुख्य मिशन भी उनके परिवार का मुख्य मिशन है। पिता का अपनी सृष्टि के लिए मुख्य मिशन यह है कि जितने लोग उनकी आज्ञाकारी

---

[212] John 14:12; cf. John 7:37-39. यूहन्ना 14:12; देखें यूहन्ना 7:37–39।

[213] Matt 11:28-30; Luke 9:23; 2 Peter 3:9. मत्ती 11:28–30; लूका 9:23; 2 पतरस 3:9.

रूप से सुनेंगे, उन्हें अपने अनंत, घनिष्ठ, प्रेममय, धर्मी (पवित्र) परिवार में लाना है। पिता ने सभी को जो महान स्वतंत्रता दी है, उसके साथ वे चाहते हैं कि सभी लोग अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और आकांक्षाओं से मुड़कर उनकी ओर और उनके जीवन के तरीके की ओर आएं।[213] यीशु के अनुयायी उन लोगों की मदद करने में अपनी भूमिका निभाते हैं जो परमेश्वर की बात नहीं सुन रहे हैं, वे अपने कार्यों और शब्दों के माध्यम से परमेश्वर की अच्छाई को खुले तौर पर प्रदर्शित करके उन्हें सुनना शुरू करने में सहायता करते हैं। यदि वे लोग जो सामान्य रूप से नहीं सुनते, यह समझने लगते हैं कि परमेश्वर कितना अच्छा है, तो उनके पास पवित्र आत्मा के माध्यम से यीशु के शिक्षण और नेतृत्व के साथ–साथ यीशु के अनुयायियों की बात सुनने का बेहतर अवसर होता है।

If you have not been actively helping others know how good God is and the importance of Jesus' reconciling death on a cross, ***let God show you the spiritual importance of your participation in helping to build His eternal caring family and kingdom.*** God shows all who listen the importance of putting aside personal ambitions (dying to self) and receiving the mind of Christ, which allows one to experience Jesus' joy as they help others turn to God.

यदि आप सक्रिय रूप से दूसरों को यह जानने में मदद नहीं कर रहे हैं कि परमेश्वर कितना अच्छा है और यीशु की क्रूस पर मेल–मिलाप कराने वाली मृत्यु का महत्व क्या है, तो परमेश्वर को आपको यह दिखाने दें कि उनके अनंत देखभाल करने वाले परिवार और राज्य के निर्माण में आपकी भागीदारी का आध्यात्मिक महत्व क्या है। परमेश्वर उन सभी को जो सुनते हैं, यह दिखाते हैं कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को त्यागने (स्वयं के प्रति मरने) और मसीह के मन को ग्रहण करने का महत्व क्या है, जो किसी को यीशु के आनंद का अनुभव करने की अनुमति देता है जब वे दूसरों को परमेश्वर की ओर मुड़ने में मदद करते हैं।

Paul uses the idea of "having been crucified with Christ" to help express the idea of giving up one's personal ambitions and desires in order to help the world know God. Paul's dying to self and suffering on behalf of those who would listen to God brought him great joy (Col 1:24). This is the same for all who follow Jesus.

पौलुस "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने" की अवधारणा का उपयोग इस विचार को व्यक्त करने के लिए करता है कि व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और इच्छाओं को त्याग दे ताकि दुनिया परमेश्वर के बारे में जान सके। पौलुस का आत्म–त्याग और उन लोगों के लिए कष्ट सहना, जो परमेश्वर की बात सुनेंगे, उनके लिए बहुत आनंद लाया (कुलुस्सियों 1:24)। यही बात यीशु का अनुसरण करने वाले सभी लोगों के लिए लागू होती है।

Jesus' life was made complete by pleasing His Heavenly Father through obediently fulfilling His assigned good works (John 4:34; Heb

2:10). He experienced great levels of inner peace and joy through consistently and obediently remaining in His Father's love. Jesus' followers may also experience this great inner peace and joy by obediently following Jesus due to His great love (John 15:10).

यीशु का जीवन अपने स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करने के द्वारा पूर्ण हुआ, जो उन्होंने आज्ञाकारी रूप से अपने निर्धारित भले कामों को पूरा करके किया (यूहन्ना 4:34; इब्रानियों 2:10)। उन्होंने अपने पिता के प्रेम में लगातार और आज्ञाकारी रूप से बने रहने के माध्यम से आंतरिक शांति और आनंद के उच्च स्तर का अनुभव किया। यीशु के अनुयायी भी यीशु का आज्ञाकारी रूप से अनुसरण करके उनके महान प्रेम के कारण इस महान आंतरिक शांति और आनंद का अनुभव कर सकते हैं (यूहन्ना 15:10)।

As we each consider how God might use us to impact others for Him, it is good to keep in mind that each one of us has a limited amount of time during our physical lives in order to help others know God, which is the most important work that anyone can do. Whether we are a farmer, business man, custodian, or something else, let's help others know how good God is as we all work together to bring as many as possible into His and our eternal loving righteous family. This is the best way that we can give back to God for all of the good that He constantly does for all people.

जब हम यह विचार करते हैं कि परमेश्वर हम में से प्रत्येक का उपयोग दूसरों को उनके लिए प्रभावित करने के लिए कैसे कर सकता है, तो यह ध्यान में रखना अच्छा है कि हम में से प्रत्येक के पास अपने शारीरिक जीवन के दौरान सीमित समय है ताकि दूसरों को परमेश्वर को जानने में मदद मिल सके, जो कि कोई भी सबसे महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है। चाहे हम किसान हों, व्यवसायी हों, संरक्षक हों, या कुछ और, आइए हम सभी मिलकर दूसरों को यह जानने में मदद करें कि परमेश्वर कितना अच्छा है, ताकि हम जितना संभव हो उतने लोगों को उनके और हमारे अनंत प्रेममय धर्मी परिवार में ला सकें। यह सबसे अच्छा तरीका है जिससे हम परमेश्वर को वह सब अच्छा लौटा सकते हैं जो वह लगातार सभी लोगों के लिए करता है।

As we help others know God better, let's keep in mind that as Jesus' early followers proclaimed God's love, in reality, they were proclaiming His holiness, which is His loving righteous way of life. Love and righteousness go hand-in-hand. God's love establishes His standards of righteousness. Therefore, in order to proclaim the Gospel–like Jesus' first-century followers– ***Jesus' present day followers must declare God's holiness as part of the Gospel Message.***

जब हम दूसरों को परमेश्वर को बेहतर ढंग से जानने में मदद करते हैं, तो हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि जैसे यीशु के प्रारंभिक अनुयायियों ने परमेश्वर के प्रेम का प्रचार किया, वास्तव में, वे उनकी पवित्रता का प्रचार कर

रहे थे, जो कि उनका प्रेममय धर्मी जीवन जीने का तरीका है। प्रेम और धार्मिकता साथ–साथ चलते हैं। परमेश्वर का प्रेम उनकी धार्मिकता के मानकों को स्थापित करता है। इसलिए, सुसमाचार का प्रचार करने के लिए–जैसे यीशु के प्रथम शताब्दी के अनुयायियों ने किया–यीशु के वर्तमान समय के अनुयायियों को सुसमाचार संदेश के हिस्से के रूप में परमेश्वर की पवित्रता की घोषणा करनी चाहिए।

The Gospel message declares that sin must be forsaken and eventually eradicated. The whole purpose of Jesus' atoning death is to provide purification, which results in justification, for those learning to return God's love so that they are able to live with Him within His eternal holy family. Living in loving righteousness (holiness) without sin is what makes eternal peace possible in the New Heaven (Consider Rom 8:18-23).

सुसमाचार का संदेश घोषणा करता है कि पाप को त्यागना होगा और अंततः उसे समाप्त करना होगा। यीशु की प्रायश्चितकारी मृत्यु का उद्देश्य शुद्धिकरण प्रदान करना है, जो उन लोगों के लिए औचित्य में परिणत होता है जो परमेश्वर के प्रेम को लौटाना सीख रहे हैं ताकि वे उनके अनंत पवित्र परिवार में उनके साथ रह सकें। प्रेममय धार्मिकता (पवित्रता) में बिना पाप के जीना ही नये स्वर्ग में अनंत शांति को संभव बनाता है (रोमियों 8:18–23 पर विचार करें)।

The Great Commission Is a Work of Love
महान आदेश प्रेम का कार्य ह

If we do not feel some of the pain of those in need, we are not walking with God. Through God, we can start to understand and relate to the pain of others,[214] and through this empathy, ***God calls us into action***. We are called to minister to our hurting brothers and sisters both lost and saved (Luke 10:29-37).

यदि हम जरूरतमंदों के दर्द को कुछ हद तक महसूस नहीं करते, तो हम परमेश्वर के साथ नहीं चल रहे हैं। परमेश्वर के माध्यम से, हम दूसरों के दर्द को समझने और उससे जुड़ने लगते हैं,[214] और इस सहानुभूति के माध्यम से, परमेश्वर हमें कार्य करने के लिए बुलाता है। हमें अपने पीड़ित भाइयों और बहनों, चाहे वे भटके हुए हों या बचाए गए हों, की सेवा करने के लिए बुलाया गया है (लूका 10:29–37)।

---

[214] Isaiah 63:9; Matt 5:3-12; 1 Cor 12:26. यशायाह 63:9; मत्ती 5:3–12; 1 कुरू 12:26.

Jesus tells us that if we take care of those in need, it is the same as taking care of Him (Matt 25:40, 45). As we help our fellow brothers and sisters who are in need, we are blessing them and our eldest brother, Jesus, the true Messiah. As we receive and work with those in need including those who are esteemed least by many, we are also receiving and working with Jesus (Matt 25:40; Luke 9:46-48). **Think about it!** If we help those in need, we are also helping Jesus.

यीशु हमें बताते हैं कि यदि हम जरूरतमंदों की देखभाल करते हैं, तो यह उनके लिए देखभाल करने के समान है (मत्ती 25:40, 45)। जब हम अपने उन भाइयों और बहनों की मदद करते हैं जो जरूरत में हैं, हम उन्हें और हमारे सबसे बड़े भाई, यीशु, जो सच्चा मसीहा है, को आशीर्वाद दे रहे हैं। जब हम जरूरतमंदों, जिनमें वे भी शामिल हैं जिन्हें कई लोग सबसे कम महत्व देते हैं, को स्वीकार करते हैं और उनके साथ काम करते हैं, तो हम यीशु को स्वीकार कर रहे हैं और उनके साथ काम कर रहे हैं (मत्ती 25:40; लूका 9:46–48)। इस बारे में सोचें! यदि हम जरूरतमंदों की मदद करते हैं, तो हम यीशु की भी मदद कर रहे हैं।

As we implement God's great commission of love and allow Jesus to lead us, He will teach us to love as He loves ***making disciples*** of all people who will listen, baptizing them in the name of the Father, the Son, and the Holy Spirit, and teaching them ***all*** things that Jesus has taught us (Matt 28:18-20). ***There is no greater work of love!***

जब हम परमेश्वर के प्रेम के महान आदेश को लागू करते हैं और यीशु को हमें मार्गदर्शन करने की अनुमति देते हैं, तो वह हमें वैसे ही प्रेम करना सिखाएगा जैसे वह प्रेम करता है, सभी लोगों को, जो सुनेंगे, उनके शिष्य बनाएगा, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा देगा, और उन्हें वह सब कुछ सिखाएगा जो यीशु ने हमें सिखाया है (मत्ती 28:18–20)। इससे बड़ा प्रेम का कोई कार्य नहीं है!

Do you know people who are hurting others? ***Take them to Jesus;*** He can teach them to care. Do you know people who have just given up on life? ***Take them to Jesus;*** He can restore and strengthen them. Do you know people who look out only for themselves and their families? ***Take them to Jesus;*** He can teach them to love others as He loves. Do you have any personal needs that need special attention? ***Take them to Jesus;*** He loves you and will help.

क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो दूसरों को चोट पहुँचा रहे हैं? उन्हें यीशु के पास ले जाएँ; वह उन्हें देखभाल करना सिखा सकता है। क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्होंने जीवन से हार मान ली है? उन्हें यीशु के पास ले जाएँ; वह उन्हें पुनर्स्थापित और मजबूत कर सकता है। क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो केवल अपने और अपने परिवार के लिए ही ध्यान रखते हैं? उन्हें यीशु के पास ले जाएँ; वह उन्हें दूसरों को वैसे ही प्रेम करना सिखा

सकता है जैसे वह प्रेम करता है। क्या आपके पास कोई व्यक्तिगत ज़रूरतें हैं जिन्हें विशेष ध्यान की आवश्यकता है? उन्हें यीशु के पास ले जाएँ; वह आपसे प्रेम करता है और मदद करेगा।

There is ***nothing*** more important than proclaiming the truth about God's goodness. God wants us to acknowledge and experience His love by working ***together*** to unite all who listen through Jesus Christ. But beware, through the barrage and necessity of taking care of the world's physical needs, we can easily lose sight of our most important ministry, which is helping others know how much God loves them and that His way of life produces the best outcome for everyone now and in the future.

परमेश्वर की भलाई के बारे में सत्य का प्रचार करने से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। परमेश्वर चाहता है कि हम उनके प्रेम को स्वीकार करें और अनुभव करें, यीशु मसीह के माध्यम से सभी सुनने वालों को एकजुट करने के लिए मिलकर काम करें। लेकिन सावधान रहें, दुनिया की भौतिक आवश्यकताओं की देखभाल करने की बाध्यता और आवश्यकता के बीच, हम आसानी से अपनी सबसे महत्वपूर्ण सेवकाई को नजरअंदाज कर सकते हैं, जो है दूसरों को यह जानने में मदद करना कि परमेश्वर उनसे कितना प्रेम करता है और उनके अनुसार जीवन जीने का तरीका वर्तमान और भविष्य में सभी के लिए सर्वोत्तम परिणाम देता है।

Walking with Others in the Church
कलीसिया में दूसरों के साथ चलना

> **If we are walking (living) in the Light as He (God) is in the Light, we have close fellowship with one another and the blood of Jesus, His Son, cleanses us from every sin.** **1 John 1:7**
>
> पर यदि जैसा वह (परमेश्वर) ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें (जिएं), तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। 1 यूहन्ना 1:7

This scriptural passage clearly teaches us that ***if we do not have close fellowship with other Believers, we are not walking with God.*** In reality, we should feel close to all Believers. God helps us through the Holy Spirit learn to love each other to the point that our love overrides

our fear of each other and the unknown.[215] Satan loves to use self-interests and fear to isolate us from each other. As members of God's family, we must learn to love each other as family and friends. Denominational, racial, generational, socio-economical, and political walls have all been constructed through Satan's prompting as humanity has struggled against God's will. Therefore, we must come to know in our hearts that there are other Believers outside our own local church families who have accepted Jesus Christ as their lord and savior just as we have. We must allow Jesus to teach us more fully how to experience more of our "oneness," which is only possible through Him.[216] Let God help us break down the barriers that our societies perpetuate through Satan's prompting. There should be no divisions within the Body of Christ, which is the Universal Church.

बाइबल का यह पद स्पष्ट रूप से हमें सिखाता है कि यदि हम अन्य विश्वासियों के साथ निकट सहभागिता नहीं रखते, तो हम परमेश्वर के साथ नहीं चल रहे हैं। वास्तव में, हमें सभी विश्वासियों के साथ निकटता महसूस करनी चाहिए। परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा के माध्यम से एक–दूसरे से प्रेम करना सिखाता है, इस हद तक कि हमारा प्रेम एक–दूसरे के प्रति हमारे डर और अज्ञात के भय को परास्त कर देता है।[215] शैतान स्वार्थ और भय का उपयोग करके हमें एक–दूसरे से अलग करने में आनंद लेता है। परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के रूप में, हमें एक–दूसरे को परिवार और मित्रों की तरह प्रेम करना सीखना होगा। संप्रदाय, नस्ल, पीढ़ी, सामाजिक–आर्थिक, और राजनीतिक दीवारें शैतान के उकसावे के माध्यम से बनाई गई हैं, क्योंकि मानवता ने परमेश्वर की इच्छा के खिलाफ संघर्ष किया है। इसलिए, हमें अपने हृदय में यह जानना होगा कि हमारी स्थानीय चर्च परिवारों के बाहर भी अन्य विश्वासी हैं जिन्होंने यीशु मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है, जैसा कि हमने किया है। हमें यीशु को हमें और अधिक पूर्ण रूप से सिखाने की अनुमति देनी होगी कि हमारी "एकता" का अधिक अनुभव कैसे करें, जो केवल उनके माध्यम से ही संभव है।[216] परमेश्वर को हमें उन बाधाओं को तोड़ने में मदद करने दें, जो हमारे समाज शैतान के उकसावे के माध्यम से बनाए रखते हैं। मसीह के शरीर, जो विश्वव्यापी चर्च है, के भीतर कोई विभाजन नहीं होना चाहिए।

---

[215] 1 John 4:18: cf. 1:7; 4:10-11, 18-20; John 13:34-35; 15:12-17.
1 यूहन्ना 4:18: देखें 1:7; 4:10–11, 18–20; यूहन्ना 13:34–35; 15: 12–17.

[216] John 17:20-23; Rom 12:5; 1 Cor 1:10-13; Eph 2:11-16. यूहन्ना 17:20–23; रोमि 12:5; 1 कुरं 1:10–13; इफि 2:11–16.

Through Jesus Christ, the Father supplies the authority, resources, talent, and proper frame of mind to Jesus' followers enabling them to work together helping all.[217] It is the Holy Spirit, who works in each Believer making some of God's unity possible during our physical lives. ***May God help us*!** Through Jesus, we can learn to work together and be a great **witness** to all through our actions and words. As we faithfully follow Jesus, our fellowship with God and one another will become closer and closer.

यीशु मसीह के माध्यम से, पिता यीशु के अनुयायियों को अधिकार, संसाधन, प्रतिभा और उचित मानसिकता प्रदान करता है, जिससे वे सभी की मदद करने के लिए मिलकर काम कर सकें।[218] यह पवित्र आत्मा है, जो प्रत्येक विश्वासी में कार्य करता है, जिससे हमारे शारीरिक जीवन के दौरान परमेश्वर की कुछ एकता संभव हो पाती है। परमेश्वर हमारी मदद करे! यीशु के माध्यम से, हम एक साथ काम करना सीख सकते हैं और अपने कार्यों और शब्दों के माध्यम से सभी के लिए एक महान गवाह बन सकते हैं। जब हम यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करते हैं, तो परमेश्वर और एक–दूसरे के साथ हमारी सहभागिता और भी निकट होती जाती है।

Knowing and Employing Your Talents
अपनी प्रतिभाओं को जानना और उनका उपयोग करना

It is God who is working in you (pl.) to desire and to work according to His good purpose. Phil 2:13

क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। फिलि 2:13

We are His doing, having been created in Christ Jesus for good works, which God has prepared ahead of time in order that we may live out our lives accordingly. Eph 2:10[218]

---

[217] John 17:18, 21, 23; Acts 1:8; Eph 1:19; 3:14-20; Phil 4:13; 2 Tim 1:7; Rev 3:21. यूहन्ना 17:18, 21, 23; प्रेरितों 1:8; इफि 1:19; 3:14–20; फिलि 4:13; 2 तिमो 1:7; प्रका 3:21.

[218] cf. James 2:14-26. जेम्स को देखों 2:14–26।

क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया। इफि 2:10[218]

If a person willingly follows Jesus, our heavenly Father will give that individual a desire and the ability to do His predetermined assignments. Each person in God's holy family has assignments to help our local church families and our universal Church family function more smoothly. God has gifted each person with special skills. When Jesus' followers utilize their diversity following the leading and empowerment of God, their combined output is much greater than the sum of all the individual works. This is true on local community church levels and on our combined international level through the Universal Church.

यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से यीशु का अनुसरण करता है, तो हमारा स्वर्गीय पिता उस व्यक्ति को उसकी पूर्वनिर्धारित जिम्मेदारियों को पूरा करने की इच्छा और क्षमता प्रदान करेगा। परमेश्वर के पवित्र परिवार में प्रत्येक व्यक्ति को स्थानीय चर्च परिवारों और हमारे सार्वभौमिक चर्च परिवार को और अधिक सुचारु रूप से कार्य करने में मदद करने के लिए जिम्मेदारियाँ दी गई हैं। परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को विशेष कौशलों से नवाज़ा है। जब यीशु के अनुयायी परमेश्वर के मार्गदर्शन और सशक्तिकरण का पालन करते हुए अपनी विविधता का उपयोग करते हैं, तो उनका संयुक्त परिणाम सभी व्यक्तिगत कार्यों के योग से कहीं अधिक होता है। यह स्थानीय सामुदायिक चर्च स्तरों पर और सार्वभौमिक चर्च के माध्यम से हमारे संयुक्त अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सत्य है।

Each of Christ's disciples should be ***seeking God's perfect will*** for their lives so that they may grow into effective, loving co-members of their respective local churches. Each should seek God's will to find his or her place within their local assemblies so that their local churches may be working at peak performance in their local, regional, national, and world-wide ministries. As each of Jesus' followers pick up their individual crosses following His lead, they will learn how to utilize best their individual talents helping one another and witnessing with godly effective power to the world. Each true follower of Jesus is a new creation (2 Cor 5:17) undergoing constant training in righteousness by our Heavenly Father through the Holy Spirit and other members of his or her local church and/or universal Church (sanctification).[219]

प्रत्येक मसीह के शिष्य को अपने जीवन के लिए परमेश्वर की पूर्ण इच्छा की खोज करनी चाहिए ताकि वे अपनी–अपनी स्थानीय कलीसियाओं के

---

[219] John 15:1-2; Rom 6:22; Gal 5:22-23; note 2 Tim 3:16-17. यूहन्ना 15:1–2; रोमि 6:22; •ला 5:22–23; देखें 2 तिमो 3:16–17।

प्रभावी और प्रेमपूर्ण सह–सदस्य के रूप में विकसित हो सकें। प्रत्येक को परमेश्वर की इच्छा की खोज करनी चाहिए ताकि वे अपनी स्थानीय सभाओं में अपना स्थान पा सकें, जिससे उनकी स्थानीय कलीसियाएँ स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और विश्वव्यापी सेवकाइयों में सर्वोत्तम प्रदर्शन कर सकें। जैसे–जैसे यीशु के प्रत्येक अनुयायी अपने व्यक्तिगत क्रूस को उठाकर उनके मार्गदर्शन का अनुसरण करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत प्रतिभाओं का सर्वोत्तम उपयोग करना सीखेंगे, एक–दूसरे की मदद करते हुए और संसार के लिए ईश्वरीय प्रभावी शक्ति के साथ गवाही देंगे। प्रत्येक सच्चा यीशु का अनुयायी एक नई सृष्टि है (2 कुरिन्थियों 5:17), जो हमारे स्वर्गीय पिता द्वारा पवित्र आत्मा और उनकी स्थानीय कलीसिया और/या विश्वव्यापी कलीसिया के अन्य सदस्यों के माध्यम से धार्मिकता में निरंतर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा है (पवित्रीकरण)।[219]

So what about your gifts/talents from God. Many of you have already figured out what you are good at and what you are not. Nevertheless, if you are still struggling with understanding your God-given talents, there are many fairly straight forward spiritual tests available that show individuals their overall strengths and weaknesses. But, keep in mind that you should not let any test become your automatic guide to service within your local church and beyond. ***Pray and ask God to reveal His desire for your work, and He will initiate a desire in your heart to do what He has assigned you to accomplish.*** It may not match your greatest apparent skills. In reality, skills are important, but without Jesus' help no one can do any spiritual work effectively.[220] The spiritual battles around us are too great for humanity without God's leading and empowerment.

तो परमेश्वर से प्राप्त आपके उपहारों/प्रतिभाओं का क्या? आप में से कई लोग पहले ही यह समझ चुके हैं कि आप किसमें अच्छे हैं और किसमें नहीं। फिर भी, यदि आप अभी भी अपनी परमेश्वर –प्रदत्त प्रतिभाओं को समझने में संघर्ष कर रहे हैं, तो कई सरल आध्यात्मिक परीक्षण उपलब्ध हैं जो व्यक्तियों को उनकी समग्र ताकत और कमजोरियों को दिखाते हैं। लेकिन, यह ध्यान रखें कि आपको किसी भी परीक्षण को अपनी स्थानीय कलीसिया और उससे बाहर की सेवा के लिए स्वचालित मार्गदर्शक नहीं बनने देना चाहिए। प्रार्थना करें और परमेश्वर से उनकी इच्छा को आपके काम के लिए प्रकट करने के लिए कहें, और वह आपके दिल में उस कार्य को करने की इच्छा जगाएंगे जो उन्होंने आपको सौंपा है। यह आपकी सबसे स्पष्ट दिखने वाली कौशलों से मेल नहीं खा सकता। वास्तव में, कौशल महत्वपूर्ण हैं, लेकिन यीशु की मदद के बिना कोई भी आध्यात्मिक कार्य को प्रभावी ढंग से नहीं कर सकता।[220] हमारे आसपास

---

[220] Eph 6:10. इफि 6:10.

की आध्यात्मिक लड़ाइयाँ इतनी बड़ी हैं कि परमेश्वर के मार्गदर्शन और सशक्तिकरण के बिना मानवता के लिए यह संभव नहीं है।

Paul taught the Corinthians, that although everyone was not a great evangelist, preacher, or teacher, all had an important part in Christ's Body (1 Cor 12). Some are carpenters, others cooks, others accountants, and the list goes on. But the one task that all of Jesus' followers have is the privilege, honor, and duty of sharing the Good News about God and His ongoing creation of an eternal close-knit holy family. All of His family living on earth has the joy, honor, and responsibility of helping others know God and His Creation (witnessing).

पौलुस ने कुरिन्थियों को सिखाया कि यद्यपि हर कोई महान सुसमाचार प्रचारक, उपदेशक या शिक्षक नहीं था, फिर भी सभी का मसीह के शरीर में एक महत्वपूर्ण स्थान था (1 कुरिन्थियों 12)। कुछ लोग बढ़ई हैं, कुछ रसोइए, कुछ लेखाकार, और सूची आगे बढ़ती है। लेकिन यीशु के सभी अनुयायियों का एक साझा कार्य है, जो परमेश्वर और उनकी निरंतर बन रही अनंत, घनिष्ठ पवित्र परिवार के बारे में सुसमाचार साझा करने का सौभाग्य, सम्मान और कर्तव्य है। पृथ्वी पर रहने वाले उनके पूरे परिवार को दूसरों को परमेश्वर और उनकी सृष्टि को जानने में मदद करने का आनंद, सम्मान और जिम्मेदारी है (गवाही देना)।

Empowerment as Needed
आवश्यकतानुसार सशक्तिकरण

In his book, *The Journey*, Billy Graham reminds everyone that when one submits to God's lordship they are not alone. ***When someone submits to Jesus Christ as lord and savior, God gives them a whole new destiny with a new purpose and power.*** Jesus' followers are given a ***new life***. This new life includes a ***new relationship*** with Him and others as a member of His eternal holy family and citizenship in the Kingdom of Heaven.[221]

अपनी पुस्तक, द जर्नी में, बिली ग्राहम सभी को याद दिलाते हैं कि जब कोई परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार करता है, तो वह अकेला नहीं होता। जब कोई यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता है, तो परमेश्वर उसे एक नया भाग्य, नए उद्देश्य और नई शक्ति प्रदान करता है। यीशु के अनुयायियों को एक नया जीवन दिया जाता है। इस नए जीवन में उनके साथ एक नया रिश्ता शामिल होता है, साथ ही उनकी अनंत पवित्र परिवार के

[221] Billy Graham, *The Journey*, 62. बिली ग्राहम, दि जर्नी पेज, 62.

सदस्य के रूप में और स्वर्ग के राज्य में नागरिकता के रूप में दूसरों के साथ भी।[221]

If we are following Jesus, God will empower us to carry out our assigned ministries. In reality, spiritual battles are beyond our capability without Jesus leading the way and empowering us. Through Jesus Christ and the indwelling of the Holy Spirit, the Father supplies the appropriate authority, power, resources, talent,
and frame of mind to each and every one of Jesus' followers. ***It is the Father and Son's empowerment working through the Holy Spirit that enables Jesus' disciples to work together effectively and joyfully ministering to a lost world.***[222]

यदि हम यीशु का अनुसरण कर रहे हैं, तो परमेश्वर हमें हमारे नियुक्त सेवकाइयों को पूरा करने के लिए सशक्त करेगा। वास्तव में, आध्यात्मिक लड़ाइयाँ यीशु के मार्गदर्शन और सशक्तिकरण के बिना हमारी क्षमता से परे हैं। यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के निवास के माध्यम से, पिता प्रत्येक यीशु के अनुयायी को उचित अधिकार, शक्ति, संसाधन, प्रतिभा और मन की स्थिति प्रदान करता है। यह पिता और पुत्र का सशक्तिकरण है, जो पवित्र आत्मा के माध्यम से कार्य करता है, जो यीशु के शिष्यों को एक साथ प्रभावी ढंग से और आनंदपूर्वक खोए हुए संसार की सेवा करने में सक्षम बनाता है।[222]

Being the Light of the World
संसार का प्रकाश होना

Jesus' mission is also His followers' mission. Jesus is the Light of the World: He teaches reality. After Jesus' ascension, His disciples, ***the Universal Church, became the light of the world.*** They do not minister alone. Jesus and the Father dwell in them through the Holy Spirit providing guidance and empowerment as needed.[223] If individuals reject Jesus' followers, they are in reality rejecting the Father and Son (Luke 10:16). Jesus promised not to leave His followers alone, and therefore, sent the Holy Spirit, the Helper, to guide them in all truth speaking to them the words of the Father (John 16:7, 13).

---

[222] Acts 1:8; Rom 8:14; Eph 3:16, 20; Phil 4:13; 2 Tim 1:7; cf. Eph 6:10-18. प्रेरितों 1:8; रोमियों 8:14; इफि 3:16, 20; फिलि 4:13; 2 तिमो 1:7; देखें इफि 6:10–18।

[223] John 14:23; Acts 1:8; 1 Cor 2:12-13. यूहन्ना 14:23; प्रेरितों 1:8; 1 कुरू 2:12–13.

यीशु का मिशन उनके अनुयायियों का भी मिशन है। यीशु संसार का प्रकाश हैं: वे वास्तविकता सिखाते हैं। यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, उनके शिष्य, विश्वव्यापी कलीसिया, संसार का प्रकाश बन गए। वे अकेले सेवा नहीं करते। यीशु और पिता पवित्र आत्मा के माध्यम से उनमें निवास करते हैं, जो आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन और सशक्तिकरण प्रदान करते हैं।[223] यदि व्यक्ति यीशु के अनुयायियों को अस्वीकार करते हैं, तो वे वास्तव में पिता और पुत्र को अस्वीकार कर रहे हैं (लूका 10:16)। यीशु ने वादा किया था कि वह अपने अनुयायियों को अकेला नहीं छोड़ेंगे, और इसलिए, उन्होंने पवित्र आत्मा, सहायक, को भेजा, जो उन्हें पिता के वचनों को बोलकर सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करता है (यूहन्ना 16:7, 13)।

Jesus' earthly life gives everyone a perfect presentation of His Heavenly Father's nature (Heb 1:3; Col 2:9). Jesus' earthly life presented a visible ***image*** (nature) of the invisible Father (Col 1:15). If you had seen Jesus ministering during His earthly life, you had seen the very nature of His Heavenly Father at work (John 14:9). Jesus' followers are to represent God to the world (2 Cor 5:17-21).

यीशु का सांसारिक जीवन हर किसी को उनके स्वर्गीय पिता के स्वभाव का एक पूर्ण प्रदर्शन देता है (इब्रानियों 1:3; कुलुस्सियों 2:9)। यीशु के सांसारिक जीवन ने अदृश्य पिता की दृश्य छवि (स्वभाव) प्रस्तुत की (कुलुस्सियों 1:15)। यदि आपने यीशु को उनके सांसारिक जीवन के दौरान सेवा करते हुए देखा होता, तो आपने उनके स्वर्गीय पिता के स्वभाव को कार्य करते हुए देखा होता (यूहन्ना 14:9)। यीशु के अनुयायियों को संसार में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करना है (2 कुरिन्थियों 5:17–21)।

Prior to disobeying God and being corrupted by sin, Adam and Eve were created in the image of the Father, Son, and Holy Spirit (Gen 1:26). Jesus' followers are being renewed into God's ***image*** (Col 3:10). When Jesus' followers act like Jesus, the World sees the nature of God through them. The Church led by Jesus through the Holy Spirit is the Father's only physical representation on earth (Col 2:9-10; 2 Cor 5:17-21). Jesus' followers should represent God well ***being bright godly light***, which reveals reality clearly.

परमेश्वर की अवज्ञा करने और पाप से दूषित होने से पहले, आदम और हव्वा को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की छवि में बनाया गया था (उत्पत्ति 1:26)। यीशु के अनुयायियों को परमेश्वर की छवि में नया किया जा रहा है (कुलुस्सियों 3:10)। जब यीशु के अनुयायी यीशु की तरह व्यवहार करते हैं, तो संसार उनके माध्यम से परमेश्वर के स्वभाव को देखता है। यीशु के नेतृत्व में पवित्र आत्मा द्वारा संचालित कलीसिया पृथ्वी पर पिता का एकमात्र भौतिक प्रतिनिधित्व है (कुलुस्सियों 2:9–10; 2 कुरिन्थियों 5:17–21)। यीशु के अनुयायियों

को परमेश्वर का अच्छा प्रतिनिधित्व करना चाहिए, एक उज्ज्वल ईश्वरीय प्रकाश बनकर, जो वास्तविकता को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है।

As the Early Church was empowered by God and filled with the Holy Spirit, they were more willing ***to share*** with others (Acts 2:44-47). They lived out their lives in a close godly unity with one heart and mind learning to love as God loves (Acts 2:42f; 4:32f). A proper relationship with God, which is founded on a growing love for God and one another, taught them to be genuinely concerned for people who were not part of their immediate biological families. Jesus gave everything including His life to help ***everyone***. Jesus is still helping all people. Out of a growing love for God and others, Jesus' followers are learning to give as the Father and Son give.

जैसे ही प्रारंभिक कलीसिया परमेश्वर द्वारा सशक्त हुई और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुई, वे दूसरों के साथ अधिक उदारता से बाँटने को तैयार हो गए (प्रेरितों के काम 2:44–47)। उन्होंने एक हृदय और मन के साथ घनिष्ठ ईश्वरीय एकता में अपना जीवन जिया, परमेश्वर की तरह प्रेम करना सीखते हुए (प्रेरितों के काम 2:42 और आगे; 4:32 और आगे)। परमेश्वर के साथ एक उचित रिश्ता, जो परमेश्वर और एक–दूसरे के लिए बढ़ते प्रेम पर आधारित है, ने उन्हें उन लोगों के लिए सच्ची चिंता करना सिखाया जो उनके तत्काल जैविक परिवार का हिस्सा नहीं थे। यीशु ने सभी की मदद करने के लिए सब कुछ दे दिया, जिसमें उनका जीवन भी शामिल था। यीशु आज भी सभी लोगों की मदद कर रहे हैं। परमेश्वर और दूसरों के लिए बढ़ते प्रेम से, यीशु के अनुयायी पिता और पुत्र की तरह देने का तरीका सीख रहे हैं।

Intentional Witnessing
उद्देश्यपूर्ण गवाही देना

Through Jesus' leading of the Church through the Holy Spirit, God continually works in His Creation teaching the truth of His great love for all and the importance of following His holy way of life. God has a spiritual connection with all people starting at conception and helps them to know reality throughout life but still allows the great deceiver to tempt everyone to live life the way that they want ignoring their Creator. Many people are satisfied with a life where God is not their leader failing to realize that along with following God's leadership comes a better life that is filled with a growing love, joy, and inner peace. They fail to realize that what God wants for each is based on what is best for each instead of Satan with his deceptions, which leads to a lesser quality life and ends with eternal separation from God and His eternal holy family.

यीशु के पवित्र आत्मा के माध्यम से कलीसिया के नेतृत्व के द्वारा परमेश्वर अपनी सृष्टि में निरंतर कार्य करता है, सभी के लिए अपने महान प्रेम की सच्चाई और उनके पवित्र जीवन मार्ग का पालन करने के महत्व को सिखाता है। परमेश्वर का सभी लोगों के साथ जन्म लेने के समय से शुरू होने वाला एक आध्यात्मिक संबंध होता है और वह उन्हें जीवन भर वास्तविकता को जानने में मदद करता है लेकिन फिर भी वह उस बड़े धोखेबाज अर्थात शैतान को सभी को प्रलोभन देने की अनुमति देता है ताकि वे अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जिएं अपने सृष्टिकर्ता की उपेक्षा करते हुए। कई लोग ऐसे जीवन से संतुष्ट रहते हैं जहाँ परमेश्वर उनका अगुवा नहीं होता, यह महसूस करने में असफल रहते हैं कि परमेश्वर के नेतृत्व का पालन करने के साथ एक बेहतर जीवन आता है जो बढ़ते प्रेम, आनंद और आंतरिक शांति से भरा होता है। वे यह समझने में विफल रहते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक के लिए जो चाहता है वह प्रत्येक के लिए सर्वोत्तम पर आधारित है न कि शैतान के धोखों पर जो एक निम्न गुणवत्ता वाले जीवन की ओर ले जाता है और परमेश्वर और उनके अनंत पवित्र परिवार से शाश्वत अलगाव के साथ समाप्त होता है।

Even while under great duress and persecution at times, Jesus' first-century followers helped as many as would listen see past Satan's deceptions in order that they might see and acknowledge the realty of our loving Creator.[224] ***Every generation including our own must do the same even if the personal cost is high!*** We must come to understand within our hearts as well as our minds that ***eternal separation from God is the worst thing that can happen to anyone***. As we come to understand the importance of Jesus' command ***to make disciples***, it becomes apparent that we should understand some of the basics of sharing the truth of God's Creation with others.

यहाँ तक कि कभी–कभी भारी दबाव और उत्पीड़न के तहत भी, यीशु के प्रथम शताब्दी के अनुयायियों ने जितनों ने सुना, उनकी मदद की कि वे शैतान के धोखों को पार कर देख सकें ताकि वे हमारे प्रेम करने वाले सृष्टिकर्ता की वास्तविकता को देख और स्वीकार कर सकें।[224] प्रत्येक पीढ़ी, जिसमें हमारी अपनी भी शामिल है, को वही करना होगा, भले ही व्यक्तिगत कीमत अधिक हो! हमें अपने हृदय और मन दोनों में यह समझना होगा कि परमेश्वर से शाश्वत अलगाव किसी के साथ होने वाली सबसे बुरी चीज है। जैसे–जैसे हम यीशु के शिष्यों को बनाने के आदेश के महत्व को समझते हैं, यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें परमेश्वर की सृष्टि की सच्चाई को दूसरों के साथ साझा करने की कुछ बुनियादी बातों को समझना चाहिए।

---

[224] Examples: Col 1:24; cf. 2 Cor 4:7-11; 16-18; 1 Peter 1:6-9; Heb 10:32-39; and others. उदाहरणः कुलु 1:24; देखें 2 कुरू: 4:7–11; 16–18; 1 पतरस 1:6–9; इब्रा 10:32–39; अन्य।

Effective witnessing starts with a genuine concern about others with intentional ongoing alertness ***to share Life*** with anyone God puts before us as we go about our everyday lives. Jesus teaches us that as we learn to trust and obey Him out of love (not fear), we will do even greater works than He did while ministering on earth because He is now with the Father leading us (John 14:12). It is our privilege and honor to introduce God to others praying that they will see His goodness and receive Him into their lives. So let's continue in the footsteps of Jesus' first-century followers continuing to work hard to make God known and rejoicing with God as some of the lost start following Jesus (Luke 15:7, 10).

प्रभावी गवाही दूसरों के लिए सच्ची चिंता के साथ शुरू होती है, जिसमें निरंतर जानबूझकर सतर्कता शामिल है ताकि हम अपने रोजमर्रा के जीवन में परमेश्वर द्वारा हमारे सामने लाए गए किसी भी व्यक्ति के साथ जीवन साझा करें। यीशु हमें सिखाते हैं कि जैसे–जैसे हम प्रेम (न कि भय) से उन पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा का पालन करना सीखते हैं, हम उनके द्वारा पृथ्वी पर सेवा करते समय किए गए कार्यों से भी बड़े कार्य करेंगे, क्योंकि अब वे पिता के साथ हैं और हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं (यूहन्ना 14:12)। यह हमारा सौभाग्य और सम्मान है कि हम दूसरों को परमेश्वर से परिचित कराएँ, प्रार्थना करें कि वे उनकी भलाई को देखें और उन्हें अपने जीवन में स्वीकार करें। तो आइए, यीशु के प्रथम शताब्दी के अनुयायियों के नक्शेकदम पर चलते रहें, परमेश्वर को जाना–पहचाना बनाने के लिए कठिन परिश्रम करते रहें और परमेश्वर के साथ आनंद मनाएँ जब कुछ खोए हुए लोग यीशु का अनुसरण शुरू करते हैं (लूका 15:7, 10)।

Presently, Jesus' followers should be intentionally engaging their cultures in order to introduce the goodness of God and His phenomenally great plan of the Creation to all who will listen. The New Testament is full of historical occurrences where Jesus' followers helped many realize that their lives were not being lived out optimally unless they were listening to God. They helped them know God, His holy ways, and His plan for an eternal perfected loving family. Over the centuries, many others have followed Jesus and have also proclaimed the Father's righteousness and good plans for all who would listen. ***Just as the generations before us, our generation must do the same!***

वर्तमान में, यीशु के अनुयायियों को अपनी संस्कृतियों में जानबूझकर सक्रिय होना चाहिए ताकि परमेश्वर की भलाई और उनकी सृष्टि की अद्भुत योजना को उन सभी के सामने प्रस्तुत किया जाए जो सुनने को तैयार हैं। नया नियम ऐतिहासिक घटनाओं से भरा है जहाँ यीशु के अनुयायियों ने कई लोगों को यह महसूस करने में मदद की कि उनका जीवन तब तक सर्वोत्तम ढंग से नहीं जिया जा रहा था जब तक वे परमेश्वर की बात नहीं सुन रहे थे। उन्होंने

उन्हें परमेश्वर, उनके पवित्र मार्गों और एक शाश्वत पूर्ण प्रेममय परिवार के लिए उनकी योजना को जानने में मदद की। सदियों से, कई अन्य लोगों ने यीशु का अनुसरण किया और पिता की धार्मिकता और सभी सुनने वालों के लिए उनकी अच्छी योजनाओं का प्रचार किया। जैसे कि हमसे पहले की पीढ़ियों ने किया, हमारी पीढ़ी को भी वही करना होगा!

The Father works with His Son, the Holy Spirit, and Jesus' followers of every generation to help everyone know the reality of His Creation including His redeeming work available to all: (1) through ***the Holy Spirit's personal teaching*** about life and the Creation;[225] (2) through ***the Holy Spirit's convicting teaching*** regarding sin, righteousness, and the judgment to come (John 16:7-11); and 3) through ***Jesus and His followers' teaching*** about God, His loving righteous way of life, and His helpful written Word, which provides opportunities for everyone to know God better.

पिता अपने पुत्र, पवित्र आत्मा, और प्रत्येक पीढ़ी के यीशु के अनुयायियों के साथ मिलकर कार्य करते हैं ताकि हर कोई उनकी सृष्टि की वास्तविकता को जान सके, जिसमें सभी के लिए उपलब्ध उनकी मुक्ति का कार्य शामिल है: (1) पवित्र आत्मा के जीवन और सृष्टि के बारे में व्यक्तिगत शिक्षण के माध्यम से; [226] (2) पवित्र आत्मा के पाप, धार्मिकता, और आने वाले न्याय के बारे में दोषसिद्ध करने वाले शिक्षण के माध्यम से (यूहन्ना 16:7–11); और (3) यीशु और उनके अनुयायियों के परमेश्वर, उनके प्रेममय धार्मिक जीवन मार्ग, और उनके सहायक लिखित वचन के बारे में शिक्षण के माध्यम से, जो सभी को परमेश्वर को बेहतर ढंग से जानने के अवसर प्रदान करता है।

Jesus' followers of all generations are commanded to make disciples of all people as they live out their lives (Matt 28:10-20). As they share the Gospel (the Good News) with those not following Jesus and teach about: (1) God's love; (2) abundant free will; (3) personal sin; (4) God's redeeming work; and (5) personal repentance, each one hearing the Gospel (Good News) message is personally responsible for their response.

यीशु के सभी पीढ़ियों के अनुयायियों को आज्ञा दी गई है कि वे अपने जीवन को जीते हुए सभी लोगों को शिष्य बनाएं (मत्ती 28:10–20)। जब वे उन लोगों के साथ सुसमाचार (शुभ समाचार) साझा करते हैं जो यीशु का अनुसरण नहीं कर रहे हैं और निम्नलिखित के बारे में सिखाते हैं: (1) परमेश्वर का प्रेम; (2) प्रचुर स्वतंत्र इच्छा; (3) व्यक्तिगत पाप; (4) परमेश्वर का छुटकारा देने वाला

---

[225] Rom 1:18-32; 2:11-16; cf. 1 John 2:27. रोमियों 1:18–32; 2:11–16; देखें 1 यूहन्ना 2:27।

कार्य; और (5) व्यक्तिगत पश्चाताप, तो सुसमाचार (शुभ समाचार) संदेश सुनने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार है।

As Jesus' followers share the Good News about what God is doing through His Creation, some will experience moments of spiritual awakening. During these moments, individuals have an opportunity to realize the damaging effect of personal sin and make a conscious decision to turn from their self-centered and selfish ways to God and His loving righteous ways (repentance). Even if some do not want to listen to the Father during their spiritual awakening moments, they are required to consider Him and His way of life including the cost of submitting to Him and following Jesus. Eventually, everyone must personally decide to either receive or reject Jesus; when one chooses not to receive Him as lord and savior, that is the same as rejecting Him and our Heavenly Father.

जैसे ही यीशु के अनुयायी परमेश्वर के सृजन के माध्यम से उसके कार्यों के बारे में शुभ समाचार साझा करते हैं, कुछ लोग आध्यात्मिक जागृति के क्षणों का अनुभव करेंगे। इन क्षणों के दौरान, व्यक्तियों को व्यक्तिगत पाप के हानिकारक प्रभाव को समझने और अपनी स्वार्थी व आत्मकेंद्रित प्रवृत्तियों से परमेश्वर और उनके प्रेमपूर्ण धार्मिक मार्गों की ओर मुड़ने का सचेत निर्णय लेने का अवसर मिलता है (पश्चाताप)। भले ही कुछ लोग अपने आध्यात्मिक जागृति के क्षणों में पिता की बात सुनना न चाहें, उन्हें परमेश्वर और उनके जीवन के मार्ग पर विचार करने की आवश्यकता होती है, जिसमें उनके सामने समर्पण करने और यीशु का अनुसरण करने की कीमत भी शामिल है। अंततः, प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से यह निर्णय लेना होता है कि वे यीशु को स्वीकार करें या अस्वीकार करें; जब कोई उन्हें प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं करता, तो यह उन्हें और हमारे स्वर्गीय पिता को अस्वीकार करने के समान है।

Witnessing through Actions as Well as Words
कार्यों और शब्दों दोनों के माध्यम से गवाही देना

For those whom we encounter through everyday life, our actions coupled with our words are important parts of our overall witness for God. Combined effectively, they show people how God's children love both God and them. When someone is able to demonstrate God's love through their ***actions as well as their words***, the person being witnessed to sees a fuller picture of God's love than by words alone. Therefore, it

is important to witness with both actions and words whenever possible.[226]

जिन लोगों से हम रोजमर्रा के जीवन में मिलते हैं, उनके लिए हमारे कार्य और शब्द दोनों परमेश्वर के लिए हमारी समग्र गवाही के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। प्रभावी ढंग से संयोजित होने पर, ये लोगों को दिखाते हैं कि परमेश्वर के बच्चे परमेश्वर और उनसे कैसे प्रेम करते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने कार्यों और शब्दों दोनों के माध्यम से परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करने में सक्षम होता है, तो गवाही प्राप्त करने वाला व्यक्ति केवल शब्दों की तुलना में परमेश्वर के प्रेम की अधिक पूर्ण तस्वीर देखता है। इसलिए, जब भी संभव हो, कार्यों और शब्दों दोनों के साथ गवाही देना महत्वपूर्ण है।[226]

Over the years, I have witnessed in many different circumstances including everyday interactions, various forms of ongoing ministry, and while traveling. In some cases when you do not have time to build much of a relationship, it is critically importance to show kindness and genuine concern for the other's well being. Through the Holy Spirit, this may be enough to set the stage for successful witnessing where someone listens carefully to what God is saying through you.

वर्षों से, मैंने कई अलग–अलग परिस्थितियों में गवाही दी है, जिसमें रोज़मर्रा की बातचीत, विभिन्न प्रकार की निरंतर सेवकाई, और यात्रा के दौरान हुए अनुभव शामिल हैं। कुछ मामलों में, जब आपके पास रिश्ता बनाने के लिए ज्यादा समय नहीं होता, तो दूसरों के प्रति दयालुता और उनकी भलाई के लिए वास्तविक चिंता दिखाना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। पवित्र आत्मा के माध्यम से, यह सफल गवाही के लिए मंच तैयार करने के लिए पर्याप्त हो सकता है, जहाँ कोई व्यक्ति ध्यान से सुनता है कि परमेश्वर आपके माध्यम से क्या कह रहा है।

While living out your everyday life, you will have opportunities to demonstrate your love and concern for individuals and/or groups, and some will want to hear what you have to say about God. They may come to understand that God cares about them and that you represent Him. In all cases, if you are able to get individuals to give you the opportunity to discuss God and His goodness, you are moving in the right direction.

अपने रोजमर्रा के जीवन को जीते हुए, आपके पास व्यक्तियों और/या समूहों के प्रति अपने प्रेम और चिंता को प्रदर्शित करने के अवसर होंगे, और कुछ लोग यह सुनना चाहेंगे कि आपको परमेश्वर के बारे में क्या कहना है। वे यह समझ सकते हैं कि परमेश्वर उनकी परवाह करता है और आप उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। सभी मामलों में, यदि आप व्यक्तियों को परमेश्वर और उनकी भलाई के बारे में चर्चा करने का अवसर देने के लिए प्रेरित कर पाते हैं, तो आप सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

---

[226] Matt 5:14-16; cf. Eph 2:10; 1 John 3:18. मत्ती 5:14–16; देखें इफि 2:10; 1 यूहन्ना 3:18।

Most of us have heard the phrase that "actions speak louder than words." This is an important concept for Jesus' followers to remember as they help others get to know God better. I have a friend in ministry in an area of the world where Hindus have controlled much of the population for centuries. Over the years, missionaries had come into his area and had been largely unsuccessful in getting others to follow Jesus. They shared the Good News of the One True Creator God in their polytheistic world. They proclaimed a better life now and a perfect life filled with love, joy, and peace in the future if people would turn away from their many gods and start following the Son of God, Jesus, the Messiah (Christ).

हममें से अधिकांश ने यह वाक्यांश सुना है कि "बातें नहीं, कर्म बोलते हैं।" यह यीशु के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसे उन्हें याद रखना चाहिए क्योंकि वे दूसरों को परमेश्वर को बेहतर ढंग से जानने में मदद करते हैं। मेरा एक मित्र विश्व के एक क्षेत्र में सेवकाई में है जहाँ सदियों से हिंदुओं का अधिकांश आबादी पर नियंत्रण रहा है। वर्षों से, मिशनरी उनके क्षेत्र में आए और दूसरों को यीशु का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करने में काफी हद तक असफल रहे। उन्होंने उनके बहुदेववादी विश्व में एकमात्र सच्चे सृजनकर्ता परमेश्वर के शुभ समाचार को साझा किया। उन्होंने वर्तमान में बेहतर जीवन और भविष्य में प्रेम, आनंद, और शांति से भरे एक पूर्ण जीवन की घोषणा की, यदि लोग अपने कई देवताओं से मुड़कर परमेश्वर के पुत्र, यीशु, मसीह (क्राइस्ट) का अनुसरण शुरू करें।

After many years of the Church not making any significant progress in this area, one of my friends and his associates were successfully able to help many know God well enough to commit to following Jesus. It was largely due to the fact that he and his fellow ministers patiently worked with the people of this area helping them ***to experience*** God's love by helping them with everyday needs including providing clean drinking water, learning personal hygiene, improving education, and helping them find better work as they simultaneously talked to them about the goodness of the One True God versus all of Satan's deceptions that kept them in bondage.

कई वर्षों तक चर्च के इस क्षेत्र में कोई उल्लेखनीय प्रगति न करने के बाद, मेरे एक मित्र और उनके सहयोगियों ने कई लोगों को परमेश्वर को इतना अच्छी तरह जानने में सफलतापूर्वक मदद की कि वे यीशु का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध हो गए। इसका मुख्य कारण यह था कि उन्होंने और उनके सहयोगी सेवकों ने इस क्षेत्र के लोगों के साथ धैर्यपूर्वक काम किया, उन्हें परमेश्वर के प्रेम का अनुभव कराने में मदद की, उनकी रोजमर्रा की जरूरतों जैसे स्वच्छ पेयजल प्रदान करने, व्यक्तिगत स्वच्छता सिखाने, शिक्षा में सुधार करने, और बेहतर काम खोजने में सहायता करने के साथ–साथ उन्हें एकमात्र

सच्चे परमेश्वर की भलाई के बारे में बताया, बनाम शैतान के उन सभी छलावों के, जो उन्हें बंधन में रखते थे।

As the people saw God's love in action, they were more receptive to hear about how the Creator loves all impartially and wanted them to have a better life now and in the future following Jesus. With God's love being manifest in very tangible ways through Jesus' followers' ***actions*** along with encouraging words from the Bible, many people in this area walked away from Satan's deceptions within Hinduism and a long standing caste system and now live a much more abundant life following Jesus. Let's help others know God using both words *and* actions whenever possible!

जैसे ही लोगों ने परमेश्वर के प्रेम को कार्यों में देखा, वे इस बारे में सुनने के लिए अधिक ग्रहणशील हो गए कि कैसे सृजनकर्ता सभी से निष्पक्ष रूप से प्रेम करता है और चाहता है कि वे यीशु का अनुसरण करके वर्तमान और भविष्य में बेहतर जीवन जिएं। यीशु के अनुयायियों के कार्यों के माध्यम से परमेश्वर के प्रेम को बहुत ठोस रूपों में प्रकट होने और बाइबल के प्रोत्साहन देने वाले शब्दों के साथ, इस क्षेत्र के कई लोगों ने हिंदू धर्म और लंबे समय से चली आ रही जाति व्यवस्था में शैतान के छलावों को छोड़ दिया और अब यीशु का अनुसरण करके कहीं अधिक प्रचुर जीवन जी रहे हैं। आइए, जब भी संभव हो, शब्दों और कार्यों दोनों का उपयोग करके दूसरों को परमेश्वर को जानने में मदद करें!

Conversational Witnessing
संवादात्मक गवाही देना

In their book, *Becoming a Contagious Christian*, Bill Hybel, Lee Strobel, and Mark Mittelberg discuss how easily Jesus' followers can intentionally witness. They state that witnessing should be motivated by love.[227] Knowing that God is relational and has created His children to be relational, when we have the opportunity, we should take the time to build godly relationships looking for opportunities to discuss God's great love and corresponding righteous actions for all. As already noted several times, it is also important to remember that most of the people whom we come in contact with notice ***what we do*** as well as ***what we***

---

[227] Bill Hybels and Mark Mittleburg, *Becoming a Contagious Christian* (Grand Rapids: Zondervan, 1994), 67ff; cf. John 3:16-17; 2 Cor 5:14; 1 John 4:10-19. बिल हाइबल्स और मार्क मिटलबर्ग, बिकमिंग अ कॉन्टेजियस क्रिश्चियन (ग्रैंड रैपिड्सः ज़ॉन्डर्वन, 1994), 67 और आगे; तुलना करें, यूहन्ना 3:16–17; 2 कुरिन्थियों 5:14; 1 यूहन्ना 4:10–19।

say. Therefore, it is important to live a loving righteous life that accurately expresses God's caring nature.

अपनी पुस्तक, बिकमिंग ऐ कंटेजियस क्रिश्चियन में, बिल हाइबेल, ली स्ट्रोबेल, और मार्क मिटेलबर्ग चर्चा करते हैं कि यीशु के अनुयायी कितनी आसानी से जानबूझकर गवाही दे सकते हैं। वे कहते हैं कि गवाही देना प्रेम से प्रेरित होना चाहिए।[227] यह जानते हुए कि परमेश्वर संबंधपरक है और उसने अपने बच्चों को भी संबंधपरक बनाया है, जब हमें अवसर मिले, तो हमें परमेश्वर के महान प्रेम और उसके अनुरूप धार्मिक कार्यों के बारे में चर्चा करने के अवसर तलाशते हुए, ईश्वरीय संबंध बनाने के लिए समय निकालना चाहिए। जैसा कि पहले कई बार उल्लेख किया गया है, यह भी याद रखना महत्वपूर्ण है कि जिन लोगों से हम संपर्क में आते हैं, वे ज्यादातर यह देखते हैं कि हम क्या करते हैं और साथ ही हम क्या कहते हैं। इसलिए, एक प्रेमपूर्ण और धार्मिक जीवन जीना महत्वपूर्ण है जो परमेश्वर की देखभाल करने वाली प्रकृति को सटीक रूप से व्यक्त करे।

Later in their book, they discuss how one should look for ways within everyday conversations to move from the natural to the spiritual realm. In addition, they discuss the importance of looking for ways to build a communication bridge from the physical realm to the spiritual realm (pp. 135ff). In some cases, individuals have already started listening to the Holy Spirit and are eager to discuss God. But normally, you will need to figure out how to ***transition*** the conversation from the natural to the spiritual in order to have any real discussion about God. It is good somewhere fairly early in a witnessing conversation to come up with a statement or pose a question involving God to see if the other person has any desire to speak about spiritual matters. It could be as simple as saying something like, "I do not know what I would do without God's guidance and help." If the person is receptive, then you will be able to develop a spiritual conversation through God's leading to see how far you should continue the spiritual part of your conversation.

अपनी पुस्तक में बाद में, वे चर्चा करते हैं कि रोज़मर्रा की बातचीत में प्राकृतिक से आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर बढ़ने के तरीके कैसे खोजने चाहिए। इसके अलावा, वे भौतिक क्षेत्र से आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर संचार का एक सेतु बनाने के महत्व पर भी चर्चा करते हैं (पृष्ठ 135 और आगे)। कुछ मामलों में, व्यक्ति पहले से ही पवित्र आत्मा की बात सुनना शुरू कर चुके होते हैं और परमेश्वर के बारे में चर्चा करने के लिए उत्सुक होते हैं। लेकिन सामान्य रूप से, परमेश्वर के बारे में कोई वास्तविक चर्चा करने के लिए आपको बातचीत को प्राकृतिक से आध्यात्मिक की ओर ले जाने का तरीका खोजना होगा। गवाही देने वाली बातचीत में शुरुआत में ही कहीं न कहीं परमेश्वर से संबंधित एक बयान देना या सवाल पूछना अच्छा होता है ताकि यह देखा जा सके कि दूसरा व्यक्ति आध्यात्मिक मामलों के बारे में बात करने की इच्छा रखता है या नहीं।

यह इतना सरल हो सकता है जितना कि कुछ इस तरह कहना, "मुझे नहीं पता कि मैं परमेश्वर के मार्गदर्शन और मदद के बिना क्या करता।" यदि व्यक्ति ग्रहणशील है, तो आप परमेश्वर के मार्गदर्शन के माध्यम से एक आध्यात्मिक बातचीत विकसित कर पाएंगे और यह देख पाएंगे कि आपको बातचीत के आध्यात्मिक हिस्से को कितना आगे ले जाना चाहिए।

With so many things going on in our lives, the most important part of witnessing is being willing and intentionally open to God's leading at all times throughout each day. ***Be intentionally ready to initiate a spiritual conversation!*** Then as the Holy Spirit leads, be sensitive to the length and depth of each witnessing encounter. I have had times where I have felt God's leading to speak to someone about Him for only a few minutes, and at other times, I have spoken for hours. God will show you through the other's actions and words how long and on what level you should discuss Him. From my personal experiences, it has normally been fairly straightforward to start a spiritual discussion based on personal or shared events. In many cases, as you are developing a closer relationship with someone, God will help you make timely transitions from everyday secular conversations into spiritual discussions.

हमारे जीवन में इतनी सारी चीजें चल रही होने के बावजूद, गवाही देने का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हर दिन हर समय परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए इच्छुक और इरादतन खुले रहना है। आध्यात्मिक बातचीत शुरू करने के लिए जानबूझकर तैयार रहें! फिर, जैसे–जैसे पवित्र आत्मा मार्गदर्शन करता है, प्रत्येक गवाही के अवसर की अवधि और गहराई के प्रति संवेदनशील रहें। मेरे पास ऐसे समय आए हैं जब मैंने परमेश्वर के मार्गदर्शन को महसूस किया कि किसी से उनके बारे में केवल कुछ मिनटों के लिए बात करनी है, और अन्य समयों में, मैंने घंटों तक बात की है। परमेश्वर आपको दूसरे व्यक्ति के कार्यों और शब्दों के माध्यम से दिखाएंगे कि आपको कितने समय तक और किस स्तर पर उनके बारे में चर्चा करनी चाहिए। मेरे व्यक्तिगत अनुभवों से, व्यक्तिगत या साझा घटनाओं के आधार पर आध्यात्मिक चर्चा शुरू करना सामान्य रूप से काफी सरल रहा है। कई मामलों में, जैसे–जैसे आप किसी के साथ निकटतर संबंध विकसित करते हैं, परमेश्वर आपको रोजमर्रा की सांसारिक बातचीत से आध्यात्मिक चर्चाओं में समयबद्ध रूप से परिवर्तन करने में मदद करेगा।

As you are developing godly relationships with others, it is also good to introduce them to others who are also followers of Jesus so that they are able to see more clearly what following Jesus might look like. For some, it may be as easy as simply inviting them over to your house to meet some Christian friends or asking them to join you at church, or come to Bible studies, and/or special Christian events such as an Easter celebration.

जैसे–जैसे आप दूसरों के साथ ईश्वरीय संबंध विकसित कर रहे हैं, यह भी अच्छा है कि उन्हें अन्य यीशु के अनुयायियों से मिलवाया जाए ताकि वे और स्पष्ट रूप से देख सकें कि यीशु का अनुसरण करना कैसा हो सकता है। कुछ लोगों के लिए, यह उतना ही आसान हो सकता है जितना कि उन्हें अपने घर पर कुछ मसीही मित्रों से मिलने के लिए आमंत्रित करना, या उन्हें चर्च में अपने साथ आने के लिए कहना, या बाइबल अध्ययन में शामिल होने के लिए, और/या विशेष मसीही आयोजनों जैसे ईस्टर उत्सव में आने के लिए आमंत्रित करना।

There are many helpful books and videos available that discuss the various ways to witness ***intentionally*** to others. A couple additional books to consider are Bill Hybels' *Just Walk Across the Room*, and Dick Innes' *I Hate Witnessing*.[228] If you ask God to help you tell others about how good He is and how His way of life brings about the best outcomes, now and forever, He will help you witness more effectively taking into consideration everyone's unique personalities and experiences.

कई उपयोगी पुस्तकें और वीडियो उपलब्ध हैं जो दूसरों को सचेत रूप से गवाही देने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करती हैं। विचार करने के लिए कुछ अतिरिक्त पुस्तकें हैं जैसे बिल हाइबल्स की जस्ट वॉक ऐक्रॉस दि रूम और डिक इनेस की आय हेट विटनेसिंग ।[228] यदि आप परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह आपको दूसरों को यह बताने में मदद करें कि वह कितना अच्छा है और उसका जीवन जीने का तरीका वर्तमान और हमेशा के लिए सर्वोत्तम परिणाम लाता है, तो वह प्रत्येक व्यक्ति के अद्वितीय व्यक्तित्व और अनुभवों को ध्यान में रखते हुए आपको अधिक प्रभावी ढंग से गवाही देने में मदद करेगा

Important Words and Concepts
महत्वपूर्ण शब्द और अवधारणाएँ

When presenting the Gospel to someone, you should be sensitive to that person's present understanding of God. The range can vary significantly from some who are deceived to the point of thinking that

---

[228] Bill Hybels, *Just Walk Across the Room: Simple Steps Pointing People to Faith* (Grand Rapids: Zondervan, 2006).

Dick Innes, *I Hate Witnessing: A Handbook for Effective Christian Communications.* rev. ed. (San Clemente: Acts Communications, 2003).

बिल हाइबल्स, जस्ट वॉक अक्रास दि रूमः सिंपल स्टेप्स पाइंटिंग पीपल टू फेथ (Grand Rapids; Zondervan, 2006).

डिक इन्स, आय हेट विटनेसिंगः ए हैंडबुक फॉर इफेक्टिव क्रिश्चियन कम्यूनिकेशंस । संशोधित संस्करण (सैन क्लेमेंटेः एक्ट्स कम्युनिकेशंस, 2003).

there is no Creator to those who know that God exists and loves them deeply, but they do not want to submit to His leadership (lordship). When we speak to others about God, we need to remember that everyone is unique. We should be prepared to customize our Gospel presentations including our personal testimony in such a way as to be most effective in reaching each person within their present spiritual state of mind. God will help us with this.

जब हम किसी को सुसमाचार (गॉस्पेल) प्रस्तुत करते हैं, तो हमें उस व्यक्ति की ईश्वर के प्रति वर्तमान समझ के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। यह समझ बहुत भिन्न हो सकती है–कुछ लोग इतने भ्रमित हो सकते हंज कि वे मानते हैं कि कोई सृष्टिकर्ता (निर्माता) नहीं है, जबकि अन्य लोग जानते हैं कि ईश्वर मौजूद है और उनसे गहराई से प्रेम करता है, लेकिन वे उसके नेतृत्व (प्रभुत्व) के अधीन नहीं होना चाहते। जब हम दूसरों से ईश्वर के बारे में बात करते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। हमें अपनी सुसमाचार प्रस्तुति, जिसमें हमारी व्यक्तिगत गवाही भी शामिल है, को इस तरह से अनुकूलित करने के लिए तैयार रहना चाहिए कि वह प्रत्येक व्यक्ति की वर्तमान आध्यात्मिक स्थिति में सबसे प्रभावी हो। ईश्वर इसमें हमारी सहायता करेगा।

In any and all cases, there are some basic biblical principles discussed below that everyone should know. Everyone should be ready to discuss the basics of God's ample free-will Creation and His ongoing redemptive work, which is based on His impartial love and redemptive work that is available to all no matter how bad someone has been. Many of the passages supporting these foundational truths do not need to be memorized, but there are some that you should be familiar with as discussed below.

हर स्थिति में, कुछ बुनियादी बाइबिल सिद्धांत हैं, जिनके बारे में नीचे चर्चा की गई है, और जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को जानना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर की व्यापक स्वतंत्र इच्छा से की गई सृष्टि और उसके निरंतर मुक्ति कार्य के मूल तत्वों पर चर्चा करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जो उसके निष्पक्ष प्रेम और मुक्ति कार्य पर आधारित है, जो सभी के लिए उपलब्ध है, चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बुरा क्यों न रहा हो। इन मूलभूत सत्यों का समर्थन करने वाले कई बाइबिल अंशों को याद करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन कुछ ऐसे हैं जिनके साथ आपको परिचित होना चाहिए, जैसा कि नीचे चर्चा की गई है।

In most Gospel presentations, it is normally good to start with a brief overview of God's Creation as described in Genesis chapters one through three. The main purpose of the Creation was to create a loving righteous volunteer family for God. Mankind was created in God's image according to His likeness (Gen 1:26-27) with the ability to obey or disobey Him (Gen 2:16-17; 4:5-7 & others). God is ultimately seeking an

eternal mutually reciprocating relationship with His maturing children. The first couple, Adam and Eve, chose to disobey God (Gen 3:6) separating all humanity for a short time from a close relationship with Him (Gen 3:22-24). With God knowing all things in advance prior to starting the physical part of the Creation, the Father and Son worked out a plan through Jesus' atoning death that would remove all bad actions (sin) from those who would receive Them into their lives as lord and savior (Rom 10:9-13; Acts 2:22-39; Ps 103:12; Gal 3:13-14; Col 2:13-14; 2 Cor 5:21; 1 Peter 2:24; cf. John 3:14-17; Matt 26:36-46). When God finishes adding new members to His eternal holy family, he will finalize His Creation in perfection, which includes a final combined eternal spiritual and physical state (resurrected body) for those who become part of His family (Phil 3:20-21; cf. 1 Thess 4:13-17) and eternal separation from Him for all who do not (2 Peter 3:7; Rev 20:11-15).

अधिकांश सुसमाचार प्रस्तुतियों में, सामान्य रूप से उत्पत्ति अध्याय एक से तीन में वर्णित ईश्वर की सृष्टि का संक्षिप्त अवलोकन शुरू करना अच्छा होता है। सृष्टि का मुख्य उद्देश्य ईश्वर के लिए एक प्रेममय, धर्मी, स्वैच्छिक परिवार बनाना था। मानव को ईश्वर की छवि में, उसके स्वरूप के अनुसार बनाया गया (उत्पत्ति 1:26–27) जिसमें उसे आज्ञा मानने या अवज्ञा करने की क्षमता दी गई (उत्पत्ति 2:16–17; 4:5–7 और अन्य)। ईश्वर अंततः अपने परिपक्व होते बच्चों के साथ एक अनंत, पारस्परिक प्रेमपूर्ण संबंध की तलाश में है। पहले दंपति, आदम और हव्वा, ने ईश्वर की अवज्ञा करने का निर्णय लिया (उत्पत्ति 3:6), जिसने समस्त मानवजाति को थोड़े समय के लिए उनके साथ निकट संबंध से अलग कर दिया (उत्पत्ति 3:22–24)। ईश्वर, जो सृष्टि के भौतिक भाग को शुरू करने से पहले सब कुछ पहले से जानता था, ने पिता और पुत्र के रूप में यीशु के प्रायश्चितकारी मृत्यु के माध्यम से एक योजना बनाई, जो उन लोगों के सभी बुरे कार्यों (पापों) को हटा देगी जो उन्हें अपने जीवन में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेंगे (रोमियों 10:9–13; प्रेरितों के काम 2:22–39; भजन 103:12; गलातियों 3:13–14; कुलुस्सियों 2:13–14; 2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 2:24; तुलना करें: यूहन्ना 3:14–17; मत्ती 26:36–46)। जब ईश्वर अपने अनंत पवित्र परिवार में नए सदस्यों को जोड़ना समाप्त कर लेगा, तो वह अपनी सृष्टि को पूर्णता में अंतिम रूप देगा, जिसमें उनके परिवार का हिस्सा बनने वालों के लिए एक अंतिम संयुक्त आध्यात्मिक और भौतिक अवस्था (पुनरुत्थित शरीर) शामिल होगी (फिलिप्पियों 3:20–21; तुलना करें: 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–17) और जो लोग उनके परिवार का हिस्सा नहीं बनेंगे, उनके लिए उनसे अनंत अलगाव होगा (2 पतरस 3:7; प्रकाशितवाक्य 20:11–15)।

The heart of the Gospel message is about how Jesus, the Son of God, the long awaited Anointed One (Messiah), willingly died on a cross suffering shame, excruciating physical pain, and excruciating spiritual pain (complete separation from His Heavenly Father) after taking on the

bad actions of all who turned to God throughout the entire Creation making it possible for all who learn to love, trust, and obey God to live eternal sinless lives (Rom 8:28-30; cf. Heb 1:2-3; 2 Cor 5:21; 1 Peter 2:24). This incredible miracle came at a great cost to God through the suffering and separation of the Father and Son during the Son's three days in Hades (Sheol) paying the penalty for our sins (separation from His Heavenly Father). The Good News is that although ***all*** have sinned and fallen short of living in godly perfection (Rom 3:23), everyone of all ages can be made complete with total sin removal by learning to return God's love (Rom 6:22-23; 1 John 4:10-16; cf. Rom 10:4), which includes trusting and obeying Him (John 3:16; 36; 14:23; 15:10).

सुसमाचार संदेश का मूल भाव इस बात पर है कि कैसे यीशु, ईश्वर के पुत्र, बहुप्रतीक्षित अभिषिक्त (मसीहा), ने स्वेच्छा से क्रूस पर मृत्यु स्वीकार की, जिसमें उन्होंने अपमान, अत्यधिक शारीरिक पीड़ा, और अत्यधिक आध्यात्मिक पीड़ा (अपने स्वर्गीय पिता से पूर्ण अलगाव) सहन की, क्योंकि उन्होंने समस्त सृष्टि में ईश्वर की ओर मुड़ने वाले सभी लोगों के बुरे कार्यों (पापों) को अपने ऊपर ले लिया, जिससे उन सभी के लिए संभव हुआ जो ईश्वर से प्रेम करना, उस पर भरोसा करना और उसकी आज्ञा मानना सीखते हैं, वे अनंत पापरहित जीवन जी सकें (रोमियों 8:28–30; तुलना करें: इब्रानियों 1:2–3; 2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 2:24)। यह अविश्वसनीय चमत्कार ईश्वर को बहुत भारी कीमत पर प्राप्त हुआ, जो पिता और पुत्र के अलगाव और पुत्र के तीन दिनों तक हादेस (शेओल) में रहने के दौरान हमारे पापों की सजा (अपने स्वर्गीय पिता से अलगाव) चुकाने के माध्यम से हुआ। शुभ समाचार यह है कि यद्यपि सभी ने पाप किया है और ईश्वरीय पूर्णता में जीने में कमी की है (रोमियों 3:23), सभी आयु वर्ग के लोग पूर्ण पापमुक्ति के साथ पूर्ण बन सकते हैं यदि वे ईश्वर के प्रेम को लौटाना सीखें (रोमियों 6:22–23; 1 यूहन्ना 4:10–16; तुलना करें: रोमियों 10:4), जिसमें उस पर भरोसा करना और उसकी आज्ञा मानना शामिल है (यूहन्ना 3:16; 36; 14:23; 15:10)।

With a growing love, trust, and obedience, individuals have a better chance to turn from self-centeredness to God and His way of life (repentance: 2 Peter 3:9) and ask God to forgive their sins and lead their lives (1 John 1:9 & more). Once they receive God into their lives as lord and savior, they are brought into His eternal intimate holy family through spiritual birth (John 1:11-13; 3:3, 5; Eph 1:13-14). They become new creations (2 Cor 5:17) gaining the mind of Christ (1 Cor 2:16). Having the mind of Christ and being part of God's eternal close-knit holy family, Jesus' followers joyfully do their part (John 17:13 & more) in leading others to God so that as many as possible will receive God into their lives as lord as well as savior and thereby become part of His eternal holy family (saved) (Matt 28:18-20). Eventually all who learn to

return God's love and willingly follow His leadership will be in His eternal presence in the New Heaven and on the New Earth (Eph 1:13-14; Rom 10:9).

बढ़ते हुए प्रेम, भरोसे और आज्ञाकारिता के साथ, व्यक्तियों को स्व–केंद्रितता से ईश्वर और उनके जीवन–मार्ग की ओर मुड़ने (पश्चातापः 2 पतरस 3:9) और ईश्वर से अपने पापों की क्षमा मांगने तथा अपने जीवन का नेतृत्व करने के लिए कहने का बेहतर अवसर मिलता है (1 यूहन्ना 1:9 और अन्य)। एक बार जब वे ईश्वर को अपने जीवन में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लेते हैं, तो वे आध्यात्मिक जन्म के माध्यम से उनके अनंत घनिष्ठ पवित्र परिवार में शामिल हो जाते हैं (यूहन्ना 1:11–13; 3:3, 5; इफिसियों 1:13–14)। वे नई सृष्टि बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17) और मसीह की बुद्धि प्राप्त करते हैं (1 कुरिन्थियों 2:16)। मसीह की बुद्धि और ईश्वर के अनंत घनिष्ठ पवित्र परिवार का हिस्सा होने के कारण, यीशु के अनुयायी आनंदपूर्वक अपना योगदान देते हैं (यूहन्ना 17:13 और अन्य) ताकि दूसरों को ईश्वर की ओर ले जाया जाए, जिससे जितने संभव हो उतने लोग ईश्वर को अपने जीवन में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें और इस प्रकार उनके अनंत पवित्र परिवार का हिस्सा बनें (मुक्ति प्राप्त करें) (मत्ती 28:18–20)। अंततः, जो लोग ईश्वर के प्रेम को लौटाना और उनकी अगुवाई को स्वेच्छा से स्वीकार करना सीखते हैं, वे नए आकाश और नई पृथ्वी में उनकी अनंत उपस्थिति में होंगे (इफिसियों 1:13–14; रोमियों 10:9)।

In addition to the Scripture references noted above, ***here are some important Scripture references shown below that everyone should be familiar with.*** Some of the most important Scripture references have asterisks placed in front of them. If you do not have these critical verses memorized, prayerfully consider doing so.

- **God Is Creating a Close-Knit Eternal Holy Family, which is the Crown Jewel of His Creation (John 3:3, 5; 17:11, 20-23; Rev 21:1-6)!**
- **With abundant free will came disobedience with its bad actions (sin); God's main message to all has been to turn from sin to His way of a caring righteous life, which is called repentance (Matt 3:2; 4:17; Acts 2:38; *2 Peter 3:9)!**
- **Jesus' followers proclaim that Jesus is the only way to eternal life *with* God through repentance (*John 14:6)!**
- **Jesus' atoning death on a cross provides the Way for all who learn to trust and obey God out of a growing love for Him to**

be with Him & one another forever without sin (*John 3:14-17, 36; 14:21, 23; *2 Cor 5:21; 1 Peter 2:24; cf. Gal 3:13-14; Col 2:13-14) and is available for all who receive Him and His way of life (John 1:11-13; *Rev 3:20)!

- **Jesus' followers grow in their love, trust, and obedience as they step out in faith doing the good works that have been assigned to them prior to the physical creation of the world (*Eph 2:10; Matt 28:18-20; Heb 5:14).**

उपरोक्त उल्लिखित पवित्रशास्त्र संदर्भों के अतिरिक्त, नीचे कुछ महत्वपूर्ण पवित्रशास्त्र संदर्भ दिए गए हैं जिनके साथ प्रत्येक व्यक्ति को परिचित होना चाहिए। कुछ सबसे महत्वपूर्ण पवित्रशास्त्र संदर्भों के सामने तारांकन चिह्न (*) लगाए गए हैं। यदि आपके पास ये महत्वपूर्ण आयतें याद नहीं हैं, तो प्रार्थनापूर्वक इनका स्मरण करने पर विचार करें।

+ ईश्वर एक घनिष्ठ अनंत पवित्र परिवार बना रहा है, जो उनकी सृष्टि का मुकुट रत्न है (यूहन्ना 3:3, 5; 17:11, 20–23; प्रकाशितवाक्य 21:1–6)!

+ प्रचुर स्वतंत्र इच्छा के साथ अवज्ञा और इसके बुरे कार्य (पाप) आए; ईश्वर का सभी के लिए मुख्य संदेश पाप से मुड़कर उनके देखभाल करने वाले धर्मी जीवन–मार्ग की ओर आने का रहा है, जिसे पश्चाताप कहा जाता है (मत्ती 3:2; 4:17; प्रेरितों के काम 2:38; '2 पतरस 3:9)!

+ यीशु के अनुयायी घोषणा करते हैं कि यीशु ही पश्चाताप के माध्यम से ईश्वर के साथ अनंत जीवन का एकमात्र मार्ग है ('यूहन्ना 14:6)!

+ यीशु की क्रूस पर प्रायश्चितकारी मृत्यु उन सभी के लिए मार्ग प्रदान करती है जो ईश्वर के लिए बढ़ते प्रेम के कारण उन पर भरोसा करना और उनकी आज्ञा मानना सीखते हैं, ताकि वे उनके और एक–दूसरे के साथ पापरहित अनंतकाल तक रह सकें ('यूहन्ना 3:14–17, 36; 14:21, 23; '2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 2:24; तुलना करें: गलातियों 3:13–14; कुलुस्सियों 2:13–14) और यह उन सभी के लिए उपलब्ध है जो उन्हें और उनके जीवन–मार्ग को स्वीकार करते हैं (यूहन्ना 1:11–13; 'प्रकाशितवाक्य 3:20)!

+ यीशु के अनुयायी अपने प्रेम, भरोसे और आज्ञाकारिता में विश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए उन अच्छे कार्यों को करते हैं जो विश्व की भौतिक सृष्टि से पहले उनके लिए निर्धारित किए गए थे ('इफिसियों 2:10; मत्ती 28:18–20; इब्रानियों 5:14)।

If you run across individuals who are not sure about their salvation, ask them if they remember a time when they asked God for forgiveness of their sins and told Him that they would gladly follow Jesus wherever He leads. If the answer is "no," then they need to do so as soon as they are ready. If the answer is "yes," then they should

already be new creations and part of God's eternal close-knit holy family.[229] With this being the case, ask if they have noticed a change in their lives since starting to follow Jesus that includes things like wanting to please God; living more loving and righteous lives over time as our Heavenly Father develops them; experiencing a growing concern for others; being happy when someone starts to follow Jesus; and not being afraid of the coming judgment. No one has or will live a perfectly sinless physical life other than Jesus, but everyone who is following Jesus should want to please God and their overall lives should reflect a developing loving righteous walk with God and man. If their answer is "no," then they should seek God's help through prayer and godly action to improve their relationship with Him.

यदि आप ऐसे व्यक्तियों से मिलते हैं जो अपनी मुक्ति के बारे में निश्चित नहीं हैं, तो उनसे पूछें कि क्या उन्हें वह समय याद है जब उन्होंने अपने पापों की क्षमा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की थी और उसे बताया था कि वे यीशु का आनंदपूर्वक अनुसरण करेंगे जहाँ कहीं भी वह उनका मार्गदर्शन करे। यदि उत्तर "नहीं" है, तो उन्हें जितनी जल्दी हो सके तैयार होने पर ऐसा करने की आवश्यकता है। यदि उत्तर "हाँ" है, तो वे पहले से ही नई सृष्टि और ईश्वर के अनंत घनिष्ठ पवित्र परिवार का हिस्सा होने चाहिए।[229] यदि ऐसा है, तो पूछें कि क्या उन्होंने यीशु का अनुसरण शुरू करने के बाद अपने जीवन में परिवर्तन देखा है, जिसमें ऐसी बातें शामिल हैं जैसे ईश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा; समय के साथ अधिक प्रेमपूर्ण और धर्मी जीवन जीना क्योंकि हमारे स्वर्गीय पिता उनका विकास करते हैं; दूसरों के लिए बढ़ती चिंता का अनुभव करना; किसी के यीशु का अनुसरण शुरू करने पर खुशी महसूस करना; और आने वाले न्याय से भयभीत न होना। यीशु के अलावा किसी ने भी पूर्ण रूप से पापरहित शारीरिक जीवन नहीं जिया है और न ही जीएगा, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति जो यीशु का अनुसरण कर रहा है, उसे ईश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा होनी चाहिए और उनके समग्र जीवन में ईश्वर और मनुष्य के साथ एक विकासशील प्रेमपूर्ण धर्मी चाल को प्रतिबिंबित करना चाहिए। यदि उनका उत्तर "नहीं" है, तो उन्हें प्रार्थना और ईश्वरीय कार्यों के माध्यम से ईश्वर की सहायता मांगनी चाहिए ताकि उनके और ईश्वर के बीच संबंध में सुधार हो।

Stepping Out in Faith in Our Local Communities
हमारे स्थानीय समुदायों में विश्वास के साथ कदम बढ़ाना

God asks each of Jesus' followers to help others on individual, family, local-church, and community-wide levels as part of their ***daily***

[229] Eph 1:13-14; 2 Cor 5:17. इफि 1:13–14; 2 कुरू: 5:17.

lives. Although our Heavenly Father is not asking all of Jesus' followers to go into full-time ministry, ***He is asking all to step out in faith and become involved.*** As followers of Jesus listen to Him, they do their assigned parts helping their local church families proclaim the Gospel. Through prayer, seeking utilization of godly talent, and ministering under Jesus and His appointed local overseers, our Heavenly Father helps Jesus' followers serve others individually and collectively.

ईश्वर यीशु के प्रत्येक अनुयायी से व्यक्तिगत, पारिवारिक, स्थानीय कलीसिया, और समुदाय–व्यापी स्तरों पर दूसरों की सहायता करने के लिए कहता है, जो उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है। यद्यपि हमारे स्वर्गीय पिता सभी यीशु के अनुयायियों से पूर्णकालिक सेवकाई में जाने के लिए नहीं कह रहे हैं, वह सभी से विश्वास के साथ कदम बढ़ाने और शामिल होने के लिए कह रहे हैं। जैसे ही यीशु के अनुयायी उनकी बात सुनते हैं, वे अपने स्थानीय कलीसिया परिवारों को सुसमाचार की घोषणा करने में मदद करने के लिए अपने नियुक्त हिस्से को पूरा करते हैं। प्रार्थना, ईश्वरीय प्रतिभा के उपयोग की खोज, और यीशु व उनके नियुक्त स्थानीय निरीक्षकों के अधीन सेवकाई करने के माध्यम से, हमारे स्वर्गीय पिता यीशु के अनुयायियों को व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से दूसरों की सेवा करने में सहायता करते हैं।

Once an individual has made a genuine commitment to follow Jesus Christ, there is only one thing left to do: ***do it!*** We are justified and empowered only when we ***trust and obey*** the Sent Son. Therefore, let us ***joyfully do*** our assigned works, not out of resentment nor fear but out of a growing love for God and others. It is critical for Jesus' followers ***to step out in faith and actually follow Him. Implementation matters!***

एक बार जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए सच्ची प्रतिबद्धता कर लेता है, तो केवल एक ही काम बाकी रहता हैः उसे करना! हम केवल तभी धर्मी ठहराए जाते हैं और सशक्त होते हैं जब हम प्रेषित पुत्र पर भरोसा करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं। इसलिए, आइए हम आनंदपूर्वक अपने नियुक्त कार्य करें, न कि नाराजगी या भय से, बल्कि ईश्वर और दूसरों के लिए बढ़ते प्रेम के कारण। यीशु के अनुयायियों के लिए विश्वास के साथ कदम बढ़ाना और वास्तव में उनका अनुसरण करना महत्वपूर्ण है। कार्यान्वयन मायने रखता है!

If you do not follow through and implement your plans and investments, they will never do you any good! Failure to implement God's plans is constantly occurring in our contemporary local churches. Many are meeting on a regular basis with others and making plans to get serious about their walk with Jesus. But, through Satan's deceptions, personal desires, and many forms of busyness most do not implement their commitment by stepping out in faith and truly following Jesus.

यदि आप अपनी योजनाओं और निवेशों को लागू नहीं करते और उनका पालन नहीं करते, तो वे आपके लिए कभी भी लाभकारी नहीं होंगे! ईश्वर की योजनाओं को लागू न करने की विफलता हमारे समकालीन स्थानीय कलीसियाओं में निरंतर हो रही है। कई लोग नियमित रूप से दूसरों के साथ मिलते हैं और यीशु के साथ अपनी चाल को गंभीरता से लेने की योजनाएँ बनाते हैं। लेकिन, शैतान के छल, व्यक्तिगत इच्छाओं, और कई प्रकार की व्यस्तताओं के कारण अधिकांश लोग विश्वास के साथ कदम बढ़ाकर और वास्तव में यीशु का अनुसरण करके अपनी प्रतिबद्धता को लागू नहीं करते।

When you are inspired by God to make a change in your life, make a commitment to follow God's lead and quickly step out in faith to live accordingly. If you fail to step out in faith when God inspires you, there is a good chance that you will forget that inspiration within a relatively short time and not do what God laid on your heart.

जब आप ईश्वर से प्रेरित होते हैं कि आप अपने जीवन में परिवर्तन करें, तो ईश्वर के मार्गदर्शन का पालन करने की प्रतिबद्धता बनाएँ और तुरंत विश्वास के साथ कदम बढ़ाकर उसके अनुसार जीवन जिएँ। यदि आप तब विश्वास के साथ कदम नहीं बढ़ाते जब ईश्वर आपको प्रेरित करता है, तो इसकी बहुत संभावना है कि आप अपेक्षाकृत कम समय में उस प्रेरणा को भूल जाएँगे और वह नहीं करेंगे जो ईश्वर ने आपके हृदय पर रखा था।

Being Committed
प्रतिबद्ध होना

It takes courage and commitment to step out in faith and proclaim God's Word when it is unpopular, but under God's leadership and empowerment, some will listen and be saved. A German, Dietrich Bonhoeffer, was a faithful follower of Jesus during the years leading up to and during WWII and was martyred in a concentration camp located at Flossenburg on April 9, 1945 just before the end of the war in Europe.[230] Bonhoeffer's life was one of engaging his culture and speaking out against the terrible things that Hitler and many of the German leaders were doing. Many of his own countrymen would not speak out against Hitler either because of fear of loss

[230] Dietrich Bonhoeffer, *Letters & Papers from Prison*, rev. ed., ed. Eberhard Bethge (New York: Simon & Schuster, 1997), 411. डायट्रिच बोनहोफर, लेटर्स एंड पेपर्स फ्रॉम प्रिजन, संशोधित संस्करण, संपादक एबरहार्ड बेथगे (न्यूयॉर्कः साइमन एंड शुस्टर, 1997), 411.

including their lives or possible loss of personal gain that might be obtained by following him.

विश्वास के साथ कदम बढ़ाने और ईश्वर के वचन की घोषणा करने के लिए साहस और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है, खासकर जब यह अलोकप्रिय हो, लेकिन ईश्वर के नेतृत्व और सशक्तिकरण के तहत, कुछ लोग सुनेंगे और मुक्ति पाएंगे। एक जर्मन, डीट्रीश बॉनहोफर, द्वितीय विश्व युद्ध से पहले और उसके दौरान यीशु का एक विश्वासयोग्य अनुयायी था और 9 अप्रैल, 1945 को यूरोप में युद्ध समाप्त होने से ठीक पहले फ्लॉसेनबर्ग में एक एकाग्रता शिविर में शहीद हो गया।[230] बॉनहोफर का जीवन उनकी संस्कृति से जुड़ने और हिटलर तथा कई जर्मन नेताओं द्वारा किए जा रहे भयानक कार्यों के खिलाफ बोलने का था। उनके अपने कई देशवासियों ने हिटलर के खिलाफ बोलने से इनकार कर दिया, या तो अपनी जान सहित नुकसान के डर से या हिटलर का अनुसरण करने से प्राप्त होने वाले व्यक्तिगत लाभ के संभावित नुकसान के कारण।

Bonhoeffer called many of His countryman to task for not following Christ's teachings and wrote a book titled *The Cost of Discipleship* reminding people that following Jesus required commitment and action.[231] After being imprisoned and his life became more difficult, Bonhoeffer came to realize that following Jesus depended wholeheartedly on turning one's life over to God. He came to realize that repentance was a true turning to God and that Jesus' followers need to live out life trusting God in all circumstances. ***By turning to God and depending on Him in all circumstances, one became a true follower of Jesus, a renewed man of God.*** He came to realize that God– no matter what the circumstances –would lead him and all of Jesus' followers home to Himself.[232]

बॉनहोफर ने अपने कई देशवासियों को मसीह की शिक्षाओं का पालन न करने के लिए जवाबदेह ठहराया और एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक था "शिष्यत्व की कीमत" (The Cost of Discipleship), जिसमें लोगों को याद दिलाया गया कि यीशु का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्धता और कार्य की आवश्यकता है।[231] जेल में बंद होने और उनके जीवन के और कठिन होने के बाद, बॉनहोफर ने यह महसूस किया कि यीशु का अनुसरण करना पूरी तरह से

---

[231] Dietrich Bonhoeffer, *The Cost of Discipleship* (New York: Touchstone, 1995). डायट्रिच बोनहोफर, दि कॉस्ट ऑफ डिसाईपलशिप (न्यूयार्कः टचस्टोन, 1995).

[232] Bonhoeffer, *Letters & Papers from Prison*, 369-370. बोनहोफर, लेटर्स एंड पेपर्स फ्रॉम प्रिजन, 369–370.

अपने जीवन को ईश्वर के हवाले करने पर निर्भर करता है। उन्होंने यह समझा कि पश्चाताप वास्तव में ईश्वर की ओर मुड़ना है और यीशु के अनुयायियों को सभी परिस्थितियों में ईश्वर पर भरोसा करते हुए जीवन जीने की आवश्यकता है। ईश्वर की ओर मुड़कर और सभी परिस्थितियों में उस पर निर्भर रहकर, व्यक्ति यीशु का सच्चा अनुयायी बन जाता है, ईश्वर का नवीनीकृत व्यक्ति। उन्होंने यह महसूस किया कि ईश्वर–चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों–उन्हें और यीशु के सभी अनुयायियों को अपने पास ले जाएगा।[232]

Let's All Follow Jesus!
आइए हम सभी यीशु का अनुसरण करें!

Jesus commanded it, and His early disciples did it. They worked well together proclaiming God's Grace bringing many to God. Throughout the New Testament, we take note that Jesus' disciples expressed their godly unity (oneness) through their common fellowship and ministry. Initially, Believers waited together for empowerment from God through the Holy Spirit;[233] after being empowered, they ministered together with one heart and mind providing a great witness,

> **All those who were believing in/trusting (God) were together and having all things in common, and their possessions and property they were selling and dividing these things to each one according to whatever he or she had need; and throughout each day they were together of one mind in the Temple, and breaking bread from house to house, receiving (eating) food with great joy and humility of heart praising God and having grace for all people. And the Lord was placing those who were being saved throughout each day together. Acts 2:44-47**

यीशु ने यह आज्ञा दी, और उनके प्रारंभिक शिष्यों ने ऐसा किया। उन्होंने मिलकर अच्छा कार्य किया, ईश्वर की कृपा की घोषणा करते हुए कई लोगों को ईश्वर की ओर ले आए। नए नियम में, हम देखते हैं कि यीशु के शिष्यों ने अपनी सामान्य संगति और सेवकाई के माध्यम से अपनी ईश्वरीय एकता (एक होने की भावना) को व्यक्त किया। प्रारंभ में, विश्वासियों ने पवित्र आत्मा के माध्यम से ईश्वर से सशक्तिकरण की प्रतीक्षा एक साथ की;[234] सशक्त

---

[233] Acts 1:14. प्रेरितों के कार्य 1:14.

होने के बाद, उन्होंने एक हृदय और मन के साथ मिलकर सेवकाई की, जो एक महान गवाही प्रदान करती थी,

> और वे सब विश्वास करने वाले (परमेश्वर में) इकट्ठे रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साझे की थीं। और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे।और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थेः और जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था। प्रेरितों के कार्य 2:44–47

They did not sell **all** their possessions, **nor** was it mandatory to sell any of their possessions to be part of the Universal Church (Acts 5:4). In reality, first-century followers of Jesus still had personal property including homes.[234]

उन्होंने अपनी सारी संपत्ति नहीं बेची, न ही विश्वव्यापी कलीसिया का हिस्सा होने के लिए अपनी किसी भी संपत्ति को बेचना अनिवार्य था (प्रेरितों के काम 5:4)। वास्तव में, पहली शताब्दी के यीशु के अनुयायियों के पास अभी भी व्यक्तिगत संपत्ति थी, जिसमें उनके घर शामिल थे।[234]

But, we observe that as Jesus' followers were filled with the Holy Spirit (born from above, born of the Spirit), they were more willing ***to share*** their possessions with others. A proper relationship with God, which is built on godly love, taught Jesus' followers to be genuinely concerned for people who were not part of their immediate biological family.

लेकिन, हम देखते हैं कि जैसे ही यीशु के अनुयायी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए (ऊपर से जन्मे, आत्मा से जन्मे), वे अपनी संपत्ति दूसरों के साथ बाँटने के लिए अधिक इच्छुक हो गए। ईश्वर के साथ एक उचित संबंध, जो ईश्वरीय प्रेम पर आधारित है, ने यीशु के अनुयायियों को उन लोगों के लिए वास्तविक चिंता करना सिखाया जो उनके तत्काल जैविक परिवार का हिस्सा नहीं थे।

Jesus gives all Believers one heart and mind so that they can journey with God and one another in godly unity "oneness" [John 17:11, 20-23]. We note that the Church was ministering with great grace as

---

[234] Property & Control of Resources: Acts 5:4. Owning Personal Houses: Acts 12:12. संपत्ति और संसाधनों का नियंत्रणः प्रेरितों के काम 5:4। व्यक्तिगत घरों का स्वामित्वः प्रेरितों के काम 12:12।

Jesus' followers sold their excess and gave it to those in need. If we wish to live in God's will today, we must do likewise. We must learn to have genuine concern for everyone and help those whom God asks us to help. God will teach us to help those who are not part of our immediate biological family both spiritually (godly relationships) and physically.

यीशु सभी विश्वासियों को एक हृदय और मन देता है ताकि वे ईश्वर और एक–दूसरे के साथ ईश्वरीय एकता "एक होने की भावना" में यात्रा कर सकें (यूहन्ना 17:11, 20–23)। हम देखते हैं कि कलीसिया बड़ी कृपा के साथ सेवकाई कर रही थी क्योंकि यीशु के अनुयायियों ने अपनी अतिरिक्त संपत्ति बेची और इसे जरूरतमंदों को दे दिया। यदि हम आज ईश्वर की इच्छा में जीना चाहते हैं, तो हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। हमें सभी के लिए वास्तविक चिंता करना सीखना चाहिए और उन लोगों की सहायता करनी चाहिए जिन्हें ईश्वर हमसे मदद करने के लिए कहता है। ईश्वर हमें उन लोगों की सहायता करना सिखाएगा जो हमारे तत्काल जैविक परिवार का हिस्सा नहीं हैं, दोनों आध्यात्मिक रूप से (ईश्वरीय संबंधों के माध्यम से) और भौतिक रूप से।

Our greatest witness will be at its best when we come to realize more fully who we are in Jesus Christ and begin to act accordingly as the reconciled children of God that we are. We must come to understand deeply that separation from God ***is the worst thing*** that can happen to anyone and that those not listening to God are part of our family and need rescuing (Acts 17:26-28; 2 Peter 3:9 & more).

हमारी सबसे बड़ी गवाही तब अपने चरम पर होगी जब हम और अधिक पूर्ण रूप से यह महसूस करेंगे कि हम यीशु मसीह में कौन हैं और उसके अनुसार कार्य करना शुरू करेंगे, जैसा कि हम ईश्वर के समेटे गए बच्चे हैं। हमें गहराई से यह समझना होगा कि ईश्वर से अलगाव किसी के लिए भी सबसे बुरी चीज है जो हो सकती है और जो लोग ईश्वर की बात नहीं सुन रहे हैं, वे हमारे परिवार का हिस्सा हैं और उन्हें बचाने की आवश्यकता है (प्रेरितों के काम 17:26–28; 2 पतरस 3:9 और अन्य)।

Chapter 7: Sojourning & the Universal Church
अध्याय 7: प्रवास और विश्वव्यापी चच

. . . And the land shall not ever be sold because the land belongs to me, (and) because you are temporary dwellers and sojourners with me; . . . .
Leviticus 25:23[235]

For our place of citizenship exists in [the] heavens out of which we are awaiting a savior, the Lord Jesus Christ . . . . Phil 3:20

भूमि सदा के लिये तो बेची न जाए, क्योंकि भूमि मेरी है; और उस में तुम परदेशी और बाहरी होगे; . . . ।
लैव्यव्यवस्था 25:23[235]

पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने ही बाट जोह रहे हैं. . . ।
फिलि 3:20

We are just traveling through. We are sojourning with God as we join him in His great work of love that He established for His Son and us from the beginning of the Creation.[236] When we receive God as lord and savior through Jesus Christ, we become fully reconciled children beginning our role as His ambassadors and priests.[237] Although we all belong to various earthly kingdoms, our eternal kingdom and

---

[235] Translated directly from the Masoretic Hebrew Text, *Biblia Hebraica Stuttgartensia* (Germany: Alle Rechte vorbehlten, 1987). मसोरेटिक हिब्रू पाठ, बिब्लिया हेब्राइका स्टटगार्टेंसिया (जर्मनीः एले रेच्टे वोरबेहल्टेन, 1987) से सीधे अनुवादित।

[236] Eph 2:10; 2 Tim 1:8-9; Titus 2:14. इफि 2:10; 2 तिमोथी 1:8–9; तीतुस 2:14.

[237] Exod 19:5-6; 2 Cor 5:17-6:1; 1 Peter 2:9-10; cf. 1 Cor 3:9. निर्ग 19:5–6; 2 कुरूं 5:17–6:1; 1 पत 2:9–10; 1 कुरूं 3:9.

citizenship is with God in Heaven.[238] As His ambassadors and priests on earth, we are to proclaim Truth (reality) and act as mediators between God and man. We are not to settle down and become satisfied using our blessings from God solely for ourselves and our families. We have come to recognize that our physical life is only a short fraction of our eternal life, and that we have been called to be co-laborers with God.

हम केवल यात्रा कर रहे हैं। हम परमेश्वर के साथ प्रवास कर रहे हैं, क्योंकि हम उनके प्रेम के महान कार्य में उनके साथ शामिल होते हैं, जिसे उन्होंने अपने पुत्र और हमारे लिए सृष्टि के आरंभ से स्थापित किया था।[236] जब हम यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं, तो हम पूर्ण रूप से उनके साथ मेल मिलाप वाली संतान कहलाएंगे, जो उनके दूत और याजक के रूप में अपनी भूमिका शुरू करते हैं।[237] यद्यपि हम सभी विभिन्न सांसारिक राज्यों से संबंधित हैं, हमारा शाश्वत राज्य और नागरिकता स्वर्ग में परमेश्वर के साथ है।[238] पृथ्वी पर उनके दूत और याजक के रूप में, हमें सत्य (वास्तविकता) का प्रचार करना और परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करना है। हमें स्थायी रूप से बस जाना और केवल अपने लिए और अपने परिवारों के लिए परमेश्वर के आशीर्वादों का उपयोग करके संतुष्ट नहीं हो जाना है। हमने यह पहचान लिया है कि हमारा शारीरिक जीवन हमारे शाश्वत जीवन का केवल एक छोटा सा हिस्सा है, और हमें परमेश्वर के साथ सह–कार्यकर्ता बनने के लिए बुलाया गया है।

We have been fully reconciled to God with all the emotional and legal rights of direct descendants of the Creator. We have an ***eternal perfect home*** with God awaiting us, and we know that in a short time the rewards, trials, and challenges of this age shall be over. How can it possibly be better? It is exceeding good because God has called us into His work as co-laborers. ***We are not just spectators watching a performance from the sidelines!*** We are full-time co-laborers with the Creator as He ministers to all humanity spiritually (relationally) and physically. He grows us spiritually as we learn to listen to Him and join Him in His ministry.[239] As we work with God, He grows our heart to match His as He works with us transforming us to be like Jesus.

परमेश्वर के संग हमारा मेलमिलाप पूरी तरह से हो गया है, जिसमें सृष्टिकर्ता के प्रत्यक्ष वंशजों के सभी भावनात्मक और कानूनी अधिकार शामिल हैं। हमारे पास परमेश्वर के साथ एक शाश्वत, पूर्ण घर हमारा इंतजार कर रहा

---

[238] Phil 3:20-21; Rev 21:1-7. फिलि 3:20–21; प्रका 21:1–7.

[239] Matt 7:21; John 5:19 & 15:5; John 16:13 & Rom 8:14; 1 Cor 3:9. मत्ती 7:21; यूहन्ना 5:19 एण्ड 15:5; यूहन्ना 16:13 एण्ड रोमियों 8:14; 1 कुरं 3:9.

है, और हम जानते हैं कि थोड़े समय में इस युग के पुरस्कार, परीक्षण और चुनौतियाँ समाप्त हो जाएँगी। यह और बेहतर कैसे हो सकता है? यह इसलिए और बेहतर हो सकता है क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपने कार्य करने में सह–कार्यकर्ता के रूप में बुलाया है। हम केवल दर्शक नहीं हैं जो एक तरफ खड़े होकर प्रदर्शन देख रहे हैं ! हम सृष्टिकर्ता के साथ पूर्णकालिक सह–कार्यकर्ता हैं, क्योंकि वह समस्त मानवता की आध्यात्मिक (संबंधपरक) और शारीरिक रूप से सेवा करते हैं। वह हमें आध्यात्मिक रूप से विकसित करते हैं जब हम उन्हें सुनना सीखते हैं और उनकी सेवा में उनके साथ शामिल होते हैं।[240] जैसे–जैसे हम परमेश्वर के साथ काम करते हैं, वह हमारे हृदय को अपने हृदय से मिलाने के लिए विकसित करते हैं, और हमारे साथ काम करते हुए हमें यीशु की तरह बनने के लिए रूपांतरित करते हैं।

Jesus' followers work under His and His sub-shepherds' authority ministering to all people. Their individualized work varies according to their God-given abilities and God's corresponding position for each person within His eternal holy family. Their godly unity and work involves everything from praying to physically ministering around the world. All of God's work provides great blessings to His obedient children as they work with those who are not listening to Him encouraging them to repent and come Home.

यीशु के अनुयायी उनकी और उनके अधीनस्थ चरवाहों के अधिकार के तहत सभी लोगों की सेवा करते हैं। उनका व्यक्तिगत कार्य उनकी परमेश्वर–प्रदत्त क्षमताओं और परमेश्वर द्वारा उनके शाश्वत पवित्र परिवार में प्रत्येक व्यक्ति के लिए निर्धारित स्थान के अनुसार भिन्न होता है। उनकी ईश्वरीय एकता और कार्य में प्रार्थना से लेकर विश्व भर में शारीरिक रूप से सेवा करने तक सब कुछ शामिल है। परमेश्वर का सारा कार्य उनके आज्ञाकारी बच्चों को महान आशीर्वाद प्रदान करता है, क्योंकि वे उन लोगों के साथ काम करते हैं जो उनकी बात नहीं सुन रहे हैं, उन्हें पश्चाताप करने और घर लौटने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

The Universal Church
विश्वव्यापी कलीसिया

As Paul proclaimed the Good News of God's interactive plan of redemption that was available to all, he also proclaimed ***that the risen Lord Jesus was the active lord of the world-wide Church.*** He told Jesus' followers at Corinth, "You are the Body of Christ, indeed *a member of a part of the whole* [1 Cor 12:27]." The followers at Corinth were all part of the local assemblies (churches) within their city, which was a part of the entire world-wide Body of Christ, the Universal

Church. As the various local assemblies grew within their cities, they were reminded that they were all part of the whole, the Body of Christ.

जैसा कि पौलुस ने परमेश्वर के उद्धार के संनादेश की घोषणा की, जो सभी के लिए उपलब्ध था, उन्होंने यह भी घोषित किया कि पुनरुत्थित प्रभु यीशु विश्वव्यापी कलीसिया के सक्रिय प्रभु हैं। उन्होंने कुरिन्थुस में यीशु के अनुयायियों से कहा, "तुम मसीह का शरीर हो, वास्तव में समग्र का एक अंग (1 कुरिन्थियों 12:27)।" कुरिन्थुस के अनुयायी अपने शहर के भीतर स्थानीय सभाओं (कलीसियाओं) का हिस्सा थे, जो मसीह की समग्र विश्वव्यापी देह अर्थात् विश्वव्यापी कलीसिया का हिस्सा थी। जैसे–जैसे विभिन्न स्थानीय सभाएँ अपने शहरों में बढ़ती गईं, उन्हें याद दिलाया गया कि वे सभी समग्र का हिस्सा हैं, अर्थात् मसीह का शरीर।

After Jesus died on the Cross for all humanity and ascended into Heaven to rule at His Father's right hand, we see a major shift from the national religious leaders of Israel to Jesus and His followers, who collectively are the new Israel. Within the first twenty years after Jesus' ascension, many Gentiles had begun following Israel's long awaited prophesied Messiah (Christ). Within thirty years, Paul said that the Gospel had been made known to all nations (Rom 16:26), which shows that many Gentiles of various nations especially in the Mediterranean world had already heard the Good News about what our Heavenly Father had done through His Son, Jesus and a fair number had started following Jesus putting aside Satan's false gods.

जब यीशु सारी मानवजाति के लिए क्रूस पर मरे और अपने पिता के दाहिने हाथ पर शासन करने के लिए स्वर्ग में चढ़े, तो हम देखते हैं कि इस्राएल के राष्ट्रीय धार्मिक नेताओं से लेकर यीशु और उनके अनुयायियों में एक बड़ा बदलाव आया, जो सामूहिक रूप से नया इस्राएल हैं। यीशु के स्वर्गारोहण के पहले बीस वर्षों के भीतर, कई गैर–यहूदी इस्राएल के लंबे समय से प्रतीक्षित भविष्यवाणी किए गए मसीहा (मसीह) का अनुसरण करने लगे थे। तीस वर्षों के भीतर, पौलुस ने कहा कि सुसमाचार सभी राष्ट्रों को ज्ञात करा दिया गया था (रोमियों 16:26), जो दर्शाता है कि भूमध्यसागरीय क्षेत्र के विभिन्न राष्ट्रों के कई गैर–यहूदियों ने हमारे स्वर्गीय पिता ने अपने पुत्र यीशु के माध्यम से जो किया, उसके बारे में सुसमाचार सुन लिया था, और काफी संख्या में लोग यीशु का अनुसरण करने लगे थे, जो शैतान के झूठे देवताओं को त्याग रहे थे।

And, just as Jesus had forewarned many of Israel's religious leaders during His earthly ministry, the Father removed their authority and gave it to another group of leaders and people, who now consisted of Judeans (Jews) and Gentiles (the rest of the world) who actively followed Jesus. Those ungodly religious leaders lost their authority, the Temple, and their beloved Jerusalem because they failed to listened to

the very son of God, Jesus, due to their hardened hearts toward God and man.

जैसा कि यीशु ने अपनी सांसारिक सेवकाई के दौरान इस्राएल के कई धार्मिक अगुवों को चेतावनी दी थी, पिता ने उनकी सत्ता छीन ली और उसे दूसरे समूह के अगुवों और लोगों को दे दिया, जिनमें अब यहूदी (ज्यूडियन) और गैर–यहूदी (शेष विश्व) शामिल थे, जो सक्रिय रूप से यीशु का अनुसरण करते थे। उन अधर्मी धार्मिक नेताओं ने अपनी सत्ता, मंदिर, और अपने प्रिय यरूशलेम को खो दिया, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के पुत्र, यीशु की बात नहीं सुनी, और परमेश्वर और मनुष्य के प्रति उनके हृदय कठोर थे।

With Jesus' victorious ascension, the Father placed Him at His right hand. He was the Eternal High Priest (Heb 7:1-8:6). When the Creation is finished, everyone saved and unsaved will submit to the lordship of Jesus, who after judging the ungodly at the great white throne judgment (John 5:22, 30; Rev 20:11-15), will then hand everything over to the Father and everyone will recognize the Father as the overall leader of all (1 Cor 11:3; 15:28; cf. John 14:28).

यीशु के विजयी स्वर्गारोहण के साथ, पिता ने उन्हें अपने दाहिने हाथ पर बिठाया। वह अनन्त महायाजक थे (इब्रानियों 7:1–8:6)। जब सृष्टि पूर्ण हो जाएगी, तो उद्धार पाए हुए और उद्धारहीन सभी लोग यीशु की प्रभुता के अधीन होंगे, जो महान श्वेत सिंहासन के न्याय में अधर्मियों का न्याय करने के बाद (यूहन्ना 5:22, 30; प्रकाशितवाक्य 20:11–15), सब कुछ पिता को सौंप देंगे, और सभी लोग पिता को सर्वोच्च के रूप में मान्यता देंगे (1 कुरिन्थियों 11:3; 15:28; देखें यूहन्ना 14:28)।

During Jesus' present reign over the Heavens and Earth, the Universal Church, His Body, represents Him on Earth. The Church is no longer obligated to keep the nation of Israel's ordinances that regulated Israel's cultural norms nor the sacrificial laws, which were fulfilled through Jesus' atoning death. This allows the Universal Church with its god-given holy unity to follow the eternal moral lifestyle of God within all cultures as long as those cultural practices do not violate God's moral standards (Rom 2:11-16). Wherever God's people live, they are expected to live according to His moral standards caring for all.

यीशु के वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी पर शासन के दौरान, सार्वभौमिक कलीसिया, जो उनकी देह है उनका शरीर है, पृथ्वी पर उनका प्रतिनिधित्व करती है। कलीसिया अब इज़राइल राष्ट्र के उन नियमों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं है जो इज़राइल के सांस्कृतिक मानदंडों को नियंत्रित करते थे, न ही उन बलिदान संबंधी नियमों को, जो यीशु की प्रायश्चितकारी मृत्यु के माध्यम से पूरे हो गए। इससे सार्वभौमिक कलीसिया, अपनी ईश्वर–प्रदत्त पवित्र एकता के साथ, सभी संस्कृतियों में ईश्वर के शाश्वत नैतिक जीवन शैली का पालन कर सकती है, बशर्ते वे सांस्कृतिक प्रथाएँ ईश्वर के नैतिक मानकों का

उल्लंघन न करें (रोम 2:11–16)। जहाँ कहीं भी ईश्वर के लोग रहते हैं, उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे सभी की देखभाल करते हुए, उसके नैतिक मानकों के अनुसार जीवन जिएँ।

Denominational, racial, generational, socio-economical, and political walls have all been constructed through Satan's prompting as humanity with its abundant free will has struggled against God, His authority, and His good plans for everyone. Jesus' followers should be dismantling these walls within their local churches and their cultures as they live out their lives. It is important that Jesus' followers learn to take pleasure in allowing our Heavenly Father to teach them how to love as He loves. All of Jesus' followers worldwide should seek to live in godly unity as members of the same eternal holy family. The Universal Church is the part of God's eternal holy family that is presently living on Earth. ***It needs to act accordingly!***

संप्रदाय, नस्ल, पीढ़ी, सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक दीवारें सभी शैतान के उकसावे के माध्यम से बनाई गई हैं, क्योंकि मानवता अपनी प्रचुर स्वतंत्र इच्छा के साथ ईश्वर, उनके अधिकार और सभी के लिए उनकी अच्छी योजनाओं के खिलाफ संघर्ष करती रही है। यीशु के अनुयायियों को अपने स्थानीय कलीसियाओं और अपनी संस्कृतियों में इन दीवारों को तोड़ना चाहिए, जैसा कि वे अपने जीवन को जीते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि यीशु के अनुयायी अपने स्वर्गीय पिता को यह सिखाने में आनंद लेना सीखें कि वह जैसा प्रेम करता है, वैसे ही प्रेम करना है। विश्व भर के यीशु के सभी अनुयायियों को एक ही शाश्वत पवित्र परिवार के सदस्यों के रूप में ईश्वरीय एकता में जीने की कोशिश करनी चाहिए। सार्वभौमिक कलीसिया ईश्वर के शाश्वत पवित्र परिवार का वह हिस्सा है जो वर्तमान में पृथ्वी पर जी रहा है। इसे उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए!

Our Local Churches
हमारी स्थानीय कलीसियाएँ

The Church first and foremost is the holy Family of God! All true followers of Jesus Christ are part of the same Kingdom and have the same Sustainer living in them (Eph 4:1-6). Jesus' followers comprising the various assemblies/churches at the local community level should be striving for a high level of godly unity within their congregations, cities, and the Universal Church.

कलीसिया सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से ईश्वर का पवित्र परिवार है! यीशु मसीह के सभी सच्चे अनुयायी एक ही राज्य का हिस्सा हैं और उनमें एक ही पालनकर्ता निवास करता है (इफिसियों 4:1–6)। यीशु के अनुयायी, जो स्थानीय समुदाय स्तर पर विभिन्न सभाओं/कलीसियाओं का गठन करते हैं,

को अपनी मंडलियों, शहरों और सार्वभौमिक कलीसिया के भीतर उच्च स्तर की ईश्वरीय एकता के लिए प्रयास करना चाहिए।

Members of local assemblies should learn to care enough for one another that they are able to be more transparent than the world when interacting with one another without being concerned about sensitive information being used against them at later times. But, due to unbelief and immaturity, many members within local churches still hurt one another on a regular basis. For those who are reasonably mature followers of Jesus, the door is open for a rich relationship with other like-minded Christians.

स्थानीय सभाओं के सदस्यों को एक–दूसरे की इतनी परवाह करना सीखना चाहिए कि वे आपस में बातचीत करते समय सांसारिक लोगों की तुलना में अधिक पारदर्शी हो सकें, बिना इस चिंता के कि संवेदनशील जानकारी का बाद में उनके खिलाफ उपयोग किया जाएगा। लेकिन, अविश्वास और अपरिपक्वता के कारण, स्थानीय कलीसियाओं के कई सदस्य अभी भी नियमित रूप से एक–दूसरे को ठेस पहुँचाते हैं। जो यीशु के यथोचित परिपक्व अनुयायी हैं, उनके लिए समान विचारधारा वाले अन्य मसीहियों के साथ एक समृद्ध रिश्ते का द्वार खुला है।

How can a local church be effective in taking care of its own members or reaching out to the lost if there is little peace and joy within their local church? If your local church is not experiencing at least a little godly unity with God and one another, you and your fellow members need to fast, pray, and read God's Word together seeking His help in removing sin and walking more closely with Him until He gives you a spiritual breakthrough. ***Members of congregations who are walking closely with God will experience great love, joy, inner peace, and excitement*** as they minister to one another and the world around them bringing those who will listen into a saving relationship with God and one another.

यदि स्थानीय कलीसिया के भीतर शांति और आनंद की कमी है, तो वह अपने सदस्यों की देखभाल करने या खोए हुओं तक पहुँचने में कैसे प्रभावी हो सकती है? यदि आपकी स्थानीय कलीसिया ईश्वर और एक–दूसरे के साथ थोड़ी भी ईश्वरीय एकता का अनुभव नहीं कर रही है, तो आपको और आपके साथी सदस्यों को उपवास करना, प्रार्थना करना और ईश्वर के वचन को एक साथ पढ़ना चाहिए, पाप को हटाने और ईश्वर के साथ और करीब चलने के लिए उनकी मदद माँगते हुए, जब तक कि वह आपको आध्यात्मिक सफलता न दे। जो मंडली के सदस्य ईश्वर के साथ करीब चल रहे हैं, वे एक–दूसरे और अपने आसपास की दुनिया की सेवा करते समय महान प्रेम, आनंद, आंतरिक शांति और उत्साह का अनुभव करेंगे, और जो लोग सुनेंगे, उन्हें ईश्वर और एक–दूसरे के साथ उद्धारकारी रिश्ते में लाएंगे।

Being Social
सामाजिक होना

As godly social beings, we should be volunteering in order ***to do our part*** within the holy Family of God. When members of the family are all doing their part, things go more smoothly and everyone experiences more godly unity and joy. Consider living at home for a moment. Think of the importance of parents teaching their children to do their part.

ईश्वरीय सामाजिक प्राणियों के रूप में, हमें ईश्वर के पवित्र परिवार में अपनी भूमिका निभाने के लिए स्वयंसेवा करनी चाहिए। जब परिवार के सभी सदस्य अपनी–अपनी भूमिका निभाते हैं, तो चीजें अधिक सुचारू रूप से चलती हैं और हर कोई अधिक ईश्वरीय एकता और आनंद का अनुभव करता है। एक क्षण के लिए घर पर रहने के बारे में सोचें। माता–पिता के लिए अपने बच्चों को उनकी भूमिका निभाना सिखाने के महत्व पर विचार करें।

If children do not learn to help with the basic work around the house and yard, they hinder their families and grow up with a personal handicap in managing and taking care of their own future families. It is important within families for each capable member to do his or her part. If some are not socially responsible in helping, others have to do more than they should. This ungodly action causes the entire family to suffer.

यदि बच्चे घर और आंगन के बुनियादी कामों में मदद करना नहीं सीखते, तो वे अपने परिवारों को बाधित करते हैं और अपनी भविष्य की परिवारों की देखभाल और प्रबंधन में व्यक्तिगत अक्षमता के साथ बड़े होते हैं। परिवारों में यह महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक सक्षम सदस्य अपनी भूमिका निभाए। यदि कुछ लोग सामाजिक रूप से जिम्मेदार नहीं हैं और मदद नहीं करते, तो दूसरों को अपनी क्षमता से अधिक करना पड़ता है। यह अईश्वरीय कार्य पूरे परिवार को कष्ट पहुँचाता है।

This is contrary to God's desire for our personal families, His local church families, and even His world-wide Holy Family, the Universal Church. If we are not experiencing some level of godly unity and social responsibility within our local churches, we should seek our Heavenly Father's help in learning the importance of following Jesus' leadership. ***It is only through our obedience to Jesus' leadership that we will learn to work together in a godly fashion.*** If Jesus does not hold first place within our own hearts and the hearts of our local church leaders, it does not take long for our local churches to become self-seeking and spiritually ineffective individually and collectively within our communities.

यह हमारे व्यक्तिगत परिवारों, ईश्वर की स्थानीय कलीसिया परिवारों, और यहाँ तक कि उनके विश्वव्यापी पवित्र परिवार, सार्वभौमिक कलीसिया के लिए ईश्वर की इच्छा के विपरीत है। यदि हम अपनी स्थानीय कलीसियाओं में ईश्वरीय एकता और सामाजिक जिम्मेदारी के किसी स्तर का अनुभव नहीं कर रहे हैं, तो हमें अपने स्वर्गीय पिता की मदद माँगनी चाहिए ताकि हम यीशु के नेतृत्व का पालन करने के महत्व को सीख सकें। केवल यीशु के नेतृत्व के प्रति हमारी आज्ञाकारिता के माध्यम से ही हम ईश्वरीय तरीके से एक साथ काम करना सीखेंगे । यदि यीशु हमारे अपने हृदयों और हमारी स्थानीय कलीसिया के प्रमुखों के हृदयों में प्रथम स्थान पर नहीं हैं, तो हमारी स्थानीय कलीसियाओं के लिए स्वयं–केंद्रित और आध्यात्मिक रूप से व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों रूप से अपने समुदायों में जल्दी अप्रभावी हो जाना है।

Developing & Multiplying Disciples
शिष्यों का विकास और वृद्धि करना

> **And Christ gave on the one hand apostles, but on the other prophets, evangelists, pastors, and teachers for the establishing of His Holy Ones (Saints) for the work of the Ministry for the building up of the Body of Christ, until we all come, to the unity of faith and knowledge of the Son of God, to a perfect (complete) man, to a measure of the maturity of the fulness of Christ. Eph 4:11-13**
>
> उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को प्रचारक और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हों जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं। इफि 4:11–13

As we come to the place of wanting Jesus to lead us, He helps us know and do the good works that our Heavenly Father set for each of us during the planning stages of the Creation. A great part of that work is developing God's holy family so that ***Jesus' followers can collectively take care of one another and become productive helpful witnesses to the lost world around them.*** God wants those who are more mature in His family to help train those who are less mature. After leading people

to Jesus, it is very important that the more mature teach the less mature how to live out ***all*** that Jesus commanded.

जब हम इस स्थान पर पहुँचते हैं कि हम चाहते हैं कि यीशु हमारा नेतृत्व करें, तो वह हमें उन अच्छे कार्यों को जानने और करने में मदद करता है जो हमारे स्वर्गीय पिता ने सृष्टि के नियोजन चरणों के दौरान हम में से प्रत्येक के लिए निर्धारित किए थे। उस कार्य का एक बड़ा हिस्सा ईश्वर के पवित्र परिवार को विकसित करना है ताकि यीशु के अनुयायी सामूहिक रूप से एक–दूसरे की देखभाल कर सकें और अपने आसपास की खोई हुई दुनिया के लिए उत्पादक और सहायक गवाह बन सकें। ईश्वर चाहता है कि उसके परिवार में जो अधिक परिपक्व हैं, वे उन लोगों को प्रशिक्षित करने में मदद करें जो कम परिपक्व हैं। लोगों को यीशु के पास लाने के बाद, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि अधिक परिपक्व लोग कम परिपक्व लोगों को यह सिखाएँ कि यीशु ने जो कुछ भी आदेश दिया, उसे कैसे जीया जाए।

In his book, *The Journey*, Billy Graham reminds us that people who have recently turned to follow Christ are in reality like newborn children regarding their understanding of spiritual things.[240] There may be barriers to spiritual growth such as continuing sin, ungodly pressure from family members, friends, or associates, or uncertainty in what is expected.[241] Jesus' more mature followers should be teaching and guiding those who are less mature (mentorship). It is a privilege for the more mature to help the less mature grow more and more into the likeness of Jesus.

अपनी पुस्तक द जर्नी , में बिली ग्राहम हमें याद दिलाते हैं कि जो लोग हाल ही में मसीह का अनुसरण करने के लिए मुड़े हैं, वे वास्तव में आध्यात्मिक बातों की समझ के संदर्भ में नवजात शिशुओं की तरह हैं।[240] आध्यात्मिक विकास में बाधाएँ हो सकती हैं जैसे निरंतर पाप, परिवार के सदस्यों, मित्रों या सहयोगियों से अईश्वरीय दबाव, या अपेक्षित चीजों में अनिश्चितता।[241] यीशु के अधिक परिपक्व अनुयायियों को कम परिपक्व लोगों को सिखाना और

---

[240] Billy Graham, *The Journey: How To Live by Faith in an Uncertain World* (Nashville: W Publishing, 2006), 74-76. बिली ग्राहम, द जर्नीः हाउ टू लिव बाय फेथ इन एन अनसर्टेन वर्ल्ड (नैशविलेः डब्ल्यू पब्लिशिंग, 2006), 74–76.

[241] Graham, *The Journey*, 77-78. For a practical introduction to discipleship, consider working through Henry Blackaby's 13 week course, *Experiencing God*, rev. ed. (Nashville: Broadman and Holman, 2008). ग्राहम, द जर्नी, 77–78। शिष्यत्व के लिए एक व्यावहारिक परिचय के लिए, हेनरी ब्लैकबी के 13 सप्ताह के पाठ्यक्रम, एक्सपीरियंसिंग गॉड, संशोधित संस्करण (नैशविलेः ब्रॉडमैन एंड होल्मन, 2008) पर काम करने पर विचार करें।

उनके मार्गदर्शक बनना चाहिए (मार्गदर्शन)। अधिक परिपक्व लोगों के लिए कम परिपक्व लोगों को यीशु की समानता में और अधिक बढ़ने में मदद करना एक विशेषाधिकार है।

It is Jesus' more mature followers' duty, honor, privilege, and joy to help those who are less mature grow in their understanding and walk with Him and others.[242] Jesus' more mature followers should provide regular times of collective worship, small group meetings, Bible studies, specialized discipleship classes, and times of active ministry to help the entire Body grow. If the mature members of our local churches do not help make and develop new disciples *including their own children*, how will future generations know God and His way of life?

यीशु के अधिक परिपक्व अनुयायियों का कर्तव्य, सम्मान, विशेषाधिकार और आनंद है कि वे कम परिपक्व लोगों को उनकी समझ और उनके साथ और दूसरों के साथ चलने में बढ़ने में मदद करें। [242] यीशु के अधिक परिपक्व अनुयायियों को सामूहिक उपासना, छोटे समूह की बैठकों, बाइबल अध्ययन, विशेष शिष्यत्व कक्षाओं और सक्रिय सेवकाई के समय को नियमित रूप से प्रदान करना चाहिए ताकि पूरा शरीर विकसित हो सके। यदि हमारी स्थानीय कलीसियाओं के परिपक्व सदस्य नए शिष्यों को बनाने और विकसित करने में मदद नहीं करते, जिसमें उनके अपने बच्चे भी शामिल हैं, तो भविष्य की पीढ़ियाँ ईश्वर और उनके जीवन के तरीके को कैसे जानेंगी?

God's Leadership and Our Local Communities
परमेश्वर का नेतृत्व और हमारे स्थानीय समुदाय

As we examine the organizational structure of the Universal Church in the New Testament looking for guidance for our current ministries, we note that many evangelized cities had a council of elders appointed by Jesus through the apostles. The apostles also provided initial encouragement and guidance to the various city-councils.

जब हम अपने वर्तमान सेवाकार्यों के लिए मार्गदर्शन पाने के उद्देश्य से नए नियम में सार्वभौमिक कलीसिया की संगठनात्मक संरचना का अध्ययन करते हैं, तो हम देखते हैं कि जिन नगरों में सुसमाचार का प्रचार किया गया था, वहाँ पर यीशु द्वारा प्रेरितों के माध्यम से नियुक्त किए गए प्राचीनों की एक परिषद स्थापित की गई थी। प्रेरितों ने उन विभिन्न नगर–परिषदों को प्रारंभिक उत्साह और मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

Initially, the local church in Jerusalem gave the final rulings on doctrinal issues that came up before the Universal Church (sum of all

---

[242] Matt 28:20; Acts 2:42. मत्ती 28:20; प्रेरितों के कार्य 2:42.

local churches worldwide). We note that God did not specify any specific form of worship in the New Testament for individual assemblies. In addition, we observe great cooperation among first-century Believers everywhere. Jesus' followers proclaimed God's grace through their ***actions*** and ***words*** bringing many of their time to repentance and salvation.[243] Through Jesus' leadership, they helped many in their world come to know the One True God who had created everything and loved everyone instead of following a multitude of false satanic gods.

प्रारंभ में, यरूशलेम की स्थानीय कलीसिया ने उन सिद्धांतिक मुद्दों पर अंतिम निर्णय दिए जो विश्वव्यापी चर्च (दुनिया भर की सभी स्थानीय चर्चों का समूह) के सामने आए। हम देखते हैं कि परमेश्वर ने नए नियम में व्यक्तिगत सभाओं के लिए उपासना की कोई विशिष्ट रूपरेखा निर्धारित नहीं की। इसके अलावा, हम प्रथम शताब्दी के विश्वासियों के बीच हर जगह बहुत सहयोग देखते हैं। यीशु के अनुयायियों ने अपने कार्यों और वचनों के माध्यम से परमेश्वर की कृपा का प्रचार किया, जिससे उस समय के कई लोग पश्चाताप और उद्धार की ओर आए।[243] यीशु के नेतृत्व में, उन्होंने अपनी दुनिया में कई लोगों को एकमात्र सच्चे परमेश्वर को जानने में मदद की, जिसने सब कुछ बनाया और सभी से प्रेम करता है, बजाय इसके कि वे अनेक झूठे शैतानी देवताओं का अनुसरण करें।

After Jesus' ascension, He continued to guide the Church through the Holy Spirit. Each community acted as a living organism helping others. In the earliest stages of Universal Church growth, we observed the apostle Peter acting as a spokesman in Jerusalem. Later, Peter was forced to flee for his life,[244] and it appears that the apostle James was given the role of spokesman.[245] As the Church grew, we note an important trend: Jesus continually expanded the leadership of the Universal Church to accommodate its growth with the local church at

---

[243] Matt 9:13; Acts 2:38-41; 4:4; etc. मत्ती 9:13; प्रेरितों के कार्य 2:38–41; 4:4; इत्यादि.

[244] Acts 12:1-17. प्रेरितों के कार्य 12:1–17.

[245] Gal 1:18-19; Gal 2:1-10. When Paul went up to Jerusalem 17 years after his Christian conversion, he lists three existing pillars of the Christian community, the apostles James, Peter, and John. Paul lists James first, which indicates that James was the main spokesman at that time. गला 1:18–19; गला 2:1–10। जब पौलुस अपनी मसीही धर्म परिवर्तन के 17 वर्ष बाद यरूशलेम गए, तो उन्होंने मसीही समुदाय के तीन मौजूदा स्तंभों, प्रेरित याकूब, पतरस और यूहन्ना का उल्लेख किया। पौलुस ने याकूब को पहले सूचीबद्ध किया, जो यह दर्शाता है कि उस समय याकूब मुख्य प्रवक्ता थे।

Jerusalem establishing Church doctrine for all of the local churches throughout the Mediterranean world and beyond until God's Word was expanded to include a collection of inspired New Testament writings by later Universal Church councils.

यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, उन्होंने पवित्र आत्मा के माध्यम से चर्च का मार्गदर्शन जारी रखा। प्रत्येक समुदाय एक जीवंत इकाई के रूप में कार्य करता था, जो दूसरों की मदद करता था। विश्वव्यापी चर्च के प्रारंभिक विकास के चरणों में, हम देखते हैं कि प्रेरित पतरस यरूशलेम में एक प्रवक्ता के रूप में कार्य कर रहे थे। बाद में, पतरस को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा,[244] और ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेरित याकूब को प्रवक्ता की भूमिका दी गई।[245] जैसे–जैसे कलीसिया का विकास हुआ, हम एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति देखते हैं: यीशु ने विश्वव्यापी कलीसिया के नेतृत्व को लगातार विस्तारित किया ताकि इसके विकास को समायोजित किया जा सके, और यरूशलेम की स्थानीय कलीसिया ने भूमध्यसागरीय दुनिया और उससे परे सभी स्थानीय चर्चों के लिए चर्च सिद्धांत स्थापित किया, जब तक कि परमेश्वर का वचन बाद के विश्वव्यापी चर्च परिषदों द्वारा प्रेरित नए नियम लेखों के संग्रह को शामिल करने के लिए विस्तारित नहीं हुआ।

As we evaluate the early Church's growth, we take special notice that Jesus remained the leader. We observe Jesus working through Paul and Barnabas appointing elders on their second pass through Lystra, Iconium, and Antioch of Syria (Acts 14:21-23). When Paul traveled to Jerusalem on his third missionary journey, he stopped in Meletus and summoned the elders of the assembly (Called-Out Individuals/Believers) of Ephesus and reminded them that the ***Holy Spirit*** had appointed them as overseers (Acts 20:17, 28). We learn through these accounts and others that elders (presbyters) of a city-church council were the same as overseers (episcopates/ bishops) and pastors. There were four basic terms used throughout the New Testament showing three levels of authority. The four terms and three levels of authority are: Lord; apostles; overseers (elders, pastors) of local assemblies and city-wide councils, and deacons. Deacons assisted as needed and did not have organizational authority. Jesus was and is the leader (lord) of all, which is His Body on earth.

जैसे–जैसे हम प्रारंभिक चर्च के विकास का मूल्यांकन करते हैं, हम विशेष रूप से यह ध्यान देते हैं कि यीशु ही प्रमुख बने रहे। हम देखते हैं कि यीशु ने पौलुस और बरनबास के माध्यम से कार्य किया, जब उन्होंने लुस्त्रा, इकुनियम और सीरिया के अंताकिया में अपनी दूसरी यात्रा के दौरान प्राचीनों को नियुक्त किया (प्रेरितों 14:21–23)। जब पौलुस अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर यरूशलेम गए, तो वे मिलेतुस में रुके और इफिसुस की सभा (बुलाए गए व्यक्तियों/विश्वासियों) के प्राचीनों को बुलाया और उन्हें याद दिलाया कि पवित्र

आत्मा ने उन्हें निरीक्षक (ओवरसीअर्स) के रूप में नियुक्त किया था (प्रेरितों 20:17, 28)। इन वृत्तांतों और अन्य के माध्यम से हम सीखते हैं कि नगर–चर्च परिषद के प्राचीन (प्रेस्बिटर्स) निरीक्षक (एपिस्कोपेट्स/बिशप्स) और पास्टर्स के समान थे। नए नियम में चार मूल शब्दों का उपयोग किया गया था, जो तीन स्तरों के अधिकार को दर्शाते हैं। चार शब्द और तीन स्तर के अधिकार हैं: प्रभु; प्रेरित; स्थानीय सभाओं और नगर–व्यापी परिषदों के निरीक्षक (प्राचीन, पास्टर्स), और डीकन। डीकन आवश्यकतानुसार सहायता करते थे और उनके पास संगठनात्मक अधिकार नहीं था। यीशु पृथ्वी पर अपनी देह अर्थात कलीसिया के सिर थे और हैं।

Generally, the term "deacons," referred to anyone who served others. The list of deacons is fairly extensive starting with Jesus (Rom 15:8); the Apostles (Acts 6:1-2,4); and Paul.[246] Then stepping outside the Church, we observe Paul telling the local church residing in Rome that all civil rulers are also God's deacons (Rom 13:4). Even Satan has deacons (servant- ministers) (2 Cor 11:15).

सामान्यतः, "डीकन" शब्द का उपयोग उन सभी के लिए किया जाता था जो दूसरों की सेवा करते थे। डीकनों की सूची काफी व्यापक है, जिसमें यीशु (रोमियों 15:8), प्रेरित (प्रेरितों 6:1–2,4), और पौलुस शामिल हैं।[246] फिर कलीसिया के बाहर कदम रखते हुए, हम देखते हैं कि पौलुस रोम में रहने वाली स्थानीय कलीसिया को बताते हैं कि सभी नागरिक शासक भी परमेश्वर के डीकन हैं (रोमियों 13:4)। यहाँ तक कि शैतान के भी डीकन (सेवक–मंत्री) हैं (2 कुरिन्थियों 11:15)।

On one level, all of Jesus' followers are automatically deacons. Yet, there is a special group of deacons discussed in Paul's first letter to Timothy. These deacons helped with the day-to-day administration of the local churches for each city. They were not required to preach the Gospel, teach, nor have the same level of administrative capabilities as the apostles or the elders who served on each of the city-councils. From Paul's letter to Timothy, we can assume that their office was set up primarily to serve the overseers in whatever capacity that they were willing and capable (1 Tim 3:1-13).

एक स्तर पर, यीशु के सभी अनुयायी स्वतः ही डीकन हैं। फिर भी, तीमुथियुस को लिखे पौलुस के पहले पत्र में डीकनों के एक विशेष समूह का उल्लेख है। ये डीकन प्रत्येक शहर की स्थानीय चर्चों के दैनिक प्रशासन में सहायता करते थे। उनसे सुसमाचार प्रचार करने, शिक्षण देने, या प्रेरितों या शहर–परिषदों में सेवा करने वाले प्राचीनों (एल्डर्स) के समान प्रशासनिक क्षमता

---

[246] Acts 20:24; 21:19; Rom 11:13; 15:31; 2 Cor 6:3-4; & more. प्रेरितों 20:24; 21:19; रोमियों 11:13; 15:31; 2 कुरू 6:3–4.

रखने की आवश्यकता नहीं थी। पौलुस के तीमुथियुस को लिखे पत्र से, हम यह मान सकते हैं कि उनका पद मुख्य रूप से निरीक्षकों (ओवरसीअर्स) की सेवा करने के लिए स्थापित किया गया था, जिसमें वे जो भी क्षमता में इच्छुक और सक्षम थे, उसमें सहायता प्रदान करते थे (1 तीमुथियुस 3:1–13)।

Throughout the New Testament, we observe Jesus appointing elders through His apostles such as Paul and then helping them develop so that they could lead their respective communities.[247] We observe two levels of organization with Jesus Christ being the active leader of the Church setting Church Doctrine initially through His followers in Jerusalem. Through Jesus Christ and the Holy Spirit's guidance, Jesus appointed the apostles who were responsible for evangelizing (e.g. Gospels- first twelve & Gal 1:1, 19- Paul's appointment & James, Jesus' brother) and establishing leaders within local assemblies/churches (e.g. Acts 14:21-23; 2 Cor 11:28; Titus 1:5), who worked together in their respective communities through city-wide councils.[248] The councils of elders were responsible for collectively ministering to the day-to-day needs of their respective communities (e.g. Acts 20:17-38). The official capacity of deacons was to assist the leaders of the local churches as needed (e.g. Acts 6-7).

नए नियम में, हम यीशु को अपने प्रेरितों जैसे पौलुस के माध्यम से प्राचीनों को नियुक्त करते हुए देखते हैं और फिर उन्हें विकसित करने में मदद करते हैं ताकि वे अपने–अपने समुदायों का नेतृत्व कर सकें। हम संगठन के दो स्तरों को देखते हैं जिसमें यीशु मसीह कलीसिया के सक्रिय अगुवे हैं जो यरूशलेम में अपने अनुयायियों के माध्यम से प्रारंभ में कलीसिया का सिद्धांत स्थापित करते हैं। यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के माध्यम से, यीशु ने प्रेरितों को नियुक्त किया जो सुसमाचार प्रचार (उदाहरण के लिए,

---

[247] A good example of Paul's ministry as an overseer to the overseers is shown as he encourages the Corinthians to complete a promise they had made regarding sending some of their resources to help their needy brothers and sisters in Jerusalem (2 Cor 8-9). पौलुस की सेवकाई का एक उत्तम उदाहरण, जो निरीक्षकों के निरीक्षक के रूप में था, तब दिखाई देता है जब वह कुरिन्थियों को प्रोत्साहित करता है कि वे यरूशलेम में अपने जरूरतमंद भाइयों और बहनों की मदद के लिए अपने संसाधनों को भेजने का जो वादा किया था, उसे पूरा करें (2 कुरिन्थियों 8–9)।

[248] Note that several of Paul's letters were addressed to the councils of elders of specific cities or cities within an area such as Galatians. यह ध्यान दें कि पौलुस के कई पत्र विशिष्ट शहरों या क्षेत्र (जैसे गलातियों) के प्राचीनों की परिषदों (elders' councils) को संबोधित थे।

सुसमाचार अनुसार – प्रथम बारह एवं गलातियों 1:1, 19– पौलुस की नियुक्ति एवं यीशु का भाई याकूब) और स्थानीय सभाओं/कलीसियाओं में अगुवों की स्थापना (उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 14:21–23; 2 कुरिन्थियों 11:28; तीतुस 1:5) के लिए जिम्मेदार थे, जो अपने–अपने समुदायों में नगर–व्यापी परिषदों के माध्यम से एक साथ कार्य करते थे।[248] प्राचीनों की परिषदें अपने–अपने समुदायों की दैनिक आवश्यकताओं की सामूहिक रूप से सेवा करने के लिए जिम्मेदार थीं (उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 20:17–38)। डीकनों की आधिकारिक क्षमता स्थानीय कलीसियाओं के अगुवों की आवश्यकता अनुसार सहायता करना था (उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 6–7)।

Today, Jesus Christ continues to guide us through the Holy Spirit and uses His written Word to establish Church doctrine. The same Holy Spirit who inspired the authors of Scripture helps Jesus' follower from all subsequent generations interpret correctly the Scriptures.[249] Jesus Christ set up the "council-of-elders" as the fundamental form of leadership for the collective ministry of all of His followers within their respective communities.

आज, यीशु मसीह पवित्र आत्मा के माध्यम से हमें मार्गदर्शन देते रहते हैं और अपनी लिखित वाणी का उपयोग कलीसिया के सिद्धांत स्थापित करने के लिए करते हैं। वही पवित्र आत्मा जो धर्मशास्त्र के लेखकों को प्रेरित किया, यीशु के सभी बाद की पीढ़ियों के अनुयायियों को धर्मशास्त्रों की सही व्याख्या करने में सहायता करता है।[249] यीशु मसीह ने अपने सभी अनुयायियों की सामूहिक सेवा के लिए अपने–अपने समुदायों में नेतृत्व के मूलभूत रूप के रूप में "प्राचीनों–की–परिषद" स्थापित की।

Jesus has not given us a new commandment to change this form of leadership, nor has He changed the importance of community-wide ministries. He wants to guide us as we minister on community-wide levels around the world. When a community does not have a council of elders working together, it suffers from a lack of strong Christian cooperation. Without Church leadership working together in our respective communities, Jesus is not exalted nor proclaimed as clearly nor effectively as God desires.[250]

---

[249] 2 Tim 3:16-17; 2 Peter 1:20-21; 1 John 2:27; Paul's letters are valued on the same level as Old Testament Scriptures: 2 Peter 3:16. 2 तिमोथी 3:16–17; 2 पतरस 1:20–21; 1 यूहन्ना 2:27; पौलुस के पत्रों को पुराने नियम की पवित्रशास्त्रों के समान ही मूल्यवान माना जाता है: 2 पतरस 3:16.

[250] John 13:34-35; 17:21, 23; 1 John 1:7. यूहन्ना 13:34–35; 17:21, 23; 1 यूहन्ना 1:7.

यीशु ने हमें इस नेतृत्व रूप को बदलने के लिए कोई नया आदेश नहीं दिया है, न ही उन्होंने समुदाय–व्यापी सेवकाइयों के महत्व को बदला है। वे हमें मार्गदर्शन देना चाहते हैं जब हम विश्व भर में समुदाय–व्यापी स्तरों पर सेवा करते हैं। जब किसी समुदाय में प्राचीनों की परिषद एक साथ कार्य नहीं कर रही होती, तो वह मजबूत मसीही सहयोग की कमी से पीड़ित होता है। हमारे–अपने समुदायों में कलीसिया के नेतृत्व के एक साथ कार्य न करने पर, यीशु को महिमा नहीं मिलती है और न ही परमेश्वर की इच्छा के अनुसार स्पष्ट या प्रभावी ढंग से उसकी घोषणा की जाती है।[250]

We know that Jesus desires all of us to put some of our time in community-wide ministry. Knowing our ***identity*** and overall ***mission*** through Jesus helps us to accept our "good works" from the Father as Jesus leads us in our individual, family, local-church, community-wide, and worldwide ministries.[251] God's love, which is continually demonstrated through His ongoing good work assigned to each of us, compels us to learn to work together in godly unity at times and to serve each other all of the time.

हम जानते हैं कि यीशु चाहते हैं कि हम में से हर एक अपना कुछ समय समुदाय–व्यापी सेवकाई में लगाए। यीशु के माध्यम से अपनी पहचान और समग्र मिशन को जानने से हमें पिता से प्राप्त "अच्छे कार्यों" को स्वीकार करने में मदद मिलती है, क्योंकि यीशु हमें हमारी व्यक्तिगत, पारिवारिक, स्थानीय–कलीसिया, समुदाय–व्यापी और विश्वव्यापी सेवकाइयों में अगुवाई करते हैं।[252] परमेश्वर का प्रेम, जो हम में से प्रत्येक को सौंपे गए उनके निरंतर अच्छे कार्य के माध्यम से लगातार प्रदर्शित होता है, हमें कभी–कभी ईश्वरीय एकता में एक साथ कार्य करना सीखने और हर समय एक–दूसरे की सेवा करने के लिए बाध्य करता है।

When we come together to minister more effectively on community-wide levels, we will have to learn to put aside some of our denominational differences. If we do not allow Satan to tempt us into using our diversities to build walls, Jesus will use our diversities to strengthen our collective ministries to the point that we will be a greater witness as we join God in bringing His Creation to its final form.[252]

जब हम समुदाय–व्यापी स्तरों पर अधिक प्रभावी ढंग से सेवा करने के लिए एक साथ आते हैं, तो हमें अपनी कुछ संप्रदायिक भिन्नताओं को एक तरफ

---

[251] 1 Cor 3:9; Eph 1:4-6; 2:10; Titus 2:14. 1 कुरू 3:9; इफिसियों 1:4–6; 2:10; तीतुस 2:14.

[252] No Divisions: 1 Cor 1:10-13; 12:25-26; Eph 2:13-15; 4:1-6. कोई विभाजन नहीं: 1 कुरू 1:10–13; 12:25–26; इफि 2:13–15; 4:1–6.

रखना सीखना होगा। यदि हम शैतान को हमें अपनी विविधताओं का उपयोग दीवारें खड़ी करने के लिए लुभाने नहीं देते, तो यीशु हमारी विविधताओं का उपयोग हमारी सामूहिक सेवकाइयों को मजबूत करने के लिए करेंगे, इस बिंदु तक कि हम परमेश्वर के साथ मिलकर उनकी सृष्टि को उसके अंतिम रूप में लाने में एक बड़ा गवाह बनेंगे।[252]

We are created with individual differences that can be united under Jesus' leadership to give the Universal Church great ministering power. Our denominational differences represent a rich tapestry of Christian struggle and development that can be united for ministry through Jesus into something good and powerful enhancing and highlighting the rich tapestry of all of God's children for all to see.

हम व्यक्तिगत भिन्नताओं के साथ सृजे गए हैं जो यीशु के नेतृत्व के अधीन एकजुट होकर सार्वभौमिक कलीसिया को महान सेवकाई की शक्ति प्रदान कर सकती हैं। हमारी संप्रदायिक भिन्नताएँ मसीही संघर्ष और विकास की समृद्ध टेपेस्ट्री का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसे यीशु के माध्यम से सेवकाई के लिए एकजुट करके कुछ अच्छा और शक्तिशाली बनाया जा सकता है, जो परमेश्वर के सभी बच्चों की समृद्ध टेपेस्ट्री को उभारकर और प्रकाशित करके सबके लिए दृश्यमान कर देता है।

Coming from our different denominational, racial, socioeconomic, and generational backgrounds, we can bring great strength to our collective ministries as we allow Jesus to lead us. We can still maintain our different organizational histories, structures, and forms of worship as we ***boldly*** work together in godly unity within our communities proclaiming that the best life now and in the future is always through following Jesus. As we work together under Jesus' direction within our city-wide councils, our joint-efforts will proclaim God's love clearly to all people and bring God's transforming power to all who listen.

हमारे विभिन्न संप्रदायिक, नस्लीय, सामाजिक–आर्थिक और पीढ़ीगत पृष्ठभूमियों से आते हुए, हम यीशु को हमें नेतृत्व करने देने पर अपनी सामूहिक सेवकाइयों को महान शक्ति प्रदान कर सकते हैं। हम अपनी विभिन्न संगठनात्मक इतिहास, संरचनाओं और उपासना के रूपों को बनाए रखते हुए भी, अपने समुदायों में ईश्वरीय एकता के साथ साहसपूर्वक एक साथ कार्य कर सकते हैं, यह घोषणा करते हुए कि अब और भविष्य में सर्वोत्तम जीवन हमेशा यीशु का अनुसरण करने से ही मिलता है। जब हम अपने नगर–व्यापी परिषदों में यीशु के निर्देशन में एक साथ कार्य करते हैं, तो हमारे संयुक्त प्रयास सभी लोगों को परमेश्वर के प्रेम को स्पष्ट रूप से घोषित करेंगे और सुनने वालों सभी को परमेश्वर की परिवर्तनकारी शक्ति लाएंगे।

To work together as Christians across denominational lines under Jesus' leadership, we must all believe at least seven fundamental

truths, or we will be standing collectively on a very shaky foundation and not do well. We must all believe that: 1-3) ***Jesus is the Son of God, who being of the same essence as our Heavenly Father created the physical world*** (John 1:1-3; Phil 2:6-8; Heb 1:2-3; Col 1:16-17), and 4) ***Jesus is the only Way to be reconciled to the Father and one another*** (John 14:6; cf. John 1:29 & more); and 5-7) ***we must trust God and be willing to obey Him believing*** that He has given us an ***inspired*** Book of Life, the ***Bible***, to establish truth (reality) to live by and that ***all*** of it is ***good*** to teach everyone about Him and His holy ways (Ps 119:104-106; 2 Tim 3:16).

यीशु के नेतृत्व में संप्रदायों की सीमाओं से परे मसीहियों के रूप में एक साथ कार्य करने के लिए, हमें कम से कम सात मूलभूत सत्यों पर विश्वास करना चाहिए, अन्यथा हम सामूहिक रूप से बहुत अस्थिर नींव पर खड़े होंगे और अच्छा नहीं कर पाएंगे। हमें सबको यह विश्वास करना चाहिए कि: 1–3) यीशु परमेश्वर का पुत्र है, जो हमारे स्वर्गीय पिता के समान सारतत्व वाला होने के कारण भौतिक संसार की सृष्टि की (यूहन्ना 1:1–3; फिलिप्पियों 2:6–8; इब्रानियों 1:2–3; कुलुस्सियों 1:16–17), 4) यीशु पिता और एक–दूसरे से मेल–मिलाप का एकमात्र मार्ग है (यूहन्ना 14:6; तुलना यूहन्ना 1:29 और अधिक); 5–7) हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और उनकी आज्ञाकारिता करने को तैयार रहना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि उन्होंने हमें जीवन की प्रेरित पुस्तक, बाइबल, सत्य (वास्तविकता) स्थापित करने के लिए दी है जिसके अनुसार जीना है, और यह सब उनके और उनकी पवित्र रीतियों के बारे में हर एक को सिखाने के लिए अच्छी है (भजन संहिता 119:104–106; 2 तीमुथियुस 3:16)।

In order to work together properly under Jesus' leadership, we must believe that our Heavenly Father has given us salvation through Jesus alone and that all of His Word is divinely inspired, and therefore, profitable for us to follow faithfully. As collective groups within our cities and around the world, we know that we will not agree on every theological point, but we must agree on the basics as shown above in order to make godly progress under Jesus' leadership.

यीशु के नेतृत्व में उचित रूप से एक साथ कार्य करने के लिए, हमें यह विश्वास करना चाहिए कि हमारे स्वर्गीय पिता ने हमें यीशु के द्वारा अकेले उद्धार दिया है और उनकी सारी वाणी दिव्य रूप से प्रेरित है, और इसलिए, हमें विश्वासपूर्वक अनुसरण करने के लिए लाभदायक है । हमारे शहरों में और विश्व भर में सामूहिक समूहों के रूप में, हम जानते हैं कि हम हर धार्मिक बिंदु पर सहमत नहीं होंगे, लेकिन यीशु के नेतृत्व में ईश्वरीय प्रगति करने के लिए हमें ऊपर दिखाए गए मूल सत्यों पर सहमत होना चाहिए।

No matter how large or small a church is, each church must be able to have an active voice in the decision making process and enter

into collective ministries and activities as it feels led by God. No church should be looked-down-on because it chooses not to participate in some or even all of the collective community-wide activities. By allowing every Christian church to have an equal voice in discussing, promoting, and participating in community-wide ministries, it allows a true sense of equality among churches, and it allows the larger churches to serve the needs of smaller churches and their neighborhood ministries. Those who are more capable should be willing to serve those who are less able. Remember that the ultimate goal is to join God as He ministers to our individual and collective needs.

चाहे कोई कलीसिया कितनी भी बड़ी या छोटी हो, हर कलीसिया को निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में सक्रिय आवाज़ रखने और परमेश्वर के मार्गदर्शन के अनुसार सामूहिक सेवकाइयों एवं गतिविधियों में भाग लेने में सक्षम होना चाहिए। किसी भी कलीसिया को इसलिए कमतर नहीं समझा जाना चाहिए कि उसने कुछ या सभी सामूहिक समुदाय–व्यापी गतिविधियों में भाग न लेने का चुनाव किया हो। हर मसीही कलीसिया को समुदाय–व्यापी सेवकाइयों पर चर्चा करने, उन्हें बढ़ावा देने और उनमें भाग लेने में समान आवाज़ देने से कलीसियाओं के बीच सच्ची समानता की भावना उत्पन्न होती है, और इससे बड़ी कलीसियाएँ छोटी कलीसियाओं तथा उनके पड़ोस की सेवकाइयों की आवश्यकताओं की सेवा कर सकती हैं। जो अधिक सक्षम हैं, उन्हें कम सक्षम लोगों की सेवा करने को तैयार रहना चाहिए। याद रखें कि अंतिम लक्ष्य परमेश्वर के साथ मिलकर उनकी सेवा करना है, जब वे हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

Throughout Scripture, we observe the importance of community-wide ministries. When we allow Jesus Christ to empower us so that we can serve our communities collectively, we have the greatest ability to meet the needs of all people.

सम्पूर्ण शास्त्र में हम समुदाय–व्यापी सेवकाइयों के महत्व को देखते हैं। जब हम यीशु मसीह को हमें सामर्थ्य देने देते हैं ताकि हम अपने समुदायों की सामूहिक रूप से सेवा कर सकें, तो हमारे पास सभी लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने की सबसे बड़ी क्षमता होती है।

In reality, each of our communities should function as a living organism similar to our local church families, individual families, and our personal lives. If we allow God to guide us utilizing His Written Word as our core foundation, He will teach all of us to minister on all levels including the highly effective community-wide level through city councils. Knowing that the people of our own communities are truly our closest neighbors, let's work together in godly unity, which will in turn be a blessing to all through our individual and collective ministries. This produces the greatest witness to the world around us.

वास्तव में, हमारे प्रत्येक समुदाय को एक जीवित जीव की तरह कार्य करना चाहिए, जो हमारी स्थानीय कलीसिया परिवारों, व्यक्तिगत परिवारों और हमारे व्यक्तिगत जीवन के समान हो। यदि हम परमेश्वर को अपनी लिखित वाणी को हमारी मूल नींव के रूप में उपयोग करके हमें मार्गदर्शन करने देते हैं, तो वह हमें सभी स्तरों पर सेवा करना सिखाएंगे, जिसमें नगर परिषदों के माध्यम से अत्यधिक प्रभावी समुदाय–व्यापी स्तर भी शामिल है। यह जानते हुए कि हमारे अपने समुदाय के लोग वास्तव में हमारे सबसे निकटतम पड़ोसी हैं, आइए हम ईश्वरीय एकता में एक साथ कार्य करें, जो बदले में हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक सेवकाइयों के माध्यम से सभी के लिए आशीष बनेगी। इससे हमारे चारों ओर की दुनिया के लिए सबसे बड़ा गवाह उत्पन्न होता है।

Closing Thoughts
समापन विचार

Most of us sense that life is something more than a fleeting time on earth prior to death. ***That is because life is eternal.*** God the Creator, who is eternal, created the angels and humanity as abundantly free-will eternal beings. Each has to decide whether or not they want to live with a loving God (Sustainer) *under His authority* or be isolated from Him and like-minded beings forever.

हममें से अधिकांश को यह अनुभव होता है कि जीवन पृथ्वी पर मृत्यु से पहले का क्षणिक समय मात्र नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जीवन अनंत है । सृष्टिकर्ता परमेश्वर, जो स्वयं अनंत हैं, ने स्वर्गदूतों और मानवजाति को अत्यधिक स्वतंत्र इच्छा वाले अनंत प्राणी के रूप में सृजा। प्रत्येक को यह निर्णय करना होता है कि क्या वे प्रेममय परमेश्वर (पालनकर्ता) के अधिकार के अधीन उनके साथ रहना चाहते हैं या उनसे और समान विचार वाले प्राणियों से सदा के लिए अलग–थलग रहना चाहते हैं।

When we consider the big picture, we want to thank God for His loving kind righteous (holy) nature and for creating us to be an intimate part of His eternal holy life. The Father, Son, and Holy Spirit comprise a living "oneness," a godly unity, that is held together with perfect love absent of all sin. There are no divisions or walls within their intimate holy relationship. We were created in God's image according to His likeness to be part of Their intimate holy family experiencing the same godly unity with Them and one another. Through our God-given abundant free will, everyone has some sin in their lives and struggles against self-centeredness and selfishness, but God works with all from every generation helping those who listen to Him turn from their self-centered ways of life to His holy way of life bringing them into His eternal holy family.

जब हम बड़ी तस्वीर पर विचार करते हैं, तो हम परमेश्वर को उनकी प्रेममय, दयालु, धर्मी (पवित्र) प्रकृति के लिए और हमें उनकी अनंत पवित्र जीवन का घनिष्ठ भाग बनाने के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक जीवित "एकता" बनाते हैं, एक ईश्वरीय एकता, जो पूर्ण प्रेम से बंधी हुई है जिसमें पाप का कोई स्थान नहीं है। उनके घनिष्ठ पवित्र संबंध में कोई विभाजन या दीवारें नहीं हैं। हम परमेश्वर की छवि में उनकी समानता के अनुसार सृजे गए हैं ताकि उनके घनिष्ठ पवित्र परिवार का भाग बनें और उनके साथ तथा एक–दूसरे के साथ वही ईश्वरीय एकता का अनुभव करें। हमारे

परमेश्वर–दत्त प्रचुर स्वतंत्र इच्छा के माध्यम से, हर किसी के जीवन में कुछ पाप होता है और वे स्वार्थपूर्णता तथा आत्मकेन्द्रितता के विरुद्ध संघर्ष करते हैं, किन्तु परमेश्वर हर पीढ़ी के सभी लोगों के साथ कार्य करते हैं, जो उनकी सुनते हैं उन्हें उनकी आत्मकेन्द्रित जीवन शैली से उनकी पवित्र जीवन शैली की ओर मोड़ने में सहायता करते हैं और उन्हें अपने अनंत पवित्र परिवार में लाते हैं।

God's desire for everyone is to choose good over evil (being hurtful). In one sense, life is simpler than we imagine, because each individual's decision regarding living for self or community determines his or her own eternal destiny. For those who choose to receive God as lord and savior, they are choosing good over evil. They are choosing what is good for others ***and*** for themselves. For those who choose self ***over*** others, they are choosing an emptier life that leads to an eternal life of shame, unrest, and suffering.

परमेश्वर की इच्छा हर व्यक्ति के लिए है कि वह बुराई (दूसरों को चोट पहुँचाना) की बजाय भलाई को चुने। एक अर्थ में जीवन हमारी कल्पना से अधिक सरल है, क्योंकि स्वयं के लिए या समुदाय के लिए जीने के बारे में प्रत्येक व्यक्ति का निर्णय उसके अपने अनंत भाग्य को निर्धारित करता है। जो लोग परमेश्वर को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना चुनते हैं, वे बुराई पर भलाई को चुन रहे हैं। वे दूसरों और स्वयं के लिए जो अच्छा है उसे चुन रहे हैं। जो लोग दूसरों की बजाय स्वयं को चुनते हैं, वे एक खाली जीवन चुन रहे हैं जो लज्जा, अशांति और पीड़ा से भरे अनंत जीवन की ओर ले जाता है।

As each of us journey through this part of eternity, God reveals Himself in a multitude of ways over time wanting all to know Him (spiritual awakenings). To know God personally helps one to submit to Him and confidently and joyfully follow His leadership. Until one starts to know how good God is and how great a love that He has for all, it is easier to follow a self-centered path without submitting to Him. But, once an individual has started paying attention to God's revelation of reality through the Creation itself, His written Word, and the work of the Holy Spirit, many of Satan's deceptions and his or her own personal self-centered desires become clearer making it much easier to submit to God's leadership and way of life. His unbiased love for all shown through everything that He does helps those who listen realize that He is a loving holy father and sustainer, who is worthy of love, respect, and honor (reverence).

जब हम में से प्रत्येक अनंतता के इस भाग की यात्रा करता है, परमेश्वर समय के साथ अनेक तरीकों से स्वयं को प्रकट करते हैं, चाहते हैं कि सभी उन्हें जानें (आध्यात्मिक जागरण)। परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना व्यक्ति को उनके प्रति समर्पित होने और आत्मविश्वास तथा आनंद के साथ उनकी अगुवाई

का अनुसरण करने में सहायता करता है। जब तक कोई यह जानना शुरू नहीं करता कि परमेश्वर कितने अच्छे हैं और उनका सभी के लिए कितना महान प्रेम है, तब तक उनके प्रति समर्पण किए बिना आत्मकेन्द्रित मार्ग का अनुसरण करना आसान होता है। लेकिन, एक बार जब कोई व्यक्ति सृष्टि स्वयं के माध्यम से, उनकी लिखित वाणी के माध्यम से, और पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से परमेश्वर की वास्तविकता के प्रकटन पर ध्यान देना शुरू करता है, तो शैतान के कई धोखे और उसकी या उसकी अपनी व्यक्तिगत आत्मकेन्द्रित इच्छाएँ स्पष्ट हो जाती हैं, जिससे परमेश्वर की अगुवाई और जीवन शैली के प्रति समर्पित होना बहुत आसान हो जाता है। उनके द्वारा किए गए हर कार्य के माध्यम से सभी के प्रति उनका निष्पक्ष प्रेम उन लोगों को, जो सुनते हैं, यह समझने में सहायता करता है कि वे एक प्रेममय पवित्र पिता और पालनकर्ता हैं, जो प्रेम, सम्मान और आदर (श्रद्धा) के योग्य हैं।

Can you think of anything more glorious than God and His eternal close-knit holy family? I cannot! What a privilege and honor to be invited into God's holy eternal family to be loved by our Heavenly Father as much as He loves Jesus. In addition, what a privilege and honor to be invited by God to join Him in His great work of love as we help guide people away from Satan's deceptions and hurtful ways into God's marvelous loving presence and light.

परमेश्वर और उनके अनंत घनिष्ठ पवित्र परिवार से अधिक गौरवशाली कुछ हो सकता है? मैं तो नहीं सोच सकता! परमेश्वर के पवित्र अनंत परिवार में आमंत्रित होना कितना बड़ा विशेषाधिकार और सम्मान है, जहाँ स्वर्गीय पिता हमें उतना ही प्रेम करते हैं जितना वे यीशु को करते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर द्वारा हमं अपने महान प्रेम के कार्य में शामिल होने के लिए आमंत्रित करना कितना बड़ा विशेषाधिकार और सम्मान है, जब हम लोगों को शैतान के धोखों और हानिकारक मार्गों से दूर करके परमेश्वर की अद्‌भुत प्रेममयी उपस्थिति और ज्योति में ले जाने में उनकी सहायता करते हैं।

Anyone who stays on life's wide self-centered road without God will miss all of the great opportunities that God has available for each person. But, if we listen to God and turn to Him, He will start transforming our nature immediately to be more and more like His. We will have the honor and privilege of following Jesus, the promised Messiah, the Son of the Most High, and of experiencing the joy of seeing lives transformed to do good now and forever.

जो कोई परमेश्वर के बिना जीवन की चौड़ी आत्मकेन्द्रित सड़क पर बना रहता है, वह उन सभी महान अवसरों को खो देगा जो परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध कराए हैं। किन्तु यदि हम परमेश्वर की सुनते हैं और उनके पास मुड़ते हैं, तो वे तुरंत हमारी प्रकृति को अधिक से अधिक अपनी समानता में परिवर्तित करना शुरू कर देंगे। हमें प्रतिज्ञात मसीहा, परमप्रधान के

पुत्र यीशु का अनुसरण करने का सम्मान और विशेषाधिकार प्राप्त होगा, तथा अब और सदा के लिए भलाई करने के लिए जीवन परिवर्तित होते देखने के आनंद का अनुभव होगा।

The only way that Jesus' followers can experience the fulness of joy that Jesus experienced at the Cross–and still does as He leads His Church–is to ***step out in faith*** into the ongoing spiritual battles ***and join God in the greatest rescue mission of all eternity***. Out of a growing genuine love for others, Jesus' followers experience great godly joy by being part of God's eternal holy family and help rescue those whom they have come to learn to love. ***There is no greater joy than leading others to God and seeing them saved from the consequences of unholy living now and in the future with sin's ultimate disaster of eternal separation from God in shame and pain!***

यीशु के अनुयायी उस पूर्ण आनंद का अनुभव तभी कर सकते हैं जो यीशु ने क्रूस पर अनुभव किया था–और अब भी करते हैं जब वे अपनी कलीसिया का नेतृत्व करते हैं–जब वे विश्वास के साथ आगे बढ़कर निरंतर आध्यात्मिक युद्धों में कदम रखते हैं और अनंतकाल के सबसे बड़े उद्धार मिशन में परमेश्वर के साथ शामिल होते हैं। दूसरों के प्रति बढ़ते सच्चे प्रेम से, यीशु के अनुयायी परमेश्वर के अनंत पवित्र परिवार का हिस्सा बनकर महान ईश्वरीय आनंद का अनुभव करते हैं और उन लोगों को बचाने में सहायता करते हैं जिन्हें वे प्रेम करना सीख चुके हैं। दूसरों को परमेश्वर के पास लाने और उन्हें अपवित्र जीवन के परिणामों से–अब और भविष्य में–बचाते देखने से बड़ा कोई आनंद नहीं है, जिसमें पाप का अंतिम विनाश यानी परमेश्वर से लज्जा और पीड़ा में अनंत पृथक्करण शामिल है!

As we begin to understand how precious we are to God, let us make sure that we are not being tossed about as the waves on a rough sea. All Christians should live out their lives remembering that God has brought them out of darkness into His marvelous light so that they see reality much clearer than those not listening to Him. Over time, they become better and better followers of Jesus as they learn to trust God more and more through there interactions with Him. Each should occasionally reevaluate his or her journey with God and the Universal Church in order to make sure that they are following God's Word and Jesus' leadership faithfully.

जब हम यह समझना शुरू करते हैं कि हम परमेश्वर के लिए कितने अनमोल हैं, तो हमें यह निश्चित करना चाहिए कि हम उबड़–खाबड़ समुद्र की लहरों की तरह इधर–उधर नहीं उछाले जा रहे हैं। सभी मसीहियों को अपना जीवन इस याद में जीना चाहिए कि परमेश्वर ने उन्हें अंधकार से अपनी अद्‌भुत ज्योति में लाया है, ताकि वे उन लोगों से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से वास्तविकता को देख सकें जो उनकी नहीं सुन रहे हैं। समय के साथ, वे परमेश्वर के साथ

अपने संवादों के माध्यम से उन पर अधिक से अधिक भरोसा करना सीखते हुए यीशु के बेहतर से बेहतर अनुयायी बनते जाते हैं। प्रत्येक को कभी–कभी परमेश्वर और सार्वभौमिक कलीसिया के साथ अपनी यात्रा का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे परमेश्वर की वाणी और यीशु की अगुवाई का विश्वासपूर्वक अनुसरण कर रहे हैं।

In addition, Jesus' followers should put aside all anxiousness that they may have and demonstrate the ***victory*** that is theirs as they follow Him. If they do this, our Heavenly Father will continually transform and empower them to be more and more like Jesus, which helps them become more and more effective as they work with God in His great work of love, which is the creation of His eternal close-knit holy family.

इसके अलावा, यीशु के अनुयायियों को अपनी सारी चिंता को एक तरफ रख देना चाहिए और उनके अनुसरण करते समय उनके पास जो विजय है, उसे प्रदर्शित करना चाहिए। यदि वे ऐसा करते हैं, तो हमारे स्वर्गीय पिता उन्हें निरंतर परिवर्तित और सामर्थ्यवान बनाते रहेंगे ताकि वे यीशु के अधिक से अधिक समान बनें, जो उन्हें परमेश्वर के साथ उनके महान प्रेम के कार्य में अधिक से अधिक प्रभावी बनने में सहायता करता है, जो उनके अनंत घनिष्ठ पवित्र परिवार की सृष्टि है।

Through Jesus' leadership, we will provide a great witness and work! At various times under Jesus' leadership, we will unite and work in godly unity establishing strong individual, local church, community, and world-wide ministries. Accepting our Heavenly Father's love, righteousness, and sent son, Jesus, is the eternal solution to all problems. Whether we are doing normal daily work or something special, let's intentionally always strive to follow Jesus faithfully.

यीशु की अगुवाई के माध्यम से, हम एक महान गवाही और कार्य प्रदान करेंगे ! यीशु की अगुवाई में विभिन्न समयों पर, हम एकजुट होकर ईश्वरीय एकता में कार्य करेंगे और मजबूत व्यक्तिगत, स्थानीय कलीसिया, समुदायीय तथा विश्वव्यापी सेवकाइयाँ स्थापित करेंगे। हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेम, धार्मिकता और भेजे गए पुत्र यीशु को स्वीकार करना सभी समस्याओं का अनंत समाधान है। चाहे हम सामान्य दैनिक कार्य कर रहे हों या कुछ विशेष, आइए हम हमेशा अभिप्रायपूर्ण यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करने का प्रयास करें।

Now, as ***you*** finish this book, consider making a new or renewed commitment to God to open your heart more fully to His will for your life. If you have not done so already, commit to reading His Word on a regular basis, acting obediently to what you read, and faithfully following Jesus.

अब, जब आप यह पुस्तक समाप्त कर रहे हैं, तो परमेश्वर के प्रति एक नई या नवीनीकृत प्रतिबद्धता करने पर विचार करें कि आप अपने जीवन के लिए उनकी इच्छा के प्रति अपना हृदय और अधिक पूरी तरह से खोलें। यदि आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो उनकी वाणी को नियमित रूप से पढ़ने, जो आप पढ़ते हैं उसके प्रति आज्ञाकारी कार्य करने और यीशु का विश्वासपूर्वक अनुसरण करने की प्रतिबद्धता करें।

It is my personal prayer that reading this book has helped you obtain a closer walk with God. If I do not personally meet you on this side of eternity, I want you to know that it is my prayer that you have an exciting and rich life following our lord and savior Jesus the Christ, ***and let's all continually stay in a state of thanksgiving and celebration with Paul for the victory over death and sin that God has provided (1 Cor 15:50-58)!***

यह मेरी व्यक्तिगत प्रार्थना है कि इस पुस्तक को पढ़ने से आपको परमेश्वर के साथ और निकट संबंध प्राप्त करने में सहायता मिली हो। यदि मैं अनंतता के इस पक्ष पर आपसे व्यक्तिगत रूप से नहीं मिल पाता, तो मैं चाहता हूँ कि आपको पता हो कि मेरी प्रार्थना है कि आप हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह का अनुसरण करते हुए एक रोमांचक और समृद्ध जीवन व्यतीत करें, और आइए हम सब पौलुस के साथ निरंतर धन्यवाद और उत्सव की अवस्था में बने रहें, उस मृत्यु और पाप पर विजय के लिए जो परमेश्वर ने प्रदान की है (1 कुरिन्थियों 15:50–58)!

Appendix: Reading God's Word Accurately
परिशिष्टः परमेश्वर की वाणी को सटीक रूप से पढ़ना

It is important that ***all*** of Jesus' followers remain in God's inspired authoritative Word, the Bible, reading and living it out.[253] If they do not, Satan will slowly but surely recondition their minds toward accepting His deceptive lies.[254] Knowing that Jesus wants all of His followers to become more and more like Him should bring His followers to the place of reading our Heavenly Father's written Word on a regular basis and being in touch at all times with Him through ongoing open ended prayer. Prayer should normally be a two way street listening as well as speaking to God (2 Thess 5:17). ***Staying in God's Word, praying without ceasing, and keeping an open, obedient mind to God's leading is important for the highest level of success for Jesus' followers.***

यह महत्वपूर्ण है कि यीशु के सभी अनुयायी परमेश्वर की प्रेरित और प्राधिकारी वाणी, बाइबल, में बने रहें, उसे पढ़ें और उसके अनुसार जीवन जिएँ।[253] यदि वे ऐसा नहीं करते, तो शैतान धीरे–धीरे लेकिन निश्चित रूप से उनके मन को फिर से ढाल देगा ताकि वे उसके धोखेबाज झूठों को स्वीकार कर लें।[254] यह जानते हुए कि यीशु चाहते हैं कि उनके सभी अनुयायी उनके अधिक से अधिक समान बनें, इससे अनुयायियों को हमारे स्वर्गीय पिता की लिखित वाणी को नियमित रूप से पढ़ने और निरंतर खुली प्रार्थना के माध्यम से हर समय उनसे जुड़े रहने की जगह पर लाना चाहिए। प्रार्थना सामान्य रूप से दोतरफा होनी चाहिए–परमेश्वर से बोलने के साथ–साथ उनकी सुनना भी (2 थिस्सलुनीकियों 5:17)। परमेश्वर की वाणी में बने रहना, निरंतर प्रार्थना करना, और परमेश्वर की अगुवाई के प्रति खुला, आज्ञाकारी मन रखना यीशु के अनुयायियों के लिए सर्वोच्च स्तर की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।

It is important when studying God's Word not to misread it by forcing it to say something other than what it meant when it was originally written to its original recipients. If we understand what it originally meant, then we will be able to apply it to our present circumstances correctly.

---

[253] John 8:31b-32; Rom 12:1-2. यूहन्ना 8:31ब–32; रोमियों 12:1–2.

[254] John 8:43-44; 2 Cor 11:13-15. यूहन्ना 8:43–44; 2 कुरू 11:13–15.

परमेश्वर की वाणी का अध्ययन करते समय यह महत्वपूर्ण है कि हम उसे गलत न पढ़ें और उसे मूल रूप से लिखे जाने के समय उसके मूल प्राप्तकर्ताओं के लिए जो अर्थ था, उससे भिन्न कुछ कहने के लिए बाध्य न करें। यदि हम समझते हैं कि मूल रूप से उसका क्या अर्थ था, तो हम उसे अपनी वर्तमान परिस्थितियों पर सही ढंग से लागू कर सकेंगे।

There are some who incorrectly try to take what they are reading and consciously or subconsciously make it conform to what they have been taught by others or what they prefer it to mean. It is critical for all who want to understand God's Word accurately to allow God to teach them *what He actually is saying* through those who wrote under His inspiration. ***It is a common mistake to read into God's Word what we want it to say.***

कुछ लोग गलती से जो पढ़ रहे हैं उसे लेकर, जानबूझकर या अचेतन रूप से, उसे दूसरों द्वारा सिखाई गई बातों या अपनी पसंद के अर्थ के अनुरूप बनाने की कोशिश करते हैं। परमेश्वर की वाणी को सटीक रूप से समझने की इच्छा रखने वाले सभी के लिए यह अत्यावश्यक है कि वे परमेश्वर को उनकी प्रेरणा के अधीन लिखने वालों के माध्यम से वास्तव में जो कह रहे हैं, उसे सिखाने दें। परमेश्वर की वाणी में हम जो चाहते हैं उसे पढ़ लेना एक सामान्य गलती है।

If possible, keep in mind the literary and historical context along with grammar as you read through passages of the Bible and remember that all of the Bible fits together without contradictions. So let's strive to understand it correctly knowing that all of the various scriptures work together well.

यदि संभव हो, तो बाइबल के अंशों को पढ़ते समय साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भ के साथ–साथ व्याकरण को भी ध्यान में रखें और याद रखें कि बाइबल का सम्पूर्ण भाग बिना किसी विरोधाभास के एक साथ फिट बैठता है। इसलिए आइए हम इसे सही ढंग से समझने का प्रयास करें, यह जानते हुए कि धर्मशास्त्र के सभी पद अच्छी तरह से एक साथ कार्य करते हैं।

As you study God's Word, you may wish to have one or two good literal translations such as an English Standard Version (ESV) and/or a New American Standard Bible (NASB) along with one linguistically reconstructed translation (functional equivalent) such as the NIV, which rephrases the original text into wording that is more commonly understood today. The Living translations, sometimes called paraphrased translations, are useful for gaining *overall* perspective, but they are not good for in-depth understanding due to their loss of detail from God's original wording. Keep in mind that the

Holy Spirit wants to be your guide to help you properly understand God and His Creation as you read the translations of your choice and seek truth.[255]

जब आप परमेश्वर की वाणी का अध्ययन करते हैं, तो आपके पास एक या दो अच्छे शाब्दिक अनुवाद होने चाहिए जैसे कि English Standard Version (ESV) और/या New American Standard Bible (NASB) साथ ही एक भाषाई रूप से पुनर्निर्मित अनुवाद (कार्यात्मक समकक्ष) जैसे कि NIV, जो मूल पाठ को आज की अधिक सामान्य रूप से समझी जाने वाली शब्दावली में पुनः व्यक्त करता है। जीवित अनुवाद (Living translations) जिन्हें कभी–कभी रूपांतरित अनुवाद कहा जाता है, समग्र दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए उपयोगी हैं, लेकिन परमेश्वर की मूल शब्दावली से विवरण की हानि के कारण गहन समझ के लिए अच्छे नहीं हैं। ध्यान रखें कि पवित्र आत्मा आपका मार्गदर्शक बनना चाहते हैं ताकि आप अपने चुने हुए अनुवादों को पढ़ते समय और सत्य की खोज करते समय परमेश्वर और उनकी सृष्टि को सही ढंग से समझ सकें।[255]

In addition to using a couple good translations, there are many good biblical study aids available such as Bible dictionaries, concordances, and commentaries that are very helpful in understanding the historical, cultural, and religious context while giving information that was common during ancient biblical times that span several thousand years.

कुछ अच्छे अनुवादों का उपयोग करने के अलावा, कई अच्छे बाइबल अध्ययन सहायक उपलब्ध हैं जैसे बाइबल शब्दकोश, कॉनकॉर्डेंस और टीकाएँ, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ को समझने में बहुत सहायक हैं तथा प्राचीन बाइबल काल के दौरान सामान्य जानकारी प्रदान करती हैं जो कई हजार वर्षों तक फैली हुई है।

But, always keep in mind that study aids including commentaries are not God's Word, and therefore be careful not to trust any of them as totally factual. There are other books that have been written to help individuals understand the various literary forms (genres) along with historical and literary contextual fundamentals. Keep in mind that even the most helpful books normally contain some bias that distorts parts of Scripture. Always ask God to guide your understanding as you read. If we listen to God, He will help us know truth (1 John 2:27). A major part of Jesus' mission was to help us understand what is real and what is not; He is the living Word of God (John 1:1-5, 14; 18:37; cf. 8:31b-32).

---

[255] 1 John 2:27; cf. 2 Tim 3:16-17; John 8:31b-32. 1 यूहन्ना 2:27; संदर्भ 2 तिमोथी 3:16–17; यूहन्ना 8:31ब–32।

लेकिन, हमेशा ध्यान रखें कि अध्ययन सहायक, जिसमें टीकाएँ भी शामिल हैं, परमेश्वर की वाणी नहीं हैं, और इसलिए सावधान रहें कि उनमें से किसी को भी पूरी तरह तथ्यात्मक न मानें। अन्य पुस्तकें भी लिखी गई हैं जो विभिन्न साहित्यिक रूपों (विधाओं) के साथ–साथ ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भीय मूल सिद्धांतों को समझने में व्यक्तियों की सहायता करती हैं। ध्यान रखें कि सबसे सहायक पुस्तकें भी सामान्यतः कुछ पक्षपात रखती हैं जो शास्त्र के कुछ भागों को विकृत कर देता है। पढ़ते समय हमेशा परमेश्वर से अपनी समझ का मार्गदर्शन करने के लिए कहें। यदि हम परमेश्वर की सुनते हैं, तो वे हमें सत्य जानने में सहायता करेंगे (1 यूहन्ना 2:27)। यीशु के मिशन का एक प्रमुख भाग हमें यह समझाने में था कि क्या वास्तविक है और क्या नहीं; वे परमेश्वर की जीवित वाणी हैं (यूहन्ना 1:1–5, 14; 18:37; तुलना 8:31ख–32)।

At all times, continue to pray and read God's Word, the Bible, living out what God teaches you. God speaks mightily to each of His children through His written Word and the continual leading of Jesus through the Holy Spirit, who helps us to understand reality and the Father's desire for each of our lives (Heb 4:12). If you have not done so yet, join a local church and a Bible study group, listen to your minister(s), actively work within your church as led by the Spirit, and most importantly, ***do what God tells you through His Word and direct leading.*** Many fail to grow in their walk with God simply because they do not step out in faith and act on His leading (Heb 5:14).

हर समय प्रार्थना करते रहें और परमेश्वर की वाणी, बाइबल, को पढ़ते रहें, तथा परमेश्वर जो सिखाते हैं उसके अनुसार जीवन जिएँ। परमेश्वर अपनी लिखित वाणी और पवित्र आत्मा के माध्यम से यीशु की निरंतर अगुवाई द्वारा अपने प्रत्येक बच्चे से सामर्थ्यपूर्ण ढंग से बोलते हैं, जो हमें वास्तविकता और पिता की हमारे जीवन के लिए इच्छा समझने में सहायता करते हैं (इब्रानियों 4:12)। यदि आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो एक स्थानीय कलीसिया और बाइबल अध्ययन समूह में शामिल हों, अपने सेवक(कों) की सुनें, आत्मा की अगुवाई के अनुसार अपनी कलीसिया में सक्रिय रूप से कार्य करें, और सबसे महत्वपूर्ण, परमेश्वर जो अपनी वाणी और प्रत्यक्ष अगुवाई के माध्यम से आपको बताते हैं, उसे करें । बहुत से लोग परमेश्वर के साथ अपनी यात्रा में बढ़ने में असफल हो जाते हैं केवल इसलिए क्योंकि वे विश्वास के साथ आगे नहीं बढ़ते और उनकी अगुवाई पर कार्य नहीं करते (इब्रानियों 5:14)।

References
संदर्भ

Primary Sources
प्राथमिक स्रोत

Biblia Hebraica Stuttgartensia. 3rd ed. Stuttgart: Deutsche Bibelgesellschaft, 1987.

बब्लिया हेब्राइका स्टुटगार्टेंसिया. तृतीय संस्करण. स्टुटगार्टः डॉयचे बिबेलगेसेलशाफ्ट, 1987.

The Greek New Testament. 3rd UBS ed. Stuttgart: Biblia-Druck, 1988.

द ग्रीक न्यू टेस्टामेंट. तृतीय यूबीएस संस्करण. स्टुटगार्टः बिब्लिया–ड्रक, 1988.

General References
सामान्य संदर्भ

Bauer, Walter. *A Greek-English Lexicon of the New Testament and Other Early Christian Literature.* 5th ed. Translated and adapted by William F. Arndt & F. Wilbur Gingrich from the 4th rev. & augmented ed. of Walter Bauer's *Griechisch-Deutsches Wörterbuch zu den Schriften des Neuen Testaments und der übrigen urchristlichen Literatur*, 1958. Reprint. Chicago & London: The University of Chicago Press, 1979.

Bauer, Walter. नवीन नियम और अन्य प्रारम्भिक मसीही साहित्य का यूनानी–अंग्रेज़ी शब्दकोश. 5वाँ संस्करण. William F. Arndt और F. Wilbur Gingrich द्वारा 1958. Walter Bauer. *Griechisch-Deutsches Wörterbuch zu den Schriften des Neuen Testaments und der übrigen urchristlichen Literatur.* के संशोधित एवं विस्तारित 4थे संस्करण से अनुवादित एवं अनुकूलित. पुनर्मुद्रण. शिकागो और लंदनः द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1979.

Blass, F. and DeBrunner A. *A Greek Grammer of The New Testament and Other Early Christian Literature.* Transl. and rev. from the 10th German ed. incorporating suppl. notes of A. Debrunner by Robert W. Funk. Chicago: London: Univ of Chicago Press; Cambridge Univ Press, 1961.

Blass, F. and DeBrunner, A. *A Greek Grammar of The New Testament and Other Early Christian Literature.* 10वें जर्मन संस्करण से अनुवादित व संशोधित, जिसमें. A. Debrunner के अतिरिक्त टिप्पणियाँ शामिल हैं; अनुवादक Robert W. Funk शिकागो; लंदनः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस; कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1961.

Blackaby, Henry. *Experiencing God*. Rev. ed. Nashville: Broadman and Holman, 2008.

Blackaby, Henry. *Experiencing God.* संशोधित संस्करण. नैशविलः ब्रॉडमैन एंड होलमैन, 2008.

Bonhoeffer, Dietrich. *Letters & Papers from Prison*. Rev. ed., ed. Eberhard Bethge. New York: Simon & Schuster, 1997.

Bonhoeffer, Dietrich. *Letters & Papers from Prison.* संशोधित संस्करण. संपादकः Eberhard Bethge. न्यूयॉर्कः साइमन एंड शूस्टर, 1997.

Brown, Francis; Driver, S.R.; Briggs, Charles A. *The New Brown-Driver-Briggs-Gesenius Hebrew-English Lexicon.* Peabody, Mass: Hendrickson Publishers, 1979.

Brown, Francis; Driver, S.R.; Briggs, Charles A. *The New Brown-Driver-Briggs-Gesenius Hebrew-English Lexicon.* पीबॉडी, मैसाचुसेट्सः हेंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1979.

Corts, C. Mark. *The Truth about Spiritual Warfare: Your Place in the Battle Between God and Satan*. Nashville: Broadman & Holman, 2006.

Corts, C. Mark. *The Truth about Spiritual Warfare: Your Place in the Battle Between God and Satan*. नैशविलः ब्रॉडमैन एंड होलमैन, 2006.

Dodd, C. H. *The Interpretation of the Fourth Gospel.* New York: Cambridge University Press, 1953. Reprint 1958.

Dodd, C. H. *The Interpretation of the Fourth Gospel.* न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1953; पुनर्मुद्रण 1958.

Graham, Billy. *How To Be Born Again.* Waco: Word Books, 1977.

Graham, Billy. *How To Be Born Again.* वेकोः वर्ड बुक्स, 1977.

Graham, Billy. *The Journey: How To Live by Faith in an Uncertain World.* Nashville: W Publishing, 2006.
Graham, Billy. *The Journey: How To Live by Faith in an Uncertain World.* नैशविलः ॅ पब्लिशिंग, 2006.

Hybels, Bill. *Just Walk Across the Room: Simple Steps Pointing People to Faith.* Grand Rapids: Zondervan, 2006.
Hybels, Bill. *Just Walk Across the Room: Simple Steps Pointing People to Faith.* ग्रैंड रैपिड्सः ज़ॉन्डरवन, 2006.

Hybels, Bill and Mark Mittleburg, *Becoming a Contagious Christian*. Grand Rapids: Zondervan, 1994.
Hybels, Bill and Mark Mittleburg, *Becoming a Contagious Christian*. ग्रैंड रैपिड्सः ज़ॉन्डरवन, 1994.

Innes, Dick. *I Hate Witnessing: A Handbook for Effective Christian Communications.* Rev. ed. San Clemente: Acts Communications, 2003.
Innes, Dick. *I Hate Witnessing: A Handbook for Effective Christian Communications.* संशोधित संस्करण. सैन क्लेमेंटेः Acts Communications, 2003.

Joseph, James B. *Experiencing Jesus' Joy*. Lynchburg, VA: Liberty University Press, 2013.
Joseph, James B. *Experiencing Jesus' Joy*. लिंचबर्ग, वर्जीनियाः लिबर्टी यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013.

_____. *No More Walls! Creation of One New Man in Christ: Ephesians 2:11-22.* Saarbrücken: LAMBERT Academic Publishing, 2015.
_____. *No More Walls! Creation of One New Man in Christ: Ephesians 2:11-22.* ज़ारब्रुकनः लैम्बर्ट एकेडमिक पब्लिशिंग, 2015.

_____. *The Ultimate Victory: Becoming a Follower of Jesus.* Pfafftown: IJSP, 2024.
_____. *The Ultimate Victory: Becoming a Follower of Jesus.* फ़ैफ़टाउनः IJSP, 2024.

Joseph, James B. *Unity and Obedient Discipleship in the Gospel of John.* 2nd ed. Pfafftown: IJSP, 2024.

Joseph, James B. *Unity and Obedient Discipleship in the Gospel of John.* 2रा संस्करण. फ़ैफ़टाउनः IJSP, 2024.

Liddell, Henry George and Scott, Robert. *A Greek-English Lexicon.* Reprint of 9th ed., 1940. Revised and augmented by Henry Stuart Jones and Roderick McKenzie. London, New York & Toronto; Oxford University Press, 1990.

Liddell, Henry George and Scott, Robert. *A Greek-English Lexicon.* 9वें संस्करण (1940) के पुनर्मुद्रण; Henry Stuart Jones और Roderick McKenzie. द्वारा संशोधित व विस्तार किया हुआ। लंदन, न्यूयॉर्क, टोरंटोः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990.

McDowell, Josh. *A Ready Defense.* San Bernardino: Here's Life, 1990. Reprint 1991.

McDowell, Josh. *A Ready Defense.* सैन बर्नार्डिनोः Here's Life, 1990. पुनर्मुद्रण 1991.

Metzger, Bruce M. *A Textual Commentary on the Greek New Testament.* Cor. ed. Germany: Biblia-Druck GmbH Stuttgart, 1975.

Metzger, Bruce M. *A Textual Commentary on the Greek New Testament.* संशोधित संस्करण. जर्मनीः Biblia-Druck GmbH, स्टुटगार्ट, 1975.

_____. *The Text of The New Testament.* Oxford & New York: Oxford University Press, 1968.

_____. *The Text of The New Testament.* ऑक्सफोर्ड और न्यूयॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1968.

Robertson, A.T. *A Greek Grammar of The New Testament: In Light of Historical Research.* 3rd ed. New York: Hodder & Stoughton, 1919.

Robertson, A.T. *A Greek Grammar of The New Testament: In Light of Historical Research.* 3रा संस्करण. न्यूयॉर्कः हॉडर एंड स्टॉटन, 1919.

Scouteris, Constantine. “The People of God-Its Unity and Its Glory: A Discussion of John 17:17-24 in the Light of Patristic Thought,” *The Greek Orthodox Theological Review* 30, no. 4 (Winter 1985): 399-414.

Scouteris, Constantine. “The People of God-Its Unity and Its Glory: A Discussion of John 17:17-24 in the Light of Patristic Thought,” *The Greek Orthodox Theological Review* 30, 4 (शीतकाल 1985): 399-414.

Viehman, M.D., Greg E. *The God Diagnosis: a Physician’s Shocking Journey to Life after Death*. Sylacauga, AL: Big Mac Publishers, 2010.

Viehman, M.D., Greg E. *The God Diagnosis: a Physician’s Shocking Journey to Life after Death*. साइलेकौगा, अलबामाः बिग मैक पब्लिशर्स, 2010.